Digitized by Madhuban Trust, Delhi

# DHATURATNAKARA

# धातुरत्नाकरः

BY

MUNILĀVANYA VIJAYA SŪRI

मुनिलावण्यविजय सूरिविनिर्मित :

VOL.III

SANNANTA

तृतीयो भाग : सन्नन्त प्रक्रिया

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

# DHĀTURATNĀKARA धातुरत्नाकरः

MUNI LĀVANYA VIJAYA SŪRI

मुनिलावण्यविजय सूरिविनिर्मित

VOL.III

NAVRANG

Kumar Col. Deoband. In Publi

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

*About the book*

The Sanskrit language which is more perfect than Greek and more copious than other languages has a wonderful structure. The structure of this ancient but living language has been analysed and described by etymologists and grammarians since at least the eighth century B.C. The ancient grammarians traced the basic elements of most of the vocables of the language to verbal roots called *dhatu-s*, some two thousand in numbers. Sanskrit has an elaborate system of conjugation of all the roots in ten tenses and moods; besides each root has its causative, desiderative, frequentative and passive forms. There is a system of constructing verbal roots from substantives, which again are conjugated in ten tense/mood forms. Therefore, the conjugational system of Sanskirt grammar has a vast dimension, which is perfectly codified by the grammarians. Though the rules of grammar are precise and definitive, it is difficult to know or derive the particular forms of verbs with the help of those rules.

With a view to minimizing this difficulty and to make all verbal forms easily available the great Jain savant Muni Lavanyavijaya compiled with unprecedented labour and dedication a monumental work, under title *Dhaturatnakara* (literally Ocean of verbal roots) in seven volumes. The *Dhaturatnakara* is a ready reckoner for the users of the Sanskirt language so far as the verb forms are concerned.

This great work remained out of print for more than two decades. In view of the immense usefulness of the work, it is now being reproduced and published.

ISBN: 81-7013-104-9
1992

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

# DHĀTURATNĀKARA

## Vol. III
## SANNANTA

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

REPRODUCTION OF EARLIER EDITION OF
DHĀTURATNĀKARA

# DHĀTURATNĀKARA

# धातुरत्नाकरः

**BY**

**MUNI LĀVANYA VIJAYA SŪRI**
मुनिलावण्यविजय सूरिविनिर्मितः

## Vol. III
## SANNANTA
## तृतीयो भागः
## सन्नन्त प्रक्रिया

**NAVRANG • नवरंग**
**1992**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

This publication has been brought out with financial assistance from Government of India, Ministry of Human Resources Development.

If any defect is found in this book, please return the copy by V.P.P. to the Publisher for exchange free of cost of postage.

DHĀTURATNĀKARA, VOL III

First Published 1867 Saka

Reprint 1992

Rs. 820 per set of Vols. 1-7

Published by:
Mrs Nirmal Singal, for
NAVRANG Booksellers & Publishers
RB-7, Inder Puri, New Delhi - 12
Phone: 5722197, 589914

Printed by :
Diamond Printers,
B-74, Phase II, Naraina Industrial Area,
New Delhi - 28

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

श्रीविजयनेमिसूरिग्रन्थमाला. (ग्रन्थरत्न-५,)

॥ श्रीमज्जिनपुङ्गवेभ्यो नमः ॥

सकलस्वपरसमयपारावारपारीण- विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-तपोगच्छाधिपति-भट्टारकाचार्यवर्य-जगद्गुरुश्रीमद्विजयनेमिसूरि-भगवद्भ्यो नमः ॥

श्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि-सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम-कोविदकुलालङ्कार--अखण्डविजयश्रीमद्गुरुराज--विजयनेमिसूरीश्वर--चरणारविन्दचञ्चरीकायमाणान्तिषत्पन्यास—

लावण्यविजयप्रणीतो

# धातुरत्नाकरः

## ॥ तस्य चायं तृतीयो भागः ॥

स च

मरुदेशान्तर्गत कोशीलावग्रामवास्तव्यश्रेष्ठिवर्याणां द्रव्यसाहाय्येन राजनगर जैनग्रन्थप्रकाशक सभायाः कार्यवाहकेन वाडीलाल बापुलाल शाह इत्यनेन प्राकाश्यं नीतः।

प्रत ५०० ) ( प्रथमावृत्तिः

मूल्य रु. २-०-०

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

## धातुरत्नाकर त्रीजा तथा चोथा भागना

## मददगारोना नाम,

१००१) शा. फतेलालजी मगराजजी कोशीलाव.

३०१) शा. गुलाबचंदजी पुनमचंदजी ,,

१५१) शा. देवीचंदजी हजारीमलजी. ,,

१५१) शा. दीपचंदजी हीमतमलजी. ,,

१२१) शा. सरदारमलजी भोमाजी ,,

१०१) शा. पुनमचंदजी धुलाजी. ,,

१०१) शा. रतनचंदजी खीमाजी. ,,

१०१) शा. चीमनाजी लखमाजी धुलाजी पनाजी.

---

२०२८.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शासनसम्राट्-सूरिचक्रचक्रवर्त्ति जगद्गुरु—
तपोगच्छाधिपति-भट्टारक

# आचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वरः

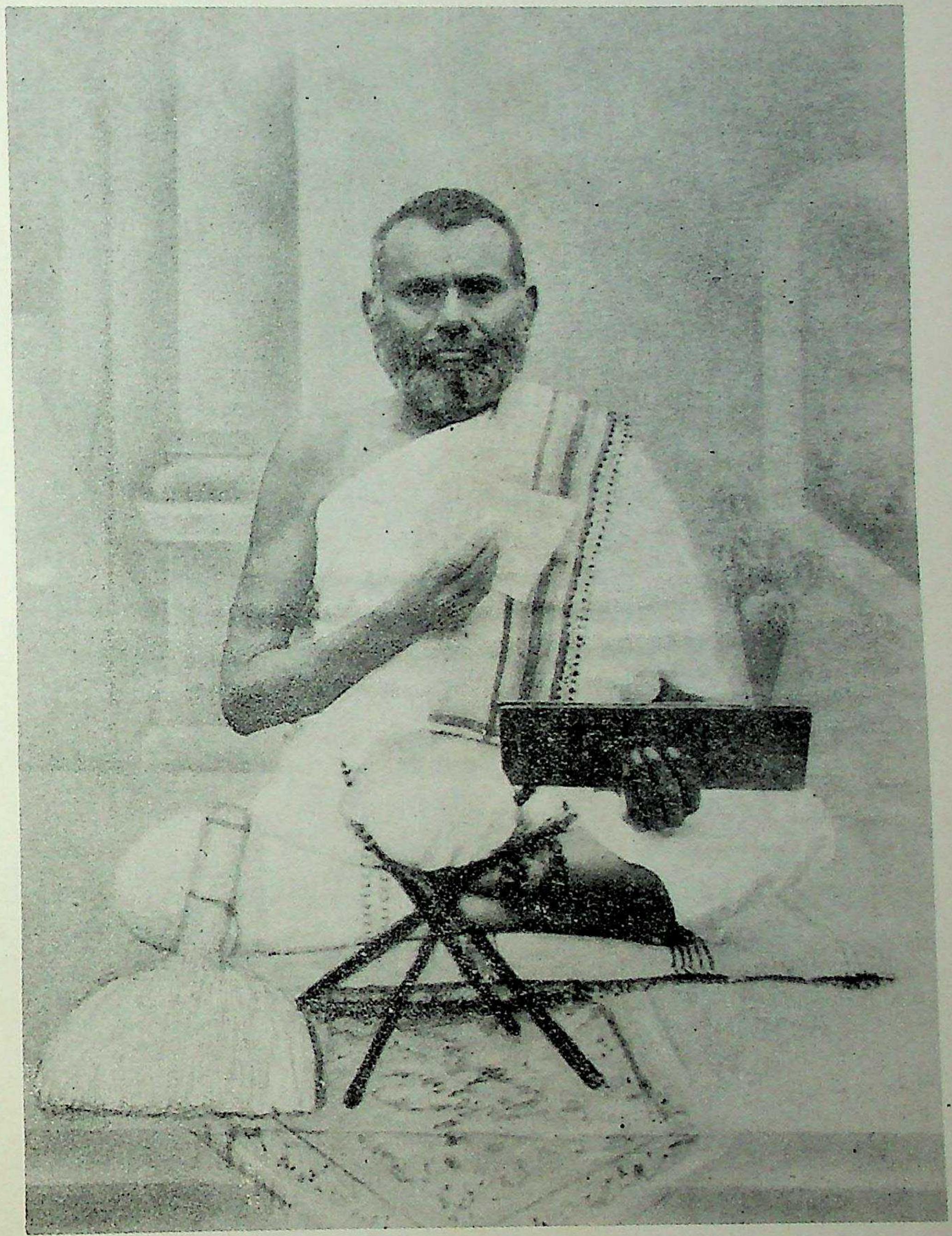

पन्यासपद सं, १९६०
मागर शु. ३

सूरिपद सं. १९६४
ज्येष्ठ शु. ५

जन्म सं. १९२९
कार्तिक शु. १

दीक्षा सं. १९४५
ज्येष्ठ शु. ७

गणिपद सं. १९६०
कार्तिक कृष्ण ७

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र-शासनसम्राट्-तपोगच्छाधिपति
आचार्य महाराज श्री विजयनेमिसूरि-विनेयरत्न-

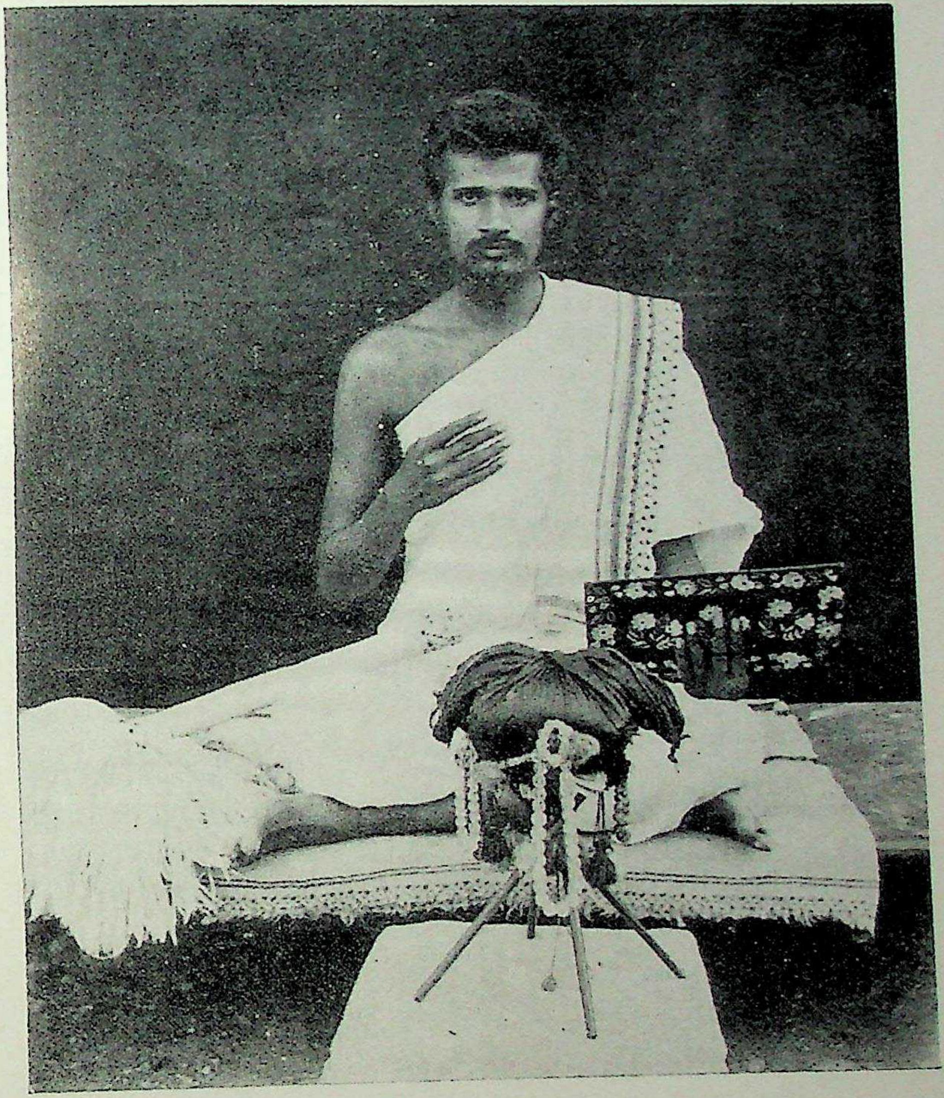

## प्रवर्त्तकश्रीलावण्यविजयः

तिलकमंजरीनी परागनाम्नी टीका अने धातुरत्नाकर विगेरे ग्रन्थना प्रणेता
जन्म सं. १९५३ दीक्षा सं. १९६३ अषाड सुद ५.

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

# शुद्धिपत्रकम्

| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| १ | १७ | मिछति | मिच्छति |
| ३ | ११ | वाचना | वचना |
| ३ | २३ | गुप्तिर्जो | गुप्तिजो |
| ४ | ८ | प्रयुञ्जन्ते | प्रयुञ्जते |
| ६ | २० | जिगशाणि | जिगिषाणि |
| ६ | २१ | अजगीषात्र | अजिगीषाव. |
| १० | १६ | सुस्रू | सुस्वृ |
| १४ | १८ | स्त्य | स्त्यै |
| १६ | २२ | अशिश्रास | अशिश्रा |
| १९ | १ | शाख | शाखृ |
| २३ | ३० | अरि ङ्गि | अरिरङ्गि |
| २६ | ११ | अलिलषा | अलिलङ्गिषा |
| ४१ | १ | स्फूज | स्फूर्जे |
| ४८ | १७ | शट | शिट |
| ५९ | १६ | लुठ | लुठ्ठ |
| ७३ | ३१ | अश्चुच्यु | अचुश्च्यु |
| ७९ | १ | दर्शने | दशने |
| ७९ | २५ | चिकदि | चिकर्दि |
| १०२ | ७ | अर्चि | एर्चि |
| ११८ | १६ | ऊर्वै | उर्व |
| १३१ | १ | जषू | जिषू |
| १३६ | २० | जिघत्साणि | जिघत्सानि |
| १३७ | १ | हर्स | हसे |
| १४४ | १६ | स्तक्ष | स्तृक्ष |

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| १७६ | २३ | षन्त | षत |
| १७८ | १६ | जुचो | जुघो |
| १७९ | १६ | पिपणिष | पिपणायिष |
| ,, | ,, | इत्वादि | इत्यादि |
| १९२ | ८ | षन्त | षत |
| १९२ | १७ | षते | षेते |
| १९२ | २४ | रिरम्पिषश्चक्रे | रिरम्पिषाश्चक्रे |
| १९३ | २३ | षन्त | षत |
| १९४ | २३ | ,, | ,, |
| १९५ | २३ | ,, | ,, |
| १९६ | २३ | ,, | ,, |
| २१४ | १७ | षते | षेते |
| २२० | ८ | षन्त | षत |
| २३० | ८ | षिः | षिषुः |
| २३१ | ,, | ,, | ,, |
| २३२ | ,, | ,, | ,, |
| २३३ | ,, | ,, | ,, |
| २३७ | ,, | ,, | ,, |
| २३८ | ,, | ,, | ,, |
| २३८ | ५ | शिशप्साणि | शिशत्सानि |
| २४५ | ७ | षिः | षिषुः |
| २४६ | ,, | ,, | ,, |
| २५० | २ | षते | षेते |
| २५२ | ,, | ,, | ,, |
| २५३ | १९ | विवृत्सा-णि | विवृत्सानि, |
| २६१ | १७ | स्रत्स्यान | संस्त्या |
| २६२ | १२ | स्व | स्वः |

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| २६५ | १५ | ह्वग | ह्वंग |
| २६६ | १ | विव्रप्ससते | विव्रप्सते |
| ,, | ३ | पिव्रप्ससतां | विव्रप्सतां |
| ,, | ५ | अविव्रप्ससत | अविव्रप्सत |
| २७० | १७ | षते | षेते |
| २७८ | १६ | प्यां | प्सांक् |
| २८२ | १ | रू | रु |
| २८३ | १७ | ददरि | दिदरि |
| ,, | २० | दिदरिद्रासाणि | दिदरिद्रासानि |
| २९१ | ८ | पन्त | पत |
| २९६ | ५ | निनक्षानि | निनक्षाणि |
| ३०१ | ५ | रिरात्साणि | रिरात्सानि |
| ,, | २० | व्रिव्यत्साणि | व्रिव्यत्सानि |
| ३०२ | ५ | तितिषा | तितिमिषा |
| ३१४ | १९ | विवशि | विवर्शि |
| ,, | २२ | शुशुक्षानि | शुशुक्षाणि |
| ३१५ | २७ | तुनुक्षिता | तुतुक्षिता |
| ३१९ | ५ | शिशषा | शिशमिषा |
| ३३० | ६ | पाताम | षेताम |
| ३३१ | १७ | शुष | क्षुच् |
| ३३१ | ११ | निनत्सि—ष्ट | निनत्सिषीष्ट |
| ३३२ | ४ | षते | षेते |
| ,, | ८ | षताम् | षेताम् |
| ३३६ | २१ | तितेगिषानि | तितेगिषाणि |
| ३६१ | ६ | अपिस्फरषत | अपिस्फरिषत् |
| ३७२ | १८ | गुरति | गुरैति |
| ३८२ | ४ | तितनिषानि | तितनिषाणि |

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



| पत्र | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ३९३ | ३७ | जष्च् | जृष्च् |
| ४२७ | १७ | तितेलषिया | तितेलयिशा |
| ४२८ | २ | तालषिया | तालयिषा |
| ४३० | १९ | यलिल | एलिल |
| ४३१ | २२ | असिस | असिसा |
| ४३३ | ७ | षी | षीः |
| ४३२ | २९ | ष्यमि | ष्यामि |
| ४३४ | २१ | आमम्र | अमिम्र |
| ४३५ | २२ | अलिलद्य | अलिलक्ष |
| ४४१ | २ | शब्दषिया | शब्दयिषा |
| ४४१ | १७ | स्वद | स्वाद |
| ४४२ | १६ | जसहने | प्रसहने |
| ४५२ | १६ | पुथुण | पथण |
| ४५२ | ३ | | ः |
| ४५४ | १ | भासार्थ | मासार्थः |
| ,, | २ | तित्रस | तित्रंस |
| ४६५ | २१ | षथाम् | षेथाम् |
| ४६९ | ६ | असुसूचयिषम | असुसूचयिषाम |
| ४७२ | २ | शिशा | शिश |
| ४७३ | १ | वण | वर्ण |
| ४८२ | १६ | कत्र् | चित्र् |
| ,, | २२ | षिषु | षिषुः |
| ४८३ | ७ | ,, | ,, |

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

॥ श्रीमज्जिनपुङ्गवेभ्यो नमः ॥

सकलस्वपरसमयपारावारपारीण–विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक तपोगच्छाधिपति-भट्टारकाचार्य--जगद्गुरुश्रीमद्विजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नमः ।

श्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम-कोविदकुलालङ्कार-अखण्डविजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणारविन्दचञ्चरीकायमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयप्रणीतो

# ॥ धातुरत्नाकरः ॥

## तस्य चायं तृतीयोभागः

नत्वा श्रीनेमिनामान-माजन्मब्रह्मचारिणम्,
तीर्थनाथं गुरुं चैव भारतीं जिनभाषिताम् ॥ १ ॥

धातुरत्नाकरस्याहं लावण्यविजयो मुनिः,
भागं तृतीयमातन्वे बालानां सुखहेतवे ॥ २ ॥

णिगन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणानन्तरं सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिरुदाह्रियते । तुमर्हादिच्छायां सन्नतत्सनः ॥ ३ । ४ । २१ ॥ यो धातुरिषेः कर्म इषिणैव च समानकर्तृकः स तुमर्हः तस्मादिच्छायामर्थे सन्प्रत्ययो वा भवति न चेत्स इच्छासन्नन्तो भवति । कर्तुमिच्छति चिकीर्षति । गन्तुमिछति जिगमिषति । तुमर्हादिति किम् ? अकर्मणोऽसमानकर्तृकाच्च मा भूत् । गमनेनेच्छति । भोजनमिच्छति देवदत्तस्य । इच्छायामिति किम् ? भोक्तुं व्रजति । अतत्सन इति किम् ? चिकीर्षितुमिच्छति । तद्ग्रहणं किम् ? जुगुप्सिषते । सनोऽकारः किम् ?

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**अर्थान् प्रतीषिषति । नकारः सन्ग्रहणेषु विशेषणार्थः । कथं नदीकूलं पिपतिषति । श्वा मुमूर्षति । पतितुमिच्छति इति वाक्यवदुपमानाद् भविष्यति ॥ २१ ॥**

धातोरिति वर्त्तते तस्य तुमर्हादिति विशेषणम्, तदेव यो धातुरित्यादिना व्याचष्टे–इषेः कर्मेति इषेर्धातोर्यो धातुः कर्मेत्यर्थः । कर्म च क्रियाऽऽप्यं शास्त्रीयं गृह्यते, न तु लौकिकं क्रियालक्षणं, कृत्रिमाकृत्रिमयोः कृत्रिमे संप्रत्ययात् । क्रियाव्याप्यत्वञ्च धातोर्द्वाभ्यां प्रकाराभ्यां सम्भवति, अभिधेयद्वारेण स्वरूपेण च, तत्र स्वरूपेण कर्मसम्भवेऽपि समानकर्तृकत्वं विशेषणं नोपपद्यते । तथाहि–धातोः स्वरूपेण कर्मत्वं यथा पचिमिच्छति पचतिमिच्छतीति इकिश्तिपः स्वरूपार्थे क्रियन्त इति तदन्तेन धातुद्रव्यस्वभावोऽभिधीयत इतीपिकर्मत्वं तस्यास्ति साध्यस्वभावासम्भवात्तु समानकर्तृकत्वासम्भव इत्यर्थद्वारेणात्र कर्मत्वं समानकर्तृकत्वञ्च तस्याश्रीयते । इषेरिष्यर्थस्येच्छायां कर्म इषिणेष्यर्थेनेच्छया समानकर्तृक इत्यर्थः । ननु तथापि कथं धातुरिच्छायाः कर्म भवति, धातुर्हि क्रियार्थशब्दः प्रकृतिभूतोऽधीयते स च स्वार्थे क्रियायां गुणीभूतो नेच्छायाः प्रत्ययार्थस्य कर्म भवति, अभिधेय एव हि कर्मादिभावप्रतिपत्तिर्न तु वाचकोऽभिधेय इति । तथा समानकर्तृकत्वमपि कर्त्तुः क्रियाभिसम्बन्धत्वादक्रियात्मनि धातौ न सम्भवतीति कथमुक्तं यो धातुरिषेः कर्म इषिणैव च समानकर्तृक इति । उच्यते । धातुरित्यप्यर्थ एवोपचाराद्धातुशब्दाभिधेयः अर्थे च कार्यासम्भवात्तद्वाचिशब्दप्रतिपत्तिरिति तदर्थाच्छब्दात्सन् प्रत्ययो भवतीत्यदोषः । नन्वेवमपि कर्मत्वं समानकर्तृकत्वेति धातोर्विशेषणेन निवृत्तो एकस्य सिद्धस्वभावत्वादपरस्य च साध्यस्वभावत्वादिति नैष दोषः समानकर्तृकत्वं साम्प्रतिकसाध्यस्वभावापेक्षं कर्मत्वञ्चोत्तरकालिकसाध्यस्वभावापेक्षं साध्यं हि फलप्राप्तिकालेऽवश्यंभावेन, सिद्धस्वरूपेण च सम्भवदपि धातोः कर्मत्वं समानकर्तृकत्वानुरोधेन तदर्थस्याश्रीयत इत्युक्तं कर्तुमिच्छतीति । अत्रेष्यमाणत्वात्करोत्यर्थस्येषिकर्मता इषिणैव च समानकर्तृकता यस्मादहं करोमीत्येवमिच्छति । उदाहरणे तु व्युत्पादित इच्छामात्रं वाच्यम्, तदन्तस्य च केवलस्य प्रयोगासम्भवादवश्यंभावेन भावकर्मकर्त्रभिधायकप्रत्ययपरता, तत्र भावाभिधायकप्रत्ययपरतायां कर्त्तुमिच्छा चिकीर्षेति विग्रहः, कर्माभिधायकप्रत्ययपरतायां कर्त्तुमेषितव्यं चिकीर्षितव्यमिति कर्त्रभिधायकप्रत्ययपरतायां कर्त्तुमिच्छति चिकीर्षतीति । ननु कटादेः कर्मणोऽविवक्षायां करोत्यर्थस्येष्यमाणता भवतु तद्विवक्षायां तु करोत्यर्थस्य तादर्थ्येन प्रवृत्तत्वादिषि-

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



क्रियायाः कटादिरेव व्याप्यो न करोत्यर्थ इति नैष दोषः । तत्रापि कटादिविशिष्टस्य करोत्यर्थस्यैवेष्यमाणता । उभयोर्वा उभयोरपीष्यमाणत्वे साक्षात्करोत्यर्थस्येष्यमाणता तद्द्वारेण कटादेः, नहि द्रव्यस्य करोत्यादिक्रियाव्यवधानमन्तरेण साक्षादिष्यमाणतोपपन्नेति । गमनेनेच्छतीति । नात्र गमिरिषेः कर्मेति समानकर्तृकत्वेऽपि सन्न भवति । भोजनमिच्छति देवदत्तस्येत्यत्र तु भुज्यर्थस्येषिकर्मत्वेऽपि भिन्नकर्तृकत्वात् सन्नभावः । भोक्तुं व्रजतीति अत्रेच्छार्थस्याभावात्तु न भवति । सति हीच्छायाः प्रत्ययार्थत्वे प्रत्यासत्त्या यो धातुरिषेः कर्म इषिणैव च समानकर्तृकस्तस्मात्सन्नित्येतस्यार्थस्य लाभः, असति त्विच्छाग्रहणे यस्याः कस्याश्चित्क्रियायाः कर्म यया कयाचित् क्रियया समानकर्तृको यो धातुरित्येतावानप्यर्थो लभ्येत तत्रापि सन्प्रत्ययः स्यादितीच्छाग्रहणम् । चिकीर्षितुमिच्छतीति । अतत्सन इति वाचनादन्यत्र सन्नन्तात्सन्न भवति । अत्र चूर्णिकारः किलैवमाह-अथ सन्नन्तात् सना भवितव्यम्, न भवितव्यम्, किं कारणमर्थगत्यर्थः शब्दयोगोऽर्थं प्रत्याययिष्यामीति शब्दः प्रयुज्यते, तत्रैकेनैव च तस्यार्थस्योक्तत्वादुक्तार्थानामप्रयोगादन्यप्रयोगाभाव इति, न तर्हीदानीमिदं भवति एषितुमिच्छति एषिषिषतीति, अथास्त्यत्र विशेषः एकस्या इच्छाया अयमिषिः साधनं वर्त्तमानकालश्च प्रत्ययः अपरस्या बाह्यं साधनं सर्वकालश्च प्रत्ययः, इहापि तर्ह्येकस्याः करोतिविशिष्ट इषिः साधनं वर्त्तमानकालश्च प्रत्ययः अपरस्या बाह्यं साधनं सर्वकालश्च प्रत्ययः । येनैव हेतुना एतद्वाक्यं भवति चिकीर्षितुमिच्छतीति तेनैव वृत्तिरपि प्राप्नोति तस्मात् सन्नन्तात्सनः प्रतिषेधो वक्तव्यः । विवरणकारस्तु प्रतिव्यक्तिलक्षणप्रवृत्तौ वाचनिको निषेधः, आकृतिपक्षे तु सकृल्लक्षणप्रवृत्तौ तत्प्रवृत्तेः प्राक्प्रत्ययान्तप्रकृत्यसम्भवात्प्रत्ययो न भवतीति न्यायायानुवादोऽयमित्याह-तच्चायुक्तम्, एवं तु यङ्सन्ण्यन्तात्सनि बोभूयिषयिषतीत्यादिलेखस्य विरोधात्, तस्माद् वाचनिक एव प्रतिषेधः । गुपेः " गुप्तिज्किद्भ्यः" इति सन्नन्ताद् जुगुप्सितुमिच्छतीत्यनेन सन् । तद्ग्रहणादिच्छार्थसन्परिग्रहादन्यार्थसन्नन्तादप्रतिषेधः । अर्थान् प्रतीषिषतीति प्रत्येतुमिच्छतीति सन् । स्वरादेर्द्वितीय इत्येकस्वरस्य सनोद्विर्वचनम् । सन्यस्येत्यकारस्येत्वम् । असत्यकारे एकस्वरत्वाभावाद् द्विर्वचनादि न स्यादिति । अथ किमर्थो नकारो नह्यस्य प्रयोगे श्रवणमस्तीत्याह नकार इत्यादि । सन् ग्रहणेषु सन्यङश्चेत्यादौ विशेषणार्थो नकारः । कथमिति इच्छायां सन्विधीयते, इच्छा च नाम मोहनीयकर्मविशेषोदयादित आत्मपरिणामो बाह्याभ्यतरपरिग्रहाभिलाषरूपः,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



यदि वा प्रवृत्तिनिमित्तं भावोऽभिप्रायो मनःसमीक्षामात्रं तदुभयमपि चैतन्यविकारो न कूलादावस्ति, नहि कूलादिषु बुद्धिपूर्विका प्रवृत्तिरस्ति । न च शुनो मर्तुमिच्छास्ति, प्रियत्वाज्जीवितस्य, तत्कथं सन् प्रत्ययो, येन नदीकूलं पिपतिषतीत्यादि प्रयोग इत्याशङ्कार्थः, परिहरति पतितुमिच्छतीति वाक्यवद् भविष्यति अयमर्थो लोकव्यवहारनिबन्धनामचेतनस्यापीच्छामाश्रित्य नदीकूलं पिपतिषतीत्यादयः प्रयोगाः साधुत्वेनावस्थाप्यन्ते । तथा च नदीकूलं शीर्यमाणलोष्ठं जायमानभिदाकं श्वानं च छनाक्षमेकान्तावस्थानशीलमुपलभ्य तत्रेच्छाध्यारोपात्पतितुमिच्छतीत्यादि वाक्यं लोकाः प्रयुञ्जते तद्वत्सन्प्रत्ययोऽपि भविष्यतीति । परमार्थतस्त्विच्छा भवतु मा वाऽभूल्लोकप्रतिपत्तिमाश्रित्य व्यवहारः प्रवर्त्तते । यदुक्तम्—"यच्चात्र भ्रमजं ज्ञानं, यच्च ज्ञानमलौकिकम् । न ताभ्यां व्यवहारोऽस्ति लोकाः शब्दनिबन्धनाः ॥ १ ॥ इति । अन्ये तु कूलं पिपतिषतीतिवत् श्वा मुमूर्षतीतीति च क्लेशार्थगर्भां प्रतिपत्तिमाहुस्तच्च न युक्तम् । यद्भाष्यम् । न वै तिङन्तेनोपमानमस्ति । अयमर्थः—तिङन्तार्थेनोपमानं न विद्यते क्रियायाः साध्यैकस्वभावत्वादनिष्पन्नस्वरूपत्वादिदं तदिति सर्वनामपरामर्शविषयवस्तुगोचरत्वादुपमानोपमेयभावस्य अत्रेदं तदिति परामर्शाभावादिति भावः । अथवा सर्वं चेतनावत् । तथा च वेदोऽपि सर्वभावानां चैतन्यं प्रतिपादयति । स ह्येवमाह-कंसकाः सर्पन्ति शिरीषोऽधः स्वपिति, सुवर्चला आदित्यमनुपर्येति आस्कन्द कपिलकेत्युक्ते तृणमास्कन्दति । अयस्कान्तमयः सङ्क्रामति । ऋषिः पठति शृणोत ग्रावाणः इति । वैचित्र्येण च सर्वपदार्थानामुपलम्भात् सर्वचेतनप्रसङ्गः सर्वत्र नोद्भावनीय इति । अत्र चात्माद्वैतदर्शने दोषाभावः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १ भू सत्तायाम् । भवितुमिच्छतीति

१ बुभूष–ति तः न्ति सि थः थ बुभूषा–मि वः मः
२ बुभूषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बुभूष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त बुभूषा–णि व म
४ अबुभूष–त् ताम् न् : तम् त म् अबुभूषा–व म
५ अबुभू–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ बुभूषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम बुभूषाम्बभूव बुभूषामास
७ बुभूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुभूषिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुभूषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बुभूषिष्या–मि वः मः (अबुभूषिष्य–व म
१० अबुभूषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ३ घ्रां (घ्रा) गन्धोपादाने

१ जिघ्रास–ति तः न्ति सि थः थ जिघ्रासा–मि वः मः
२ जिघ्रासे–त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जिघ्रास–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त जिघ्रासा–नि व म
४ अजिघ्रास–त् ताम् न् :, तम् त म् अजिघ्रासा–व म
५ अजिघ्रा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम सिष्व सिष्म
६ जिघ्रासामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम जिघ्रासाञ्चकार जिघ्रासाम्बभूव
७ जिघ्रास्या–त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघ्रासिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघ्रासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिघ्रासिष्या–मि वः मः (अजिघ्रासिष्या–व म
१० अजिघ्रासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### २ पां (पा) पाने

१ पिपास–ति तः न्ति सि थः थ पिपासा–मि वः मः
२ पिपासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपास–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त पिपासा–नि व म
४ अपिपास–त् ताम् न् : तम् त म् अपिपासा–व म
५ अपिपा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ पिपासाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिपासाञ्चकार पिपासामास
७ पिपास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपासिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिपासिष्या–मि वः मः (अपिपासिष्या–व म
१० अपिपासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ४ ध्मां (ध्मा) शब्दाग्निसंयोगयोः

१ दिध्मास–ति तः न्ति सि थः थ दिध्मासा–मि वः मः
२ दिध्मासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्मास–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त दिध्मासा–नि व म
४ अदिध्मास–त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्मासा–व म
५ अदिध्मा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम सिष्व सिष्म
६ दिध्मासाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम दिध्मासाम्बभूव दिध्मासामास
७ दिध्मास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्मासिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्मासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिध्मासिष्या–मि वः मः (अदिध्मासिष्या–व म
१० अदिध्मासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५ ष्ठां ( स्था ) गतिनिवृत्तौ

१ **तिष्ठास**-ति तः न्ति सि थः थ **तिष्ठासा**-मि वः मः
२ **तिष्ठासे**-त् ताम् न्तः : तम् त यम् व म
३ **तिष्ठास**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **तिष्ठासा**-नि व म
४ **अतिष्ठास**-त् ताम् न् :. तम् त म् **अतिष्ठासा**-व म
५ **अतिष्ठा**-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **तिष्ठासाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **तिष्ठासाञ्चकार तिष्ठासामास**
७ **तिष्ठास्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तिष्ठासिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तिष्ठासिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **तिष्ठासिष्या**-मि वः मः (**अतिष्ठासिष्या**-व म
१० **अतिष्ठासिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

### ७ दांम् ( दा ) दाने ।

१ **दित्स**-ति तः न्ति सि थः थ **दित्सा**- मि वः मः
२ **दित्से**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **दित्स**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **दित्सा**-नि व म
४ **अदित्स**-त् ताम् न् : तम् त म् **अदित्सा**-व म
५ **अदित्**-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **दित्साञ्च**-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम **दित्साम्बभूव दित्सामास**
७ **दित्स्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **दित्सिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **दित्सिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **दित्सिष्या**-मि वः मः (**अदित्सिष्या**-व म
१० **अदित्सिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

### ६ म्नां ( म्ना ) अभ्यासे

१ **मिम्नास**-ति तः न्ति सि थः थ **मिम्नासा**-मि वः म
२ **मिम्नासे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **मिम्नास**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **मिम्नासा**-नि व म
४ **अमिम्नास**-त् ताम् न् : तम् त म् **अमिम्नासा**-व म
५ **अमिम्ना**-सीत् सिष्टाम् सीषु सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **मिम्नासामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिम सिम **मिम्नासाञ्चकार मिम्नासाम्बभूव**
७ **मिम्नास्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **मिम्नासिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्म
९ **मिम्नासिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **मिम्नासिष्या**-मि वः मः (**अमिम्नासिष्या**-व म
१० **अमिम्नासिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

### ८ जि [ जि ] अभिभवे ।

१ **जिगीष**-ति तः न्ति सि थः थ **जिगीषा**-मि व मः
२ **जिगीषे**-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ **जिगीष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **जिगीषा**- णि व म
४ **अजिगीष**-त् ताम् न् : तम त म **अजिगीषा**-व म
५ **अजिगी**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **जिगीषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **जिगीषाञ्चकार जिगीषामास**
७ **जिगीष्या**-त् स्ताम् सु : स्तम स्त सम स्व स्म
८ **जिगीषिता**-' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ **जिगीष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **जिगीष्या** मि वः मः (**अजिगीष्या**-व म
१० **अजिगीष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ९ ज्रि ( ज्रि ) अभिभवे

१ जिज्रीष–ति तः न्ति सि थः थ जिज्रीषा–मि वः मः
२ जिज्रीषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिज्रीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिज्रीषा–णि व म
४ अजिज्रीष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिज्रीषा–व म
५ अजिज्री षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिज्रीषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिज्रीषाम्बभूव जिज्रीषामास
७ जिज्रीष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिज्रीषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिज्रीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिज्रीषिष्या मि
वः मः (अजिज्रीषिष्या–व म
१०अजिज्रीषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १० क्षि ( क्षि ) क्षये

१ चिक्षीष–ति तः न्ति सि थः थ चिक्षीषा–मि वः मः
२ चिक्षीषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षीषा–णि व म
४ अचिक्षीष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षीषा–व म
५ अचिक्षी–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षीषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षीषाञ्चकार चिक्षीषामास
७ चिक्षीष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षीषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिक्षीषिष्या–मि
वः मः (अचिक्षीषिष्या–व म
१० अचिक्षीषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ११ इं ( इ ) गतौ

१ ईषिष–ति तः न्ति सि थः थ ईषिषा–मि वः मः
२ ईषिषे–त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ ईषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ईषिषा–णि व म
४ ऐषिष–त् ताम् न् :, तम् त म् ऐषिषा–व म
५ ऐषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ईषिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
ईषिषाञ्चकार ईषिषाम्बभूव
७ ईषिष्या–त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ईषिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ईषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ईषिषिष्या-मि
वः मः ( ऐषिषिष्या-व म
१०ऐषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १२ दुं ( दु ) गतौ

१ दुदूष-ति तः न्ति सि थः थ दुदूषा-मि वः मः
२ दुदूषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुदूष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुदूषा-णि व म
४ अदुदूष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुदूषा-व म
५ अदुदू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुदूषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दुदूषाम्बभूव दुदूषामास
७ दुदूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुदूषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुदूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुदूषिष्या-मि
वः मः ( अदुदूषिष्या-व म
१० अदुदूषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३ द्रुं [ द्रु ] गतौ ।

१ दुद्रूष-ति तः न्ति सि थः थ दुद्रूषा-मि वः मः
२ दुद्रूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुद्रूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुद्रूषा-णि व म
४ अदुद्रूष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुद्रूषा-व म
५ अदुद्रू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुद्रूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दुद्रूषाञ्चकार दुद्रूषामास
७ दुद्रूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुद्रूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुद्रूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुद्रूषिष्या-मि
वः मः (अदुद्रूषिष्या-व म
१०अदुद्रूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १४ शुं ( शु ) गतौ ।

१ शुशूष-ति तः न्ति सि थः थ शुशूषा--मि वः मः
२ शुशूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशूषा-णि व म
४ अशुशूष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशूषा-व म
५ अशुशू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशूषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
शुशूषाम्बभूव शुशूषामास
७ शुशूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशूषिष्या-मि
वः मः (अशुशूषिष्या-व म
१०अशुशूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १५ स्रुं ( स्रु ) गतौ

१ सुस्रूष-ति तः न्ति सि थः थ सुस्रूषा-मि वः मः
२ सुस्रूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुस्रूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुस्रूषा-णि व म
४ असुस्रूष-त् ताम् न् : तम् त म् असुस्रूषा-व म
५ असुस्रू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सुस्रूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सुस्रूषाञ्चकार सुस्रूषाम्बभूव
७ सुस्रूष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुस्रूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुस्रूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुस्रूषिष्या-मि
व मः ( असुस्रूषिष्या-व म
१०असुस्रूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६ ध्रुं ( ध्रु ) स्थैर्ये च

१ दुध्रूष-ति तः न्ति सि थः थ दुध्रूषा-मि वः मः
२ दुध्रूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुध्रूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुध्रूषा-णि व म
४ अदुध्रूष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुध्रूषा-व म
५ अदुध्रू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुध्रूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दुध्रूषाञ्चकार दुध्रूषामास
७ दुध्रूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुध्रूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुध्रूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुध्रूषिष्या-मि
वः मः ( अदुध्रूषिष्या-व म
१०अदुध्रूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १७ सुं ( सु ) गतौ

१ सुसूष-ति तः न्ति सि थः थ सुसूषा-मि वः मः
२ सुसूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुसूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसूषा-णि व म
४ असुसूष-त् ताम् न् : तम् त म् असुसूषा-व म
५ असुसू-षीत् षिष्टाम् षीषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
सुसूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिम सिम
सुसूषाञ्चकार सुसूषाम्बभूव
७ सुसूष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्म
९ सुसूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुसूषिष्या-मि
व मः ( असुसूषिष्या-व म
१० असुसूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १९ गृं ( गृ ) सेचने

१ जिगीर्ष-ति तः न्ति सि थः थ जिगीर्षा-मि वः मः
२ जिगीर्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगीर्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगीर्षा-णि व म
४ अजिगीर्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगीर्षा-व म
५ अजिगीर्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगीर्षाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
जिगीर्षाम्बभूव जिगीर्षामास
७ जिगीर्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगीर्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगीर्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगीर्षिष्या-मि
वः मः (अजिगीर्षिष्या-व म
१० अजिगीर्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १८ स्मृं ( स्मृ ) चिन्तायाम्

१ सुस्मूर्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सुस्मूर्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सुस्मूर्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असुस्मूर्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (ध्वम् षि ष्वहि ष्महि
५ असुस्मूर्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्ढ्वम्
६ सुस्मूर्षाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
सुस्मूर्षाम्बभूव सुस्मूर्षामास
७ सुस्मूर्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
८ सुस्मूर्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सुस्मूर्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असुस्मूर्षि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## २० घृं ( घृ ) सेचने

१ जिघीर्ष-ति तः न्ति सि थः थ जिघीर्षा-मि वः मः
२ जिघीर्षे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जिघीर्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघीर्षा-णि व म
४ अजिघीर्ष-त् ताम् न् :, तम् त म् अजिघीर्षा-व म
५ अजिघीर्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिघीर्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिघीर्षाञ्चकार जिघीर्षाम्बभूव
७ जिघीर्ष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघीर्षिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघीर्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघीर्षिष्या-मि
वः मः ( अजिघीर्षिष्या-व म
१० अजिघीर्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २१ औस्वृ ( स्वृ ) शब्दोपतापयोः

१ सिस्वरिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्वरिषा-मि वः मः
२ सिस्वरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्वरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
सिस्वरिषा-णि व म
४ असिस्वरिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्वरिषा-व म
५ असिस्वरि-षीत् षिष्टाम् षीषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिस्वरिषाम्बा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिम सिम
सिस्वरिषाञ्चकार सिस्वरिषाम्बभूव
७ सिस्वरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्वरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्म
९ सिस्वरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्वरिषिष्या-मि वः मः (असिस्वरिषिष्या-व म
१० असिस्वरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

पक्षे सिस्वरिस्थाने सुस्वूर्-ज्ञेयम्

## २२ द्वृं ( द्वृ ) वरणे

१ दुद्वूर्ष-ति तः न्ति सि थः थ दुद्वूर्षा-मि वः मः
२ दुद्वूर्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुद्वूर्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुद्वूर्षा-णि व म
४ अदुद्वूर्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुद्वूर्षा-व म
५ अदुद्वूर्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुद्वूर्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दुद्वूर्षाञ्चकार दुद्वूर्षामास
७ दुद्वूर्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुद्वूर्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुद्वूर्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुद्वूर्षिष्या-मि वः मः (अदुद्वूर्षिष्या-व म
१० अदुद्वूर्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २३ ध्वृं ( ध्वृ ) कौटिल्ये

१ दुध्वूर्ष-ति तः न्ति सि थः थ दुध्वूर्षा-मि वः मः
२ दुध्वूर्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुध्वूर्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुध्वूर्षा--णि व म
४ अदुध्वूर्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुध्वूर्षा-व म
५ अदुध्वूर्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुध्वूर्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दुध्वूर्षाम्बभूव दुध्वूर्षामास
७ दुध्वूर्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुध्वूर्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुध्वूर्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुध्वूर्षिष्या-मि वः मः (अदुध्वूर्षिष्या-व म
१० अदुध्वूर्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २४ ह्वृं ( ह्वृ ) कौटिल्ये ।

१ जुह्वूर्ष-ति तः न्ति सि थः थ जुह्वूर्षा मि वः मः
२ जुह्वूर्षे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जुह्वूर्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुह्वूर्षा--णि व म
४ अजुह्वूर्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुह्वूर्षा-व म
५ अजुह्वूर्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुह्वूर्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुह्वूर्षाञ्चकार जुह्वूर्षाम्बभूव
७ जुह्वूर्ष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुह्वूर्षिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुह्वूर्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुह्वूर्षिष्या-मि वः मः (अजुह्वूर्षिष्या-व म
१० अजुह्वूर्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २५ सृं ( सृ ) गतौ ।

१सिसीर्ष-ति तः न्ति सि थः थ सिसीर्षा-मि वः मः
२ सिसीर्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसीर्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसीर्षा-णि व म
४असिसीर्ष-त् ताम् न् : तम् त म्असिसीर्षा-व म
५असिसीर्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६सिसीर्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिम सिम
सिसीर्षाञ्चकार सिसीर्षाम्बभूव
७ सिसीर्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८सिसीर्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९सिसीर्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसीर्षिष्या-मि
वः मः (असिसीर्षिष्या-व म
१०असिसीर्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २६ ऋं ( ऋ ) प्रापणे ।

१ अरिरिष-ति तः न्ति सि थः थ अरिरिषा-मि वः मः
२ अरिरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अरिरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अरिरिषा-णि व म
४ आरिरिष-त् ताम् न् : तम् त म् आरिरिषा-व म
५ आरिरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अरिरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अरिरिषाञ्चकार अरिरिषामास
७ अरिरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अरिरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९अरिरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अरिरिषिष्या-मि
वः मः (आरिरिषिष्या-व म
१० आरिरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २७ तॄ ( तॄ ) प्लवनतरणयोः ।

१ तितरिष-ति तः न्ति सि थः थ तितरिषा-मि वः मः
२ तितरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितरिषा--णि व म
४ अतितरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितरिषा-व म
५ अतितरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितरिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तितरिषाम्बभूव तितरिषामास
७ तितरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितरिषिष्या-मि
वः मः (अतितरिषिष्या-व म
१०अतितरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तितरिस्थाने तितरी-तितीर्-इति च
सर्वत्र ज्ञेयम् ॥

## २८ ट्धें ( धे ) पाने ।

१ धित्स-ति तः न्ति सि थः थ धित्सा-मि वः मः
२ धित्से-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ धित्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
धित्सा--नि व म
४ अधित्स-त् ताम् न् :, तम् त म् अधित्सा-व म
५ अधित्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ धित्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
धित्साञ्चकार धित्साम्बभूव
७ धित्स्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ धित्सिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ धित्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ धित्सिष्या-मि
वः मः ( अधित्सिष्या-व म
१०अधित्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २९ दैंप् ( दै ) शोधने ।

१ दिदास-ति तः न्ति सि थः थ दिदासा-मि वः मः
२ दिदासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदासा-नि व म
४ अदिदास-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदासा-व म
५ अदिदा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ दिदासामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदासाञ्चकार दिदासाम्बभूव
७ दिदास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदासिष्या-मि
वः मः (अदिदासिष्या-व म
१० अदिदासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३१ ग्लैं ( ग्लै ) हर्षक्षये ।

१ जिग्लास-ति तः न्ति सि थः थ जिग्लासा-मि वः मः
२ जिग्लासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिग्लास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिग्लासा--नि व म
४ अजिग्लास-त् ताम् न् : तम् त म् अजिग्लासा-व म
५ अजिग्ला-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ जिग्लासाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
जिग्लासाम्बभूव जिग्लासामास
७ जिग्लास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिग्लासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिग्लासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिग्लासिष्या मि
वः मः (अजिग्लासिष्या-व म
१० अजिग्लासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३० ध्यैं ( ध्यै ) चिन्तायाम् ।

१ दिध्यास-ति तः न्ति सि थः थ दिध्यासा-मि वः मः
२ दिध्यासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्यास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिध्यासा-नि व म
४ अदिध्यास-त् ताम् न् : तम् त म् दिध्यासा-व म
५ अदिध्या-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ दिध्यासाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्यासाञ्चकार दिध्यासामास
७ दिध्यास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्यासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्यासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्यासिष्या-मि
वः मः (अदिध्यासिष्या-व म
१० अदिध्यासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २८ म्लैं ( म्लै ) गात्रविनामे ।

१ मिम्लास-ति तः न्ति सि थः थ मिम्लासा-मि वः मः
२ मिम्लासे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ मिम्लास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिम्लासा--नि व म
४ अमिम्लास-त् ताम् न् : तम् त म् अमिम्लासा-व म
५ अमिम्ला-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ मिम्लासामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिम्लासाञ्चकार मिम्लासाम्बभूव
७ मिम्लास्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिम्लासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिम्लासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिम्लासिष्या-मि
वः मः (अमिम्लासिष्या-व म
१० अमिम्लासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ३३ धैं ( धै ) न्यङ्गकरणे ।

१ दिधास–ति तः न्ति सि थः थ दिधासा–मि वः मः
२ दिधासे–त् ताम् युः : तम् त यम् वम
३ दिधास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिधासा–नि व म
४ अदिधास–त् ताम् न् : तम् त म् अदिधासा–व म
५ अदिधा–सीत सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ दिधासाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिधासाम्बभूव दिधासामास
७ दिधास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिधासिष्या–मि
वः मः ( अदिधासिष्या–व म
१० अदिधासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ३४ द्रैं ( द्रै ) स्वप्ने ।

१ दिद्रास–ति तः न्ति सि थः थ दिद्रासा–मि वः मः
२ दिद्रासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिद्रास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिद्रासा–नि व म
४ अदिद्रास–त् ताम् न् : तम् त म् अदिद्रासा–व म
५ अदिद्रा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ दिद्रासाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिद्रासाम्बभूव दिद्रासामास
७ दिद्रास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिद्रासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिद्रासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिद्रासिष्या–मि
वः मः ( अदिद्रासिष्या–व म
१० अदिद्रासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ३५ ध्रैं ( ध्रै ) तृप्तौ ।

१ दिध्रास–ति तः न्ति सि थः थ दिध्रासा–मि वः मः
२ दिध्रासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
दिध्रास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिध्रासा–नि व म
४ अदिध्रास–त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्रासा–व म
५ अदिध्रा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ दिध्रासाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्रासाञ्चकार दिध्रासामास
७ दिध्रास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्रासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्रासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिध्रासिष्या–मि
वः मः ( अदिध्रासिष्या–व म
१० अदिध्रासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ३६ कैं [ कै ] शब्दे

१ चिकास–ति तः न्ति सि थः थ चिकासा–मि वः मः
२ चिकासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकासा–नि व म
४ अचिकास–त् ताम् न् : तम् त म अचिकासा–व म
५ अचिका–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिकासाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकासाञ्चकार चिकासामास
७ चिकास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकासिष्य ति तः न्ति सि थः थ चिकासिष्या मि
व मः ( अचिकासिष्या–व म
१० अचिकासिष्य–त् ताम् न् : तम् त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ३७ गैं ( गै ) शब्दे ।

१ **जिगास**–ति तः न्ति सि थः थ **जिगासा**–मि वः मः
२ **जिगासे**–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **जिगास**–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
**जिगासा**–नि व म
४ **अजिगास**–त् ताम् न् ः तम् त म् **अजिगासा**–व म
५ **अजिगा**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **जिगासाञ्च**–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
**जिगासाम्बभूव** **जिगासामास**
७ **जिगास्या**–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **जिगासिता**–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **जिगासिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **जिगासिष्या**–मि
वः मः ( **अजिगासिष्या**–व म
१० **अजिगासिष्य**–त् ताम् न् ः तम् त म्

## ३८ रैं ( रै ) शब्दे ।

१ **रिरास**–ति तः न्ति सि थः थ **रिरासा**–मि वः मः
२ **रिरासे**–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **रिरास**–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
**रिरासा**–नि व म
४ **अरिरास**–त् ताम् न् ः तम् त म् **अरिरासा**–व म
५ **अरिरा**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **रिरासाञ्च**–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
**रिरासाम्बभूव** **रिरासामास**
७ **रिरास्या**–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **रिरासिता**–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **रिरासिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **रिरासिष्या**–मि
वःमः ( **अरिरासिष्या**–व म
१० **अरिरासिष्य**–त् ताम् न् ः तम् त म्

## ३९ ष्ट्यैं ( ष्ट्यै ) संघाते च ।

१ **तिष्ट्यास**–ति तः न्ति सि थः थ **तिष्ट्यासा**–मि वः मः
२ **तिष्ट्यासे**–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **तिष्ट्यास**–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
**तिष्ट्यासा**–नि व म
४ **अतिष्ट्यास**–त् ताम् न् ः तम् त म् **अतिष्ट्यासा**–व म
५ **अतिष्ट्या**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **तिष्ट्यासाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तिष्ट्यासाञ्चकार** **तिष्ट्यासामास**
७ **तिष्ट्यास्या**–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तिष्ट्यासिता**–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तिष्ट्यासिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **तिष्ट्यासिष्या**–मि
वः मः ( **अतिष्ट्यासिष्या**–व म
१० **अतिष्ट्यासिष्य**–त् ताम् न् ः तम् त म्

ष्ठिवेः षकार एव ठकारपरः,
अन्येषां ष्ठाप्रभृतीनान्तु षकारस्तवर्गपरः,

## ४० स्त्यैं [ स्त्य ] संघाते च ।

१ **तिस्त्यास**–ति तः न्ति सि थः थ **तिस्त्यासा**–मि वः मः
२ **तिस्त्यासे**–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **तिस्त्यास**–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
**तिस्त्यासा**–नि व म
४ **अतिस्त्यास**–त् ताम् न् ः तम् त म **अतिस्त्यासा**–व म
५ **अतिस्त्या**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **तिस्त्यासाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तिस्त्यासाञ्चकार** **तिस्त्यासामास**
७ **तिस्त्यास्या**–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तिस्त्यासिता**–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तिस्त्यासिष्य** ति तः न्ति सि थः थ **तिस्त्यासिष्या** मि
वः मः ( **अतिस्त्यासिष्या**–व म
१० **अतिस्त्यासिष्य**–त् ताम् न् ः तम् त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४१ खैं ( खै ) खदने

१ चिखास–ति तः न्ति सि थः थ चिखासा–मि वः मः
२ चिखासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखासा–नि व म
४ अचिखास–त् ताम् न् : तम् त म् अचिखासा–व म
५ अचिखा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिखासाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिखासाञ्चकार चिखासामास
७ चिखास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखासिष्या-मि वः मः ( अचिखासिष्य–व म
१० अचिखासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४२ क्षैं ( क्षै ) क्षये

१ चिक्षास-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षासा-मि वः मः
२ चिक्षासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षासा–नि व म
४ अचिक्षास-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षासा-व म
५ अचिक्षा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिक्षासाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चिक्षासाम्बभूव चिक्षासामास
७ चिक्षास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षासिष्या-मि वः मः ( अचिक्षासिष्या व म
१० अचिक्षासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४३ जैं ( जै ) क्षये ।

१ जिजास–ति तः न्ति सि थः थ जिजासा–मि वः मः
२ जिजासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजासा–नि व म
४ अजिजास–त् ताम् न् : तम् त म् अजिजासा–व म
५ अजिजा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ जिजासाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिजासाम्बभूव जिजासामास
७ जिजास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिजासिष्या–मि वः मः (अजिजासिष्या–व म
१० अजिजासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४४ षैं [ सै ] क्षये ।

१ सिषास–ति तः न्ति सि थः थ सिषासा-मि वः मः
२ सिषासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिषास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिषासा–नि व म
४ असिषास–त् ताम् न् : तम् त म असिषासा–व म
५ असिषा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिषासाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिषासाञ्चकार सिषासामास
७ सिषास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम् स्व स्म
८ सिषासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिषासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सिषासिष्या-मि वः मः (असिषासिष्या–व म
१० असिषासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

अषोपदेशत्वे सिषास्थाने सिसा इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४५ स्रैं [ स्रै ] पाके।

१ सिस्रास-ति तः न्ति सि थः थ सिस्रासा-मि वः मः
२ सिस्रासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्रास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्रासा-नि व म
४ असिस्रास-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्रासा-व म
५ असिस्रा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिस्रासाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्रासाञ्चकार सिस्रासामास
७ सिस्रास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्रासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्रासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्रासिष्या-मि
वः मः (असिस्रासिष्या-व म
१० असिस्रासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४६ श्रैं ( श्रै ) पाके।

१ शिश्रास-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रासा- मि वः मः
२ शिश्रासे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्रास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रासा-नि व म
४ अशिश्रास-त ताम् न् : तम् त म् अशिश्रासा-व म
५ अशिश्रास-सीत सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ शिश्रासाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
शिश्रासाम्बभूव शिश्रासामास
७ शिश्रास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रासिष्या-मि
वः मः (अशिश्रासिष्या-व म
१० अशिश्रासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४७ पैं ( पै ) शोषणे। पां २ वद्रूपाणि

## ४८ ओवैं ( वै ) शोषणे

१ विवास-ति तः न्ति सि थः थ विवासा-मि वः मः
२ विवासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवासा-नि व म
४ अविवास-त् ताम् न् : तम् त म् अविवासा-व म
५ अविवा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ विवासाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विवासाम्बभूव विवासामास
७ विवास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवासिष्या-मि
वः मः ( अविवासिष्या-व म
१० अविवासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४९ ष्णैं ( स्नै ) वेष्टने

१ सिष्णास-ति तः न्ति सि थः थ सिष्णासा-मि वः मः
२ सिष्णासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिष्णास-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
सिष्णासा-नि व म
४ असिष्णास-त ताम् न् : तम् त म् असिष्णासा-व म
५ असिष्णा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिष्णासाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिष्णासाञ्चकार सिष्णासामास
७ सिष्णास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिष्णासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिष्णासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिष्णासिष्या-मि
वः मः ( असिष्णासिष्या-व म
१० असिष्णासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



५० फक्क ( फक्क् ) नीचैर्गतौ ।

१ पिफक्किष-ति तः न्ति सि थः थ पिफक्किषा-मि वः मः
२ पिफक्किषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिफक्किष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिफक्किषा-णि व म
४ अपिफक्किष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिफक्किषा-व म
५ अपिफक्कि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिफक्किषामा-स सतु सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिफक्किषाञ्चकार पिफक्किषाम्बभूव
७ पिफक्किष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिफक्किषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ पिफक्किषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिफक्किषिष्या-
मि वः मः (अपिफक्किषिष्या-व म
१० अपिफक्किषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५१ तक ( तक् ) हसने ।

१ तितकिष-ति तः न्ति सि थः थ तितकिषा-मि वः मः
२ तितकिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितकिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितकिषा-णि व म
४ अतितकिष-त् ताम् न् : तम् तम् अतितकिषा व म
५ अतितकि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितकिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितकिषाञ्चकार तितकिषामास
७ तितकिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितकिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितकिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितकिषिष्या
मि वः मः (अतितकिषिष्या-व म
१० अतितकिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५२ तकु ( तङ्क् ) कृच्छ्रजीवने ।

१ तितङ्किष-ति तः न्ति सि थः थ तितङ्किषा-मि वः मः
२ तितङ्किषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितङ्किष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितङ्किषा-णि व म
४ अतितङ्किष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितङ्किषा-व म
५ अतितङ्कि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितङ्किषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तितङ्किषाम्बभूव तितङ्किषामास
७ तितङ्किष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितङ्किषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितङ्किषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितङ्किषिष्या-
मि वः मः (अतितङ्किषिष्या-व म
१० अतितङ्किषिष्य-त् : ताम् न् तम् त म्

५३ शुक [ शुक् ] गतौ ।

१ शुशुकिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशुकिषा-मि वः मः
२ शुशुकिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुकिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुकिषा-णि व म
४ अशुशुकिष-त् ताम् न् : तम् त म अशुशुकिषा-व म
५ अशुशुकि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशुकिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथु व व विव विम
शुशुकिषाञ्चकार शुशुकिषामास
७ शुशुकिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुकिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ शुशुकिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुकिषिष्या-
मि व मः (अशुशुकिषिष्या-व म
१० अशुशुकिषिष्य-त् ताम न् : तम् त
पक्षे शुशुकि-स्थाने शुशोकि-इतिज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ५४ बुक्क ( बुक्क् ) भाषणे ।

१ बुबुक्किष-ति तः न्ति सि थः थ बुबुक्किषा-मि वः मः
२ बुबुक्किषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बुबुक्किष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुबुक्किषा-णि व म
४ अबुबुक्किष-त् ताम् न् : तम् त म् अबुबुक्किषा-व म
५ अबुबुक्कि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बुबुक्किषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बुबुक्किषाञ्चकार बुबुक्किषाम्बभूव
७ बुबुक्किष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुबुक्किषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ बुबुक्किषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुबुक्किषिष्या-
मि वः मः (अबुबुक्किषिष्या-व म
१० अबुबुक्किषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ५६ राखृ ( राख् ) शोषणालमर्थयोः ।

१ रिराखिष-ति तः न्ति सि थः थ रिराखिषा-मि वः मः
२ रिराखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिराखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिराखिषा-णि व म
४ अरिराखिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिराखिषा-व म
५ अरिराखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिराखिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रिराखिषाम्बभूव रिराखिषामास
७ रिराखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिराखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिराखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिराखिषिष्या
मि वः मः (अरिराखिषिष्या-व म
१० अरिराखिषिष्य-त् : ताम् न् तम् त म्

## ५५ ओखृ ( ओख् ) शोषणालमर्थयोः ।

१ ओचिखिष-ति तः न्ति सि थः थ ओचिखिषा-मि वः मः
२ ओचिखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ओचिखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ओचिखिषा-णि व म
४ औचिखिष-त् ताम् न् : तम् तम् औचिखिषा-व म
५ औचिखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ओचिखिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ओचिखिषाञ्चकार ओचिखिषामास
७ ओचिखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ओचिखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ओचिखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ओचिखिषिष्या
मि वः मः (औचिखिषिष्या-व म
१० औचिखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ५७ लाखृ [ लाख् ] शोषणालमर्थयोः ।

१ लिलाखिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलाखिषा-मि वः मः
२ लिलाखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलाखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलाखिषा-णि व म
४ अलिलाखिष-त् ताम् न् : तम् त म अलिलाखिषा-व म
५ अलिलाखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलाखिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलाखिषाञ्चकार लिलाखिषामास
७ लिलाखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलाखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलाखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलाखिषिष्या
मि वः मः (अलिलाखिषिष्या-व म
१० अलिलाखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ५८ द्राखृ ( द्राख ) शोषणालमर्थयोः ।

१ दिद्राखिष-ति तः न्ति सि थः थ दिद्राखिषा-मि वः मः
२ दिद्राखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिद्राखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिद्राखिषा-णि व म
४ अदिद्राखिष-त् ताम् न् : तम् त म अदिद्राखिषा-व म
५ अदिद्राखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिद्राखिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिद्राखिषाञ्चकार दिद्राखिषाम्बभूव
७ दिद्राखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिद्राखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ दिद्राखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिद्राखिषिष्या-
मि वः मः (अदिद्राखिषिष्या-व म
१० अदिद्राखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ५९ ध्राखृ ( ध्राख् ) शोषणालमर्थयोः ।

१ दिध्राखिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्राखिषा-मि वः मः
२ दिध्राखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्राखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिध्राखिषा-णि व म
४ अदिध्राखिष-त् ताम् न् : तम्तम् अदिध्राखिषा-व म
५ अदिध्राखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिध्राखिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्राखिषाञ्चकार दिध्राखिषामास
७ दिध्राखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्राखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्राखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्राखिषिष्या
मि वः मः (अदिध्राखिषिष्या-व म
१० अदिध्राखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ६० शाख ( शाख् ) व्याप्तौ ।

१ शिशाखिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशाखिषा-मि वः मः
२ शिशाखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशाखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशाखिषा-णि व म
४ अशिशाखिष-त् ताम् न् : तम् त म अशिशाखिषा-व म
५ अशिशाखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशाखिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव कृम
शिशाखिषाम्बभूव शिशाखिषामास
७ शिशाखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशाखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशाखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशाखिषिष्या
मि वः मः (अशिशाखिषिष्या-व म
१० अशिशाखिषिष्य-त् : ताम् न् तम् त म्

## ६१ श्लाखृ [ श्लाख् ] व्याप्तौ ।

१ शिश्लाखिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्लाखिषा-मि वः मः
२ शिश्लाखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्लाखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्लाखिषा-णि व म
४ अशिश्लाखिष त् ताम् न् : तम त म अशिश्लाखिषा-व म
५ अशिश्लाखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्लाखिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्लाखिषाञ्चकार शिश्लाखिषामास
७ शिश्लाखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम् स्व स्म
८ शिश्लाखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्लाखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्लाखिषिष्या
मि वः मः (अशिश्लाखिषिष्या-व म
१० अशिश्लाखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



६२ कक्ख [ ककख् ] हसने

१ चिकक्खिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकक्खिषा-मि वः मः
२ चिकक्खिषे-त ताम् युः । तम् त यम् व म
३ चिकक्खिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
चिकक्खिषा-णि व म
४ अचिकक्खिष त् ताम् न् तम् त म अचिकक्खिषा-वम
५ अचिकक्खि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकक्खिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकक्खिषाञ्चकार चिकक्खिषामास
७ चिकक्खिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकक्खिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकक्खिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ चिकक्खिषिष्यामि
वः मः (अचिकक्खिषिष्या-व म
१० अचिकक्खिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त

६३ उख ( उख् ) गतौ । ओखृ ५५ वद्रूपाणि

६४ णख ( नख् ) गतौ ।

१ निनखिष-ति तः न्ति सि थः थ निनखिषा-मि वः मः
२ निनखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनखिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
निनखिषा-णि व म
४ अनिनखिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनखिषा-व म
५ अनिनखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनखिषाञ्च कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
निनखिषाम्बभूव निनखिषामास
७ निनखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनखिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनखिषिष्या-मि
वः मः (अनिनखिषिष्या व म
१० अनिनखिषिष्य-त् : ताम् न् तम् त म्

६५ नख ( नख् ) गतौ । णख ६४ वद्रूपाणि

६६ वख ( वख् ) गतौ ।

१ विवखिष-ति तः न्ति सि थः थ विवखिषा-मि वः मः
२ विवखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवखिष-तु तात ताम् न्तु '' तात् तम् त
विवखिषा-णि व म
४ अविवखिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवखिषा-व म
५ अविवखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवखिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवखिषाञ्चकार विवखिषामास
७ विवखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवखिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवखिषिष्या-मि
वः मः (अविवखिषिष्या-व म
१० अविवखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

६७ मख ( मख् ) गतौ ।

१ मिमखिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमखिषा-मि वः मः
२ मिमखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् वम
३ मिमखिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
मिमखिषा-णि व म
४ अमिमखिष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमखिषा-व म
५ अमिमखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमखिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
मिमखिषाम्बभूव मिमखिषामास
७ मिमखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमखिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमखिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ मिमखिषिष्या-मि
वः मः (अमिमखिषिष्या-व म
१० अमिमखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



६८ रख ( रख् ) गतौ ।

१ रिरखिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरखिषा-मि वः मः
२ रिरखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त रिरखिषा-णि व म
४ अरिरखिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरखिषा-व म
५ अरिरखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रिरखिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम रिरखिषाञ्चकार रिरखिषाम्बभूव
७ रिरखिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्म
९ रिरखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरखिषिष्या-मि वः मः ( अरिरखिषिष्या-व म
१० अरिरखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

७० मखु ( मङ्ख् ) गतौ ।

१ मिमङ्खिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमङ्खिषा-मि वः मः
२ मिमङ्खिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ मिमङ्खिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमङ्खिषा--णि व म
४ अमिमङ्खिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमङ्खिषा-व म
५ अमिमङ्खि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमङ्खिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमङ्खिषाञ्चकार मिमङ्खिषाम्बभूव
७ मिमङ्खिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमङ्खिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमङ्खिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमङ्खिषिष्या-मि वः मः ( अमिमङ्खिषिष्या-व म
१० अमिमङ्खिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

६९ लख ( लख् ) गतौ ।

१ लिलखिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलखिषा-मि वः मः
२ लिलखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त लिलखिषा-णि व म
४ अलिलखिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलखिषा-व म
५ अलिलखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ लिलखिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम लिलखिषाञ्चकार लिलखिषामास
७ लिलखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलखिषिष्या-मि वः मः ( अलिलखिषिष्या-व म
१० अलिलखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

७१ रखु ( रङ्ख् ) गतौ ।

१ रिरङ्खिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्खिषा-मि वः मः
२ रिरङ्खिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरङ्खिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रिरङ्खिषा--णि व म
४ अरिरङ्खिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरङ्खिषा-व म
५ अरिरङ्खि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रिरङ्खिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम रिरङ्खिषाम्बभूव रिरङ्खिषामास
७ रिरङ्खिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरङ्खिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरङ्खिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्खिषिष्या मि वः मः ( अरिरङ्खिषिष्याः-व म
१० अरिरङ्खिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



७२ लखु ( लङ्ख् ) गतौ ।

१लिलङ्खिष–ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्खिषा-मि वः मः
२ लिलङ्खिषे–त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ लिलङ्खिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलङ्खिषा--णि व म
४अलिलङ्खिष–त् ताम् न् : तम् त म् अलिलङ्खिषा-व म
५ अलिलङ्खि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलङ्खिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलङ्खिषाश्चकार लिलङ्खिषाम्बभूव
७ लिलङ्खिष्या–त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलङ्खिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलङ्खिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्खिषिष्या-मि
वः मः (अलिलङ्खिषिष्या-व म
१०अलिलङ्खिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

७३ रिखु ( रिङ्ख् ) गतौ ।

१रिरिङ्खिष–ति तः न्ति सि थः थ रिरिङ्खिषा–मि वः म
२ रिरिङ्खिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरिङ्खिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरिङ्खिषा--णि व म
४अरिरिङ्खिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरिङ्खिषा-व म
५अरिरिङ्खि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरिङ्खिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ,कथुः क कार कर कृव कृम
रिरिङ्खिषाम्बभूव रिरिङ्खिषामास
७ रिरिङ्खिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरिङ्खिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९रिरिङ्खिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरिङ्खिषिष्या-
मि वः मः (अरिरिङ्खिषिष्या–व म
१०अरिरिङ्खिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

७४ इखि ( इख् ) गतौ ।

१एचिखिष–ति तः न्ति सि थः थ एचिखिषा–मि वः मः
२ एचिखिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ एचिखिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
एचिखिषा–णि व म
४ ऐचिखिष–त् ताम् न् : तम् त म् एचिखिषा–व म
५ ऐचिखि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ एचिखिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
एचिखिषाञ्चकार एचिखिषामास
७ एचिखिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ एचिखिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९एचिखिषिष्य-तितः न्ति सि थः थ एचिखिषिष्या-मि
वः मः (ऐचिखिषिष्या-व म
१०ऐचिखिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

७५ इखु ( इङ्ख् ) गतौ ।

१इञ्चिखिष–ति तः न्ति सि थः थ इञ्चिखिषा-मि वः मः
२ इञ्चिखिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् वम
३ इञ्चिखिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
इञ्चिखिषा–णि व म
४ऐञ्चिखिष–त ताम् न् : तम् त म् ऐञ्चिखिषा–व म
५ ऐञ्चिखि–षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
इञ्चिखिषाञ्च-कार कतुःकुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
इञ्चिखिषाम्बभूव इञ्चिखिषामास
७ इञ्चिखिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ इञ्चिखिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९इञ्चिखिषिष्य-तितः न्तिसि थः थ इञ्चिखिषिष्या-मि
वः मः (ऐञ्चिखिषिष्या–व म
१०ऐञ्चिखिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
७६ ईखु (ईङ्ख्) गतौ । इखु ७५ वद्रूपाणि
। नवरं इस्थाने ईबोध्यः ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७७ वल्ग ( वल्ग् ) गतौ ।

१ विवल्गिष-ति तः न्ति सि थः थ विवल्गिषा-मि वः म
२ विवल्गिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवल्गिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवल्गिषा-णि व म
४ अविवल्गिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवल्गिषा-व म
५ अविवल्गि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवल्गिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवल्गिषाञ्चकार विवल्गिषामास
७ विवल्गिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवल्गिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवल्गिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवल्गिषिष्या-
मि वः मः (अविवल्गिषिष्य:-व म
१० अविवल्गिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ७८ रगु ( रङ्ग् ) गतौ ।

१ रिरङ्गिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्गिषा-मि वः मः
२ रिरङ्गिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरङ्गिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरङ्गिषा-णि व म
४ अरिरङ्गिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरङ्गिषा-व म
५ अरिरङ्गि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरङ्गिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रिरङ्गिषाम्बभूव रिरङ्गिषामास
७ रिरङ्गिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरङ्गिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरङ्गिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्गिषिष्या-
मि वः मः (अरिरङ्गिषिष्या-व म
१० अरिरङ्गिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ७९ लगु ( लङ्ग् ) गतौ ।

१ लिलङ्गिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्गिषा-मि वः मः
२ लिलङ्गिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ लिलङ्गिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलङ्गिषा-णि व म
४ अलिलङ्गिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलङ्गिषा-व म
५ अलिलङ्गि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलङ्गिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलङ्गिषाञ्चकार लिलङ्गिषाम्बभूव
७ लिलङ्गिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलङ्गिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलङ्गिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्गिषिष्या-मि
वः मः (अलिलङ्गिषिष्या-व म
१० अलिलङ्गिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ८० तगु ( तङ्ग् ) गतौ ।

१ तितङ्गिष-ति तः न्ति सि थः थ तितङ्गिषा-मि वः मः
२ तितङ्गिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितङ्गिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितङ्गिषा-णि व म
४ अतितङ्गिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितङ्गिषा-व म
५ अतितङ्गि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितङ्गिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तितङ्गिषाम्बभूव तितङ्गिषामास
७ तितङ्गिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितङ्गिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितङ्गिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितङ्गिषिष्या-मि
वः मः (अतितङ्गिषिष्या-व म
१० अतितङ्गिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



८१ अगु ( अङ्ग् ) गतौ ।

१ शिश्रङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रङ्क्षिषा-मि वः म
२ शिश्रङ्क्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्रङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रङ्क्षिषा-णि व म
४ अशिश्रङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रङ्क्षिषा-व म
५ अशिश्रङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्रङ्क्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्रङ्क्षिषाञ्चकार शिश्रङ्क्षिषामास
७ शिश्रङ्क्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रङ्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रङ्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रङ्क्षिषिष्या-
मि वः मः (अशिश्रङ्क्षिषिष्या-व म
१० अशिश्रङ्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

८२ श्लगु ( श्लङ्ग् ) गतौ ।

१ शिश्लङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्लङ्क्षिषा-मि वः मः
२ शिश्लङ्क्षिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ शिश्लङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्लङ्क्षिषा--णि व म
४ अशिश्लङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्लङ्क्षिषा-वम
५ अशिश्लङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्लङ्क्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिश्लङ्क्षिषाञ्चकार शिश्लङ्क्षिषाम्बभूव
७ शिश्लङ्क्षिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्लङ्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्लङ्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्लङ्क्षिषिष्या
मि वः मः ( अशिश्लङ्क्षिषिष्या-व म
१० अशिश्लङ्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

८३ अगु ( अङ्ग् ) गतौ ।

१ अञ्जिगिष-ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिगिषा-मि वः मः
२ अञ्जिगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अञ्जिगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्जिगिषा--णि व म
४ आञ्जिगिष-त् ताम् न् : तम् त म् आञ्जिगिषा-व म
५ आञ्जिगि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अञ्जिगिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
अञ्जिगिषाम्बभूव अञ्जिगिषामास
७ अञ्जिगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्जिगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अञ्जिगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिगिषिष्या-
मि वः मः (आञ्जिगिषिष्या-व म
१० आञ्जिगिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

८४ वगु ( वङ्ग् ) गतौ ।

१ विवङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ विवङ्क्षिषा-मि वः मः
२ विवङ्क्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवङ्क्षिषा-णि व म
४ अविवङ्क्षिष-त ताम् न् : तम् त म् अविवङ्क्षिषा-व म
५ अविवङ्क्षि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवङ्क्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विवङ्क्षिषाम्बभूव विवङ्क्षिषामास
७ विवङ्क्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवङ्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवङ्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवङ्क्षिषिष्या-मि
वः मः ( अविवङ्क्षिषिष्या-व म
१० अविवङ्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८५ मगु ( मङ्ग् ) गतौ ।

१ मिमङ्क्षिष–ति तः न्ति सि थः थ मिमङ्क्षिषा-मि वः मः
२ मिमङ्क्षिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमङ्क्षिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त मिमङ्क्षिषा–णि व म
४ अमिमङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमङ्क्षिषा–व म
५ अमिमङ्क्षि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमङ्क्षिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमङ्क्षिषाञ्चक्रे मिमङ्क्षिषाम्बभूव
७ मिमङ्क्षिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमङ्क्षिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमङ्क्षिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिमङ्क्षिषिष्या–मि वः मः ( अमिमङ्क्षिषिष्या–व म
१० अमिमङ्क्षिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ८६ स्वगु ( स्वङ्ग् ) गतौ ।

१ सिस्वङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्वङ्क्षिषा-मि वः मः
२ सिस्वङ्क्षिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्वङ्क्षिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त सिस्वङ्क्षिषा–णि व म
४ असिस्वङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त त असिस्वङ्क्षिषा-वम
४ असिस्वङ्क्षि–षीत् षिष्टा षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ सिस्वङ्क्षिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे सिस्वङ्क्षिषाम्बभूव सिस्वङ्क्षिषामास
७ सिस्वङ्क्षिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्वङ्क्षिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्वङ्क्षिषिष्य–ति तः न्ति सि थ. थ सिस्वङ्क्षिषिष्या–मि वः मः (असिस्वङ्क्षिष्या–व म
१० असिस्वङ्क्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
कार, कतुः, कु, कर्थ, कथुः, क, कार, कर, कृव, कृम

### ८७ इगु ( इङ्ग् ) गतौ ।

१ इञ्जिगिष–ति तः न्ति सि थः थ इञ्जिगिषा–मि वः मः
२ इञ्जिगिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ इञ्जिगिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त इञ्जिगिषा–णि व म
४ ऐञ्जिगिष–त् ताम् न् : तम् त म् ऐञ्जिगिषा–व म
५ ऐञ्जिगि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टाम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ इञ्जिगिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे इञ्जिगिषाम्बभूव इञ्जिगिषामास
७ इञ्जिगिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ इञ्जिगिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ इञ्जिगिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ इञ्जिगिषिष्या–मि वः मः ( ऐञ्जिगिषिष्या–व म
१० ऐञ्जिगिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
कार, कतुः, कुः, कर्थ, कथुः, क, कार, कर, कृव, कृम,

### ८८ उगु ( उङ्ग् ) गतौ ।

१ उञ्जिगिष–ति तः न्ति सि थः थ उञ्जिगिषा–मि वः मः
२ उञ्जिगिषे–त् ताम युः : तम त यम व म
३ उञ्जिगिष–तु तात ताम् न्तु ” तात् तम् त व म उञ्जिगिषा–णि व म
४ औञ्जिगिष-त् ताम् न् : तम् त म औञ्जिगिषा–
५ औञ्जिगि–षत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ उञ्जिगिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम उञ्जिगिषाञ्चक्रे उञ्जिगिषामास
७ उञ्जिगिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ उञ्जिगिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ उञ्जिगिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ उञ्जिषिष्या–मि वः मः ( औञ्जिगिषिष्या–व म
१० औञ्जिगिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



८९ रिगु [ रिङ्ग् ) गतौ ।

१ रिरङ्गिष–ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्गिषा–मि वः मः
२ रिरङ्गिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरङ्गिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरङ्गिषा–णि व म
४ अरिरङ्गिष–त् ताम् न् : तम् त म अरिरङ्गिषा–व म
५ अरिरङ्गि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरङ्गिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरङ्गिषाञ्चकार रिरङ्गिषामास
७ रिरङ्गिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरङ्गिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरङ्गिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्गिषिष्या–
मि वः मः ( अरिरङ्गिषिष्या–व म
१०अरिरङ्गिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त

९० लिगु ( लिङ्ग् ) गतौ ।

१लिलङ्गिष–ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्गिषा–मि वः मः
२ लिलङ्गिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलङ्गिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलङ्गिषा–णि व म
४अलिलङ्गिष–त् ताम् न् : तम् त म् अलिलषा–व म
५ अलिलङ्गि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६लिलङ्गिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
लिलङ्गिषाम्बभूव लिलङ्गिषामास
७ लिलङ्गिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलङ्गिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलङ्गिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्गिषिष्या–
मि वः मः (अलिलङ्गिषिष्या–व म
१०अलिलङ्गिषिष्य–त् : ताम् न् तम् त म्

९१ त्वगु ( त्वङ्ग् ) कम्पने च ।

१तित्वङ्गिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्वङ्गिषा-मि वः मः
२ तित्वङ्गिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्वङ्गिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म तित्वङ्गिषा-णि व म
४ अतित्वङ्गिष–त् ताम् न् : तम् तम् अतित्वङ्गिषा–
५ अतित्वङ्गि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६तित्वङ्गिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तित्वङ्गिषाञ्चकार तित्वङ्गिषाम्बभूव
७ तित्वङ्गिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्वङ्गिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्वङ्गिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तित्वङ्गिषि
ष्या-मि वः मः ( अतित्वङ्गिषिष्या-व म
१०अतित्वङ्गिषिष्य–त् ताम् न् : तम् तम्

९२ युगु ( युङ्ग् ) वर्जने ।

१युयुङ्गिष-तितःन्ति सि थः थ युयुङ्गिषा-मिवः मः
२ युयुङ्गिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ युयुङ्गिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म युयुङ्गिषा–णि व म
४अयुयुङ्गिष त् ताम् न् : तम् तम् अयुयुङ्गिषा–
५अयुयुङ्गि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ युयुङ्गिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
युयुङ्गिषाञ्चकार युयुङ्गिषामास
७ युयुङ्गिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयुङ्गिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ युयुङ्गिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ युयुङ्गिषि
ष्या–मि वः मः (अयुयुङ्गिषिष्या–व म
१०अयुयुङ्गिषिष्य–त् : ताम् न् तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९३ जुगु [ जुङ्ग् ) वर्जने ।

१ जुजुङ्गिष–ति तः न्ति सि थः थ जुजुङ्गिषा–मि वः मः
२ जुजुङ्गिषे–त् ताम युः : तम त यम् व म
३ जुजुङ्गिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुजुङ्गिषा–णि व म
४ अजुजुङ्गिष–त् ताम् न्ः तम् त म अजुजुङ्गषा–व म
५ अजुजुङ्गि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुजुङ्गिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुजुङ्गिषाञ्चकार जुजुङ्गिषामास
७ जुजुङ्गिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ जुजुङ्गिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुजुङ्गिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुजुङ्गिषिष्या–
मि व. मः ( अजुजुङ्गिषिष्या–व म
१० अजुजुङ्गिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त

### ९४ वुगु ( वुङ्ग् ) वर्जने ।

१ वुवुङ्गिष–ति तः न्ति सि थः थ वुवुङ्गिषा–मि वः मः
२ वुवुङ्गिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ वुवुङ्गिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
वुवुङ्गिषा–णि व म
४ अवुवुङ्गिष–त् ताम् न् : तम् त म् अवुवुषा–व म
५ अवुवुङ्गि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ वुवुङ्गिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
वुवुङ्गिषाम्बभूव वुवुङ्गिषामास
७ वुवुङ्गिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ वुवुङ्गिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ वुवुङ्गिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ वुवुङ्गिषिष्या–
मि वः मः (अवुवुङ्गिषिष्या–व म
१० अवुवङ्गिषिष्य–त् : ताम् न् तम् त म्

### ९५ गग्घ ( गग्घ् ) हसने ।

१ जिगग्घिष–ति तः न्ति सि थः थ जिगग्घिषा–मि वः मः
२ जिगग्घिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगग्घिष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
व म जिगग्घिषा–णि व म
४ अजिगग्घिष–त् ताम् न्ः तम् तम् अजिगग्घिषा–
५ अजिगग्घि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगग्घिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिगग्घिषाञ्चकार जिगग्घिषाम्बभूव
७ जिगग्घिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगग्घिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगग्घिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिगग्घिषि
ष्या–मि वः मः ( अजिगग्घिषिष्या–व म
१० अजिगग्घिषिष्य–त् ताम् न् : तम् तम्

### ९६ दघु ( दङ्घ् ) पालने ।

१ दिदङ्घिष–ति तः न्ति सि थः थ दिदङ्घिषा–मि वः मः
२ दिदङ्घिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदङ्घिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म दिदङ्घिषा–णि व म
४ अदिदङ्घिष–त् ताम् न् : तम् तम् अदिदङ्घिषा–
५ अदिदङ्घि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदङ्घिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिदङ्घिषाञ्चकार दिदङ्घिषामास
७ दिदङ्घिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदङ्घिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदङ्घिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दि ङ्घिषि
ष्या–मि वः मः (अदिदङ्घिषिष्या–व म
१० अदिदङ्घिषिष्य–त् : ताम् न् तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९७ शिघु ( शिङ्घ् ) आघ्राणे ।

१ शिशिङ्घिषतितःन्तिसिथःथशिशिङ्घिषामिवःमः
२ शिशिङ्घिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशिङ्घिष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
षा–व म शिशिङ्घिषा-णि व म
४ अशिशिङ्घिष–त् ताम् न् : तम् तम् अशिशिङ्घि
५ अशिशिङ्घि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशिङ्घिषामा-स सतुः सुः सिथ सथु स स सिव सिम
शिशिङ्घिषाञ्चकार शिशिङ्घिषाम्बभूव
७ शिशिङ्घिष्या–त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशिङ्घिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्म
९ शिशिङ्घिषिष्य–तितःन्ति सिथःथ शिशिङ्घिषिष्या-मि वः मः (अशिशिङ्घिषिष्या-व म
१० अशिशिङ्घिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ९९ शुच [ शुच् ] शोके ।

१ शुशुचिष–ति तः न्ति सि थः थ शुशुचिषा–मि वः मः
२ शुशुचिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुचिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुचिषा–णि व म
४ अशुशुचिष–त् ताम् नः तम् त म अशुशुचिषा–व म
५ अशुशुचि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशुचिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शुशुचिषाञ्चकार शुशुचिषामास
७ शुशुचिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुचिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशुचिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ शुशुचिषिष्या–मि वः मः ( अशुशुचिषिष्या–व म
१० अशुशुचिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त
पक्षे सर्वत्र शुशुचि–स्थाने शुशोचि-इतिबोध्यम्

### ९८ लघु ( लङ्घ् ) शोषणे ।

१ लिलङ्घिष-तितःन्ति सि थः थलिलङ्घिषा मिवःमः
२ लिलङ्घिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलङ्घिष–तु तात् ताम् न्तु ' तात् तम् त
व म लिलङ्घिषा–णि व म
४ अलिलङ्घिष त् ताम् न् : तम् तम् अलिलङ्घिषा
५ अलिलङ्घि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलङ्घिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलङ्घिषाञ्चकार लिलङ्घिषामास
७ लिलङ्घिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलङ्घिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलङ्घिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्घिषिष्या–मि वः मः ( अलिलङ्घिषिष्या–व म
१० अलिलङ्घिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १०० कुच ( कुच् ) शब्दे तारे ।

१ चुकुचिष–ति तः न्ति सि थः थ चुकुचिषा–मि वः मः
२ चुकुचिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुचिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुचिषा–णि व म
४ अचुकुचिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुचिषा–व म
५ अचुकुचि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुचिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चुकुचिषाम्बभूव चुकुचिषामास
७ चुकुचिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुचिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुचिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुकुचिषिष्या–मि वः मः (अचुकुचिषिष्या–व म
१० अचुकुचिषिष्य–त् : ताम् न् तम् त म्
पक्षे सर्वत्र चुकुचिस्थाने चुकोचि–इतिज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १०१ कुञ्च (कुञ्च्) गतौ ।

१ चुकुञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुञ्चिषा-मि वः मः
२ चुकुञ्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुञ्चिषा-णि व म
४ अचुकुञ्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुञ्चिषा-व म
५ अचुकुञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुञ्चिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकुञ्चिषाञ्चकार चुकुञ्चिषामास
७ चुकुञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुञ्चिषिष्या-
मि वः मः (अचुकुञ्चिषिष्या-व म
१० अचुकुञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०३ लुञ्च (लुञ्च्) अपनयने ।

१ लुलुञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुञ्चिषा-मि वः मः
२ लुलुञ्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलुञ्चिषा-णि व म
४ अलुलुञ्चिष-त ताम् न् : तम् त म् अलुलुञ्चिषा-व म
५ अलुलुञ्चि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलुञ्चिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
लुलुञ्चिषाम्बभूव लुलुञ्चिषामास
७ लुलुञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलुञ्चिषिष्या-मि
वः मः (अलुलुञ्चिषिष्या-व म
१० अलुलुञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०२ कुञ्च (कुञ्च्) च कौटिल्याल्पीभावयोः ।

१ चुकुञ्चिष ति तः न्ति सि थः थ चुकुञ्चिषा-मि वः मः
२ चुकुञ्चिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चुकुञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुञ्चिषा-णि व म
४ अचुकुञ्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुञ्चिषा-वम
५ अचुकुञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुञ्चिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुकुञ्चिषाञ्चकार चुकुञ्चिषाम्बभूव
७ चुकुञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुञ्चिषिष्या
मि वः मः (अचुकुञ्चिषिष्या-व म
१० अचुकुञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०४ अर्च (अर्च्) पूजायाम् ।

१ अर्चिचिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्चिचिषा-मि वः मः
२ अर्चिचिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अर्चिचिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्चिचिषा-णि व म
४ आर्चिचिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्चिचिषा-व म
५ आर्चिचि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्चिचिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
अर्चिचिषाम्बभूव अर्चिचिषामास
७ अर्चिचिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्चिचिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्चिचिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्चिचिषिष्या-
मि वः मः (आर्चिचिषिष्या-व म
१० आर्चिचिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १०५ अञ्चू ( अञ्च् ) गतौ च ।

१अञ्चिचिष-ति तः न्ति सि थः थ अञ्चिचिषा-मि वः मः
२ अञ्चिचिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अञ्चिचिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्चिचिषा--णि व म
४आञ्चिचिष-त् ताम् न् : तम् त म् आञ्चिचिषा-व म
५आञ्चिचि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६अञ्चिचिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
अञ्चिचिषाम्बभूव अञ्चिचिषामास
७अञ्चिचिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्चिचिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९अञ्चिचिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अञ्चिचिषिष्या
-मि वः मः (आञ्चिचिषिष्या-व म
१०आञ्चिचिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०६ वञ्चू ( वञ्च् ) गतौ ।

१विवञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ विवञ्चिषा-मि वः मः
२ विवञ्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवञ्चिषा-णि व म
४अविवञ्चिष-त ताम् न् : तम् त म् अविवञ्चिषा-व म
५ अविवञ्चि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६विवञ्चिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विवञ्चिषाम्बभूव विवञ्चिषामास
७ विवञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवञ्चिषिष्या-
मि वः मः (अविवञ्चिषिष्या-व म
१०अविवञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०७ चञ्चू ( चञ्च् ) गतौ ।

१चिचञ्चिष ति तः न्ति सि थः थ चिचञ्चिषा-मि वः मः
२ चिचञ्चिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चिचञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचञ्चिषा--णि व म
४अचिचञ्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचञ्चिषा-व म
५ अचिचञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचञ्चिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचञ्चिषाञ्चकार चिचञ्चिषाम्बभूव
७ चिचञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिचञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचञ्चिषिष्या-
मि वः मः (अचिचञ्चिषिष्या-व म
१०अचिचञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०८ तञ्चू ( तञ्च् ) गतौ ।

१तितञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ तितञ्चिषा-मि वः मः
२ तितञ्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितञ्चिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
तितञ्चिषा-णि व म
४अतितञ्चिष-त ताम् न् : तम् त म् अतितञ्चिषा-व म
५ अतितञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितञ्चिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितञ्चिषाञ्चकार तितञ्चिषामास
७ तितञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तितञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितञ्चिषिष्या-
मि वः मः (अतितञ्चिषिष्या-व म
१०अतितञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १०९ त्वञ्चू ( त्वञ्च् ) गतौ ।

१ तित्वञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्वञ्चिषा-मि वः मः
२ तित्वञ्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्वञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म तित्वञ्चिषा-णि व म
४ अतित्वञ्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतित्वञ्चिषा-
५ अतित्वञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तित्वञ्चिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम तित्वञ्चिषाञ्चकार तित्वञ्चिषामास
७ तित्वञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्वञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्वञ्चिषिष्यति तः न्ति सि थः थ तित्वञ्चिषिष्या-मि वः मः (अतित्वञ्चिषिष्या-व म
१० अतित्वञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ११० मञ्चू ( मञ्च् ) गतौ ।

१ मिमञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमञ्चिषा-मि वः मः
२ मिमञ्चिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ मिमञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमञ्चिषा--णि व म
४ अमिमञ्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमञ्चिषा-वम
५ अमिमञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमञ्चिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमञ्चिषाञ्चकार मिमञ्चिषाम्बभूव
७ मिमञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमञ्चिषिष्या-मि वः मः (अमिमञ्चिषिष्या-व म
१० अमिमञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १११ मुञ्चू ( मुञ्च् ) गतौ ।

१ मुमुञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमुञ्चिषा-मि वः मः
२ मुमुञ्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मुमुञ्चिषा-णि व म
४ अमुमुञ्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुञ्चिषा-व म
५ अमुमुञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मुमुञ्चिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम मुमुञ्चिषाम्बभूव मुमुञ्चिषामास
७ मुमुञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुञ्चिषिष्या-मि वः मः (अमुमुञ्चिषिष्या-व म
१० अमुमुञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ११२ म्रुञ्चू ( म्रुञ्च् ) गतौ ।

१ मुम्रुञ्चिष-ति तः न्ति सि थः थ मुम्रुञ्चिषा-मि वः मः
२ मुम्रुञ्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुम्रुञ्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मुम्रुञ्चिषा--णि व म
४ अमुम्रुञ्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुम्रुञ्चिषा-व म
५ अमुम्रुञ्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मुम्रुञ्चिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम मुम्रुञ्चिषाम्बभूव मुम्रुञ्चिषामास
७ मुम्रुञ्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुम्रुञ्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुम्रुञ्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुम्रुञ्चिषिष्या-मि वः मः (अमुम्रुञ्चिषिष्या-व म
१० अमुम्रुञ्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११३ म्रुचू ( म्रुच् ) गतौ ।

१ मुम्रुचिष–ति तः न्ति सि थः थ मुम्रुचिषा–मि वः मः
२ मुम्रुचिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुम्रुचिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुम्रुचिषा–णि व म
४ अमुम्रुचिष–त् ताम् न् : तम् त म् अमुम्रुचिषा–व म
५ अमुम्रुचि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुम्रुचिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुम्रुचिषाञ्चक्रे मुम्रुचिषामास
७ मुम्रुचिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुम्रुचिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व. स्मः
९ मुम्रुचिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मुम्रुचिषिष्या–मि वः मः (अमुम्रुचिषिष्या–व म
१०अमुम्रुचिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे सर्वत्र मुम्रुचिस्थाने मुम्रोचि–इति ज्ञेयम्

११४ म्लुचू ( म्लुच् ) गतौ ।

१मुम्लुचिष–ति तः न्ति सि थः थ मुम्लुचिषा–मि वः मः
२ मुम्लुचिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुम्लुचिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुम्लुचिषा–णि व म
४अमुम्लुचिष–त् ताम् न् : तम् त म अमुम्लुचिषा–व म
५ अमुम्लुचि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६मुम्लुचिषाञ्च–क्र क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रक्रृ वहे कृमहे
मुम्लुचिषामास मुम्लुचिषाम्बभूव
७ मुम्लुचिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुम्लुचिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९मुम्लुचिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मुम्लुचिषिष्या–मि वः म (अमुम्लुचिषिष्या–व म
१०अमुम्लुचिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे सर्वत्र मुम्लुचिस्थाने मुम्लोचि–इतिज्ञेयम्

११५ ग्लुञ्चू ( ग्लुञ्च् ) गतौ ।

१जुग्लुञ्चिष–ति तः न्ति सि थः थ जुग्लुञ्चिषा–मि वः मः
२ जुग्लुञ्चिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुग्लुञ्चिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुग्लुञ्चिषा–णि व म
४अजुग्लुञ्चिष–त् ताम न् : तम् त म् अजुग्लुञ्चिषा–व म
५ अजुग्लुञ्चि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुग्लुञ्चिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुग्लुञ्चिषाञ्चक्रे जुग्लुञ्चिषाम्बभूव
७ जुग्लुञ्चिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुग्लुञ्चिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जुग्लुञ्चिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुग्लुञ्चिषिष्या–मि वः मः (अजुग्लुञ्चिषिष्या–व म
१०अजुग्लुञ्चिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

११६ षस्च ( सश्च् ) गतौ ।

१सिषश्चिष–ति तः न्ति सि थः थ सिषश्चिषा–मि वः मः
२ सिषश्चिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ सिषश्चिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिषश्चिषा–णि व म
४असिषश्चिष–त् ताम् न् : तम् त म् असिषश्चिषा–व व
५ असिषश्चि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिषश्चिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिषश्चिषामास सिषश्चिषाञ्चक्रे
७ सिषश्चिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिषश्चिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिषश्चिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सिषश्चिषिष्या–मि वः मः ( असिषश्चिषिष्या–व म
१०असिषश्चिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

कार, कतुः, क्रुः, कर्थ, कथुः, क, कारु, कर, कव, कम | सर्वत्र सिषस्थाने 'सिस' इति शुद्धम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११७ ग्रुचू ( ग्रुच् ) स्तेये ।

१ जुग्रुचिष–ति तः न्ति सि थः थ जुग्रुचिषा–मि वः मः
२ जुग्रुचिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुग्रुचिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुग्रुचिषा–णि व म
४ अजुग्रुचिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुग्रुचिषा–व म
५ अजुग्रुचि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुग्रुचिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
~~जुग्रुचिषाञ्चके~~ जुग्रुचिषामास
७ जुग्रुचिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुग्रुचिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुग्रुचिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुग्रुचिषिष्या-मि
वः मः (अजुग्रुचिषिष्या–व म
१०अजुग्रुचिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे सर्वत्र जुग्रुचिस्थाने जुग्रोचि–इति ज्ञेयम्
*जुग्रुचिषाञ्चकार,

### ११८ ग्लुचू ( ग्लुच् ) स्तेये ।

१जुग्लुचिष–ति तः न्ति सि थः थ जुग्लुचिषा-मि वः मः
२ जुग्लुचिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुग्लुचिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुग्लुचिषा–णि व म
४अजुग्लुचिष-त् ताम न् : तम् त म् अजुग्लुचिषा व म
५ अजुग्लुचि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुग्लुचिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
~~जुग्लुचिषाञ्चके~~ जुग्लुचिषाम्बभूव
७ जुग्लुचिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुग्लुचिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जुग्लुचिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ जुग्लुचिषिष्या–
–मि वः मः (अजुग्लुचिषिष्या–व म
१०अजुग्लुचिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे सर्वत्र जुग्लुचिस्थाने जुग्लोचि–इति ज्ञेयम्

*जुग्लुचिषाञ्चकार;

### ११९ म्लेछ ( म्लेछ् ) अव्यक्तायां वाचि ।

१मिम्लेच्छिष–ति तः न्ति सि थः थ मिम्लेच्छिषा–
मि वः मः
२ मिम्लेच्छिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिम्लेच्छिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
षा–व म मिम्लेच्छिषा–णि व म
४ अमिम्लेच्छिष–त् ताम् न् : तम् त म अमिम्लेच्छि-
५अमिम्लेच्छि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
ष्म षिष्व षिष्म
६ मिम्लेच्छिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
मिम्लेच्छिषामास मिम्लेच्छिषाम्बभूव
७मिम्लेच्छिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८मिम्लेच्छिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९मिम्लेच्छिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिम्लेच्छि-
षिष्या–मि वः म (अमिम्लेच्छिषिष्या–व म
१०अमिम्लेच्छिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १२० लछ ( लच्छ् ) लक्षणे ।

१लिलच्छिष-ति तः न्ति सिथः थ लिलच्छिषा-मि वः मः
२ लिलच्छिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलच्छिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
षा–व म लिलच्छिषा-णि व म
४अलिलच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलच्छि
५अलिलच्छि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
ष्म षिष्व षिष्म
६लिलच्छिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलच्छिषाम्बभूव लिलच्छिषामास
७लिलच्छिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८लिलच्छिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलच्छिषि-
ष्या–मि वः मः (अलिलच्छिषिष्या–व म
१०अलिलच्छिषिष्य–त् : ताम् न् तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२१ लाछु ( लाञ्छ ) लक्षणे ।

१ लिलाञ्छिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलाञ्छिषा-मि वः मः
२ लिलाञ्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलाञ्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त षा-व म लिलाञ्छिषा-णि व म
४अलिलाञ्छिष-त ताम् न् : तम् त म् अलिलाञ्छि-
५अलिलाञ्छि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् ष्व ष्म षिष्व षिष्म
६ लिलाञ्छिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर लिलाञ्छिषाम्बभूव लिलाञ्छिषामास
७लिलाञ्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८लिलाञ्छिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलाञ्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलाञ्छिषिष्या-मि वः मः (अलिलाञ्छिषिष्या-व म
१०अलिलाञ्छिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२२ वाछु ( वाञ्छ् ) इच्छायाम् ।

१ विवाञ्छिष-ति तः न्ति सि थः थ विवाञ्छिषा-मि वः मः
२विवाञ्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३विवाञ्छिष-तु तात् ताम् न्तु "तात् तम् त षा-व म विवाञ्छिषा--णि व म
४अविवाञ्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवाञ्छि-
५अविवाञ्छि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् ष्व ष्म षिष्व षिष्म
६ विवाञ्छिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर विवाञ्छिषाम्बभूव विवाञ्छिषामास
७विवाञ्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८विवाञ्छिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवाञ्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवाञ्छिषिष्या-मि वः मः (अविवाञ्छिषिष्या-व म
१०अविवाञ्छिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२३ आछु ( आञ्छ् ) आयामे ।

१आञ्चिच्छिष-ति तः न्ति सि थः थ आञ्चिच्छिषा-मि वः मः
२ आञ्चिच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ आञ्चिच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त षा-व म आञ्चिच्छिषा-णि व म
४ आञ्चिच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् आञ्चिच्छि
५ आञ्चिच्छि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् ष्म षिष्व षिष्म
६आञ्चिच्छिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर क्रव आञ्चिच्छिषाम्बभूव आञ्चिच्छिषामास
७आञ्चिच्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८आञ्चिच्छिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९आञ्चिच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ आञ्चिच्छिषिष्या-मि वः मः (आञ्चिच्छिषिष्या-व म
१०आञ्चिच्छिषिष्य-त् : ताम् न् तम् त म्

१२४ ह्रीछ ( ह्रीच्छ् ) लज्जायाम् ।

१ जिह्रीच्छिष-ति तः न्ति सि थः थ जिह्रीच्छिषा-मि वः मः
२ जिह्रीच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्रीच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त षा-व म जिह्रीच्छिषा-णि व म
४ अजिह्रीच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् अह्रीजिच्छि-
५अजिह्रीच्छि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् ष्म षिष्व षिष्म
६जिह्रीच्छिषाञ्च-कार क्रतुः क्रु कर्थ क्रथुः क्र कार कर क्रव जिह्रीच्छिषामास जिह्रीच्छिषाम्बभूव
७जिह्रीच्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८जिह्रीच्छिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्रीच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्रीच्छिषिष्या-मि वः म. (अजिह्रीच्छिषिष्या-व म
१०अजिह्रीच्छिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२५ हुर्छा ( हूर्छ् ) कौटिल्ये ।

१ जुहूर्छिष–ति तः न्ति सि थः थ जुहूर्छिषा–मि वः मः
२ जुहूर्छिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुहूर्छिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जुहूर्छिषा–णि व म
४ अजुहूर्छिष–त ताम् न् : तम् त म् अजुहूर्छिषा–व म
५ अजुहूर्छि–षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जुहूर्छिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम जुहूर्छिषाम्बभूव जुहूर्छिषामास
७ जुहूर्छिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ जुहूर्छिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहूर्छिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुहूर्छिषिष्या–मि वः मः (अजुहूर्छिषिष्या–व म
१० अजुहूर्छिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १२७ स्फुर्छा ( स्फूर्छ् ) विस्मृतौ ।

१ पुस्फूर्छिष–ति तः न्ति सि थः थ पुस्फूर्छिषा–मि वः मः
२ पुस्फूर्छिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुस्फूर्छिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त षा–व म पुस्फूर्छिषा–णि व म
४ अपुस्फूर्छिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुस्फूर्छि
५ अपुस्फूर्छि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पुस्फूर्छिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम पुस्फूर्छिषाम्बभूव पुस्फूर्छिषामास
७ पुस्फूर्छिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुस्फूर्छिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुस्फूर्छिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुस्फूर्छिषिष्या–मि वः मः (अपुस्फूर्छिषिष्या–व म
१० अपुस्फूर्छिषिष्य–त् : ताम् न् तम् त म्

## १२६ मुर्छा ( मूर्छ् ) मोहसमुच्छ्राययोः ।

१ मुमूर्छिष ति तः न्ति सि थः थ मुमूर्छिषा मि वः मः
२ मुमूर्छिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमूर्छिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मुमूर्छिषा–णि व म
४ अमुमूर्छिष–त् ताम् न् : तम् त म् अमुमूर्छिषा–व म
५ अमुमूर्छि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मुमूर्छिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम मुमूर्छिषाम्बभूव मुमूर्छिषामास
७ मुमूर्छिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमूर्छिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमूर्छिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मुमूर्छिषिष्या–मि वः मः (अमुमूर्छिषिष्या–व म
१० अमुमूर्छिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १२४ स्मुर्छा ( स्मूर्छ् ) विस्मृतौ ।

१ सुस्मूर्छिष–ति तः न्ति सि थ थ सुस्मूर्छिषा–मि वः मः
२ सुस्मूर्छिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुस्मूर्छिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म सुस्मूर्छिषा–णि व म
४ असुस्मूर्छिष–त् ताम् न् : तम् त म् असुस्मूर्छिषा–
५ असुस्मूर्छि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ सुस्मूर्छिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव सुस्मूर्छिषामास सुस्मूर्छिषाम्बभूव
७ सुस्मूर्छिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुस्मूर्छिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुस्मूर्छिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सुस्मूर्छिषिष्या–मि वः म (असुस्मूर्छिषिष्या–व म
१० असुस्मूर्छिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२९ युछ ( युच्छ् ) प्रमादे ।

१ युयुच्छिष-ति तः न्ति सि थः थ युयुच्छिषा-मि वः मः
२ युयुच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ युयुच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त युयुच्छिषा-णि व म
४ अयुयुच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म अयुयुच्छिषा-व म
५ अयुयुच्छि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् ष्व ष्म
६ युयुच्छिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम युयुच्छिषामास युयुच्छिषाम्बभूव
७ युयुच्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयुच्छिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ युयुच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ युयुच्छिषिष्या-मि वः मः ( अयुयुच्छिषिष्या-व म
१० अयुयुच्छिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १३० धृज ( धृज् ) गतौ ।

१ दिधर्जिष ति तः न्ति सि थः थ दिधर्जिषा-मि वः मः
२ दिधर्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधर्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दिधर्जिषा-णि व म
४ अदिधर्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिधर्जिषा-व म
५ अदिधर्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दिधर्जिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम दिधर्जिषाम्बभूव दिधर्जिषामास
७ दिधर्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधर्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधर्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधर्जिषिष्या-मि वः मः ( अदिधर्जिषिष्या-व म
१० अदिधर्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १३१ धृजु ( धृञ्ज् ) गतौ ।

१ दिधृञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ दिधृञ्जिषा-मि वः मः
२ दिधृञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधृञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दिधृञ्जिषा-णि व म
४ अदिधृञ्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिधृञ्जिषा-व म
५ अदिधृञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दिधृञ्जिषाञ्च कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम दिधृञ्जिषाम्बभूव दिधृञ्जिषामास
७ दिधृञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधृञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधृञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधृञ्जिषिष्या-मि वः मः (अदिधृञ्जिषिष्या-व म
१० अदिधृञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १३२ ध्वज ( ध्वज् ) गतौ ।

१ दिध्वजिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वजिषा-मि वः मः
२ दिध्वजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्वजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दिध्वजिषा-णि व म
४ अदिध्वजिष त ताम् न् : तम् त म् अदिध्वजिषा व म
५ अदिध्वजि-षीत षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दिध्वजिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम दिध्वजिषाम्बभूव दिध्वजिषामास
७ दिध्वजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ दिध्वजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्वजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वजिषिष्या मि वः मः (अदिध्वजिषिष्या-व म
१० अदिध्वजिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १३३ ध्वजु [ ध्वञ्ज् ) गतौ ।

१दिध्वञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वञ्जिषा मि वः मः
२ दिध्वञ्जिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ दिध्वञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिध्वञ्जिषा-णि व म
४अदिध्वञ्जिष-त् ताम् न्: तम् त म अदिध्वञ्जिषा-व म
५अदिध्वञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिध्वञ्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्वञ्जिषाञ्चकार दिध्वञ्जिषामास
७दिध्वञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८दिध्वञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिध्वञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वञ्जिषिष्या
मि वः मः (अदिध्वञ्जिषिष्या-व म
१०अदिध्वञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १३४ ध्रज ( ध्रज् ) गतौ ।

१दिध्रजिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्रजिषा-मि वः मः
२ दिध्रजिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ दिध्रजिष-तु तात् ताम् न्तु ' तात् तम् त
दिध्रजिषा-णि व म
४अदिध्रजिष-त् ताम् न्: तम् त म् अदिध्रजिषा व म
५ अदिध्रजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६दिध्रजिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्रजिषाञ्चकार दिध्रजिषामास
७दिध्रजिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८दिध्रजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिध्रजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्रजिषिष्या-मि
वः मः (अदिध्रजिषिष्या-व म
१०अदिध्रजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १३५ ध्रजु ( ध्रञ्ज् ) गतौ ।

१ दिध्रञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्रञ्जिषा-मि वः मः
२ दिध्रञ्जिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ दिध्रञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म दिध्रञ्जिषा-णि व म
४ अदिध्रञ्जिष-त् ताम् न्: तम् त म् अदिध्रञ्जिषा-
५ अदिध्रञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिध्रञ्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्रञ्जिषामास दिध्रञ्जिषाञ्चकार
७ दिध्रञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्रञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
दिध्रञ्जिषिष्य-ति त. न्ति सि थः थ दिध्रञ्जिषि-
ष्या-मि व. मः (अदिध्रञ्जिषिष्या-व म
१०अदिध्रञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १३६ वज ( वज् ) गतौ ।

१विवजिष-ति तः न्ति सि थः थ विवजिषा-मि वः मः
२ विवजिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ विवजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवजिषा-णि व म
४अविवजिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अविवजिषा-व म
५ अविवजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६विवजिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवजिषाञ्चकार विवजिषाम्बभूव
७ विवजिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवजिषि-
ष्या-मि वः मः ( अविवजिषिष्या-व म
१०अविवजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३७ व्रज ( व्रज् ) गतौ ।

१ विव्रजिष-ति तः न्ति सि थः थ विव्रजिषा-मि वः मः
२ विव्रजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विव्रजिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विव्रजिषा-णि व म
४ अविव्रजिष-त् ताम् न् : तम् तम् अविव्रजिषा-व म
५ अविव्रजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विव्रजिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विव्रजिषाञ्चकार विव्रजिषाम्बभूव
७ विव्रजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्रजिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्रजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विव्रजिषिष्यां-मि वः मः ( अविव्रजिषिष्या-व म
१० अविव्रजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् तम्

### १३८ षस्ज ( सज्ज् ) गतौ ।

१ सिसज्जिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसज्जिषा-मि वः मः
२ सिसज्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसज्जिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
सिसज्जिषा-णि व म
४ असिसज्जिष-त् ताम् न् : तम् त म असिज्जिषा-व म
५ असिसज्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसज्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसज्जिषामास सिसज्जिषाञ्चकार
७ सिसज्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसज्जिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसज्जिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ सिसज्जिषिष्या-मि वः मः (असिसज्जिषिष्या-व म
१० असिसज्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १३९ अज ( अज् ) क्षेपणे ।

१ विवीष-ति तः न्ति सि थः थ विवीषा-मि वः मः
२ विवीषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवीष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विवीषा-णि व म
४ अविवीष-त् ताम् न् : तम् तम् अविवीषा-व म
५ अविवी-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवीषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवीषाञ्चकार विवीषामास
७ विवीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवीषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवीषिष्या-मि वः मः (अविवीषिष्या-व म
१० अविवीषिष्य-त् : ताम् न् तम् त म्

### १४० कुजू [ कुज् ) स्तेये ।

१ चुकोजिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकोजिषा-मि वः म
२ चुकोजिषे-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ चुकोजिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
चुकोजिषा-णि व म
४ अचुकोजिष-त् ताम् न् : तम् त म अचुकोजिषा-व म
५ अचुकोजि-षीत् षिष्टाम् षिः षीषुः षिष्टम षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकोजिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथु व व विव विम
चुकोजिषाञ्चकार चुकोजिषामास
७ चुकोजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ चुकोजिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकोजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकोजिषिष्या-मि वः मः ( अचुकोजिषिष्या-व म
१० अचुकोजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त
पक्षे चुकोजि-स्थाने चुकुजि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १४१ खुजू [ खुज् ) स्तेये ।

१ चुखोजिष–ति तः न्ति सि थः थ चुखोजिषा–मि वः मः
२ चुखोजिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चुखोजिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुखोजिषा–णि व म
४ अचुखोजिष–त् ताम् न् ः तम् त म अचुखोजिषा–व म
५ अचुखोजि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुखोजिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुखोजिषाञ्चकार चुखोजिषामास
७ चुखोजिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुखोजिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुखोजिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुखोजिषिष्या–मि वः मः ( अचुखोजिषिष्या–व म
१० अचुखोजिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त
पक्षे चुखोजि-स्थाने चुखुजि-इति ज्ञेयम्

## १४२ अर्ज ( अर्ज् ) अर्जने ।

१ अर्जिजिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्जिजिषा-मि वः मः
२ अर्जिजिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ अर्जिजिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्जिजिषा-णि व म
४ आर्जिजिष–त् ताम् न् ः तम् तम् आर्जिजिषा–व म
५ आर्जिजि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्जिजिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अर्जिजिषाञ्चकार अर्जिजिषाम्बभूव
७ अर्जिजिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्जिजिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्जिजिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ अर्जिजिषिष्या–मि वः मः ( आर्जिजिषिष्या-व म
१० आर्जिजिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् तम्

## १४३ सर्ज ( सर्ज् ) अर्जने ।

१ सिसर्जिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसर्जिषा-मि वः मः
२ सिसर्जिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ सिसर्जिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसर्जिषा–णि व म
४ असिसर्जिष-त् ताम् न् ः तम् त म असिसर्जिषा-व व
५ असिसर्जि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसर्जिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसर्जिषामास सिसर्जिषाञ्चक्रे
७ सिसर्जिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसर्जिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसर्जिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सिसर्जिषिष्या–मि वः मः (असिसर्जिषिष्या–व म
१० असिसर्जिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

## १४४ कर्ज ( कर्ज् ) व्यथने ।

१ चिकर्जिष-तितःन्ति सि थः थ चिकर्जिषा-मिवः मः
२ चिकर्जिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चिकर्जिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चिकर्जिषा–णि व म
४ अचिकर्जिष-त् ताम् न् ः तम् तम् अचिकर्जिषा–
५ अचिकर्जि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकर्जिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकर्जिषाञ्चकार चिकर्जिषामास
७ चिकर्जिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकर्जिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकर्जिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिकर्जिषिष्या–मि वः मः ( अचिकर्जिषिष्या–व म
१० अचिकर्जिषिष्य–त् ः ताम् न् तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४५ खर्ज ( खर्ज् ) मार्जने च ।

१ चिखर्जिष–ति तः न्ति सि थः थ चिखर्जिषा–मि वः मः
२ चिखर्जिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखर्जिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिखर्जिषा–णि व म
४ अचिखर्जिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिखर्जिषा–व म
५ अचिखर्जि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिखर्जिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चिखर्जिषाञ्चक्रे चिखर्जिषाम्बभूव
७ चिखर्जिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखर्जिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखर्जिषिष्य–ति तः न्ति सि थ थ चिखर्जिषिष्या–मि वः मः ( अचिखर्जिषिष्या–व म
१० अचिखर्जिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
चिखर्जिषाञ्चकार

१४६ खज ( खज् ) मन्थे ।

१ चिखजिष–ति तः न्ति सि थः थ चिखजिषा–मि वः मः
२ चिखजिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखजिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिखजिषा–णि व म
४ अचिखजिष–त् ताम् न् : तम् त त अचिखजिषा–व म
५ अचिखजि–षीत् षिष्टा षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिखजिषाञ्च* क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे चिखजिषाम्बभूव चिखजिषामास
७ चिखजिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखजिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखजिषिष्य–ति तः न्ति सि थ. थ चिखजिषिष्या–मि वः मः (अचिखजिषिष्या–व म
१० अचिखजिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
*कार, क्रतुः, कु, कर्थ, क्रथुः, क, कार, कर, कृव, कृम }

१४७ खजु ( खञ्ज् ) गति वैकल्ये ।

१ चिखञ्जिष–ति तः न्ति सि थः थ चिखञ्जिषा–मि व मः
२ चिखञ्जिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखञ्जिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिखञ्जिषा–णि व म
४ अचिखञ्जिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिखञ्जिषा–
५ अचिखञ्जि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टाम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिखञ्जिषाञ्च* क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे चिखञ्जिषाम्बभूव चिखञ्जिषामास
७ चिखञ्जिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखञ्जिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखञ्जिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिखञ्जिषिष्या–मि वः मः ( अचखञ्जिषिष्या–व म
१० अचिखञ्जिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
*कार, क्रतुः, क्रुः, कर्थ, क्रथुः, क, कार, कर, कृव, कृम,

४१८ पजु ( पञ्ज् ) कम्पने ।

१ पजिजिष–ति तः न्ति सि थ. थ पजिजिषा–मि वः मः
२ पजिजिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पजिजिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म पजिजिषा–णि व म
४ अैजिजिष–त् ताम् न् : तम् त म अैजिजिषा–
५ अैजिजि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पजिजिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पजि* [illegible] पजिजिषामास
७ पजिजिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पजिजिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पजिजिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पजिजिषिष्या–मि वः मः ( अैजिजिषिष्या–व म
१० अैजिजिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
*पजिजिषाञ्चकार

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १४९ टुवो स्फूर्ज ( स्फूर्ज् ) वज्रनिर्घोषे

१पुस्फूर्जिष-ति तः न्ति सि थः थ पुस्फूर्जिषा-मि वः मः
२ पुस्फूर्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुस्फूर्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुस्फूर्जिषा-णि व म
४अपुस्फूर्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुस्फूर्जिषा-व म
५अपुस्फूर्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६पुस्फूर्जिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पुस्फूर्जिषाम्बभूब पुस्फूर्जिषामास
७ पुस्फूर्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुस्फूर्जिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९पुस्फूर्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुस्फूर्जिषिष्या-मि वः मः (अपुस्फूर्जिष्षा-व म
१०अपुस्फूर्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १५० क्षीज ( क्षीज् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१चिक्षीजिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षीजिषा-मि वः मः
२ चिक्षीजिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षीजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चिक्षीजिषा-णि व म
४ अचिक्षीजिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिक्षीजिषा
५ अचिक्षीजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षीजिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षीजिषाञ्चकार चिक्षीजिषामास
७ चिक्षीजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षीजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिक्षीजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षीजिषिष्या-मि वः मः (अचिक्षीजिषिष्या-व म
१०अचिक्षीजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १५१ कूज ( कूज् ) अव्यक्ते शब्दे

१चुकूजिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकूजिषा-मि वः मः
२ चुकूजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३चुकूजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकूजिषा-णि व म
४अचुकूजिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकूजिषा-व म
५ अचुकूजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकूजिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुकूजिषाञ्चकार चुकूजिषाम्बभूव
७ चुकूजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकूजिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चुकूजिषिष्य-ति तः न्ति सि थ थ चुकूजिषिष्या-मि वः मः ( अचुकूजिषिष्या-व म
१०अचुकूजिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

### १५२ गुज ( गुज् ) अव्यक्ते शब्दे

१ जुगुजिष-ति तः न्ति सि थः थ जुगुजिषा-मि वः मः
२ जुगुजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगुजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म जुगुजिषा-णि व म
४अजुगुजिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुगुजिषा-
५अजुगुजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगुजिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जुगुजिषाम्बभूव जुगुजिषामास
७ जुगुजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगुजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जुगुजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगुजिषिष्या-मि वः मः ( अजुगुजिषिष्या-व म
१०अजुगुजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

पक्षे जुगुजि-स्थाने जुगोजि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५३ गुजु ( गुञ्ज् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१जुगुञ्जिष ति तः न्ति सि थः थ जुगुञ्जिषा-मि वः मः
२ जुगुञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगुञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगुञ्जिषा-णि व म
४अजुगुञ्जिष-त ताम् न् : तम् त म् अजुगुञ्जिषा व म
५अजुगुञ्जि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६जुगुञ्जिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव कृम
जुगुञ्जिषाम्बभूव जुगुञ्जिषामास
७जुगुञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८जुगुञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगुञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगुञ्जिषिष्या
मि वः मः (अजुगुञ्जिषिष्या-व म
१०अजुगुञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५४ लज ( लज् ) भर्त्सने ।

१लिलजिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलजिषा-मि वः मः
२ लिलजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलजिषा-णि व म
४अलिलजिष-त् ताम् न् : तम् त म अलिलजिषा व म
५ अलिलजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ लिलजिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलजिषामास लिलजिषाम्बभूव
७ लिलजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलजिषिष्या
-मि वः म ( अलिलजिषिष्या-व म
१०अलिलजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५५ लजु ( लञ्ज् ) भर्त्सने ।

१लिलञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलञ्जिषा मि वः मः
२ लिलञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
षा-व म लिलञ्जिषा-णि व म
४अलिलञ्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलञ्जि-
५अलिलञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६लिलञ्जिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलञ्जिषाम्बभूव लिलञ्जिषामास
७ लिलञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलञ्जिषि-
ष्या-मि वः मः (अलिलञ्जिषिष्या-व म
१०अलिलञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५६ तर्ज ( तर्ज् ) भर्त्सने ।

१तितर्जिष ति तः न्ति सि थः थ तितर्जिषा-मि वः मः
२ तितर्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितर्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितर्जिषा--णि व म
४ अतितर्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितर्जिषा-व म
५ अतितर्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६तितर्जिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तितर्जिषाम्बभूव तितर्जिषामास
७ तितर्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तितर्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितर्जिषिष्या-
मि वः मः (अतितर्जिषिष्या-व म
१०अतितर्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५७ लाज ( लाज् ) भर्जने च ।

१ लिलाजिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलाजिषा-मि वः मः
२ लिलाजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलाजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलाजिषा-णि व म
४ अलिलाजिष-त् ताम् न् तम् त म अलिलाजिषा व म
५ अलिलाजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ लिलाजिषाश्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलाजिषामास लिलाजिषाम्बभूव
७ लिलाजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलाजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलाजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलाजिषिष्या-मि वः म ( अलिलाजिषिष्या-व म
१० अलिलाजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५८ लाजु ( लाञ्ज् ) भर्जने च ।

१ लिलाञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलाञ्जिषा मि वः मः
२ लिलाञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलाञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलाञ्जिषा-णि व म
४ अलिलाञ्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलाञ्जिषा-व म
५ अलिलाञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ लिलाञ्जिषाश्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलाञ्जिषाम्बभूव लिलाञ्जिषामास
७ लिलाञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलाञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलाञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलाञ्जिषिष्या-मि वः मः (अलिलाञ्जिषिष्या-व म
१० अलिलाञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५९ जज ( जज् ) युद्धे ।

१ जिजजिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजजिषा-मि वः मः
२ जिजजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजजिषा-णि व म
४ अजिजजिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजजिषा-व म
५ अजिजजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिजजिषाश्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिजजिषाम्बभूव जिजजिषामास
७ जिजजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजजिषिष्या-मि वः मः (अजिजजिषिष्या-व म
१० अजिजजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६० जजु ( जञ्ज् ) युद्धे ।

१ जिजञ्जिष ति तः न्ति सि थः थ जिजञ्जिषा-मि वः मः
२ जिजञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजञ्जिषा-णि व म
४ अजिजञ्जिष त् ताम् न् : तम् त म् अजिजञ्जिषा व म
५ अजिजञ्जि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिजञ्जिषाश्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिजञ्जिषाम्बभूव जिजञ्जिषामास
७ जिजञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजञ्जिषिष्या-मि वः मः (अजिजञ्जिषिष्या-व म
१० अजिजञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १६१ तुज ( तुज् ) हिंसायाम् ।

१ तुतुजिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतुजिषा-मि वः मः
२ तुतुजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुजिषा-णि व म
४ अतुतुजिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुजिषा-व म
५ अतुतुजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
ष्म षिष्व षिष्म
६ तुतुजिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
तुतुजिषामास तुतुजिषाम्बभूव
७ तुतुजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुजिषिष्या-
-मि वः म ( अतुतुजिषिष्या-व म
१० अतुतुजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तुतुजि-स्थाने तुतोति-इति ज्ञेयम्

## १६२ तुजु ( तुञ्ज् ) बलने च ।

१ तुतुञ्जिष ति तः न्ति सि थः थ तुतुञ्जिषा-मि वः मः
२ तुतुञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म तुतुञ्जिषा-णि व म
४ अतुतुञ्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुञ्जिषा
५ अतुतुञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुञ्जिषाञ्च कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
तुतुञ्जिषाम्बभूव तुतुञ्जिषामास
७ तुतुञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुञ्जिषिष्या
-मि वः मः (अतुतुञ्जिषिष्या-व म
१० अतुतुञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६३ गर्ज ( गर्ज् ) शब्दे ।

१ जिगर्जिष ति तः न्ति सि थः थ जिगर्जिषा मि वः मः
२ जिगर्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगर्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगर्जिषा--णि व म
४ अजिगर्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगर्जिषा-व म
५ अजिगर्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगर्जिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
जिगर्जिषाम्बभूव जिगर्जिषामास
७ जिगर्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगर्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगर्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्जिषिष्या-
मि वः मः (अजिगर्जिषिष्या-व म
१० अजिगर्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६४ गजु ( गञ्ज् ) शब्दे ।

१ जिगञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगञ्जिषा-मि वः मः
२ जिगञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगञ्जिषा-णि व म
४ अजिगञ्जिष त ताम् न् : तम् त म् अजिगञ्जिषा व म
५ अजिगञ्जि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगञ्जिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार करकृवकृम
जिगञ्जिषाम्बभूव जिगञ्जिषामास
७ जिगञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगञ्जिषिष्या
मि वः मः (अजिगञ्जिषिष्या-व म
१० अजिगञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

१६५ गृज ( गृज् ) शब्दे । गर्ज १६३ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १६६ गृञ्जु [ गृञ्ज् ) शब्दे ।

१ जिगृञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगृञ्जिषा मि वः मः
२ जिगृञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगृञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगृञ्जिषा-णि व म
४ अजिगृञ्जिष-त् ताम् न्: तम् त म अजिगृञ्जिषा-व म
५ अजिगृञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगृञ्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगृञ्जिषाञ्चकार जिगृञ्जिषामास
७ जिगृञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगृञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगृञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगृञ्जिषिष्या
मि वः मः (अजिञ्जिषिष्या-व म
१० अजिगृञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६८ मुञ्ज ( मुञ्ज् ) शब्दे ।

१ मुमुञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमुञ्जिषा-मि वः मः
२ मुमुञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमुञ्जिषा-णि व म
४ अमुमुञ्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुञ्जिषा-व म
५ अमुमुञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमुञ्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुमुञ्जिषाञ्चकार मुमुञ्जिषामास
७ मुमुञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुञ्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुञ्जिषिष्या-
मि वः मः (अमुमुञ्जिषिष्या-व म
१० अमुमुञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६७ मुज ( मुज् ) शब्दे ।

१ मुमुजिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमुजिषा-मि वः मः
२ मुमुजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमुजिषा-णि व म
४ अमुमुजिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुजिषा-व म
५ अमुमुजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमुजिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मुमुजिषाञ्चकार मुमुजिषाम्बभूव
७ मुमुजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ममुजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ ममुजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुजिषिष्या
-मि व. मः ( अमुमुजिषिष्या-व म
१० अमुमुजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६९ मृञ्जु ( मृञ्ज् ) शब्दे ।

१ मिमृञ्जिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमृञ्जिषा-मि वः मः
२ मिमृञ्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमृञ्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म मिमृञ्जिषा-णि व म
४ अमिमृञ्जिष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमृञ्जिषा-
५ अमिमृञ्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमृञ्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमृञ्जिषामास मिमृञ्जिषाञ्चकार
७ मिमृञ्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमृञ्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
मिमृञ्जिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ मिमृञ्जिषि-
ष्या-मि वः मः (अमिमृञ्जिषिष्या-व म
१० अमिमृञ्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

पक्षे मुमुजिस्थाने मुमीजि, इति ज्ञेयम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १७० मज ( मज् ) शब्दे ।

१ मिमज्जिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमज्जिषा-मि वः मः
२ मिमज्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमज्जिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
-व म मिमज्जिषा-णि व म
४ अमिमज्जिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमज्जिषा-
५ अमिमज्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमज्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमज्जिषामास मिमज्जिषाञ्चकार
७ मिमज्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमज्जिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमज्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमज्जिषिष्या
-मि वः मः (अमिमज्जिषिष्या-व म
१० अमिमज्जिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७१ गज [ गज् ) मदने च ।

१ जिगजिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगजिषा मि वः मः
२ जिगजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगजिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
जिगजिषा-णि व म
४ अजिगजिष-त् ताम् न्: तम् त म अजिगजिषा-व म
५ अजिगजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगजिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगजिषाञ्चकार जिगजिषामास
७ जिगजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगजिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगजिषिष्या
मि वः मः (अजिगजिषिष्या-व म
१० अजिगजिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७२ त्यजं ( त्यज् ) हानौ ।

१ तित्यक्ष-ति तः न्ति सि थः थ तित्यक्षा-मि वः मः
२ तित्यक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्यक्ष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तित्यक्षा-णि व म
४ अतित्यक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अतित्यक्षा-व म
५ अतित्य-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ तित्यक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तित्यक्षाञ्चकार तित्यक्षामास
७ तित्यक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्यक्षिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्यक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्यक्षिष्या-
मि वः मः (अतित्यक्षिष्या-व म
१० अतित्यक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७३ षञ्जं ( सञ्ज् ) संगे ।

१ सिसङ्क्ष-ति तः न्ति सि थः थ सिसङ्क्षा-मि वः मः
२ सिसङ्क्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसङ्क्ष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
सिसङ्क्षा-णि व म
४ असिसङ्क्ष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसङ्क्षा-व म
५ असिसङ्-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ सिसङ्क्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिसङ्क्षाञ्चकार सिसङ्क्षाम्बभूव
७ सिसङ्क्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसङ्क्षिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसङ्क्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसङ्क्षिष्या
-मि वः मः (असिसङ्क्षिष्या-व म
१० असिसङ्क्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७४ कटे ( कट् ) वर्षावरणयोः

१ चिकटिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकटिषा-मि वः मः
२ चिकटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त -व म चिकटिषा-णि व म
४ अचिकटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकटिषा-
५ अचिकटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिकटिषामास चिकटिषाञ्चकार
७ चिकटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकटिषिष्या-मि वः मः (अचिकटिषिष्या-व म
१० अचिकटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७५ शट [ शट् ) रुजाविशरणगत्यवशातनेषु

१ शिशटिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशटिषा-मि वः मः
२ शिशटिषे-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ शिशटिष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त शिशटिषा-णि व म.
४ अशिशटिष-त् ताम् न: तम् त म अशिशटिषा-व म
५ अशिशटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिशटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम शिशटिषाञ्चकार शिशटिषामास
७ शिशटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ शिशटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशटिषिष्या मि वः मः (अशिशटिषिष्या-व म
१० अशिशटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७६ वट ( वट् ) वेष्टने ।

१ विवटिष-ति तः न्ति सि थः थ विवटिषा-मि वः मः
२ विवटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवटिषा-णि व म
४ अविवटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवटिषा-व म
५ अविवटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ विवटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम विवटिषाञ्चकार विवटिषामास
७ विवटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवटिषिष्या-मि वः मः (अविवटिषिष्या-व म
१० अविवटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७७ किट ( कट् ) उत्त्रासे ।

१ चिकिटिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकिटिषा-मि वः मः
२ चिकिटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकिटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिकिटिषा-णि व म
४ अचिकिटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकिटिषा-
५ अचिकिटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकिटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चिकिटिषाञ्चकार चिकिटिषाम्बभूव
७ चिकिटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकिटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकिटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकिटिषिष्या-मि वः मः ( अचिकिटिषिष्या-व म
१० अचिकिटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे चिकिटि-स्थाने चिकेटि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १७८ खिट ( खिट् ) उत्त्रासे ।

१ चिखिटिष-ति तः न्ति सि थः थ चिखिटिषा-मि वः म
२ चिखिटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखिटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखिटिषा-णि व म
४ अचिखिटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिखिटिषा-व म
५ अचिखिटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिखिटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिखिटिषाञ्चकार चिखिटिषाम्बभूव
७ चिखिटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखिटिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्म
९ चिखिटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखिटिषिष्या
-मि वः मः (अचिखिटिषिष्या-व म
१० अचिखिटिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म
पक्षे चिखिटि-स्थाने चिखेटि-इति ज्ञयम्

## १७९ शट ( शट् ) अनादरे ।

१ शिशिटिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशिटिषा-मि वः मः
२ शिशिटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशिटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म शिशिटिषा-णि व म
४ अशिशिटिष त् ताम् न् : तम् त म् अशिशिटिषा-
५ अशिशिटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशिटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशिटिषाञ्चकार शिशिटिषामास
७ शिशिटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशिटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशिटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशिटिषि-
ष्या-मि वः मः (अशिशिटिषिष्या-व म
१० अशिशटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे शिशिटि-स्थाने शिशेटि-इति ज्ञेयम्

## १८० षिट ( सिट् ) अनादरे ।

१ सिसिटिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसिटिषा-मि वः मः
२ सिसिटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसिटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म सिसिटिषा-णि व म
४ असिसिटिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसिटिषा
५ असिसिटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसिटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसिटिषाञ्चकार सिसिटिषामास
७ सिसिटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसिटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसिटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसिटिषिष्या
-मि वः मः (असिसिटिषिष्या-व म
१० असिसिटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे सिसिटि-स्थाने सिसेटि-इति ज्ञेयम्

## १८१ जट ( जट् ) संघाते ।

१ जिजटिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजटिषा-मि वः मः
२ जिजटिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जिजटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजटिषा--णि व म
४ अजिजटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजटिषा-व म
५ अजिजटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजटिषाञ्चकार जिजटिषाम्बभूव
७ जिजटिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजटिषिष्या-
मि वः मः (अजिजटिषिष्या-व म
१० अजिजटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८२ झट ( झट् ) संघाते ।

१ जिझटिष-ति तः न्ति सि थः थ जिझटिषा-मि वः मः
२ जिझटिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जिझटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिझटिषा--णि व म
४ अजिझटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिझटिषा-व म
५ अजिझटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिझटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिझटिषाञ्चकार जिझटिषाम्बभूव
७ जिझटिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिझटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिझटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिझटिषिष्या-
मि वः मः (अजिझटिषिष्या-व म
१० अजिझटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १८३ पिट ( पिट्ट ) शब्दे च ।

१ पिपिटिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपिटिषा-मि वः मः
२ पिपिटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपिटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपिटिषा-णि व म
४ अपिपिटिष-त् ताम न् : तम् त म् अपिपिटिषा-व म
५ अपिपिटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ पिपिटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपिटिषाञ्चकार पिपिटिषाम्बभूव
७ पिपिटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपिटिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपिटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपिटिषिष्या
-मि वः मः (अपिपिटिषिष्या-व म
१० अपिपिटिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म
पक्षे पिपिटि-स्थाने पिपेटि-इति ज्ञेयम्

### १८४ भट ( भट् ) भृतौ ।

१ बिभटिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभटिषा-मि वः मः
२ बिभटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म बिभटिषा-णि व म
४ अबिभटिष त् ताम् न् : तम् त म् अबिभटिषा-
५ अबिभटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभटिषाञ्चकार बिभटिषामास
७ बिभटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभटिषि-
ष्या-मि वः मः (अबिभटिषिष्या-व म
१० अबिभटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १८५ तट ( तट् ) उच्छ्राये ।

१ तितटिष-ति तः न्ति सि थः थ तितटिषा-मि वः मः
२ तितटिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ तितटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म तितटिषा-णि व म
४ अतितटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितटिषा
५ अतितटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितटिषाञ्चकार तितटिषामास
७ तितटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितटिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितटिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ तितटिषिष्या
-मि वः मः (अतितटिषिष्या-व म
१० अतितटिषिष्य- त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१८६ खट ( खट्ट ) काङ्क्षे ।

१ **चिखटिष**-ति तः न्ति सि थः थ **चिखटिषा**-मि वः मः
२ **चिखटिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चिखटिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **चिखटिषा**-णि व म
४**अचिखटिष**-त् ताम न् : तम् त म् **अचिखटिषा**-व म
५ **अचिखटि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६**चिखटिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **चिखटिषाञ्चकार** **चिखटिषाम्बभूव**
७ **चिखटिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चिखटिषिता**- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९**चिखटिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **चिखटिषिष्या**-मि वः मः (**अचिखटिषिष्या**-व म
१०**अचिखटिषिष्य**-त् ताम न् : तम् त म्

१८७ णट ( नट् ) नृत्तौ ।

१ **निनटिष**-ति तः न्ति सि थः थ **निनटिषा**-मि वः मः
२ **निनटिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **निनटिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **निनटिषा**-णि व म
४ **अनिनटिष** त् ताम् न् : तम् त म् **अनिनटिषा**-व म
५ **अनिनटि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६**निनटिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **निनटिषाञ्चकार** **निनटिषामास**
७ **निनटिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८**निनटिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **निनटिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **निनटिषिष्या**-मि वः मः (**अनिनटिषिष्या**-व म
१०**अनिनटिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

१८८ हट ( हट् ) दीप्तौ ।

१**जिहटिष**-ति तः न्ति सि थः थ **जिहटिषा**-मि वः मः
२ **जिहटिषे**-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ **जिहटिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **जिहटिषा**-णि व म
४**अजिहटिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अजिहटिषा**-व म
५ **अजिहटि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **जिहटिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **जिहटिषाञ्चकार** **जिहटिषाम्बभूव**
७ **जिहटिष्या**-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **जिहटिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९**जिहटिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **जिहटिषिष्या**-मि वः मः (**अजिहटिषिष्या**-व म
१०**अजिहटिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

१८९ षट ( सट् ) अवयवे ।

१**सिसटिष**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसटिषा**-मि वः मः
२ **सिसटिषे**-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ **सिसटिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **सिसटिषा**-णि व म
४**असिसटिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **असिसटिषा**-व म
५**असिसटि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **सिसटिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **सिसटिषाञ्चकार** **सिसटिषामास**
७ **सिसटिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसटिषिता**- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९**सिसटिषिष्य** ति तः न्ति सि थः थ **सिसटिषिष्या** मि वः मः (**असिसटिषिष्या**-व म
१०**असिसटिषिष्य** त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९० लुट ( लुट् ) विलोटने ।

१ लुलुटिष–ति तः न्ति सि थः थ लुलुटिषा–मि वः मः
२ लुलुटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुटिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
लुलुटिषा–णि व म
४ अलुलुटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुटिषा–व म
५ अलुलुटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलुटिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलुटिषाञ्चकार लुलुटिषामास
७ लुलुटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुटिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लुलुटिषिष्या–मि
वः मः (अलुलुटिषिष्या–व म
१० अलुलुटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे लुलुटि–स्थाने लुलोटि–इति ज्ञेयम्

### १९१ चिट ( चिट्ट ) प्रैष्ये ।

१ चिचिटिष–ति तः न्ति सि थः थ चिचिटिषा–मि वः मः
२ चिचिटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचिटिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
चिचिटिषा–णि व म
४ अचिचिटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिचिटिषा–व म
५ अचिचिटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचिटिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचिटिषाञ्चकार चिचिटिषाम्बभूव
७ चिचिटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचिटिषिता– ” रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचिटिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ चिचिटिषिष्या
–मि वः मः (अचिचिटिषिष्या–व म
१० अचिचिटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिचिटि–स्थाने चिचेटि–इति ज्ञेयम्

### १९२ विट ( विट ) शब्दे ।

१ विविटिष–ति तः न्ति सि थः थ विविटिषा–मि वः मः
२ विविटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविटिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
विविटिषा–णि व म
४ अविविटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविविटिषा–व म
५ अविविटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विविटिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विविटिषाञ्चकार विविटिषामास
७ विविटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविटिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विविटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विविटिषिष्या–
–मि वः मः (अविविटिषिष्या–व म
१० अविविटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे विविटि–स्थाने विवेटि–इति ज्ञेयम्

### १९३ हेट ( हेट् ) विबाधायाम् ।

१ जिहेटिष–ति तः न्ति सि थः थ जिहेटिषा–मि वः मः
२ जिहेटिषे–त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जिहेटिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
जिहेटिषा––णि व म
४ अजिहेटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिहेटिषा–व म
५ अजिहेटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहेटिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिहेटिषाञ्चकार जिहेटिषाम्बभूव
७ जिहेटिष्या–त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहेटिषिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहेटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिहेटिषिष्या–
मि वः मः (अजिहेटिषिष्या–व म
१० अजिहेटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९४ अट ( अट् ) गतौ ।

१ अटिटिष–ति तः न्ति सि थः थ अटिटिषा–मि वः मः
२ अटिटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अटिटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अटिटिषा–णि व म
४ आटिटिष–त् ताम् न् : तम् त म् आटिटिषा–व म
५ आटिटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अटिटिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अटिटिषाञ्चकार अटिटिषामास
७ अटिटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अटिटिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अटिटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ अटिटिषिष्या–मि
वः मः (आटिटिषिष्या–व म
१० आटिटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १९५ पट ( पट् ) गतौ ।

१ पिपटिष–ति तः न्ति सि थः थ पिपटिषा–मि वः मः
२ पिपटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपटिषा–णि व म
४ अपिपटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपिपटिषा व म
५ अपिपटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपटिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपटिषाञ्चकार पिपटिषाम्बभूव
७ पिपटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपटिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिपटिषिष्या–
–मि वः मः (अपिपटिषिष्या–व म
१० अपिपटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १९६ इटि ( इट् ) गतौ ।

१ इटिटिष–ति तः न्ति सि थः थ इटिटिषा–मि वः मः
२ इटिटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ इटिटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
इटिटिषा–णि व म
४ ऐटिटिष–त् ताम् न् : तम् त म् ऐटिटिषा–व म
५ ऐटिटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ इटिटिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
इटिटिषाञ्चकार इटिटिषामास
७ इटिटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ इटिटिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ इटिटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ इटिटिषिष्या–मि
वः मः (ऐटिटिषिष्या–व म
१० ऐटिटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १९७ किट ( किट् ) गतौ ।

१ चिकेटिष–ति तः न्ति सि थः थ चिकेटिषा–मि वः मः
२ चिकेटिषे–त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चिकेटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकेटिषा–णि व म
४ अचिकेटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिकेटिषा–व म
५ अचिकेटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकेटिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकेटिषाञ्चकार चिकेटिषाम्बभूव
७ चिकेटिष्या–त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकेटिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकेटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिकेटिषिष्या–
मि वः मः (अचिकेटिषिष्या–व म
१० अचिकेटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिकेस्थाने चिकि–इति ज्ञेयम्

१९८ कटि ( कट् ) गतौ । कटे १७४ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१९९ कटु (कण्ट्) गतौ ।

१ चिकण्टिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकण्टिषा-मि वः मः
२ चिकण्टिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकण्टिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकण्टिषा-णि व म
४ अचिकण्टिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकण्टिषा-व म
५ अचिकण्टि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकण्टिषाञ्च-कार कतुः कु कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चिकण्टिषाम्बभूव चिकण्टिषामास
७ चिकण्टिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकण्टिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकण्टिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकण्टिषि-
ष्या-मि वः मः (अचिकण्टिष्षा-व म
१० अचिकण्टिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
२०० कटै (कट्) गतौ। कटे १७४ वद्रूपाणि

२०२ मुट (मुट्) प्रमर्दने ।

१ मुमुटिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमुटिषा-मि वः मः
२ मुमुटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म मुमुटिषा-णि व म
४ अमुमुटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुटिषा-
५ अमुमुटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमुटिषाञ्च-कार कतुः कु कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
मुमुटिषाम्बभूव मुमुटिषामास
७ मुमुटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुटिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुटिषिष्या-
मि वः मः (अमुमुटिषिष्या-व म
१० अमुमुटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे मुमुस्थाने मुमो-इति ज्ञेयम्

२०१ कुटु (कुण्ट्) वैकल्ये ।

१ चुकुण्टिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुण्टिषा-मि वः मः
२ चुकुण्टिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुण्टिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुण्टिषा-णि व म
४ अचुकुण्टिष-त् ताम् न् : तम् त म् अकुचुण्टिषा-व म
५ अचुकुण्टि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुण्टिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुकुण्टिषाञ्चकार चुकुण्टिषाम्बभूव
७ चुकुण्टिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुण्टिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुण्टिषिष्य-ति तः न्ति सि थ थ चुकुण्टिषिष्या-
मि वः मः (अचुकुण्टिषिष्या-व म
१० अचुकुण्टिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२०३ चुट (चुट्) अल्पीभावे ।

१ चुचुटिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुटिषा-मि वः मः
२ चुचुटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचुटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चुचुटिषा-णि व म
४ अचुचुटिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुचुटिषा-
५ अचुचुटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचुटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुचुटिषाञ्चकार चुचुटिषामास
७ चुचुटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुटिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचुटिषिष्या-
मि वः मः (अचुचुटिषिष्या-व म
१० अचुचुटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चुचुस्थाने चुचो-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२०४ चुण्ट ( चुण्ट् ) अल्पीभावे ।

१ चुचुण्टिष–ति तः न्ति सि थः थ चुचुण्टिषा–मि वः मः
२ चुचुण्टिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचुण्टिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चुचुण्टिषा–णि व म
४ अचुचुण्टिष–त् ताम् न् : तम् त म अचुचुण्टिषा–
५ अचुचुण्टि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचुण्टिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुचुण्टिषाञ्चकार चुचुण्टिषामास
७ चुचुण्टिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुण्टिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुण्टिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुचुण्टिषिष्या–
मि वः मः ( अचुचुण्टिषिष्या–व म
१० अचुचुण्टिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

२०५ वटु ( वण्ट् ) विभाजने ।

१ विवण्टिष–ति तः न्ति सि थः थ विवण्टिषा–मि वः मः
२ विवण्टिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ विवण्टिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवण्टिषा–णि व म
४ अविवण्टिष–त् ताम् न् : तम् त म अविवण्टिषा–व म
५ अविवण्टि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवण्टिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विवण्टिषाम्बभूव विवण्टिषामास
७ विवण्टिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवण्टिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवण्टिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवण्टिषि-
ष्या–मि वः मः ( अविवण्टिषिष्या–व म
१० अविवण्टिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

२०६ रुटु ( रुण्ट् ) स्तेये ।

१ रुरुण्टिष–ति तः न्ति सि थः थ रुरुण्टिषा–मि वः मः
२ रुरुण्टिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरुण्टिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरुण्टिषा–णि व म
४ अरुरुण्टिष–त् ताम् न् : तम् त म अरुरुण्टिषा–व म
५ अरुरुण्टि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरुण्टिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रुरुण्टिषाञ्चकार रुरुण्टिषाम्बभूव
७ रुरुण्टिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुण्टिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुण्टिषिष्य–ति तः न्ति सि थ थ रुरुण्टिषिष्या–
मि वः मः ( अरुरुण्टिषिष्या–व म
१० अरुरुण्टिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

२०७ लुटु ( लुण्ट् ) स्तेये ।

१ लुलुण्टिष–ति तः न्ति सि थः थ लुलुण्टिषा–मि वः मः
२ लुलुण्टिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुण्टिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म लुलुण्टिषा–णि व म
४ अलुलुण्टिष–त् ताम् न् : तम् त म अलुलुण्टिषा–
५ अलुलुण्टि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षि व षिष्म
६ लुलुण्टिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
लुलुण्टिषाम्बभूव लुलुण्टिषामास
७ लुलुण्टिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुण्टिषिता – " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुण्टिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लुलुण्टिषिष्या–
मि वः मः ( अलुलुण्टिषिष्या–व म
१० अलुलुण्टिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२०८ स्फट ( स्फट् ) विकसने ।

१ पिस्फटिष–ति तः न्ति सि थः थ पिस्फटिषा-मि वः मः
२ पिस्फटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिस्फटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म पिस्फटिषा–णि व म
४ अपिस्फटिष–त् ताम् न् : तम् त म अपिस्फटिषा-
५ अपिस्फटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिस्फटिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिस्फटिषाञ्चकार पिस्फटिषामास
७ पिस्फटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिस्फटिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिस्फटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिस्फटिषिष्या–
मि वः मः (अपिस्फटिषिष्या–व म
१० अपिस्फटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

२०९ स्फुट्ट ( स्फुट् ) विकसने ।

१ पुस्फुटिष–ति तः न्ति सि थः थ पुस्फुटिषा–मि वः मः
२ पुस्फुटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुस्फुटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुस्फुटिषा–णि व म
४ अपुस्फुटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुस्फुटिषा–व म
५ अपुस्फुटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुस्फुटिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
पुस्फुटिषाम्बभूव पुस्फुटिषामास
७ पुस्फुटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुस्फुटिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुस्फुटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुस्फुटिषि-
ष्या–मि वः मः (अपुस्फुटिष्या–व म
१० अपुस्फुटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे पुस्फु-स्थाने पुस्फो इति ज्ञेयम्

२१० लट ( लट् ) बाल्ये ।

१ लिलटिष–ति तः न्ति सि थः थ लिलटिषा–मि वः मः
२ लिलटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलटिषा–णि व म
४ अलिलटिष–त् ताम् न् : तम् त म अलिलटिषा–व म
५ अलिलटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलटिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलटिषाञ्चकार लिलटिषाम्बभूव
७ लिलटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलटिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलटिषिष्य–ति तः न्ति सि थ थ लिलटिषिष्या–
मि वः मः ( अलिलटिषिष्या–व म
१० अलिलटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

२११ रट ( रट् ) परिभाषणे ।

१ रिरटिष–ति तः न्ति सि थः थ रिरटिषा–मि वः मः
२ रिरटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म रिरटिषा–णि व म
४ अरिरटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अरिरटिषा–
५ अरिरटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरटिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
रिरटिषाम्बभूव रिरटिषामास
७ रिरटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरटिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रिरटिषिष्या–
मि वः मः ( अरिरटिषिष्या–व म
१० अरिरटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

## २१२ रठ ( रठ् ) परिभाषणे

१ रिरठिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरठिषा-मि वः मः
२ रिरठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरठिषा-णि व म
४ अरिरठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरठिषा-व म
५ अरिरठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरठिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रिरठिषाम्बभूव रिरठिषामास
७ रिरठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरठिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरठिषि-
ष्या-मि वः मः ( अरिरठिष्षा-व म
१० अरिरठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २१३ पठ ( पठ् ) व्यक्तायां वाचि ।

१ पिपठिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपठिषा-मि वः मः
२ पिपठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म पिपठिषा-णि व म
४ अपिपठिष-त् ताम् न् : तम् त म अपिपठिषा-
५ अपिपठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपठिषाञ्चकार पिपठिषामास
७ पिपठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपठिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपठिषिष्या
-मि वः मः ( अपिपठिषिष्या-व म
१० अपिपठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २१४ वठ ( वठ् ) स्थौल्ये

१ विवठिष-ति तः न्ति सि थः थ विवठिषा-मि वः मः
२ विवठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवठिषा-णि व म
४ अविवठिष-त् ताम् न् : तम् त म अविवठिषा-व म
५ अविवठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवठिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवठिषाञ्चकार विवठिषाम्बभूव
७ विवठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवठिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवठिषिष्या-
मि वः मः ( अविवठिषिष्या-व म
१० अविवठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २१५ मठ ( मठ् ) मदनिवासयोश्च

१ मिमठिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमठिषा-मि वः मः
२ मिमठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म मिमठिषा-णि व म
४ अमिमठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमठिषा-
५ अमिमठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमठिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
मिमठिषाम्बभूव मिमठिषामास
७ मिमठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमठिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमठिषिष्या
-मि वः मः ( अमिमठिषिष्या-व म
१० अमिमठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### २१६ कठ ( कठ् ) कृच्छ्रजीवने

१ चिकठिष–ति तः न्ति सि थः थ चिकठिषा–मि वः मः
२ चिकठिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकठिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चिकठिषा–णि व म
४अचिकठिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिकठिषा–
५अचिकठि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकठिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चिकठिषाम्बभूव चिकठिषामास
७ चिकठिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकठिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिकठिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिकठिषिष्या
–मि वः मः ( अचिकठिषष्या–व म
१०अचिकठिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### २१७ हठ ( हठ् ) बलात्कारे

१ जिहठिष–ति तः न्ति सि थः थ जिहठिषा-मि वः मः
२ जिहठिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहठिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहठिषा–णि व म
४ अजिहठिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिहठिषा–व म
५ अजिहठि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहठिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिहठिषाञ्चकार जिहठिषाम्बभूव
७ जिहठिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहठिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहठिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिहठिषिष्या–
मि वः मः ( अजिहठिषिष्या–व म
१० अजिहठिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### २१८ उठ ( उठ् ) उपघाते ।

१ ओटिठिष-ति तः न्ति सि थः थ ओटिठिषा-मि वः मः
२ ओटिठिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ओटिठिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म ओटिठिषा–णि व म
४ औटिठिष-त् ताम् न् : तम् त म औटिठिषा–
५ औटिठि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ओटिठिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ओटिठिषाञ्चकार ओटिठिषामास
७ ओटिठिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ओटिठिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ओटिठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ओटिठिषिष्या
–मि वः मः ( औटिठिषिष्या–व म
१० औटिठिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### २१९ रुठ ( रुठ् ) उपघाते

१ रुरुठिष-ति तः न्ति सि थः थ रुरुठिषा-मि वः मः
२ रुरुठिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरुठिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरुठिषा–णि व म
४ अरुरुठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरुठिषा–व म
५ अरुरुठि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरुठिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रुरुठिषाम्बभूव रुरुठिषामास
७ रुरुठिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुठिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुठिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रुरुठिषि-
ष्या–मि वः मः (अरुरुठिष्षा–व म
१० अरुरुठिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे रुरु–स्थाने रुरो इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२२० लुठ ( लुठ् ) उपघाते।

१ लुलुठिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुठिषा-मि वः मः
२ लुलुठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलुठिषा-णि व म
४ अलुलुठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुठिषा-व म
५ अलुलुठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलुठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलुठिषाञ्चकार लुलुठिषामास
७ लुलुठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलुठिषिष्या-
मि वः मः (अलुलुठिषिष्या-व म
१० अलुलुठिषिष्य-त ताम् न् : तम त म
पक्षे लुलु-स्थाने लुलो-इति ज्ञेयम्

२२१ पिठ ( पिठ् ) हिंसाक्लेशनयोः

१ पिपिठिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपिठिषा-मि वः मः
२ पिपिठिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ पिपिठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म पिपिठिषा-णि व म
४ अपिपिठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपिठिषा-
५ अपिपिठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपिठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपिठिषामास पिपिठिषाञ्चकार
७ पिपिठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपिठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपिठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपिठिषिष्या
-मि वः मः (अपिपिठिषिष्या-व म
१० अपिपिठिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म
पक्षे पिपि-स्थाने पिपे-इति ज्ञेयम्

२२२ शठ [शठ्] कैतने च

१ शिशठिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशठिषा मि वः मः
२ शिशठिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ शिशठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशठिषा-णि व म
४ अशिशठिष-त् ताम् न् : तम् त म अशिशठिषा-व म
५ अशिशठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशठिषाञ्चकार शिशठिषामास
७ शिशठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम् स्व स्म
८ शिशठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशठिषिष्या
मि वः मः (अशिशठिषिष्या-व म
१० अशिशठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२२३ शुठ ( शुठ् ) गतिप्रतिघाते ।

१ शुशुठिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशुठिषा-मि वः मः
२ शुशुठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
व म शुशुठिषा-णि व म
४ अशुशुठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशुठिषा-
५ अशुशुठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशुठिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुशुठिषाञ्चकार शुशुठिषाम्बभूव
७ शुशुठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ शुशुठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुठिषि-
ष्या-मि वः मः ( अशुशुठिषिष्या-व म
१० अशुशुठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे शुशु-स्थाने शुशो-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### २२४ कुठु [कुण्ठ्] आलस्ये च

१ चुकुण्ठिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुण्ठिषा मि वः मः
२ चुकुण्ठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुण्ठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुण्ठिषा-णि व म
४ अचुकुण्ठिष-त् ताम् न् : तम् त म अचुकुण्ठिषा-व म
५ अचुकुण्ठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुण्ठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकुण्ठिषाञ्चकार चुकुण्ठिषामास
७ चुकुण्ठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ चुकुण्ठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुण्ठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुण्ठिषिष्या
मि व: मः (अचुकुण्ठिषिष्या-व म
१० अचुकुण्ठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### २२५ लुठ ( लुण्ठ् ) आलस्ये च।

१ लुलुण्ठिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुण्ठिषा-मि वः मः
२ लुलुण्ठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुण्ठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलुण्ठिषा-णिं व म
४ अलुलुण्ठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुण्ठिषा-व म
५ अलुलुण्ठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलुण्ठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलुण्ठिषाञ्चकार लुलुण्ठिषामास
७ लुलुण्ठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुण्ठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुण्ठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलुण्ठिषिष्या
-मि वः मः (अलुलुण्ठिषिष्या-व म
१० अलुलुण्ठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### २२६ शुठु ( शुण्ठ् ) शोषणे।

१ शुशुण्ठिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशुण्ठिषा-मि वः मः
२ शुशुण्ठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुण्ठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म शुशुण्ठिषा-णि व म
४ अशुशुण्ठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशुण्ठिषा-
५ अशुशुण्ठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशुण्ठिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुशुण्ठिषाञ्चकार शुशुण्ठिषाम्बभूव
७ शुशुण्ठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुण्ठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशुण्ठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुण्ठिषि-
ष्या-मि वः मः ( अशुशुण्ठिषिष्या-व म
१० अशुशुण्ठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### २२७ अठ ( अठ् ) गतौ ॥

१ अटिठिष-ति तः न्ति सि थः थ अटिठिषा-मि वः मः
२ अटिठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अटिठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म अटिठिषा-णि व म
४ आटिठिष-त् ताम् न् : तम् त म् आटिठिषा-
५ आटिठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अटिठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अटिठिषामास अटिठिषाञ्चकार
७ अटिठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अटिठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अटिठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अटिठिषिष्या
-मि व. मः (आटिठिषिष्या-व म
१० आटिठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२२८ रुठु ( रुण्ठ् ) गतौ ।

१ रुरुण्ठिष-ति तः न्ति सि थः थ रुरुण्ठिषा मि वः मः
२ रुरुण्ठिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरुण्ठिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रुरुण्ठिषा-णि व म
४ अरुरुण्ठिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरुण्ठिषा-व म
५ अरुरुण्ठि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रुरुण्ठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम रुरुण्ठिषाञ्चकार रुरुण्ठिषामास
७ रुरुण्ठिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुण्ठिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुण्ठिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रुरुण्ठिषिष्या-मि वः मः ( अरुरुण्ठिषिष्या-व म
१० अरुरुण्ठिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२२९ पुडु ( पुण्ड् ) प्रमर्दने ।

१ पुपुण्डिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपुण्डिषा-मि वः मः
२ पुपुण्डिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपुण्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पुपुण्डिषा-णि व म
४ अपुपुण्डिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुण्डिषा-व म
५ अपुपुण्डि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पुपुण्डिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पुपुण्डिषाञ्चकार पुपुण्डिषामास
७ पुपुण्डिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुण्डिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुण्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपुण्डिषिष्या--मि वः मः (अपुपुण्डिषिष्या-व म
१० अपुपुण्डिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२३० मुडु ( मुड् ) खंडने च ।

१ मुमुण्डिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमुण्डिषा-मि वः मः
२ मुमुण्डिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुण्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मुमुण्डिषा-णि व म
४ अमुमुण्डिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुण्डिषा-व म
५ अमुमुण्डि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मुमुण्डिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम मुमुण्डिषाञ्चकार मुमुण्डिषामास
७ मुमुण्डिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुण्डिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुण्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुण्डिषिष्या-मि वः मः (अमुमुण्डिषिष्या-व म
१० अमुमुण्डिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२३१ मडु ( मण्ड् ) भूषायाम् ।

१ मिमण्डिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमण्डिषा मि वः मः
२ मिमण्डिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ मिमण्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमण्डिषा-णि व म
४ अमिमण्डिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमण्डिषा व म
५ अमिमण्डि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमण्डिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमण्डिषाञ्चकार मिमण्डिषाम्बभूव
७ मिमण्डिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमण्डिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमण्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमण्डिषिष्या-मि वः मः (अमिमण्डिषिष्या-व म
१० अमिमण्डिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २३२ गडु ( गण्ड ) वेदनैकदेशे ।

१ जिगण्डिष–ति तः न्ति सि थः थ जिगण्डिषा-मि वः मः
२ जिगण्डिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ जिगण्डिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म जिगण्डिषा–णि व म
४ अजिगण्डिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अजिगण्डिषा–
५ अजिगण्डि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्ष्म षिष्व षिष्म
६ जिगण्डिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव जिगण्डिषाम्बभूव जिगण्डिषामास
७ जिगण्डिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगण्डिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगण्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगण्डिषिष्या-मि वः मः (अजिगण्डिषिष्या-व म
१० अजिगण्डिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

## २३३ शौडृ ( शौड् ) गर्वे ।

१ शुशौडिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशौडिषा-मि वः मः
२ शुशौडिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ शुशौडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शुशौडिषा-णि व म
४ अशुशौडिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अशुशौडिषा-व म
५ अशुशौडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्ष्म षिष्व षिष्म
६ शुशौडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव शुशौडिषाम्बभूव शुशौडिषामास
७ शुशौडिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशौडिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशौडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशौडिषिष्या–मि वः मः (अशुशौडिषिष्या–व म
१० अशुशौडिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

## २३४ यौडृ ( यौड् ) सम्बन्धे ।

१ युयौडिष-ति तः न्ति सि थः थ युयौडिषा-मि वः मः
२ युयौडिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ युयौडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त युयौडिषा--णि व म
४ अयुयौडिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अयुयौडिषा-व म
५ अयुयौडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ युयौडिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम युयौडिषाम्बभूव युयौडिषामास
७ युयौडिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयौडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ युयौडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ युयौडिषिष्या-मि वः मः (अयुयौडिषिष्या–व म
१० अयुयौडिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

## २३५ मेडृ ( मेड् ) उन्मादे ।

१ मिमेडिष–ति तः न्ति सि थः थ मिमेडिषा-मि वः मः
२ मिमेडिषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ मिमेडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमेडिषा–णि व म
४ अमिमेडिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अमिमेडिषा व म
५ अमिमेडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्ष्म षिष्व षिष्म
६ मिमेडिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव मिमेडिषामास मिमेडिषाम्बभूव
७ मिमेडिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमेडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमेडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमेडिषिष्या –मि वः म ( अमिमेडिषिष्या–व म
१० अमिमेडिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२३६ म्रेडृ ( म्रेड् ) उन्मादे ।

१ मिम्रेडिष-ति तः न्ति सि थः थ मिम्रेडिषा-मि वः मः
२ मिम्रेडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिम्रेडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिम्रेडिषा-णि व म
४ अमिम्रेडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिम्रेडिषाव म
५ अमिम्रेडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ मिम्रेडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव मिम्रेडिषामास मिम्रेडिषाम्बभूव
७ मिम्रेडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिम्रेडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिम्रेडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिम्रेडिषिष्या-मि वः म ( अमिम्रेडिषिष्या-व म
१० अमिम्रेडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२३७ म्लेडृ ( म्लेड ) उन्मादे ।

१ मिम्लेडिष-ति तः न्ति सि थः थ मिम्लेडिषा-मि वः मः
२ मिम्लेडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिम्लेडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म मिम्लेडिषा-णि व म
४ अमिम्लेडिष-त ताम् न् : तम् त म् अमिम्लेडिषा-
५ अमिम्लेडि-षीत षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ मिम्लेडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव मिम्लेडिषाम्बभूव मिम्लेडिषामास
७ मिम्लेडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ मिम्लेडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिम्लेडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिम्लेडिषिष्या मि वः मः (अमिम्लेडिषिष्या-व म
१० अमिम्लेडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२३८ लोडृ ( लोड् ) उन्मादे ।

१ लुलोडिष ति तः न्ति सि थः थ लुलोडिषा मि वः मः
२ लुलोडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलोडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त लुलोडिषा-णि व म
४ अलुलोडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलोडिषा-व म
५ अलुलोडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ लुलोडिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव लुलोडिषाम्बभूव लुलोडिषामास
७ लुलोडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलोडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलोडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलोडिषिष्या-मि वः मः (अलुलोडिषिष्या-व म
१० अलुलोडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२३९ लौडृ ( लौड् ) उन्मादे ।

१ लुलौडिष ति तः न्ति सि थः थ लुलौडिषा मि वः मः
२ लुलौडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलौडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त लुलौडिषा--णि व म
४ अलुलौडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलौडिषा-व म
५ अलुलौडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ लुलौडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम लुलौडिषाम्बभूव लुलौडिषामास
७ लुलौडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलौडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलौडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलौडिषिष्या-मि वः मः (अलुलौडिषिष्या-व म
१० अलुलौडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२४० रोड़ ( रोड् ) अनादरे ।

१ रुरोडिष–ति तः न्ति सि थः थ रुरोडिषा-मि वः मः
२ रुरोडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरोडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रुरोडिषा–णि व म
४ अरुरोडिष-त् ताम् न् : तम् त म अरुरोडिषाव म
५ अरुरोडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ रुरोडिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव रुरोडिषामास रुरोडिषाम्बभूव
७ रुरोडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरोडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरोडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रुरोडिषिष्या –मि वः म ( अरुरोडिषिष्या–व म
१०अरुरोडिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

२४१ रौड़ ( रौड् ) अनादरे ।

१ रुरौडिष ति तः न्ति सि थः थ रुरौडिषा मि वः मः
२ रुरौडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरौडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रुरौडिषा-णि व म
४अरुरौडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरौडिषा–व म
५ अरुरौडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ रुरौडिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव रुरौडिषाम्बभूव रुरौडिषामास
७ रुरौडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरौडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरौडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रुरौडिषिष्या–मि वः मः (अरुरौडिषिष्या–व म
१० अरुरौडिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

२४२ तौड़ ( तौड् ) अनादरे ।

१तुतौडिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतौडिषा-मि वः मः
२ तुतौडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतौडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तुतौडिषा--णि व म
४ अतुतौडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतौडिषा-व म
५ अतुतौडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६तुतौडिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम तुतौडिषाम्बभूव तुतौडिषामास
७ तुतौडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतौडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तुतौडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतौडिषिष्या- मि वः मः (अतुतौडिषिष्या–व म
१०अतुतौडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२४३ क्रीड़ ( क्रीड ) विहारे ।

१चिक्रीडिष ति तः न्ति सि थः थ चिक्रीडिषा-मि वः मः
२ चिक्रीडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्रडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिक्रीडिषा–णि व म
४अचिक्रीडिष-त ताम् न् : तम् त म् अचिक्रोडिषा व म
५अचिक्रीडि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्रीडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव कृम चिक्रीडिषाम्बभूव चिक्रीडिषामास
७चिक्रीडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८चिक्रीडिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्रीडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्रीडिषिष्या मि वः मः (अचिक्रोडिषिष्या-व म
१०अचिक्रीडिषिष्य–त् ताम् न् : तम त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २४४ तुड् ( तुड् ) तोडने ।

१ तुतुडिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतुडिषा-मि वः मः
२ तुतुडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुडिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तुतुडिषा-णि व म
४ अतुतुडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुडिषा-व म
५ अतुतुडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुडिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुतुडिषाञ्चकार तुतुडिषाम्बभूव
७ तुतुडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुडिषिता- ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुडिषिष्या
-मि वः मः (अतुतुडिषिष्या-व म
१० अतुतुडिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म
पक्षे तुतु-स्थाने तुतो-इति ज्ञेयम्

## २४५ तूड् ( तूड् ) तोडने ।

१ तुतूडिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतूडिषा-मि वः मः
२ तुतूडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतूडिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तुतूडिषा-णि व म
४ अतुतूडिष त् ताम् न् : तम् त म् अतुतूडिषा-व म
५ अतुतूडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतूडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतूडिषाञ्चकार तुतूडिषामास
७ तुतूडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतूडिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतूडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतूडिषिष्या-
मि वः मः (अतुतूडिषिष्या-व म
१० अतुतूडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २४६ तोड् ( तोड् ) तोडने ।

१ तुतोडिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतोडिषा-मि वः मः
२ तुतोडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतोडिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तुतोडिषा-णि व म
४ अतुतोडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतोडिषा-व म
५ अतुतोडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतोडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतोडिषाञ्चकार तुतोडिषामास
७ तुतोडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतोडिषिता- ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतोडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतोडिषिष्या
-मि वः मः (अतुतोडिषिष्या-व म
१० अतुतोडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २४७ हुड् ( हुड् ) गतौ ।

१ जुहुडिष-ति तः न्ति सि थः थ जुहुडिषा-मि वः मः
२ जुहुडिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जुहुडिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
जुहुडिषा--णि व म
४ अजुहुडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुहुडिषा-व म
५ अजुहुडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुहुडिषामा--स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुहुडिषाञ्चकार जुहुडिषाम्बभूव
७ जुहुडिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहुडिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुहुडिषिष्या-
मि वः मः (अजुहुडिषिष्या-व म
१० अजुहुडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २४८ हुड ( हुड् ) गतौ ।

१ जुहूडिष–ति तः न्ति सि थः थ जुहूडिषा–मि वः मः
२ जुहूडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुहूडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म जुहूडिषा–णि व म
४ अजुहूडिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुहूडिषा–
५ अजुहूडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जुहूडिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम जुहूडिषाम्बभूव जुहूडिषामास
७ जुहूडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहूडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहूडिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुहूडिषिष्या– –मि वः मः ( अजुहूडिषिष्या–व म
१० अजुहूडिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## २४९ हूड ( हूड् ) गतौ ।

१ जुहूडिष–ति तः न्ति सि थः थ जुहूडिषा–मि वः मः
२ जुहूडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुहूडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जुहूडिषा–णि व म
४ अजुहूडिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुहूडिषा–व म
५ अजुहूडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जुहूडिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम जुहूडिषाञ्चकार जुहूडिषाम्बभूव
७ जुहूडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहूडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहूडिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुहूडिषिष्या– मि वः मः ( अजुहूडिषिष्या–व म
१० अजुहूडिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## २५० हौडृ ( हौड् ) गतौ ।

१ जुहौडिष–ति तः न्ति सि थः थ जुहौडिषा–मि वः मः
२ जुहौडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुहौडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म जुहौडिषा–णि व म
४ अजुहौडिष–त् ताम् न् : तम् त म अजुहौडिषा–
५ अजुहौडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जुहौडिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जुहौडिषाञ्चकार जुहौडिषामास
७ जुहौडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहौडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहौडिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुहौडिषिष्या– –मि वः मः (अजुहौडिषिष्या–व म
१० अजुहौडिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## २५१ खोडृ ( खोड् ) प्रतीघाते ।

१ चुखोडिष–ति तः न्ति सि थः थ चुखोडिषा–मि वः मः
२ चुखोडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुखोडिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चुखोडिषा–णि व म
४ अचुखोडिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुखोडिषा–व म
५ अचुखोडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चुखोडिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम चुखोडिषाम्बभूव चुखोडिषामास
७ चुखोडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुखोडिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुखोडिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुखोडिषि- ष्या–मि वः मः (अचुखोडिषिष्या–व म
१० अचुखोडिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २५२ विड ( विड़ ) आक्रोशे ।

१ विविडिष-ति तः न्ति सि थः थ विविडिषा-मि वः मः
२ विविडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विविडिषा-णि व म
४अविविडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविविडिषा-व म
५ अविविडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ विविडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
विविडिषाम्बभूव विविडिषामास
७ विविडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विविडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विविडिषि-
ष्या-मि वः मः (अविविडिषिष्या-व म
१०अविविडिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे विवि-स्थाने विवे-इति ज्ञेयम्

## २५३ अड ( अड़ ) उद्यमे ।

१अडिडिष-ति तः न्ति सि थः थ अडिडिषा-मि वः मः
२ अडिडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अडिडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अडिडिषा--णि व म
४ आडिडिष-त् ताम् न् : तम् त म् आडिडिषा-व म
५ आडिडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६अडिडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
अडिडिषाम्बभूव अडिडिषामास
७ अडिडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अडिडिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९अडिडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अडिडिषिष्या-
मि वः मः (आडिडिषिष्या-व म
१०आडिडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २५४ लड ( लड् ) विलासे ।

१ लिलडिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलडिषा-मि वः मः
२ लिलडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलडिषा-णि व म
४ अलिलडिष त् ताम् न् : तम् त म् अलिलडिषा-व म
५ अलिलडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलडिषाञ्चकार लिलडिषामास
७ लिलडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलडिषिष्या-
-मि वः मः (अलिलडिषिष्या-व म
१० अलिलडिषिष्य-त ताम न : तम त म
डस्य लत्वे लडि-स्थाने ललि-इति ज्ञेयम्

## २५५ कड ( कण्ड् ) मर्दने ।

१चिकण्डिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकण्डिषा-मि वः मः
२ चिकण्डिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकण्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चिकण्डिषा-णि व म
४ अचिकण्डिष-त ताम् न् : तम् त म् अचिकण्डिषा-
५अचिकण्डि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६चिकण्डिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिकण्डिषाम्बभूव चिकण्डिषामास
७चिकण्डिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८चिकण्डिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिकण्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकण्डिषिष्या
मि वः मः (अचिकण्डिषिष्या-व म
१०अचिकण्डिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २५६ कड्ड ( कड्ड् ) कार्कश्ये ।

१ चिकड्डिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकड्डिषा-मि वः मः
२ चिकड्डिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चिकड्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिकड्डिषा-णि व म
४ अचिकड्डिष-त ताम् न् ः तम् त म् अचिकड्डिषा-
५ अचिकड्डि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कम षिष्व षिष्म
६ चिकड्डिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव चिकड्डिषाम्बभूव चिकड्डिषामास
७ चिकड्डिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम स्व स्म
८ चिकड्डिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकड्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकड्डिषिष्या-मि वः मः (अचिकड्डिषिष्या-व म
१० अचिकड्डिषिष्य-त् ताम् न् ः तम त म्

## २५७ अड्ड ( अड्ड् ) अभियोगे ।

१ अड्डिडिष ति तः न्ति सि थः थ अड्डिडिषा-मि वः मः
२ अड्डिडिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ अड्डिडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त अड्डिडिषा-णि व म
४ आड्डिडिष-त् ताम् न् ः तम् त म् आड्डिडिषा-व म
५ आड्डिडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् कम षिष्व षिष्म
६ अड्डिडिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव अड्डिडिषाम्बभूव अड्डिडिषामास
७ अड्डिडिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अड्डिडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अड्डिडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अड्डिडिषिष्या-मि वः मः (आड्डिडिषिष्या-व म
१० आड्डिडिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

## २५८ चुड्ड ( चुड्ड् ) हावकरणे ।

१ चुचुड्डिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुड्डिषा-मि वः मः
२ चुचुड्डिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चुचुड्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चुचुड्डिषा--णि व म
४ अचुचुड्डिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अचुचुड्डिषा-व म
५ अचुचुड्डि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चुचुड्डिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम चुचुड्डिषाम्बभूव चुचुड्डिषामास
७ चुचुड्डिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुड्डिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुड्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ यचुचुड्डिषिष्या-मि वः मः (अचुचुड्डिषिष्या-व म
१० अचुचुड्डिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

## २५९ अण ( अण् ) शब्दे ।

१ अणिणिष-ति तः न्ति सि थः थ अणिणिषा-मि वः मः
२ अणिणिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ अणिणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त अणिणिषा-णि व म
४ आणिणिष-त् ताम् न् ः तम् त म आणिणिषा-व म
५ आणिणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कम षिष्व षिष्म
६ अणिणिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव अणिणिषामास अणिणिषाम्बभूव
७ अणिणिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अणिणिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अणिणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अणिणिषिष्या-मि वः म ( आणिणिषिष्या-व म
१० आणिणिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### २६० रण ( रण् ) शब्दे ।

१ **रिरणिष**–ति तः न्ति सि थः थ **रिरणिषा**–मि वः मः
२ **रिरणिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **रिरणिष**–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त व म **रिरणिषा**–णि व म
४ **अरिरणिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अरिरणिषा**–
५ **अरिरणि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **रिरणिषाञ्च**–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम **रिरणिषाम्बभूव रिरणिषामास**
७ **रिरणिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **रिरणिषिता**–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **रिरणिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **रिरणिषिष्या**–मि वः मः ( **अरिरणिषिष्या**–व म
१० **अरिरणिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

### २६१ वण ( वण् ) शब्दे ।

१ **विवणिष**–ति तः न्ति सि थः थ **विवणिषा**–मि वः मः
२ **विवणिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विवणिष**–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त **विवणिषा**–णि व म
४ **अविवणिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अविवणिषा**–व म
५ **अविवणि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **विवणिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **विवणिषाञ्चकार विवणिषाम्बभूव**
७ **विवणिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवणिषिता**–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवणिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **विवणिषिष्या**–मि वः मः ( **अविवणिषिष्या**–व म
१० **अविवणिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

### २६२ व्रण ( व्रण् ) शब्दे ।

१ **विव्रणिष**–ति तः न्ति सि थः थ **विव्रणिषा**–मि वः मः
२ **विव्रणिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विव्रणिष**–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त व म **विव्रणिषा**–णि व म
४ **अविव्रणिष**–त् ताम् न् : तम् त म **अविव्रणिषा**–
५ **अविव्रणि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **विव्रणिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **विव्रणिषाञ्चकार विव्रणिषामास**
७ **विव्रणिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विव्रणिषिता**–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विव्रणिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **विव्रणिषिष्या**–मि वः मः (**अविव्रणिषिष्या**–व म
१० **अव्रविणिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

### २६३ बण ( बण् ) शब्दे ।

१ **बिबणिष**–ति तः न्ति सि थः थ **बिबणिषा**–मि वः मः
२ **बिबणिषे**–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ **बिबणिष**–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त **बिबणिषा**–णि व म
४ **अबिबणिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अबिबणिषा**–व म
५ **अबिबणि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **बिबणिषाञ्च**–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम **बिबणिषाम्बभूव बिबणिषामास**
७ **बिबणिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **बिबणिषिता**–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **बिबणिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **बिबणिषिष्या**–मि वः मः (**अबिबणिष्षा**–व म
१० **अबिबणिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### २६४ भण ( भण् ) शब्दे ।

१ बिभणिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभणिषा-मि वः मः
२ बिभणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभणिषा-णि व म
४ अबिभणिष-त् ताम न् : तम् त म् अबिभणिषा-व म
५ अबिभणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभणिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभणिषाञ्चकार बिभणिषाम्बभूव
७ बिभणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभणिषिष्या
-मि व मः (अबिभणिषिष्या-व म
१० अबिभणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### २६५ भ्रण ( भ्रण् ) शब्दे ।

१ बिभ्रणिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रणिषा-मि वः मः
२ बिभ्रणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभ्रणिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभ्रणिषा-णि व म
४ अबिभ्रणिष त् ताम् न् : तम् त म् अबिभ्रणिषा-व म
५ अबिभ्रणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभ्रणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभ्रणिषाञ्चकार बिभ्रणिषामास
७ बिभ्रणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभ्रणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभ्रणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रणिषिष्या-
मि वः मः (अबिभ्रणिषिष्या-व म
१० अबिभ्रणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### २६६ मण ( मण् ) शब्दे ।

१ मिमणिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमणिषा-मि वः मः
२ मिमणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
व म मिमणिषा-णि व म
४ अमिमणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमणिषा-
५ अमिमणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमणिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमणिषाञ्चकार मिमणिषाम्बभूव
७ मिमणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमणिषि-
ष्या-मि वः मः ( अमिमणिषिष्या-व म
१० अमिमणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### २६७ धण ( धण् ) शब्दे ।

१ दिधणिष-ति तः न्ति सि थः थ दिधणिषा-मि वः मः
२ दिधणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म दिधणिषा-णि व म
४ अदिधणिष त् ताम् न् : तम् त म् अदिधणिषा-
५ अदिधणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिधणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिधणिषामास दिधणिषाञ्चकार
७ दिधणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
दिधणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधणिषिष्या
-मि वः मः (अदिधणिषिष्या-व म
१० अदिधणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२६८ ध्वण ( ध्वण् ) शब्दे ।

१ दिध्वणिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वणिषा मि वः मः
२ दिध्वणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्वणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दिध्वणिषा-णि व म
४ अदिध्वणिष-त् ताम् न् : तम् त म अदिध्वणिषा-व म
५ अदिध्वणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दिध्वणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दिध्वणिषाञ्चकार दिध्वणिषामास
७ दिध्वणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ दिध्वणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्वणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वणिषिष्या-मि वः मः (अदिध्वणिषिष्या-व म
१० अदिध्वणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२६९ ध्रण ( ध्रण् ) शब्दे ।

१ दिध्रणिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्रणिषा-मि वः मः
२ दिध्रणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्रणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दिध्रणिषा-णि व म
४ अदिध्रणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्रणिषा-व म
५ अदिध्रणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दिध्रणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दिध्रणिषाञ्चकार दिध्रणिषामास
७ दिध्रणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्रणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्रणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्रणिषिष्या-मि वः मः (अदिध्रणिषिष्या-व म
१० अदिध्रणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२७० कण ( कण् ) शब्दे ।

१ चिकणिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकणिषा-मि वः मः
२ चिकणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिकणिषा-णि व म
४ अचिकणिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिकणिषा-व म
५ अचिकणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिकणिषाञ्चकार चिकणिषामास
७ चिकणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकणिषिष्या-मि वः मः (अचिकणिषिष्या-व म
१० अचिकणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२७१ क्वण ( क्वण् ) शब्दे ।

१ चिक्वणिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्वणिषा-मि वः मः
२ चिक्वणिषे-त ताम् युः :. तम् त यम् व म
३ चिक्वणिष-तु तात ताम न्तु " तात तम त म चिक्वणिषा-णि व म
४ अचिक्वणिष-त ताम न् : तम् त म अचिक्वणिषा व
५ अचिक्वणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्वणिषामा-स सतुः सः सिथ सथुः स स सिव सिम चिक्वणिषाञ्चकार चिक्वणिषाम्बभव
७ चिक्वणिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्वणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्वणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्वणिषिष्या-मि वः मः (अचिक्वणिषिष्या-व म
१० अचिक्वणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २७२ चण ( चण् ) शब्दे ।

१ चिचणिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचणिषा-मि वः मः
२ चिचणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचणिषा-णि व म
४अचिचणिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिचणिषा-व म
५ अचिचणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचणिषाञ्चकार चिचणिषामास
७ चिचणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचणिषिष्या
-मि वः मः (अचिचणिषिष्या-व म
१०अचिचणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २७३ ओणृ ( ओण् ) अपनयने ।

१ओणिणिष-ति तः न्ति सि थः थ ओणिणिषा-मि वः मः
२ ओणिणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ओणिणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ओणिणिषा-णि व म
४ औणिणिष-त् ताम् न् : तम् त म औणिणिषा-व म
५ औणिणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ ओणिणिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
ओणिणिषामास ओणिणिषाम्बभूव
७ ओणिणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ओणिणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ओणिणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ओणिणिषिष्या
-मि वः म ( औणिणिषिष्या-व म
१०औणिणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २६४ शोणृ ( शोण् ) वर्णगत्योः ।

१शुशोणिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशोणिषा-मि वः मः
२ शुशोणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशोणिषा-णि व म
४अशुशोणिष-त् ताम् न् : तम् त म अशुशोणिषा-व म
५ अशुशोणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशोणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शुशोणिषाञ्चकार शुशोणिषामास
७शुशोणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८शुशोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशोणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशोणिषिष्या
-मि वः मः (अशुशोणिषिष्या-व म
१०अशुशोणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २७५ श्रोणृ ( श्रोण् ) सङ्घाते ।

१शुश्रोणिष-ति तः न्ति सि थः थ शुश्रोणिषा-मि वः मः
२ शुश्रोणिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ शुश्रोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुश्रोणिषा-णि व म
४ अशुश्रोणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुश्रोणिषा-व म
५ अशुश्रोणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुश्रोणिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुश्रोणिषाञ्चकार शुश्रोणिषाम्बभूव
७ शुश्रोणिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुश्रोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुश्रोणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुश्रोणिषि-
ष्या-मि वः मः (अशुश्रोणिषिष्या-व म
१०अशुश्रोणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२७६ श्लोणृ ( श्लोण् ) संघाते ।

१ शुश्लोणिष-ति तः न्ति सि थः थ शुश्लोणिषा-मि वः मः
२ शुश्लोणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुश्लोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुश्लोणिषा-णि व म
४ अशुश्लोणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुश्लोणिषा व म
५ अशुश्लोणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुश्लोणिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुश्लोणिषाञ्चकार शुश्लोणिषाम्बभूव
७ शुश्लोणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुश्लोणिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुश्लोणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुश्लोणिषिष्या
-मि वः मः (अशुश्लोणिषिष्या-व म
१० अशुश्लोणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२७७ पैणृ ( पैण् ) गतिप्रेरणश्लेषणेषु ।

१ पिपैणिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपैणिषा-मि वः मः
२ पिपैणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपैणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपैणिषा-णि व म
४ अपिपैणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपैणिषा-व म
५ अपिपैणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपैणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपैणिषाञ्चकार पिपैणिषामास
७ पिपैणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपैणिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपैणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपैणिषिष्या-
मि वः मः (अपिपैणिषिष्या -व म
१० अपिपैणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२७८ चितै ( चित् ) संज्ञाने ।

१ चिचितिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचितिषा-मि वः मः
२ चिचितिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचितिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
व म चिचितिषा-णि व म
४ अचिचितिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचितिषा-
५ अचिचिति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचितिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचितिषाञ्चकार चिचितिषाम्बभूव
७ चिचितिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचितिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचितिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचितिषि-
ष्या-मि वः मः (अचिचितिषिष्या-व म
१० अचिचितिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिचि-स्थाने चिचे-इति ज्ञेयम्

२७९ अत ( अत् ) सातत्यगमने ।

१ अतितिष-ति तः न्ति सि थः थ अतितिषा-मि वः मः
२ अतितिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अतितिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म अतितिषा-णि व म
४ आतितिष-त् ताम् न् : तम् त म् आतितिषा-
५ आतिति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अतितिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अतितिषामास अतितिषाञ्चकार
७ अतितिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अतितिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अतितिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अतितिषिष्या
-मि वः मः (आतितिषिष्या-व म
१० आतितिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २८० च्युतृँ ( च्युत् ) आसेचने ।

१ चुच्युतिष-ति तः न्ति सि थः थ चुच्युतिषा मि वः मः
२ चुच्युतिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुच्युतिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुच्युतिषा-णि व म
४ अचुच्युतिष-त् ताम् न् : तम् त म अचुच्युतिषा-वम
५ अचुच्युति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुच्युतिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुच्युतिषाश्चकार चुच्युतिषामास
७ चुच्युतिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुच्युतिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुच्युतिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुच्युतिषिष्या
-मि वः मः (अचुच्युतिषिष्या-व म
१० अचुच्युतिषिष्य-त् ताम् न : तम् त म्
पक्षे चुच्यु-स्थाने चुच्यो इति ज्ञेयम्

## २८१ चुतृँ ( चुत् ) क्षरणे ।

१ चुचुतिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुतिषा-मि वः मः
२ चुचुतिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचुतिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचुतिषा-णि व म
४ अचुचुतिष-त् ताम् न् : तम् त म अचुचुतिषा-व म
५ अचुचुति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचुतिषाश्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
चुचुतिषामास चुचुतिषाम्बभूव
७ चुचुतिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुतिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुतिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचुतिषिष्या-मि
वः म (अचुचुतिषिष्या-व म
१० अचुचुतिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चुचु-स्थाने चुचो-इति ज्ञेयम्

## २८२ स्चुतृँ ( श्चुत् ) क्षरणे ।

१ चुश्चुतिष-ति तः न्ति सि थः थ चुश्चुतिषा-मि वः मः
२ चुश्चुतिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चुश्चुतिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुश्चुतिषा-णि व म
४ अचुश्चुतिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुश्चुतिषा-व म
५ अचुश्चुति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुश्चुतिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुश्चुतिषाश्चकार चुश्चुतिषाम्बभूव
७ चुश्चुतिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुश्चुतिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुश्चुतिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुश्चुतिषिष्या-
-मि वः मः (अचुश्चुतिषिष्या-व म
१० अचुश्चुतिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चुश्चु-स्थाने चुश्चो-इति ज्ञेयम्

## २८३ श्च्युतृँ ( श्च्युत् ) क्षरणे ।

१ चुश्च्युतिष-ति तः न्ति सि थः थ चुश्च्युतिषा-मि वः मः
२ चुश्च्युतिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ चुश्च्युतिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चुश्च्युतिषा-णि व म
४ अचुश्च्युतिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुश्च्युतिषा-
५ अचुश्च्युति-षीत् षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुश्च्युतिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुश्च्युतिषाश्चकार चुश्च्युतिषामास
७ चुश्च्युतिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुश्च्युतिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुश्च्युतिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुश्च्युतिषिष्या
-मि वः मः (अचुश्च्युतिषिष्या-व म
१० अश्चुच्युतिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चुश्च्यु-स्थाने चुश्च्यो इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## २८४ जुतृ ( जुत् ) भासने ।

१जुजुतिष-ति तः न्ति सि थः थ जुजुतिषा मि वः मः
२ जुजुतिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुजुतिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
जुजुतिषा-णि व म
४अजुजुतिष-त् ताम् नः तम् त म अजुजुतिषा-व म
५ अजुजुति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुजुतिषाम्बमू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुजुतिषाश्चकार जुजुतिषामास
७जुजुतिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८जुजुतिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुजुतिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुजुतिषिष्या--मि वः मः (अजुजुतिषिष्या-व म
१०अजुजुतिषिष्य-त ताम न : तम् त म्
पक्षे जुजु-स्थाने जुजो इति ज्ञेयम्

## २८५ अतु ( अन्त् ) बन्धने ।

१ अन्तितिष-ति तः न्ति सि थः थ अन्तितिषा-मि वः मः
२ अन्तितिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अन्तितिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त व म अन्तितिषा-णि व म
४ आन्तितिष-त् ताम् नः तम् त म आन्तितिषा-
५ आन्तिति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ अन्तितिषाश्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
अन्तितिषामास अन्तितिषाम्बभूव
७ अन्तितिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अन्तितिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अन्तितिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अन्तितिषिष्या-मि वः मः (आन्तितिषिष्या-व म
१०आन्तितिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २८६ कित ( कित् ) निवासे ।

१ चिकित्सिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकित्सिषा-मि वः मः
२ चिकित्सिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ चिकित्सिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त व म चिकित्सिषा-णि व म
४अचिकित्सिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकित्सिषा
५अचिकित्सि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकित्सिषाम्बभू--व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकित्सिषाश्चकार चिकित्सिषामास
७चिकित्सिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकित्सिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिकित्सिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकित्सिषिष्या-मि वः मः (अचिकित्सिषिष्या-व म
१०अचिकित्सिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## २८७ ऋत ( ऋत ) घृणागतिस्पर्धेषु ।

१अर्त्तितिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्त्तितिषा-मि वः मः
२ अर्त्तितिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ अर्त्तितिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
अर्त्तितिषा-णि व म
४ आर्त्तितिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्त्तितिषा व म
५ आर्त्तिति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ अर्त्तितिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अर्त्तितिषाश्चकार अर्त्तितिषाम्बभूव
७ अर्त्तितिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्त्तितिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्त्तितिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्त्तितिषिष्या-मि वः मः (आर्त्तितिषिष्या-व म
१०आर्त्तितिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ ऋतितीयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ऋतितीयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ऋतितीयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आर्तितीयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( ढ्वम् षि ष्वहि ष्महि
५आर्तितीयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ ऋतितीयिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
ऋतितीयिषाम्बभूव ऋतितीयिषामास ( य वहि महि
७ऋतितीयिषिषी ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् ढ्वम्
८ऋतितीयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ऋतितीयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०आर्तितीयिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## २८९ पुन्थ ( पुन्थ् ) हिंसासंक्लेशनयोः ।

१पुपुन्थिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपुन्थिषा-मि वः मः
२ पुपुन्थिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपुन्थिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पुपुन्थिषा–णि व म
४अपुपुन्थिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुन्थिषा-व म
५ अपुपुन्थि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पुपुन्थिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पुपुन्थिषाञ्चकार पुपुन्थिषामास
७ पुपुन्थिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुन्थिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९पुपुन्थिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपुन्थिषिष्या–मि वः मः (अपुपुन्थिषिष्या-व म
१०अपुपुन्थिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## २८८ कुथु ( कुन्थ् ) हिंसासंक्लेशनयोः ।

१चुकुन्थिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुन्थिषा-मि वः मः
२ चुकुन्थिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुन्थिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चुकुन्थिषा–णि व म
४अचुकुन्थिष-त् ताम न् : तम् त म् अचुकुन्थिषा व म
५ अचुकुन्थि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चुकुन्थिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चुकुन्थिषाञ्चकार चुकुन्थिषाम्बभूव
७ चुकुन्थिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुन्थिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मिः स्वः स्मः
९चुकुन्थिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुन्थिषिष्या –मि वः मः (अचुकुन्थिषिष्या-व म
१०अचुकुन्थिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## २७८ लुथु ( लुन्थ् ) हिंसासंक्लेशनयोः ।

१लुलुन्थिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुन्थिषा-मि वः मः
२ लुलुन्थिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुन्थिष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त व म लुलुन्थिषा-णि व म
४ अलुलुन्थिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुन्थिषा–
५ अलुलुन्थि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ लुलुन्थिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम लुलुन्थिषाञ्चकार लुलुन्थिषाम्बभूव
७ लुलुन्थिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुन्थिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुन्थिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लुलुन्थिषिष्या-मि वः मः ( अलुलुन्थिषिष्या-व म
१०अलुलुन्थिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२९१ मथु ( मन्थ् ) हिंसासंक्लेशनयोः ।

१मिमन्थिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमन्थिषा मि वः मः
२ मिमन्थिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमन्थिष-तु तात् ताम न्तु ” तात् तम् त
मिमन्थिषा-णि व म
४अमिमन्थिष-त् ताम् न्: तम् त म अमिमन्थिषा-व म
५ अमिमन्थि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमन्थिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमन्थिषाञ्चकार मिमन्थिषामास
७मिमन्थिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८मिमन्थिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमन्थिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमन्थिषिष्या
-मि वः मः (अमिमन्थिषिष्या-व म
१०अमिमन्थिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

२९२ मन्थ ( मन्थ् ) हिंसासंक्लेशनयोः ।

२९३ मान्थ ( मान्थ् ) हिंसासंक्लेशनयोः ।

१ मिमान्थिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमान्थिषा-मि
वः मः
२ मिमान्थिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमान्थिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
व म मिमान्थिषा-णि व म
४अमिमान्थिष-त् ताम् न्: तम् त म अमिमान्थिषा-
५ अमिमान्थि-षीत् षिष्टम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ मिमान्थिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
मिमान्थिषामास मिमान्थिषाम्बभूव
७ मिमान्थिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमान्थिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमान्थिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमान्थिषि-
ष्या-मि वः मः (अमिमान्थिषिष्या-व म
१०अमिमान्थिषिष्य-त् ताम् न् : तम् तः

२९४ खाद्द ( खाद् ) भक्षणे ।

१चिखादिष-ति तः न्ति सि थः थ चिखादिषा-मि वः मः
२ चिखादिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखादिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
व म चिखादिषा-णि व म
४अचिखादिष-त् ताम् न्: तम् त म अचिखादिषा-
५अचिखादि-षीत् षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिखादिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिखादिषाञ्चकार चिखादिषामास
७ चिखादिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखादिषिता- ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिखादिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखादिषिष्या
-मि वः मः (अचिखादिषिष्या-व म
१०अचिखादिषिष्य- त् ताम् न् : तम् त म्

२९५ बद ( बद् ) स्थैर्ये ।

१ बिबदिष-ति तः न्ति सि थः थ बिबदिषा-मि वः मः
२ बिबदिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ बिबदिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
बिबदिषा-णि व म
४ अबिबदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिबदिषा व म
५ अबिबदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिबदिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिबदिषाञ्चकार बिबदिषाम्बभूव
७ बिबदिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिबदिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिबदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिबदिषि-
ष्या-मि वः मः (अबिबदिषिष्या-व म
१०अबिबदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



२९६ खद ( खद् ) हिंसायां च ।

१ चिखदिष-ति तः न्ति सि थः थ चिखदिषा-मि वः मः
२ चिखदिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चिखदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चिखदिषा-णि व म
४ अचिखदिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अचिखदिषा-
५ अचिखदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
ष्म षिष्व षिष्म
६ चिखदिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिखदिषाम्बभूव चिखदिषामास
७ चिखदिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखदिषिष्या
मि वः मः (अचिखदिषिष्या-व म
१० अचिखदिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

२९७ गद ( गद् ) व्यक्तायां वाचि ।

१ जिगदिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगदिषा-मि वः मः
२ जिगदिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ जिगदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगदिषा-णि व म
४ अजिगदिष त् ताम् न् ः तम् त म् अजिगदिषा-व म
५ अजिगदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगदिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगदिषाञ्चकार जिगदिषामास
७ जिगदिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगदिषिष्या-
-मि वः मः (अजिगदिषिष्या-व म
१० अजिगदिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

२९८ रद ( रद् ) विलेखने ।

१ रिरदिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरदिषा-मि वः मः
२ रिरदिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ रिरदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरदिषा--णि व म
४ अरिरदिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अरिरदिषा-व म
५ अरिरदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
ष्म षिष्व षिष्म
६ रिरदिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
रिरदिषाम्बभूव रिरदिषामास
७ रिरदिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरदिषिष्या-
मि वः मः (अरिरदिषिष्या-व म
१० अरिरदिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

२९९ णद ( नद् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१ निनदिष-ति तः न्ति सि थः थ निनदिषा-मि वः मः
२ निनदिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ निनदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनदिषा-णि व म
४ अनिनदिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अनिनदिषा-व म
५ अनिनदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
ष्म षिष्व षिष्म
६ निनदिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
निनदिषाम्बभूव निनदिषामास
७ निनदिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनदिषि-
ष्या-मि वः मः (अनिनदिषिष्या-व म
१० अनिनदिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३०० ञिक्ष्विदा ( क्ष्विद् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१ चिक्ष्विदिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्ष्विदिषा-मि वः मः
२ चिक्ष्विदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्ष्विदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
षा-व म चिक्ष्विदिषा-णि व म
४अचिक्ष्विदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्ष्विदि
५अचिक्ष्विदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्ष्म षिष्व षिष्म
६चिक्ष्विदिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चिक्ष्विदिषाम्बभूव चिक्ष्विदिषामास
७चिक्ष्विदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८चिक्ष्विदिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिक्ष्विदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्ष्विदिषि-
ष्या-मि वः मः (अचिक्ष्विदिषष्या-व म
१०अचिक्ष्विदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३०१ अर्द ( अर्द् ) गतियाचनयोः ।

१अदिर्दिष-ति तः न्ति सि थः थ अदिर्दिषा-मि वः मः
२ अदिर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अदिर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अदिर्दिषा-णि व म
४ आदिर्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् आदिर्दिषा-व म
५ आदिर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अदिर्दिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अदिर्दिषाञ्चकार अदिर्दिषाम्बभूव
७ अदिर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अदिर्दिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अदिर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अदिर्दिषिष्या-
मि वः मः ( आदिर्दिषिष्या-व म
१०आदिर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३०२ नर्द (नर्द् ) शब्दे ।

१ निनर्दिष-ति तः न्ति सि थ: थ निनर्दिषा-मि वः मः
२ निनर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म निनर्दिषा-णि व म
४ अनिनर्दिष-त् ताम् न् : तम् त म अनिनर्दिषा-
५ अनिनर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनर्दिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनर्दिषाञ्चकार निनर्दिषामास
७ निनर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनर्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनर्दिषिष्या-
-मि वः मः (अनिनर्दिषिष्या-व म
१०अनिनर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३०३ णर्द ( नर्द् ) शब्दे । नर्द ३०२ वद्रूपाणि

### ३०४ गर्द ( गर्द् ) शब्दे ।

१जिगर्दिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्दिषा-मि वः मः
२ जिगर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगर्दिषा-णि व म
४ अजिगर्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगर्दिषा-व म
५ अजिगर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६जिगर्दिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
जिगर्दिषाम्बभूव जिगर्दिषामास
७ जिगर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगर्दिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्दिषि-
ष्या-मि वः मः (अजिगर्दिषिष्या-व म
१०अजिगर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३०५ तर्द ( तर्द् ) हिंसायाम् ।

१ तितर्दिष ति तः न्ति सि थः थ तितर्दिषा-मि वः मः
२ तितर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तितर्दिषा-णि व म
४ अतितर्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितर्दिषा-व म
५ अतितर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ तितर्दिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव तितर्दिषाम्बभूव तितर्दिषामास
७ तितर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितर्दिषिष्या-मि वः मः (अतितर्दिषिष्या-व म
१० अतितर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३०६ कर्द ( कर्द् ) कुत्सिते शब्दे ।

१ चिकर्दिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्दिषा-मि वः मः
२ चिकर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिकर्दिषा-णि व म
४ अचिकर्दिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिकर्दिषा-व म
५ अचिकर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकर्दिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिकर्दिषाञ्चकार चिकर्दिषामास
७ चिकर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकर्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्दिषिष्या-मि वः मः (अचिकर्दिषिष्या-व म
१० अचिकर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३०७ खर्द ( खर्द् ) दशने ।

१ चिखर्दिष-ति तः न्ति सि थः थ चिखर्दिषा-मि वः मः
२ चिखर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिखर्दिषा-णि व म
४ अचिखर्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिखर्दिषा-
५ अचिखर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ चिखर्दिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव चिखर्दिषाम्बभूव चिखर्दिषामास
७ चिखर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखर्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखर्दिषिष्या मि वः मः (अचिखर्दिषिष्या-व म
१० अचिखर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३०८ अदु ( अन्द् ) बन्धने ।

१ अन्दिदिष-ति तः न्ति सि थः थ अन्दिदिषा-मि वः मः
२ अन्दिदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अन्दिदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त अन्दिदिषा--णि व म
४ आन्दिदिष त् ताम् न् : तम् त म् आन्दिदिषा-व म
५ आन्दिदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ अन्दिदिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव अन्दिदिषाम्बभूव अन्दिदिषामास
७ अन्दिदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अन्दिदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अन्दिदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अन्दिदिषिष्या-मि वः मः (आन्दिदिषिष्या-व म
१० आन्दिदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३०९ इदु ( इन्द् ) परमैश्वर्ये ।

१इन्दिदिष-ति तः न्ति सि थः थ इन्दिदिषा-मि वः मः
२ इन्दिदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ इन्दिदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
इन्दिदिषा--णि व म
४ ऐन्दिदिष-त् ताम् न् : तम् त म् ऐन्दिदिषा-व म
५ऐन्दिदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६इन्दिदिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
इन्दिदिषाम्बभूव इन्दिदिषामास
७ इन्दिदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ इन्दिदिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ इन्दिदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ इन्दिदिषि
ष्या-मि वः मः (ऐन्दिदिषिष्या-व म
१०ऐन्दिदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३१० विदु ( विन्द् ) अवयवे ।

१विविन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ विविन्दिषा-मि वः मः
२ विविन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म विविन्दिषा-णि व म
४अविविन्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविविन्दिषा
५अविविन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६विविन्दिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
विविन्दिषाम्बभूव विविन्दिषामास
७विविन्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८विविन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विविन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विविन्दिषि-
ष्या-मि वः मः (अविविन्दिषिष्या-व म
१०अविविन्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३११ णिदु ( निन्द् ) कुत्सायाम् ।

१ निनिन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ निनिन्दिषा-मि
वः मः
२ निनिन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनिन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म निनिन्दिषा-णि व म
४अनिनिन्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनिन्दिषा-व
५ अनिनिन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनिन्दिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनिन्दिषाञ्चकार निनिन्दिषामास
७ निनिन्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९निनिन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनिन्दिषि
ष्या-मि वः मः (अनिनिन्दिषिष्या-व म
१०अनिनिन्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३१२ टुनदु ( नन्द् ) समृद्धौ ।

१निनन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ निनन्दिषा-मि वः मः
२ निनन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म निनन्दिषा-णि व म
४ अनिनन्दिष-त ताम् न् : तम् त म् अनिनन्दिषा-
५ अनिनन्दि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ निनन्दिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
निनन्दिषाम्बभूव निनन्दिषामास
७ निनन्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ निनन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनन्दिषिष्या
मि वः मः (अनिनन्दिषिष्या-व म
१० अनिनन्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



३१३ चदु ( चन्द् ) दीप्त्याह्लादनयोः ।

१ चिचन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचन्दिषा-मि वः मः
२ चिचन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चिचन्दिषा-णि व म
४ अचिचन्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचन्दिषा-
५ अचिचन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ चिचन्दिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिचन्दिषाम्बभूव चिचन्दिषामास
७ चिचन्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचन्दिषिष्या
-मि वः मः (अचिचन्दिषिष्या-व म
१० अचिचन्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३१४ त्रदु ( त्रन्द् ) चेष्टायाम् ।

१ तित्रन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्रन्दिषा मि वः मः
२ तित्रन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्रन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तित्रन्दिषा-णि व म
४ अतित्रन्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतित्रन्दिषा व म
५ अतित्रन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तित्रन्दिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तित्रन्दिषाञ्चकार तित्रन्दिषाम्बभूव
७ तित्रन्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्त मृस्त सम् स्व स्म
८ तित्रन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्रन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्रन्दिषिष्या
मि वः मः (अतित्रन्दिषिष्या-व म
१० अतित्रन्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

३१५ कदु ( कन्द् ) रोदनाह्वानयोः ।

१ चिकन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकन्दिषा-मि वः म
२ चिकन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म चिकन्दिषा-णि व म
४ अचिकन्दिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिकन्दिषा-
५ अचिकन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकन्दिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकन्दिषाञ्चकार चिकन्दिषामास
७ चिकन्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकन्दिषिष्या
-मि वः मः (अचिकन्दिषिष्या-व म
१० अचिकन्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३१६ क्रदु ( क्रन्द् ) रोदनाह्वानयो. ।

१ चिक्रन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्रन्दिषा-मि वःमः
२ चिक्रन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्रन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म चिक्रन्दिषा-णि व म
४ अचिक्रन्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्रन्दिषा-व
५ अचिक्रन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्रन्दिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कारकर कृव कृम
चिक्रन्दिषाम्बभूव चिक्रन्दिषामास
७ चिक्रन्दिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्रन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्रन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्रन्दिषि
ष्या-मि वः मः (अचिक्रन्दिषिष्या-व म
१० अचिक्रन्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३१७ क्लदु ( क्लन्द् ) रोदनाह्वानयोः ।

१ चिक्लन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लन्दिषा-मि वः मः
२ चिक्लन्दिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चिक्लन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिक्लन्दिषा-णि व म
४ अचिक्लन्दिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अचिक्लन्दिषा
५ अचिक्लन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् ष्म षिष्व षिष्म
६ चिक्लन्दिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चिक्लन्दिषाम्बभूव चिक्लन्दिषामास
७ चिक्लन्दिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लन्दिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्लन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लन्दिषिष्या-मि वः मः (अचिक्लन्दिषिष्या-व म
१० अचिक्लन्दिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ३१८ क्लिदु ( क्लिन्द् ) परिदेवने ।

१ चिक्लिन्दिष-ति तः न्ति सि थ. थ चिक्लिन्दिषा-मि वः म
२ चिक्लिन्दिषे-त् ताम युः ः तम् त यम् व म
३ चिक्लिन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिक्लिन्दिषा-णि व म
४ अचिक्लिन्दिष-त् ताम् न् ः तम् त म अचिक्लिन्दिषा
५ अचिक्लिन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्लिन्दिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्लिन्दिषाञ्चकार चिक्लिन्दिषामास
७ चिक्लिन्दिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लिन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्लिन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लिन्दिषिष्या-मि वः मः (अचिक्लिन्दिषिष्या-व म
१० अचिक्लिन्दिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ३१९ स्कन्दृं ( स्कन्द् ) गतिशोषणयोः ।

१ चिस्कन्त्स-ति तः न्ति सि थः थ चिस्कन्त्सा-मि वः मः
२ चिस्कन्त्से-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चिस्कन्त्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिस्कन्त्सा-णि व म
४ अचिस्कन्त्स-त् ताम् न् ः तम् त म् अचिस्कन्त्सा-व म
५ अचिस्कन्त्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् क्म सिष्व सिष्म
६ चिस्कन्त्साञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चिस्कन्त्साम्बभूव चिस्कन्त्सामास
७ चिस्कन्त्स्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिस्कन्त्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिस्कन्त्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिस्कन्त्सिष्या-मि वः मः (अचिस्कन्त्सिष्या-व म
१० अचिस्कन्त्सिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ३२० षिधू ( सिध् ) गत्याम् ।

१ सिसिधिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसिधिषा-मि वः मः
२ सिसिधिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ सिसिधिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त म सिसिधिषा-णि व म
४ असिसिधिष-त् ताम् न् ः तम् त म् असिसिधिषा-व
५ असिसिधि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ सिसिधिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिसिधिषाञ्चकार सिसिधिषाम्बभूव
७ सिसिधिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्त मूस्त सम् स्व स्म
८ सिसिधिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसिधिषिष्य-ति तः न्ति सि थ. थ सिसिधिषिष्या-मि वः मः (असिसिधिषिष्या-व म
१० असिसिधिषिष्य-त् ताम् न् ः तम त म

पक्षे सिसि-स्थाने सिसे इति ज्ञेयम्

३२१ षिधौ ( सिध् ) शास्त्रमाङ्गल्ययोः ।
षिधू ३२० वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३२२ शुन्ध ( शुन्ध् ) शुद्धौ ।

१ शुशुन्धिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशुन्धिषा-मि वः मः
२ शुशुन्धिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुन्धिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुन्धिषा--णि व म
४अशुशुन्धिष त् ताम् न् : तम् त म् अशुशुन्धिषा-व म
५अशुशुन्धि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्ष्म षिष्व षिष्म
६शुशुन्धिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
शुशुन्धिषाम्बभूव शुशुन्धिषामास
७ शुशुन्धिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुन्धिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशुन्धिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुन्धिषिष्या-मि वः मः (अशुशुन्धिषिष्या-व म
१०अशुशुन्धिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३२३ स्तन ( स्तन् ) शब्दे ।

१तिस्तनिष-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तनिषा-मि वः
मः
२ तिस्तनिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तिस्तनिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म तिस्तनिषा-णि व म
४अतिस्तनिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतिस्तनिषा-व
५ अतिस्तनि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्तनिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तनिषाञ्चकार तिस्तनिषामास
७ तिस्तनिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तनिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तिस्तनिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तनिषिष्या
-मि वः मः (अतिस्तनिषिष्या-व म
१०अतिस्तनिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३२४ धन ( धन् ) शब्दे ।

१दिधनिष-ति तः न्ति सि थः थ दिधनिषा-मि वः मः
२ दिधनिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधनिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिधनिषा-णि व म
४ अदिधनिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिधनिषा-व म
५ अदिधनि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६दिधनिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिधनिषाम्बभूव दिधनिषामास
७ दिधनिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधनिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधनिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधनिषिष्या
मि वः मः (अदिधनिषिष्या-व म
१० अदिधनिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३२५ ध्वन ( ध्वन् ) शब्दे ।

१दिध्वनिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वनिषा-मि वः मः
२ दिध्वनिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्वनिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिध्वनिषा-णि व म
४अदिध्वनिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्वनिषा-व म
५ अदिध्वनि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्ष्म षिष्व षिष्म
६ दिध्वनिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
दिध्वनिषाम्बभूव दिध्वनिषामास
७ दिध्वनिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्वनिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्वनिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वनिषि-ष्या-मि वः मः (अदिध्वनिषिष्या-व म
१०अदिध्वनिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**३२६ चन ( चन् ) शब्दे ।**

१ **चिचनिष** ति तः न्ति सि थः थ **चिचनिषा**-मि वः मः
२ **चिचनिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चिचनिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **चिचनिषा**--णि व म
४ **अचिचनिष** त् ताम् न् : तम् त म् **अचिचनिषा**-व म
५ **अचिचनि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **चिचनिषाञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**चिचनिषाम्बभूव** **चिचनिषामास**
७ **चिचनिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चिचनिषिता**- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चिचनिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **चिचनिषिष्या**-मि वः मः (**अचिचनिषिष्या**-व म
१० **अचिचनिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**३२७ स्वन ( स्वन् ) शब्दे ।**

१ **सिस्वनिष**-ति तः न्ति सि थः थ **सिस्वनिषा**--मि वः मः
२ **सिस्वनिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **सिस्वनिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **सिस्वनिषा**-णि व म
४ **असिस्वनिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **असिस्वनिषा**-व म
५ **असिस्वनि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **सिस्वनिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**सिस्वनिषाञ्चकार** **सिस्वनिषामास**
७ **सिस्वनिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिस्वनिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिस्वनिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **सिस्वनिषिष्या**-मि वः मः (**असिस्वनिषिष्या**-व म
१० **असिस्वनिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**३२८ वन ( वन् ) शब्दे ।**

१ **विवनिष** -ति तः न्ति सि थः थ **विवनिषा**-मि वः मः
२ **विवनिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विवनिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **विवनिषा**-णि व म
४ **अविवनिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अविवनिषा**-व म
५ **अविवनि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **विवनिषाञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**विवनिषाम्बभूव** **विवनिषामास**
७ **विवनिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवनिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवनिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विवनिषिष्या**-मि वः मः (**अविवनिषिष्या**-व म
१० **अविवनिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**३२९ वन ( वन् ) भक्तौ । वन ३२८ वद्रूपाणि**

**३३० षन ( सन् ) भक्तौ ।**

१ **सिसनिष**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसनिषा**-मि वः मः
२ **सिसनिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **सिसनिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **सिसनिषा**-णि व म
४ **असिसनिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **असिसनिषा**-व म
५ **असिसनि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **सिसनिषाञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**सिसनिषाम्बभूव** **सिसनिषामास**
७ **सिसनिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसनिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिसनिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसनिषिष्या**-मि वः मः (**असिसनिषिष्या**-व म
१० **असिसनिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३३१ कनै ( कन् ) दीप्तिकान्तिगतिषु ।

१ चिकनिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकनिषा-मि वः मः
२ चिकनिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चिकनिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिकनिषा-णि व म
४ अचिकनिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिकनिषा-व म
५ अचिकनि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकनिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चिकनिषाञ्चकार चिकनिषाम्बभूव
७ चिकनिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकनिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकनिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकनिषिष्या-मि वः मः (अचिकनिषिष्या-व म
१० अचिकनिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३३२ गुपौ ( गुप् ) रक्षणे ।

१ जुगोपायिषति तः न्ति सि थः थ जुगोपायिषा-मिवःमः
२ जुगोपायिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ जुगोपायिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म जुगोपायिषा-णि व म
४ अजुगोपायिष-त् ताम् न् : तम् त म अजुगोपायिषा
५ अजुगोपायि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म
६ जुगोपायिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जुगोपायिषाञ्चकार जुगोपायिषामास
७ जुगोपायिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगोपायिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ जुगोपायिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगोपायिषिष्या-मि वः मः (अजुगोपायिषिष्या-व म
१० अजुगोपायिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्
पक्षे जुगोपिषति, जुगुपिषति जुगुप्सति

### ३३३ तप ( तप् ) संतापे ।

१ तितप्स-ति तः न्ति सि थः थ तितप्सा-मि वः मः
२ तितप्से-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ तितप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तितप्सा-णि व म
४ अतितप्स-त् ताम् न् : तम् त म अतितप्सा-व म
५ अतितप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ तितप्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम तितप्साञ्चकार तितप्सामास
७ तितप्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ तितप्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितप्सिष्या-मि वः मः (अतितप्सिष्या-व म
१० अतितप्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३३४ धूप ( धूप् ) संतापे ।

१ दुधूपिष-ति तः न्ति सि थः थ दुधूपिषा-मि वः मः
२ दुधूपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुधूपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दुधूपिषा-णि व म
४ अदुधूपिष-त् ताम् न् : तम् त म अदुधूपिषा-व म
५ अदुधूपि-षीत् षिष्टम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दुधूपिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम दुधूपिषामास दुधूपिषाम्बभूव
७ दुधूपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधूपिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधूपिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुधूपिषिष्या-मि वः म (अदुधूपिषिष्या-व म
१० अदुधूपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे दुधूपि-स्थाने दुधूपायि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३३५ रप ( रप् ) व्यक्ते वचने ।

१ रिरपिष–ति तः न्ति सि थः थ रिरपिषा–मि वः मः
२ रिरपिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरपिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरपिषा–णि व म
४ अरिरपिष–त् ताम् न् : तम् त म् अरिरपिषा–व म
५ अरिरपि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरपिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रिरपिषामास रिरपिषाम्बभूव
७ रिरपिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरपिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरपिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रिरपिषिष्या–मि
वः म (अरिरपिषिष्या–व म
१० अरिरपिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ३३६ लप ( लप् ) व्यक्ते वचने ।

१ लिलपिष–ति तः न्ति सि थः थ लिलपिषा–मि वः मः
२ लिलपिषे–त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ लिलपिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलपिषा–णि व म
४ अलिलपिष–त् ताम् न् : तम् त म् अलिलपिषा–व म
५ अलिलपि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलपिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलपिषाञ्चकार लिलपिषाम्बभूव
७ लिलपिष्या–त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलपिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलपिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लिलपिषिष्या–
मि वः मः (अलिलपिषिष्या–व म
१० अलिलपिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ३३७ जल्प ( जल्प् ) व्यक्ते वचने ।

१ जिजल्पिष–ति तः न्ति सि थः थ जिजल्पिषा–मि वः मः
२ जिजल्पिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजल्पिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म जिजल्पिषा–णि व म
४ अजिजल्पिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिजल्पिषा–व
५ अजिजल्पि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजल्पिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिजल्पिषाञ्चकार जिजल्पिषामास
७ जिजल्पिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजल्पिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजल्पिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिजल्पिषिष्या
–मि वः मः (अजिजल्पिषिष्या–व म
१० अजिजल्पिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ३३८ जप ( जप् ) मानसे च ।

१ जिजपिष–ति तः न्ति सि थः थ जिजपिषा–मि वः मः
२ जिजपिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजपिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजपिषा–णि व म
४ अजिजपिष–त् ताम् न् : तम् त म अजिजपिषा–व म
५ अजिजपि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजपिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिजपिषाञ्चकार जिजपिषामास
७ जिजपिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ जिजपिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ जिजपिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिजपिषिष्या–
मि वः मः (अजिजपिषिष्या–व म
१० अजिजपिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



३३९ चप ( चप् ) सान्त्वने ।

१ चिचपिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचपिषा-मि वः मः
२ चिचपिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ चिचपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त -व म चिचपिषा-णि व म
४ अचिचपिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचपिषा-
५ अचिचपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिचपिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिचपिषामास चिचपिषाञ्चकार
७ चिचपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचपिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचपिषिष्य-ति त न्ति सि थ थ चिचपिषिष्या-मि वः मः (अचिचपिषिष्या-व म
१० अचिचपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३४० षप ( सप् ) समवाये ।

१ सिसपिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसपिषा-मि वः मः
२ सिसपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त सिसपिषा-णि व म
४ असिसपिष-त् ताम न् : तम् त म् असिसपिषा-व म
५ असिसपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ सिसपिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम सिसपिषाञ्चकार सिसपिषाम्बभूव
७ सिसपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसपिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसपिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसपिषिष्या-मि वः मः (असिसपिषिष्या-व म
१० असिसपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३४१ सृप्लृं ( सृप् ) गतौ ।

१ सिसृप्स-ति तः न्ति सि थः थ सिसृप्सा-मि वः मः
२ सिसृप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसृप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त सिसृप्सा-नि व म
४ असिसृप्स-त् ताम् न् : तम् त म् असिसृप्सा-व म
५ असिसृप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ सिसृप्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम सिसृप्साञ्चकार सिसृप्साम्बभूव
७ सिसृप्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसृप्सिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ सिसृप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसृप्सिष्या-मि वः मः (असिसृप्सिष्या-व म
१० असिसृप्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३४२ चुप ( चुप् ) मन्दायां गतौ ।

१ चुचुपिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुपिषा-मि वः मः
२ चुचुपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचुपिष-तु तात ताम् न्तु "तात् तम् त चुचुपिषा-णि व मं
४ अचुचुपिष-त ताम् न् : तम् त म् अचुचुपिषा-व म
५ अचुचुपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चुचुपिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चुचुपिषाञ्चकार चुचुपिषामास
७ चुचुपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुपिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुपिषिष्य-ति तः न्तिसि थः थ चुचुपिषिष्या-मि वः मः (अचुचुपिषिष्या -व म
१० अचुचुपिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

पक्षे चुचु-स्थाने चुचो-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



३४३ तुप ( तुप् ) हिंसायाम् ।

१ तुतुपिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतुपिषा-मि वः मः
२ तुतुपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
-व म तुतुपिषा-णि व म
४ अतुतुपिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुपिषा-
५ अतुतुपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुपिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतुपिषामास तुतुपिषाश्चकार
७ तुतुपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुपिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुपिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुपिषिष्या-मि
वः मः (अतुतुपिषिष्या-व म
१०अतुतुपिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म
पक्षे तुत-स्थाने तुतो-इति ज्ञेयम्

३४४ तुम्प ( तुम्प् ) हिंसायाम् ।

१ तुतुम्पिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतुम्पिषा-मि वः मः
२ तुतुम्पिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुम्पिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुम्पिषा-णि व म
४ अतुतुम्पिष-त् ताम न् : तम् त म् अतुतुम्पिषा-व म
५ अतुतुम्पि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुम्पिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुतुम्पिषाश्चकार तुतुम्पिषाम्बभूव
७ तुतुम्पिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुम्पिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुम्पिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुम्पिषिष्या-मि
वः मः ( अतुतुम्पिषिष्या-व म
१०अतुतुम्पिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

३४५ त्रुप ( त्रुप ) हिंसायाम् ।

१ तुत्रुपिष-ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुपिषा-मि वः मः
२ तुत्रुपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुत्रुपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुत्रुपिषा-णि व म
४ अतुत्रुपिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुत्रुपिषा-व म
५ अतुत्रुपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुत्रुपिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुत्रुपिषाश्चकार तुत्रुपिषामास
७ तुत्रुपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुत्रुपिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुत्रुपिषिष्य-ति तः न्तिसि थः थ तुत्रुपिषिष्या-मि वः
मः (अतुत्रुपिषिष्या-व म
१०अतुत्रुपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३४६ त्रुम्प ( त्रुम्प् ) हिंसायाम् ।

१ तुत्रुम्पिष-ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुम्पिषा-मि वः मः
२ तुत्रुम्पिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुत्रुम्पिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुत्रुम्पिषा-णि व म
४ अतुत्रुम्पिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुत्रुम्पिषा-व म
५ अतुत्रुम्पि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुत्रुम्पिषामा-स सतुः सुः सिथ सथु स स सिव सिम
तुत्रुम्पिषाश्चकार तुत्रुम्पिषाम्बभूव
७ तुत्रुम्पिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुत्रुम्पिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुत्रुम्पिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुम्पिषिष्या-मि
व. मः (अतुत्रुम्पिषिष्या-व म
१०अतुत्रुम्पिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ३४७ तुफ ( तुफ् ) हिंसायाम् ।

१ तुतुफिष–ति तः न्ति सि थः थ तुतुफिषा–मि वः मः
२ तुतुफिषे–त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ तुतुफिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तुतुफिषा–णि व म
४ अतुतुफिष त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुफिषा व म
५ अतुतुफि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तुतुफिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम तुतुफिषाम्बभूव तुतुफिषामास
७ तुतुफिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुफिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुफिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुतुफिषिष्या–मि वः मः (अतुतुफिषिष्या–व म
१० अतुतुफिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ३४८ तुम्फ ( तुम्फ् ) हिंसायाम् ।

१ तुतुम्फिष–ति तः न्ति सि थ. थ तुतुम्फिषा–मि वः मः
२ तुतुम्फिषे–त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ तुतुम्फिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तुतुम्फिषा–णि व म
४ अतुतुम्फिष त् ताम् न् : तम् त म अतुतुम्फिषा व म
५ अतुतुम्फि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तुतुम्फिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम तुतुम्फिषाञ्चकार तुतुम्फिषामास
७ तुतुम्फिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुम्फिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुम्फिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुतुम्फिषिष्या–मि वः मः (अतुतुम्फिषिष्या–व म
१० अतुतुम्फिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ३४९ त्रुफ ( त्रुफ् ) हिंसायाम् ।

१ तुत्रुफिष–ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुफिषा–मि वः मः
२ तुत्रुफिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ तुत्रुफिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तुत्रुफिषा–णि व म
४ अतुत्रुफिष त् ताम् न् : तम् त म् अतुत्रुफिषा–व म
५ अतुत्रुफि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तुत्रुफिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम तुत्रुफिषाम्बभूव तुत्रुफिषामास
७ तुत्रुफिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुत्रुफिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुत्रुफिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुफिषिष्या–मि वः मः (अतुत्रुफिषिष्या–व म
१० अतुत्रुफिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ३५० त्रुम्फ ( त्रुम्फ् ) हिंसायाम् ।

१ तुत्रुम्फिष–ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुम्फिषा–मि वः मः
२ तुत्रुम्फिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुत्रुम्फिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तुत्रुम्फिषा–णि व म
४ अतुत्रुम्फिष–त् ताम् न् : तम् त म् अतुत्रुम्फिषा व म
५ अतुत्रुम्फि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तुत्रुम्फिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम तुत्रुम्फिषाञ्चकार तुत्रुम्फिषाम्बभूव
७ तुत्रुम्फिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुत्रुम्फिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुत्रुम्फिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुम्फिषिष्या–मि वः मः (अतुत्रुम्फिषिष्या–व म
१० अतुत्रुम्फिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ३५१ वर्फ ( वर्फ् ) गतौ ।

१ विवर्फिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्फिषा मि वः मः
२ विवर्फिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवर्फिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्फिषा-णि व म
४ अविवर्फिष त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्फिषा- व म
५ अविवर्फि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवर्फिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क्रकार कर कृव कृम
विवर्फिषाम्बभूव विवर्फिषामास
७ विवर्फिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्फिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्फिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्फिषिष्या
मि वः मः (अविवर्फिषिष्या-व म
१० अविवर्फिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३५२ रिफ ( रिफ् ) गतौ ।

१ रिरफिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरफिषा-मि वः मः
२ रिरफिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरफिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरफिषा-णि व म
४ अरिरफिष त् ताम् न् : तम् त म् अरिरफिषा-व म
५ अरिरफि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ रिरफिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क्र कार कर कृव
रिरफिषाम्बभूव रिरफिषामास
७ रिरफिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरफिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरफिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरफिषिष्या-
मि वः मः (अरिरफिषिष्या-व म
१० अरिरफिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३५३ रफु ( रम्फ् ) गतौ ।

१ रिरम्फिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरम्फिषा मि वः मः
२ रिरम्फिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरम्फिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरम्फिषा-णि व म
४ अरिरम्फिष-त् ताम् न् : तम् त म अरिरम्फिषा-व म
५ अरिरम्फि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरम्फिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरम्फिषाञ्चकार रिरम्फिषामास
७ रिरम्फिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरम्फिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरम्फिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरम्फिषिष्या-
मि वः मः (अररम्फिषिष्या-व म
१० अररम्फिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३५४ अर्ब ( अर्ब् ) गतौ ।

१ अर्बिबिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्बिबिषा-मि वः मः
२ अर्बिबिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अर्बिबिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्बिबिषा-णि व म
४ आर्बिबिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्बिबिषा व म
५ आर्बिबि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्बिबिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अर्बिबिषाञ्चकार अर्बिबिषाम्बभूव
७ अर्बिबिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्बिबिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्बिबिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्बिबिषिष्या-
मि वः मः (आर्बिबिषिष्या-व म
१० आर्बिबिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३५५ कर्ब ( कर्ब् ) गतौ ।

१ चिकर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्बिषा-मि वः मः
२ चिकर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकर्बिषा-णि व म
४अचिकर्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकर्बिषा-व म
५ अचिकर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चिकर्बिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकर्बिषामास चिकर्बिषाञ्चकार
७ चिकर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्बिषिष्या-
मि व. मः (अचिकर्बिषिष्या-व म
१०अचिकर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३५७ गर्ब ( गर्ब् ) गतौ ।

१जिगर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्बिषा-मि वः मः
२ जिगर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगर्बिषा-णि व म
४अजिगर्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगर्बिषा-व म
५ अजिगर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगर्बिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिगर्बिषाञ्चकार जिगर्बिषाम्बभूव
७ जिगर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्बिषिष्या
मि वः मः (अजिगर्बिषिष्या-व म
१०अजिगर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३५६ खर्ब ( खर्ब् ) गतौ ।

१चिखर्बिष ति तः न्ति सि थः थ चिखर्बिषा मि वः मः
२ चिखर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखर्बिषा-णि व म
४अचिखर्बिष-त् ताम न् : तम् त म् अचिखर्बिषा-व म
५ अचिखर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिखर्बिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिखर्बिषाञ्चकार चिखर्बिषाम्बभूव
७ चिखर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिखर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखर्बिषिष्या
मि वः मः (अचिखर्बिषिष्या-व म
१०अचिखर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३५८ चर्ब ( चर्ब् ) गतौ ।

१चिचर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचर्बिषा-मि वः मः
२ चिचर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचर्बिषा-णि व म
४अचिचर्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचर्बिषा-व म
५ अचिचर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचर्बिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचर्बिषाञ्चकार चिचर्बिषामास
७ चिचर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिचर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचर्बिषिष्या-
मि वः मः (अचिचर्बिषिष्या-व म
१०अचिचर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ३५९ तर्ब ( तर्ब् ) गतौ ।

१ तितर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ तितर्बिषा-मि वः मः
२ तितर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितर्बिषा-णि व म
४ अतितर्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितर्बिषा-व म
५ अतितर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितर्बिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितर्बिषामास तितर्बिषाञ्चकार
७ तितर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्बिषिष्य-ति त न्ति सि थ थ तितर्बिषिष्या-
मि वः मः (अतितर्बिषिष्या-व म
१०अतितर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

## ३६० नर्ब ( नर्ब् ) गतौ ।

१ निनर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ निनर्बिषा-मि वः मः
२ निनर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनर्बिषा-णि व म
४अनिनर्बिष-त् ताम न् : तम् त म अनिनर्बिषा-व म
५ अनिनर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनर्बिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनर्बिषाञ्चकार निनर्बिषाम्बभूव
७ निनर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनर्बिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९निनर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनर्बिषिष्या
मि वः मः (अनिनर्बिषिष्या-व म
१०अनिनर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३६१ पर्ब ( पर्ब् ) गतौ ।

१ पिपर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्बिषा-मि वः मः
२ पिपर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपर्बिषा-णि व म
४अपिपर्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपर्बिषा-व म
५ अपिपर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपर्बिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपर्बिषाञ्चकार पिपर्बिषाम्बभूव
७ पिपर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपर्बिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्बिषिष्या
मि वः मः (अपिपर्बिषिष्या-व म
१०अपिपर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३६२ बर्ब ( बर्ब् ) गतौ ।

१ बिबर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ बिबर्बिषा-मि वः मः
२ बिबर्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिबर्बिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
बिबर्बिषा-णि व म
४ अबिबर्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिबर्बिषा-व म
५ अबिबर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिबर्बिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिबर्बिषाञ्चकार बिबर्बिषामास
७ बिबर्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिबर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९बिबर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिबर्बिषिष्या-मि
वः मः (अबिबर्बिषिष्या-व म
१०अबिबर्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३६३ शर्ब ( शर्ब् ) गतौ ।

१ शिशर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशर्बिषा-मि वः मः
२ शिशर्बिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ शिशर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शिशर्बिषा-णि व म
४ अशिशर्बिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अशिशर्बिषा-व म
५ अशिशर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिशर्बिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम शिशर्बिषाम्बभूव शिशर्बिषामास
७ शिशर्बिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशर्बिषिष्या-मि वः मः (अशिशर्बिषिष्या-व म
१० अशिशर्बिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ३६४ षर्ब ( सर्ब् ) गतौ ।

१ सिसर्बिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसर्बिषा-मि वः मः
२ सिसर्बिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ सिसर्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त सिसर्बिषा-णि व म
४ असिसर्बिष-त् ताम् न् ः तम् त म् असिसर्बिषा-व म
५ असिसर्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ सिसर्बिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम सिसर्बिषाञ्चकार सिसर्बिषाम्बभूव
७ सिसर्बिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसर्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसर्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसर्बिषिष्या-मि वः मः (असिसर्बिषिष्या-व म
१० असिसर्बिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म

३६५ सर्ब (सर्ब्) गतौ। षर्ब ३६४ वद्रूपाणि

### ३६६ रिबु ( रिम्ब् ) गतौ ।

१ रिरिम्बिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरिम्बिषा-मि वः मः
२ रिरिम्बिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ रिरिम्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त म रिरिम्बिषा-णि व म
४ अरिरिम्बिष त् ताम् न् ः तम् त म् अरिम्बिरिषा-व
५ अरिरिम्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ रिरिम्बिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव रिरिम्बिषाम्बभूव रिरिम्बिषामास
७ रिरिम्बिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरिम्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरिम्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरिम्बिषिष्या-मि वः मः (अरिरिम्बिषिष्या-व म
१० अरिरिम्बिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ३६७ रबु ( रम्ब् ) गतौ ।

१ रिरम्बिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरम्बिषा-मि वः म
२ रिरम्बिषे-त् ताम युः ः तम त यम् व म
३ रिरम्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रिरम्बिषा-णि व म
४ अरिरम्बिष-त् ताम् न् ः तम् त म अरिरम्बिषा-व म
५ अरिरम्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रिरम्बिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम रिरम्बिषाञ्चकार रिरम्बिषामास
७ रिरम्बिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरम्बिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
रिरम्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरम्बिषिष्या-मि वः मः (अरिरम्बिषिष्या-व म
१० अरिरम्बिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३६८ कुबु ( कुम्ब् ) आच्छादने ।

१ चुकुम्बिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुम्बिषा-मि वः मः
२ चुकुम्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ चुकुम्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुम्बिषा-णि व म
४अचुकुम्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुम्बिषा-व म
५ अचुकुम्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६चुकुम्बिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चुकुम्बिषाम्बभूव चुकुम्बिषामास
७ चुकुम्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुम्बिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुम्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुम्बिषिष्या
मि वः मः (अचुकुम्बिषिष्या-व म
१०अचुकुम्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३६९ लुबु ( लुम्ब् ) अर्दने ।

१लुलुम्बिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुम्बिषा-मि वः मः
२ लुलुम्बिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुम्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलुम्बिषा-णि व म
४अलुलुम्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुम्बिषा-व म
५ अलुलुम्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलुम्बिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लुलुम्बिषाञ्चकार लुलुम्बिषाम्बभूव
७ लुलुम्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुम्बिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लुलुम्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलुम्बिषिष्या-
मि वः मः (अलुलुम्बिषिष्या-व म
१०अलुलुम्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३७० तुबु ( तुम्ब् ) अर्दने ।

१ तुतुम्बिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतुम्बिषा मि वः मः
२ तुतुम्बिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ तुतुम्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुम्बिषा-णि व म
४अतुतुम्बिष-त् ताम् न् : तम् त म अतुतुम्बिषा-व म
५ अतुतुम्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुम्बिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतुम्बिषाञ्चकार तुतुम्बिषामास
७ तुतुम्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुम्बिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुम्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुम्बिषिष्या-
मि वः मः (अतुतुम्बिषिष्या-व म
१०अतुतुम्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३७१ चुबु ( चुम्ब् ) वक्त्रसंयोगे ।

१चुचुम्बिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुम्बिषा-मि वः मः
२ चुचुम्बिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुचुम्बिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचुम्बिषा-णि व म
४अचुचुम्बिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुचुम्बिषा-व म
५ अचुचुम्बि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ चुचुम्बिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चुचुम्बिषाम्बभूव चुचुम्बिषामास
७ चुचुम्बिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुम्बिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चुचुम्बिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचुम्बिषिष्या-
मि वः मः (अचुचुम्बिषिष्या-व म
१०अचुचुम्बिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



३७२ सृभू ( सृभ् ) हिंसायाम् ।

१ सिसर्भिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसर्भिषा-मि वः मः
२ सिसर्भिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसर्भिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसर्भिषा-णि व म
४ असिसर्भिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसर्भिषा-व म
५ असिसर्भि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसर्भिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसर्भिषामास सिसर्भिषाञ्चकार
७ सिसर्भिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसर्भिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसर्भिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसर्भिषिष्या-
मि वः मः (असिसर्भिषिष्या-व म
१० असिसर्भिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३७३ सृम्भू ( सृम्भ् ) हिंसायाम् ।

१ सिसृम्भिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसृम्भिषा-मि वः मः
२ सिसृम्भिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसृम्भिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म सिसृम्भिषा-णि व म
४ असिसृम्भिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसृम्भिषा-व
५ असिसृम्भि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसृम्भिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिसृम्भिषाञ्चकार सिसृम्भिषाम्बभूव
७ सिसृम्भिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसृम्भिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसृम्भिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसृम्भिषिष्या
मि वः मः (असिसृम्भिषिष्या-व म
१० असिसृम्भिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

३७४ स्रिभू ( स्रिभ् ) हिंसायाम् ।

१ सिस्रिभिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्रिभिषा-मि वः मः
२ सिस्रिभिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्रिभिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म सिस्रिभिषा-णि व म
४ असिस्रिभिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्रिभिषा-व
५ असिस्रिभि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिस्रिभिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिस्रिभिषाञ्चकार सिस्रिभिषाम्बभूव
७ सिस्रिभिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्रिभिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्रिभिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्रिभिषिष्या
मि वः मः (असिस्रिभिषिष्या-व म
१० असिस्रिभिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे सिस्रि-स्थाने सिस्रे-इति ज्ञेयम्

३७५ षिम्भ ( सिम्भ् ) हिंसायाम् ।

१ सिसिम्भिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसिम्भिषा-मि
वः मः
२ सिसिम्भिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसिम्भिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म सिसिम्भिषा-णि व म
४ असिसिम्भिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसिम्भिषा
५ असिसिम्भि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसिम्भिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसिम्भिषाञ्चकार सिसिम्भिषामास
७ सिसिम्भिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसिम्भिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसिम्भिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसिम्भिषि
ष्या-मि वः मः (असिसिम्भिषिष्या-व म
१० असिसिम्भिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ३७६ भर्भ ( भर्भ् ) हिंसायाम् ।

१ बिभर्भिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभर्भिषा-मि वः मः
२ बिभर्भिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभर्भिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभर्भिषा-णि व म
४ अबिभर्भिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिभर्भिषा-व म
५ अबिभर्भि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभर्भिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभर्भिषामास बिभर्भिषाञ्चकार
७ बिभर्भिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभर्भिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभर्भिषिष्य-ति त न्ति सि थ थ बिभर्भिषिष्या-
मि वः मः (अबिभर्भिषिष्या-व म
१०अबिभर्भिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३७७ शुम्भ ( शुम्भ् ) भाषणे च ।

१ शुशुम्भिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशुम्भिषा-मि वः मः
२ शुशुम्भिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुम्भिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुम्भिषा-णि व म
४अशुशुम्भिष-त् ताम न् : तम् त म् अशुशुम्भिषा-व म
५ अशुशुम्भि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशुम्भिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुशुम्भिषाञ्चकार शुशुम्भिषाम्बभूव
७ शुशुम्भिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुम्भिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्म
९शुशुम्भिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुम्भिषिष्या-मि
वः मः (अशुशुम्भिषिष्या-व म
१०अशुशुम्भिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३७८ यभं ( यभ् ) मैथुने ।

१ यियप्स-ति तः न्ति सि थः थ यियप्सा-मि वः मः
२ यियप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ यियप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
यियप्सा-नि व म
४ अयियप्स-त् ताम् न् : तम् त म् अयियप्सा-व म
५ अयियप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ यियप्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
यियप्साञ्चकार यियप्साम्बभूव
७ यियप्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ यियप्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व. स्मः
९ यियप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ यियप्सिष्या-
मि वः मः (अयियप्सिष्या-व म
१०अयियप्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३७९ जभ ( जभ् ) मैथुने ।

१जिजम्भिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजम्भिषा-मि वःमः
२ जिजम्भिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजम्भिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
म जिजम्भिषा-णि व म
४अजिजम्भिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजम्भिषा-व
५ अजिजम्भि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजम्भिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिजम्भिषाञ्चकार जिजम्भिषामास
७ जिजम्भिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजम्भिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिजम्भिषिष्य-ति तः न्तिसि थः थ जिजम्भिषिष्या
मि वः मः (अजिजम्भिषिष्या -व म
१०अजिजम्भिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३८० चमू ( चम् ) अदने ।

१ चिचमिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचमिषा-मि वः मः
२ चिचमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचमिषा--णि व म
४अचिचमिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिचमिषा-व म
५अचिचमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
ष्म षिष्व षिष्म
६ चिचमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चिचमिषाम्बभूव चिचमिषामास
७ चिचमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचमिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचमिषिष्या-मि वः मः
(अचिचमिषिष्या-व म
१०अचिचमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### ३८१ छमू ( छम् ) अदने ।

१ चिच्छमिष-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छमिषा-मि वः म
२ चिच्छमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिच्छमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म चिच्छमिषा-णि व म
४अचिच्छमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छमिषा-व
५ अचिच्छमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम
कृम षिष्व षिष्म
६ चिच्छमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चिच्छमिषाम्बभूव चिच्छमिषामास
७ चिच्छमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छमिषिष्या-मि वः मः (अचिच्छमिषिष्या-व म
१०अचिच्छमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३८२ जमू ( जम् ) अदने ।

१ जिजमिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजमिषा-मि वः मः
२ जिजमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म जिजमिषा-णि व म
४अजिजमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजमिषा-व
५ अजिजमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजमिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिजमिषाञ्चकार जिजमिषामास
७ जिजमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिजमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजमिषिष्या-मि वः मः (अजिजमिषिष्या-व म
१०अजिजमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३८३ झमू ( झम् ) अदने ।

१ जिझमिष-ति तः न्ति सि थः थ जिझमिषा-मि वः मः
२ जिझमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिझमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिझमिषा-णि व म
४अजिझमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिझमिषा-व म
५ अजिझमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिझमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
जिझमिषाम्बभूव जिझमिषामास
७ जिझमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिझमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिझमिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ जिझमिषिष्या-मि व मः (अजिझमिषिष्या-व म
१० अजिझमिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३८४ जिमू ( जिम् ) अदने ।

१ जिजिमिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजिमिषा-मि वः मः
२ जिजिमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजिमिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
म जिजिमिषा-णि व म
४ अजिजिमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजिमिषा-व
५ अजिजिमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजिमिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिजिमिषाञ्चकार जिजिमिषामास
७ जिजिमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजिमिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजिमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजिमिषिष्या-मि वः मः (अजिजिमिषिष्या-व म
१० अजिजिमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे जिजि-स्थाने जिजे-इति ज्ञेयम्

### ३८५ क्रमू ( क्रम् ) पादविक्षेपे ।

१ चिक्रमिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्रमिषा-मि वः मः
२ चिक्रमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्रमिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
चिक्रमिषा--णि व म
४ अचिक्रमिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्रमिषा-व म
५ अचिक्रमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ चिक्रमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चिक्रमिषाम्बभूव चिक्रमिषामास
७ चिक्रमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्रमिषिता- ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्रमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्रमिषिष्या-मि वः मः (अचिक्रमिषिष्या-व म
१० अचिक्रमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३८६ यमूं ( यम् ) उपरमे ।

१ यियंस-ति तः न्ति सि थः थ यियंसा-मि व. मः
२ यियंसे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ यियंस-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
यियंसा-णि व म
४ अयियंस-त् ताम् न् : तम् त म् अयियंसा--व म
५ अयियं-सीत सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ यियंसाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
यियंसाम्बभूव यियंसामास
७ यियंस्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ यियंसिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ यियंसिष्य ति तः न्ति सि थः थ यियंसिष्या-मि वः मः (अयियंसिष्या-व म
१० अयियंसिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३८७ स्यमु ( स्यम् ) शब्दे ।

१ सिस्यमिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्यमिषा-मि वः मः
२ सिस्यमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्यमिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
म सिस्यमिषा-णि व म
४ असिस्यमिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्यमिषा-व
५ असिस्यमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ सिस्यमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
सिस्यमिषाम्बभूव सिस्यमिषामास
७ सिस्यमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्यमिषिता--” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्यमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्यमिषिष्या-मि वः मः (असिस्यमिषिष्या-व म
१० असिस्यमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३८८ णम ( नम् ) प्रह्वत्वे ।

१ **निनंस**–ति तः न्ति सि थः थ **निनंसा**–मि वः मः
२ **निनंसे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **निनंस**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**निनंसा**–नि व म
४ **अनिनंस**–त् ताम् न् : तम् त म् **अनिनंसा** व म
५ **अनिनं**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **निनंसाञ्च**–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क बार कर कृव कृम
**निनसाम्बभूव** **निनंसामास**
७ **निनंस्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ **निनंसिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **निनंसिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **निनंसिष्या**–मि वः
मः (**अनिनंसिष्या**–व म
१० **अनिनंसिष्य**–त् ताम् न् : तम त म्

### ३८९ षम ( सम् ) वैक्लव्ये ।

१ **सिसमिष**–ति तः न्ति सि थः थ **सिसमिषा**–मि वः मः
२ **सिसमिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **सिसमिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**सिसमिषा**–णि व म
४ **असिसमिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **असिसमिषा**–व म
५ **असिसमि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ **सिसमिषाञ्च**–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
**सिसमिषाम्बभूव** **सिसमिषामास**
७ **सिसमिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसमिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिसमिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **सिसमिषि**–
ष्या–मि वः मः (**असिसमिषिष्या**–व म
१० **असिसमिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

### ३९० ष्टम ( स्तम् ) वैक्लव्ये ।

१ **तिस्तमिष**–ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तमिषा**–मि वः मः
२ **तिस्तमिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तिस्तमिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म **तिस्तमिषा**–णि व म
४ **अतिस्तमिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अतिस्तमिषा**–व
५ **अतिस्तमि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **तिस्तमिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तिस्तमिषाञ्चकार** **तिस्तमिषामास**
७ **तिस्तमिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तिस्तमिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तिस्तमिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तमिषिष्या**
मि वः मः (**अतिस्तमिषिष्या**–व म
१० **अतिस्तमिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

### ३९१ अम ( अम् ) शब्दभक्त्योः ।

१ **अमिमिष**–ति तः न्ति सि थः थ **अमिमिषा**–मि वः मः
२ **अमिमिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **अमिमिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**अमिमिषा**–णि व म
४ **आमिमिष** त् ताम् न् : तम् त म् **आमिमिषा**–व म
५ **आमिमि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ **अमिमिषाञ्च**–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
**अमिमिषाम्बभूव** **अमिमिषामास**
७ **अमिमिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **अमिमिषिता**– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **अमिमिषिष्य** ति तः न्ति सि थः थ **अमिमिषि**
ष्या–मि वः मः (**आमिमिषिष्या**–व म
१० **आमिमिषिष्य**–त ताम न् : तम् त म

**३९२ अम ( अम् ) गतौ । अम ३९१ वद्रूपाणि**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ३९३ द्रम ( द्रम् ) गतौ ।

१ दिद्रमिष-ति तः न्ति सि थः थ दिद्रमिषा-मि वः मः
२ दिद्रमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिद्रमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिद्रमिषा-णि व म
४अदिद्रमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिद्रमिषा-व म
५ अदिद्रमि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६दिद्रमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
दिद्रमिषाम्बभूव दिद्रमिषामास
७ दिद्रमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिद्रमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिद्रमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिद्रमिषिष्या-मि वः मः (अदिद्रमिषिष्या-व म
१०अदिद्रमिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

## ३९४ ह्म्म ( ह्म्म् ) गतौ ।

१ जिह्म्मिष-ति तः न्ति सि थः थजिह्म्मिषा-मि वः मः
२ जिह्म्मिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्म्मिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म जिह्म्मिषा-णि व म
४अजिह्म्मिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिह्म्मिषा व
५ अजिह्म्मि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६जिह्म्मिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
जिह्म्मिषाम्बभूव जिह्म्मिषामास
७ जिह्म्मिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्म्मिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्म्मिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्म्मिषिष्या-मि वः मः (अजिह्म्मिषिष्या-व म
१०अजिह्म्मिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३९५ मीमृ ( मीम् ) गतौ ।

१मिमीमिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमीमिषा-मि वः मः
२ मिमीमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमीमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमीमिषा--णि व म
४अमिमीमिष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमीमिषा-व म
५अमिमीमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६मिमीमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
मिमीमिषाम्बभूव मिमीमिषामास
७ मिमीमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमीमिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमीमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमीमिषिष्या-मि वः मः (अमिमीमिषिष्या-व म
१०अमिमीमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ३९६ गम्लृ ( गम् ) गतौ ।

१जिगमिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगमिषा-मि वः मः
२ जिगमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगमिषा-णि व म
४अजिगमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगमिषा-व म
५ अजिगमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगमिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगमिषाञ्चकार जिगमिषामास
७ जिगमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिगमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगमिषिष्या-मि वः मः (अजिगमिषिष्या-व म
१०अजिगमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ३९७ हय ( हय् ) क्लान्तौ च ।

१ जिहयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहयिषा-मि वः मः
२ जिहयिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जिहयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहयिषा-णि व म
४ अजिहयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिहयिषा-व म
५ अजिहयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिहयिषाञ्चकार जिहयिषाम्बभूव
७ जिहयिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहयिषिष्या-
-मि वः मः (अजिहयिषिष्या-व म
१० अजिहयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३९८ हर्य ( हर्य् ) क्लान्तौ च ।

१ जिहर्यिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहर्यिषा-मि वः मः
२ जिहर्यिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहर्यिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहर्यिषा-णि व म
४ अजिहर्यिष-त् ताम् न् : तम् त म अहजिर्यिषा-व म
५ अजिहर्यि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहर्यिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिहर्यिषांमास जिहर्यिषाम्बभूव
७ जिहर्यिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहर्यिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहर्यिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहर्यिषिष्या
-मि वः मः (अजिहर्यिषिष्या-व म
१० अजिहर्यिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ३९९ मव्य ( मव्य् ) बन्धने ।

१ मिमव्यिष-ति तः त सि थः थ मिमव्यिषा-मि वः मः
२ मिमव्यिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ मिमव्यिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमव्यिषा-णि व म
४ अमिमव्यिष-त् ताम् न् : तम् त म अमिमव्यिषा-वम
५ अमिमव्यि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमव्यिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमव्यिषाञ्चकार मिमव्यिषामास
७ मिमव्यिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमव्यिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमव्यिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमव्यिषिष्या
मि वः मः (अमिमव्यिषिष्या-व म
१० अमिमव्यिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४०० सूर्क्ष्य ( सूर्क्ष्य् ) ईर्ष्यार्थः ।

१ सुसूर्क्षिर्यष-ति तः न्ति सि थः थ सुसूर्क्षिर्यषा-मि वः मः
२ सुसूर्क्षिर्यषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुसूर्क्षिर्यष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसूर्क्षिर्यषा-णि व म
४ असुसूर्क्षिर्यष-त् ताम् न् : तम् त म असुसूर्क्षिर्यषा-व म
५ असुसूर्क्षिर्य-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सुसूर्क्षिर्यषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सुसूर्क्षिर्यषाञ्चकार सुसूर्क्षिर्यषामास
७ सुसूर्क्षिर्यष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसूर्क्षिर्यषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुसूर्क्षिर्यषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुसूर्क्षिर्यषि-
ष्या-मि व: मः (असुसूर्क्षिर्यषिष्या-व म
१० असुसूर्क्षिर्यषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४०१ ईर्क्ष्य ( ईर्क्ष्यँ ) ईर्ष्यार्थः ।

१ईर्चिक्षियष-ति तः न्ति सि थः थ ईर्चिक्षियषा-मि वः मः
२ ईर्चिक्षियषे-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ ईर्चिक्षियष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त ईर्चिक्षियषा-णि व म
४ऐर्चिक्षियष-त् ताम् न्: तम् त म ऐर्चिक्षियषा-व म
५ ऐर्चिक्षिय-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ ईर्चिक्षियषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम ईर्चिक्षियषाञ्चकार ईर्चिक्षियषामास
७ ईर्चिक्षियष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम् स्व स्म
८ ईर्चिक्षियषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ईर्चिक्षियषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ईर्चिक्षियषिष्या-मि व. मः
(ऐर्चिक्षियषिष्या-व म
१०ऐर्चिक्षियषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४०७ शुच्यं ( शुच्यँ ) अभिषवे ।

१शुशुच्यिष-ति तः त सि थः थ शुशुच्यिषा-मि वः मः
२ शुशुच्यिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुच्यिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शुशुच्यिषा-णि व म
४अशुशुच्यिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशुच्यिषा-वम
५अशुशुच्यि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शुशुच्यिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम शुशुच्यिषाञ्चकार शुशुच्यिषामास
७ शुशुच्यिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुच्यिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९शुशुच्यिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुच्यिषिष्या-मि वः मः
(अशुशुच्यिषिष्या-व म
१०अशुशुच्यिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४०२ ईर्ष्य ( ईर्ष्यँ ) ईर्ष्यार्थः ।

१ईर्ष्यियिष-ति तः न्ति सि थः थ ईर्ष्यियिषा-मि वः मः
२ ईर्ष्यियिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ईर्ष्यियिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त ईर्ष्यियिषा-णि व म
४ ऐर्ष्यियिष-त् ताम् न् : तम् त म ऐर्ष्यियिषा-व म
५ ऐर्ष्यियि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ ईर्ष्यियिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम ईर्ष्यियिषामास ईर्ष्यियिषाम्बभूव
७ ईर्ष्यियिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ईर्ष्यियिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ईर्ष्यियिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ईर्ष्यियिषिष्या-मि वः मः
(ऐर्ष्यियिषिष्या-व म
१०ऐर्ष्यियिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४०८ चुच्यं ( चुच्यँ ) अभिषवे ।

१चुचुच्यिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुच्यिषा-मि वः मः
२ चुचुच्यिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चुचुच्यिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चुचुच्यिषा-णि व म
४ अचुचुच्यिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुचुच्यिषा व म
५अचुचुच्यि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६चुचुच्यिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चुचुच्यिषाञ्चकार चुचुच्यिषाम्बभूव
७ चुचुच्यिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुच्यिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चुचुच्यिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचुच्यिषिष्या-मि वः मः
(अचुचुच्यिषिष्या-व म
१०अचुचुच्यिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४०५ त्सर ( त्सर् ) छद्मगतौ ।

१ तित्सरिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्सरिषा-मि वः मः
२ तित्सरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्सरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तित्सरिषा-णि व म
४ अतित्सरिष-त् ताम् न् : तम् त म अतित्सरिषा-व म
५ अतित्सरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तित्सरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम तित्सरिषाञ्चकार तित्सरिषामास
७ तित्सरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्सरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्सरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्सरिषिष्या-मि वः मः (अतित्सरिषिष्या-व म
१० अतित्सरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४०६ क्मर ( क्मर् ) हूर्च्छने ।

१ चिक्मरिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्मरिषा-मि वः मः
२ चिक्मरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्मरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिक्मरिषा-णि व म
४ अचिक्मरिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिक्मरिषा-व म
५ अचिक्मरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्मरिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम चिक्मरिषामास चिक्मरिषाम्बभूव
७ चिक्मरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ चिक्मरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्मरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्मरिषिष्या-मि वः मः (अचिक्मरिषिष्या-व म
१० अचिक्मरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४०७ अभ्र ( अभ्र् ) गतौ ।

१ अबिभ्रिष-ति तः न्ति सि थः थ अबिभ्रिषा-मि वः म
२ अबिभ्रिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अबिभ्रिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त अबिभ्रिषा-णि व म
४ आबिभ्रिष-त् ताम् न् : तम् त म् आबिभ्रिषा-व म
५ आबिभ्रि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ अबिभ्रिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम अबिभ्रिषाञ्चकार अबिभ्रिषामास
७ अबिभ्रिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अबिभ्रिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अबिभ्रिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अबिभ्रिषिष्या-मि वः मः (आबिभ्रिषिष्या-व म
१० आबिभ्रिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४०८ वभ्र ( वभ्र् ) गतौ ।

१ विवभ्रिष-ति तः न्ति सि थः थ विवभ्रिषा-मि वः मः
२ विवभ्रिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ विवभ्रिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवभ्रिषा-णि व म
४ अविवभ्रिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवभ्रिषा-व म
५ अविवभ्रि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ विवभ्रिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवभ्रिषाञ्चकार विवभ्रिषाम्बभूव
७ विवभ्रिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवभ्रिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवभ्रिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवभ्रिषिष्या-मि वः मः (अविवभ्रिषिष्या-व म
१० अविवभ्रिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४०९ मभ्र ( मभ्र् ) गतौ ।

१ मिमभ्रिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमभ्रिषा-मि वः मः
२ मिमभ्रिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ मिमभ्रिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त मिमभ्रिषा-णि व म
४ अमिमभ्रिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमभ्रिषा-व म
५ अमिमभ्रि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमभ्रिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमभ्रिषाञ्चकार मिमभ्रिषाम्बभूव
७ मिमभ्रिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमभ्रिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमभ्रिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमभ्रिषिष्या-मि वः मः (अमिमभ्रिषिष्या-व म
१० अमिमभ्रिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४१० चर ( चर् ) भक्षणे च ।

१ चिचरिष-ति तः न्ति सि थ थ चिचरिषा-मि वः मः
२ चिचरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचरिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त चिचरिषा-णि व म
४ अचिचरिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिचरिषा व म
५ अचिचरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म
६ चिचरिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम चिचरिषामास चिचरिषाम्बभूव
७ चिचरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचरिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचरिषिष्या-मि वः म (अचिचरिषिष्या-व म
१० अचिचरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४११ धोॠ ( धोर् ) गतेश्चातुर्ये ।

१ दुधोरिष-ति तः न्ति सि थः थ दुधोरिषा-मि वः मः
२ दुधोरिषे-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ दुधोरिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त दुधोरिषा-णि व म
४ अदुधोरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुधोरिषा-व म
५ अदुधोरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दुधोरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दुधोरिषाञ्चकार दुधोरिषामास
७ दुधोरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधोरिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधोरिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ दुधोरिषिष्या-मि वः मः (अदुधोरिषिष्या-व म
१० अदुधोरिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

४१२ खोॠ ( खोर् ) गतेःप्रतीघाते ।

१ चुखोरिष-ति तः न्ति सि थः थ चुखोरिषा मि वः मः
२ चुखोरिषे-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ चुखोरिष-तु तात् ताम न्तु ” तात् तम् त चुखोरिषा-णि व म
४ अचुखोरिष-त् ताम् न् : तम् त म अचुखोरिषा-व म
५ अचुखोरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चुखोरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चुखोरिषाञ्चकार चुखोरिषामास
७ चुखोरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ चुखोरिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ चुखोरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुखोरिषिष्या-मि व. मः (अचुखोरिषिष्या-व म
१० अचुखोरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४१३ दल ( दल् ) विशरणे ।

१ दिदलिष ति तः न्ति सि थः थ दिदलिषा-मि वः मः
२ दिदलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दिदलिषा--णि व म
४ अदिदलिष त् ताम् न् : तम् त म् अदिदलिषा-व म
५ अदिदलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ दिदलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव दिदलिषाम्बभूव दिदलिषामास
७ दिदलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदलिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ दिदलिषिष्या-मि वः मः (अदिदलिषिष्या-व म
१० अदिदलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४१४ त्रिफला ( फल् ) विशरणे ।

१ पिफलिष-ति तः न्ति सि थः थ पिफलिषा-मि वः मः
२ पिफलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिफलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिफलिषा-णि व म
४ अपिफलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिफलिषा-व म
५ अपिफलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिफलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिफलिषाञ्चकार पिफलिषामास
७ पिफलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिफलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिफलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिफलिषिष्या-मि वः मः (अपिफलिषिष्या-व म
१० अपिफलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४१५ मील ( मील् ) निमेषणे ।

१ मिमीलिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमीलिषा-मि वः मः
२ मिमीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमीलिषा-णि व म
४ अमिमीलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमीलिषा-व म
५ अमिमीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ मिमीलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव मिमीलिषाम्बभूव मिमीलिषामास
७ मिमीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमीलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमीलिषिष्या-मि वः मः (अमिमीलिषिष्या-व म
१० अमिमीलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## ४१६ श्मील ( श्मील् ) निमेषणे ।

१ शिश्मीलिष ति तः न्ति सि थः थ शिश्मीलिषा-मि वः मः
२ शिश्मीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्मीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म शिश्मीलिषा-णि व म
४ अशिश्मीलिष-त ताम् न् : तम् त म् अशिश्मीलिषा
५ अशिश्मीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ शिश्मीलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव शिश्मीलिषाम्बभूव शिश्मीलिषामास
७ शिश्मीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ शिश्मीलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्मीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्मीलिषिष्या मि वः मः (अशिश्मीलिषिष्या-व म
१० अशिश्मीलिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४१७ स्मील ( स्मील् ) निमेषणे ।

१ सिस्मीलिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्मीलिषा-मि वः मः
२ सिस्मीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्मीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म सिस्मीलिषा-णि व म
४ असिस्मीलिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्मीलिषा
५ असिस्मीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ सिस्मीलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम सिस्मीलिषामास सिस्मीलिषाञ्चकार
७ सिस्मीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्मीलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्मीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्मीलिषिष्या-मि वः मः (असिस्मीलिषिष्या-व म
१० असिस्मीलिषिष्य-त् ताम् न् : त, त म्

### ४१८ क्ष्मील ( क्ष्मील् ) निमेषणे ।

१ चिक्ष्मीलिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्ष्मीलिषा-मि व मः
२ चिक्ष्मीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्ष्मीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिक्ष्मीलिषा-णि व म
४ अचिक्ष्मीलिष-त् ताम न् : तम् त म् अचिक्ष्मीलिषा-
५ अचिक्ष्मीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्ष्मीलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चिक्ष्मीलिषाञ्चकार चिक्ष्मीलिषाम्बभूव
७ चिक्ष्मीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्ष्मीलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्ष्मीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्ष्मीलिषिष्या-मि वः मः (अचिक्ष्मीलिषिष्या-व म
१० अचिक्ष्मीलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४१९ पील ( पील् ) प्रतिष्टम्भे ।

१ पिपीलिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपीलिषा-मि वः मः
२ पिपीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिपीलिषा-णि व म
४ अपिपीलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपीलिषा-व म
५ अपिपीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिपीलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिपीलिषाञ्चकार पिपीलिषामास
७ पिपीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपीलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपीलिषिष्या-मि वः मः (अपिपीलिषिष्या-व म
१० अपिपीलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४२० णील ( नील् ) वर्णे ।

१ निनीलिष ति तः न्ति सि थः थ निनीलिषा-मि वः मः
२ निनीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त निनीलिषा-णि व म
४ अनिनीलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनीलिषा-व म
५ अनिनीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ निनीलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथु स स सिव सिम निनीलिषाञ्चकार निनीलिषाम्बभूव
७ निनीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनीलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ निनीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनीलिषिष्या-मि वः मः (अनिनीलिषिष्या-व म
१० अनिनीलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४२१ शील ( शील् ) समाधौ ।

१ शिशीलिष ति तः न्ति सि थः थ शिशीलिषा-मि व मः
२ शिशीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त म शिशीलिषा-णि व म
४ अशिशीलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशीलिषा-व
५ अशिशीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिशीलिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृवकृम शिशीलिषाम्बभूव शिशीलिषामास
७ शिशीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ शिशीलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशीलिषिष्या मि वः मः (अशिशीलिषिष्या-व म
१० अशिशीलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४२२ कील ( कील् ) बन्धे ।

१ चिकीलिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकीलिषा-मि वः मः
२ चिकीलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकीलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त म चिकीलिषा-णि व म
४ अचिकीलिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिकीलिषा व
५ अचिकीलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ चिकीलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव चिकीलिषाम्बभूव चिकीलिषामास
७ चिकीलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकीलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकीलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकीलिषिष्या-मि वः मः (अचिकीलिषिष्या-व म
१० अचिकीलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४२३ कूल ( कूल् ) आवरणे ।

१ चुकूलिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकूलिषा-मि वः मः
२ चुकूलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकूलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चुकूलिषा--णि व म
४ अचुकूलिष त् ताम् न् : तम् त म् अचुकूलिषा-व म
५ अचुकूलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् कृम षिष्व षिष्म
६ चुकूलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव चुकूलिषाम्बभूव चुकूलिषामास
७ चुकूलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकूलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकूलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकूलिषिष्या-मि वः मः (अचुकूलिषिष्या-व म
१० अचुकूलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४२४ शूल ( शूल् ) रुजायाम् ।

१ शुशूलिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशूलिषा-मि वः मः
२ शुशूलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशूलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शुशूलिषा-णि व म
४ अशुशूलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशूलिषा-व म
५ अशुशूलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शुशूलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम शुशूलिषाञ्चकार शुशूलिषामास
७ शुशूलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशूलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशूलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशूलिषिष्या मि वः मः (अशुशूलिषिष्या-व म
१० अशुशूलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४२५ तूल ( तूल् ) निष्कर्षे ।

१ तुतूलिष- ति तः न्ति सि थः थ तुतूलिषा-मि वः मः
२ तुतूलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतूलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतूलिषा-णि व म
४ अतुतूलिष त् ताम् न् : तम् त म् अतुतूलिषा-व म
५ अतुतूलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतूलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतूलिषामास तुतूलिषाञ्चकार
७ तुतूलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतूलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतूलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतूलिषिष्या-मि वः मः (अतुतूलिषिष्या-व म
१० अतुतूलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४२६ पूल ( पूल् ) संघाते ।

१ पुपूलिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपूलिषा-मि वः मः
२ पुपूलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपूलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूलिषा-णि व म
४ अपुपूलिष-त् ताम न् : तम् त म् अपुपूलिषा- व म
५ अपुपूलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपूलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पुपूलिषाञ्चकार पुपूलिषाम्बभूव
७ पुपूलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपूलिषिष्या-मि व. मः (अपुपूलिषिष्या-व म
१० अपुपूलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४२७ मूल ( मूल् ) प्रतिष्ठायाम् ।

१ मुमूलिष- ति तः न्ति सि थः थ मुमूलिषा-मि वः मः
२ मुमूलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमूलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
मुमूलिषा-णि व म
४ अमुमूलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमूलिषा-व म
५ अमुमूलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमूलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मुमूलिषाञ्चकार मुमूलिषाम्बभूव
७ मुमूलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमूलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व. स्मः
९ मुमूलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमूलिषिष्या-मि वः मः (अमुमूलिषिष्या-व म
१० अमुमूलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४२८ फल ( फल् ) निष्पत्तौ ।

१ पिफलिष-ति तः न्ति सि थः थ पिफलिषा-मि वः मः
२ पिफलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिफलिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
पिफलिषा-णि व म
४ अपिफलिष त् ताम् न् : तम् त म् अपिफलिषा-व म
५ अपिफलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिफलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिफलिषाञ्चकार पिफलिषामास
७ पिफलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिफलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिफलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिफलिषिष्या-मि वः मः (अपिफलिषिष्या -व म
१० अपिफलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४२९ फुल्ल ( फुल्ल् ) विकसने ।

१ पुफुल्लिष-ति तः न्ति सि थः थ पुफुल्लिषा-मि वः मः
२ पुफुल्लिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुफुल्लिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पुफुल्लिषा-णि व म
४ अपुफुल्लिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुफुल्लिषा-व म
५ अपुफुल्लि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पुफुल्लिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम पुफुल्लिषाम्बभूव पुफुल्लिषामास
७ पुफुल्लिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुफुल्लिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुफुल्लिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुफुल्लिषिष्या-मि वः मः (अपुफुल्लिषिष्या-व म
१० अपुफुल्लिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४३० चुल्ल ( चुल्ल् ) हावकरणे ।

१ चुचुल्लिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुल्लिषा-मि वः मः
२ चुचुल्लिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुचुल्लिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चुचुल्लिषा-णि व म
४ अचुचुल्लिष त् ताम् न् : तम् त म् अचुचुल्लिषा-व म
५ अचुचुल्लि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चुचुल्लिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम चुचुल्लिषाम्बभूव चुचुल्लिषामास
७ चुचुल्लिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुल्लिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुल्लिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचुल्लिषिष्या-मि वः मः (अचुचुल्लिषिष्या-व म
१० अचुचुल्लिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४३१ चिल्ल ( चिल्ल् ) शैथिल्ये च ।

१ चिचिल्लिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचिल्लिषा-मि वः मः
२ चिचिल्लिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचिल्लिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिचिल्लिषा-णि व म
४ अचिचिल्लिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचिल्लिषा
५ अचिचिल्लि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिचिल्लिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चिचिल्लिषाञ्चकार चिचिल्लिषाम्बभूव
७ चिचिल्लिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचिल्लिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचिल्लिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचिल्लिषिष्या-मि वः मः (अचिचिल्लिषिष्या-व म
१० अचिचिल्लिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४३२ पेल ( पेल् ) गतौ ।

१ पिपेलिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपेलिषा-मि वः मः
२ पिपेलिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ पिपेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिपेलिषा-णि व म
४ अपिपेलिष त् ताम् न् : तम् त म अपिपेलिषा-व म
५ अपिपेलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिपेलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिपेलिषाञ्चकार पिपेलिषामास
७ पिपेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपेलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपेलिषिष्या-मि वः मः (अपिपेलिषिष्या-व म
१० अपिपेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४३३ फेल्ट ( फेल् ) गतौ ।

१ पिफेलिष–ति तः न्ति सि थः थ पिफेलिषा–मि वः मः
२ पिफेलिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिफेलिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिफेलिषा–णि व म
४ अपिफेलिष–त् ताम् न् : तम् त म अपिफेलिषा–व म
५ अपिफेलि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ पिफेलिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पिफेलिषामास पिफेलिषाम्बभूव
७ पिफेलिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिफेलिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिफेलिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिफेलिषिष्या–
–मि वः मः (अपिफेलिषिष्या–व म
१० अपिफेलिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ४३४ शेल्ट ( शेल् ) गतौ ।

१ शिशेलिष–ति तः त सि थः थ शिशेलिषा–मि वः मः
२ शिशेलिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशेलिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशेलिषा–णि व म
४ अशिशेलिष–त् ताम् न् : तम् त म् अशिशेलिषा–वम
५ अशिशेलि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ शिशेलिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशेलिषाञ्चकार शिशेलिषामास
७ शिशेलिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशेलिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशेलिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ शिशेलिषिष्या
मि वः मः (अशिशेलिषिष्या–व म
१० अशिशेलिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ४३५ षेल्ट ( सेल् ) गतौ ।

१ सिसेलिष ति तः न्ति सि थः थ सिसेलिषा–मि वः मः
२ सिसेलिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसेलिष–तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त
सिसेलिषा–णि व म
४ असिसेलिष–त् ताम् न् : तम् त म असिसेलिषा–व म
५ असिसेलि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसेलिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसेलिषाञ्चकार सिसेलिषामास
७ सिसेलिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसेलिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसेलिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सिसेलिषि–
ष्या–मि व मः (असिसेलिषिष्या–व म
१० असिसेलिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म्

४३६ सेल्ट ( सेल् ) गतौ । षेल ४३५ वद्रूपाणि

### ४३७ वेल्ह ( वेल्ह ) गतौ ।

१ विवेल्हिष–ति तः न्ति सि थः थ विवेल्हिषा–मि वः मः
२ विवेल्हिषे–त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ विवेल्हिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवेल्हिषा–णि व म
४ अविवेल्हिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविवेल्हिषा–व म
५ अविवेल्हि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवेल्हिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवेल्हिषाञ्चकार विवेल्हिषाम्बभूव
७ विवेल्हिष्या–त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेल्हिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवेल्हिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवेल्हिषिष्या–
–मि वः मः (अविवेल्हिषिष्या–व म
१० अविवेल्हिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४३८ सल ( सल् ) गतौ ।

१ सिसलिष–ति तः न्ति सि थः थ सिसलिषा-मि वः मः
२ सिसलिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसलिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त सिसलिषा–णि व म
४ असिसलिष-त् ताम् न् : तम् त म असिसलिषा–व म
५ असिसलि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ सिसलिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम सिसलिषाञ्चकार सिसलिषामास
७ सिसलिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसलिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसलिषिष्या–मि वः मः (असिसलिषिष्या–व म
१० असिसलिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ४३९ तिल ( तिल् ) गतौ ।

१ तितिलिष ति तः न्ति सि थः थ तितिलिषा-मि वः मः
२ तितिलिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितिलिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तितिलिषा–णि व म
४ अतितिलिष त् ताम् न् : तम् त म् अतितिलिषा-वम
५ अतितिलि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तितिलिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम तितिलिषाञ्चकार तितिलिषाम्बभूव
७ तितिलिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितिलिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितिलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितिलिषिष्या-मि वः मः (अतितिलिषिष्या–व म
१० अतितिलिषिष्य–त् ताम् न् : तम त म

पक्षे तिति स्थाने तिते–इति ज्ञेयम्

### ४४० तिल्ल ( तिल्ल् ) गतौ ।

१ तितिल्लिष ति तः न्ति सि थः थ तितिल्लिषा-मि वः मः
२ तितिल्लिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितिल्लिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तितिल्लिषा–णि व म
४ अतितिल्लिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितिल्लिषा-व म
५ अतितिल्लि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तितिल्लिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम तितिल्लिषाम्बभूव तितिल्लिषामास
७ तितिल्लिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितिल्लिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ तितिल्लिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ तितिल्लिषिष्या मि वः मः (अतितिल्लिषिष्या–व म
१० अतितिल्लिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ४४१ पल्ल ( पल्ल् ) गतौ ।

१ पिपल्लिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपल्लिषा-मि वः मः
२ पिपल्लिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ पिपल्लिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिपल्लिषा–णि व म
४ अपिपल्लिष त् ताम् न् : तम् त म् अपिपल्लिषा-व म
५ अपिपल्लि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिपल्लिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम पिपल्लिषाम्बभूव पिपल्लिषामास
७ पिपल्लिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपल्लिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपल्लिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ पिपल्लिषिष्या मि वः मः (अपिपल्लिषिष्या-व म
१० अपिपल्लिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४४२ वेल्ल ( वेल्ल् ) गतौ ।

१विवेल्लिष-ति तः न्ति सि थः थ विवेल्लिषा-मि वः मः
२ विवेल्लिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवेल्लिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवेल्लिषा-णि व म
४अविवेल्लिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवेल्लिषा-वम
५अविवेल्लि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवेल्लिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवेल्लिषाञ्चकार विवेल्लिषामास
७ विवेल्लिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेल्लिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवेल्लिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवेल्लिषिष्या
मि वः मः (अविवेल्लिषिष्या-व म
१०अविवेल्लिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४४३ वेल्ट ( वेल्ट् ) चलने ।

१ विवेल्टिष-ति तः न्ति सि थः थ विवेल्टिषा-मि वः मः
२ विवेल्टिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ विवेल्टिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवेल्टिषा-णि व म
४ अविवेल्टिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवेल्टिषा-व म
५अविवेल्टि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवेल्टिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवेल्टिषाञ्चकार विवेल्टिषाम्बभूव
७ विवेल्टिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेल्टिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवेल्टिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवेल्टिषिष्या
-मि वः मः (अविवेल्टिषिष्या-व म
१०अविवेल्टिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४४४ चेल्ट ( चेल्ट् ) चलने ।

१चिचेल्टिष ति तः न्ति सि थः थ चिचेल्टिषा-मि वः मः
२ चिचेल्टिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचेल्टिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचेल्टिषा-णि व म
४ अचिचेल्टिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिचेल्टिषा-व म
५ अचिचेल्टि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचेल्टिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचेल्टिषाञ्चकार चिचेल्टिषामास
७ चिचेल्टिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचेल्टिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचेल्टिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचेल्टिषि-
ष्या-मि व मः (अचिचेल्टिषिष्या-व म
१०अचिचेल्टिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४४५ केल्ट ( केल्ट् ] चलने ।

१चिकेल्टिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकेल्टिषा-मि वः मः
२ चिकेल्टिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकेल्टिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकेल्टिषा-णि व म
४ अचिकेल्टिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिकेल्टिषा-व म
५ अचिकेल्टि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६चिकेल्टिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
चिकेल्टिषामास चिकेल्टिषाम्बभूव
७ चिकेल्टिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकेल्टिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकेल्टिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकेल्टिषिष्या-
-मि वः मः (अचिकेल्टिषिष्या-व म
१०अचिकेल्टिषिष्य--त् ताम् न् : तम् तम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४४६ क्वेलृ ( क्वेल् ) चलने ।

१ चिक्वेलिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्वेलिषा-मि वः मः
२ चिक्वेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्वेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त व म चिक्वेलिषा-णि व म
४ अचिक्वेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्वेलिषा-
५ अचिक्वेलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्वेलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिक्वेलिषाञ्चकार चिक्वेलिषामास
७ चिक्वेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्वेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्वेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्वेलिषिष्या-मि वः मः (अचिक्वेलिषिष्या-व म
१० अचिक्वेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४४७ खेलृ ( खेल् ) चलने ।

१ चिखेलिष ति तः न्ति सि थः थ चिखेलिषा-मि वः मः
२ चिखेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिखेलिषा-णि व म
४ अचिखेलिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिखेलिषा-व म
५ अचिखेलि-षीत् षिष्टाम् पिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिखेलिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिखेलिषाञ्चकार चिखेलिषामास
७ चिखेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ चिखेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखेलिषिष्या-मि व. मः (अचिखेलिषिष्या-व म
१० अचिखेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४४८ स्खल ( स्खल् ) चलने ।

१ चिस्खलिष-ति तः न्ति सि थः थ चिस्खलिषा-मि वः मः
२ चिस्खलिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चिस्खलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त म चिस्खलिषा-णि व म
४ अचिस्खलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिस्खलिषा-व
५ अचिस्खलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिस्खलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चिस्खलिषाञ्चकार चिस्खलिषाम्बभूव
७ चिस्खलिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिस्खलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिस्खलिषिष्या-मि वः मः (अचिस्खलिषिष्या-व म) — चिस्खलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ
१० अचिस्खलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४४९ खल ( खल् ] संचये च ।

१ चिखलिष-ति तः न्ति सि थः थ चिखलिषा-मि वः मः
२ चिखलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिखलिषा-णि व म
४ अचिखलिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिखलिषा-व म
५ अचिखलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिखलिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम चिखलिषामास चिखलिषाम्बभूव
७ चिखलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखलिषिष्या-मि वः मः (अचिखलिषिष्या-व म
१० अचिखलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् तम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४५० स्खल ( स्खल् ) आशु गतौ ।

१ शिस्खलिष-ति तः न्ति सि थः थ शिस्खलिषा-मि वः मः
२ शिस्खलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिस्खलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिस्खलिषा-णि व म
४ अशिस्खलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिस्खलिषा व म
५ अशिस्खलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिस्खलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिस्खलिषामास शिस्खलिषाञ्चकार
७ शिस्खलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिस्खलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिस्खलिषिष्य-ति तः न्ति सि थ थ शिस्खलिषिष्या-मि वः मः (अशिस्खलिषिष्या-व म
१० अशिस्खलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४५२ गल ( गल् ) अदने ।

१ जिगलिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगलिषा मि वः मः
२ जिगलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगलिषा-णि व म
४ अजिगलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगलिषा-व म
५ अजिगलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिगलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगलिषाञ्चकार जिगलिषामास
७ जिगलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगलिषिष्या-मि वः मः (अजिगलिषिष्या -व म
१० अजिगलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४५१ स्खल्ल ( स्खल्ल् ) आशु गतौ ।

१ शिस्खल्लिष-ति तः न्ति सि थः थ शिस्खल्लिषा-मि वः मः
२ शिस्खल्लिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिस्खल्लिष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त म
शिस्खल्लिषा-णि व म
४ अशिस्खल्लिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिस्खल्लिषा-व
५ अशिस्खल्लि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिस्खल्लिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
शिस्खल्लिषाम्बभूव शिस्खल्लिषामास
७ शिस्खल्लिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिस्खल्लिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ शिस्खल्लिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिस्खल्लिषिष्या मि वः मः (अशिस्खल्लिषिष्या-व म
१० अशिस्खल्लिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४५३ चर्व ( चर्व् ) अदने ।

१ चिचर्विष-ति तः न्ति सि थः थ चिचर्विषा-मि वः मः
२ चिचर्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचर्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चिचर्विषा-णि व म
४ अचिचर्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचर्विषा-व म
५ अचिचर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिचर्विषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचर्विषाञ्चकार चिचर्विषाम्बभूव
७ चिचर्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचर्विषिता-" रौ रः सि स्थ, स्थ स्मि स्व स्मः
९ चिचर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचर्विषिष्या-मि वः मः (अचिचर्विषिष्या-व म
१० अचिचर्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४५४ पुर्व ( पूर्व् ) पूरणे ।

१ पुपूर्विष ति तः न्ति सि थः थ पुपूर्विषा मि वः मः
२ पुपूर्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपूर्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूर्विषा–णि व म
४ अपुपूर्विष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुपूर्विषा–व म
५ अपुपूर्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ पुपूर्विषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
पुपूर्विषाम्बभूव पुपूर्विषामास
७ पुपूर्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूर्विषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूर्विषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुपूर्विषिष्या–मि वः मः (अपुपूर्विषिष्या–व म
१० अपुपूर्विषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

४५६ मर्व ( मर्व् ) पूरणे ।

१ मिमर्विष–ति तः न्ति सि थः थ मिमर्विषा–मि वः मः
२ मिमर्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमर्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमर्विषा–णि व म
४ अमिमर्विष–त् ताम् न् : तम् त म् अमिमर्विषा–व म
५ अमिमर्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ मिमर्विषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
मिमर्विषाम्बभूव मिमर्विषामास
७ मिमर्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमर्विषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमर्विषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिमर्विषिष्या–मि वः मः (अमिमर्विषिष्या–व म
१० अमिमर्विषिष्य–त ताम् न् : तम् त म

४५७ मर्व ( मर्व् ) गतौ । मर्व ४५६ वद्रूपाणि

४५५ पर्व ( पर्व् ) पूरणे ।

१ पिपर्विष–ति तः न्ति सि थ थ पिपर्विषा–मि वः मः
२ पिपर्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपर्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपर्विषा–णि व म
४ अपिपर्विष–त् ताम् न् : तम् त म अपिपर्विषा–व म
५ अपिपर्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपर्विषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव कृम
पिपर्विषामास पिपर्विषाम्बभूव
७ पिपर्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपर्विषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपर्विषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिपर्विषिष्या–मि वः मः (अपिपर्विषिष्या–व म
१० अपिपर्विषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

४५८ धवु ( धन्व् ) गतौ ।

१ दिधन्विष ति तः न्ति सि थः थ दिधन्विषा मि वः मः
२ दिधन्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधन्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिधन्विषा–णि व म
४ अदिधन्विष–त ताम् न् : तम् त म् अदिधन्विषा–व म
५ अदिधन्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ दिधन्विषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
दिधन्विषाम्बभूव दिधन्विषामास
७ दिधन्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ दिधन्विषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधन्विषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिधन्विषिष्या मि वः मः (अदिधन्विषिष्या–व म
१० अदिधन्विषिष्य–त् ताम् न् : तम त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४५९ शव (शव्) गतौ ।

१ शिशविष-ति तः न्ति सि थः थ शिशविषा-मि वः मः
२ शिशविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशविषा-णि व म
४ अशिशविष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशविषा व म
५ अशिशवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिशविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशविषामास शिशविषाञ्चकार
७ शिशविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशविषिष्य-ति तः न्ति सि थ थ शिशविषिष्या-मि वः मः (अशिशविषिष्या-व म
१० अशिशविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४६० कर्व (कर्व्) दर्पे ।

१ चिकर्विष-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्विषा-मि वः मः
२ चिकर्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकर्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चिकर्विषा-णि व म
४ अचिकर्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकर्विषा व म
५ अचिकर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकर्विषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकर्विषाञ्चकार चिकर्विषाम्बभूव
७ चिकर्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकर्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ चिकर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्विषिष्या-मि वः मः (अचिकर्विषिष्या-व म
१० अचिकर्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४६१ खर्व (खर्व्) दर्पे ।

१ चिखर्विष-ति तः न्ति सि थः थ चिखर्विषा-मि वः मः
२ चिखर्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखर्विष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त म चिखर्विषा-णि व म
४ अचिखर्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिखर्विषा-व
५ अचिखर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिखर्विषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
चिखर्विषाम्बभूव चिखर्विषामास
७ चिखर्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखर्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ चिखर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखर्विषिष्या-मि वः मः (अचिखर्विषिष्या-व म
१० अचिखर्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ४६२ गर्व (गर्व्) दर्पे ।

१ जिगर्विष-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्विषा मि वः मः
२ जिगर्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगर्विष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगर्विषा-णि व म
४ अजिगर्विष त् ताम् न् : तम् त म् अजिगर्विषा-व म
५ अजिगर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिगर्विषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगर्विषाञ्चकार जिगर्विषामास
७ जिगर्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगर्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्विषिष्या मि वः मः (अजिगर्विषिष्या -व म
१० अजिगर्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४६३ ष्ठिवू ( ष्ठिव् ) निरसने ।

१ तिष्ठेविष–ति तः न्ति सि थः थ तिष्ठेविषा–मि वः मः
२ तिष्ठेविषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तिष्ठेविष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिष्ठेविषा–णि व म
४ अतिष्ठेविष त् ताम् न् : तम् त म अतिष्ठेविषा–व म
५ अतिष्ठेवि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिष्ठेविषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिष्ठेविषाञ्चकार तिष्ठेविषामास
७ तिष्ठेविष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिष्ठेविषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिष्ठेविषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तिष्ठेविषिष्या–
मि वः मः (अतिष्ठेविषिष्या–व म
१० अतिष्ठेविषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ४६४ क्षिवू ( क्षिव् ) निरसने ।

१ चिक्षेविष–ति तः न्ति सि थः थ चिक्षेविषा–मि वः मः
२ चिक्षेविषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षेविष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षेविषा–णि व म
४ अचिक्षेविष त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षेविषा–व म
५ अचिक्षेवि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षेविषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्षेविषाञ्चकार चिक्षेविषाम्बभूव
७ चिक्षेविष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षेविषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षेविषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिक्षेविषिष्या–
मि वः मः (अचिक्षेविषिष्या–व म
१० अचिक्षेविषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चुक्ष्यूषति

### ४६५ जीव ( जीव् ) प्राणधारणे ।

१ जिजीविष–ति तः न्ति सि थः थ जिजीविषा–मि वः म
२ जिजीविषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजीविष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म जिजीविषा–णि व म
४ अजिजीविष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिजीविषा–
५ अजिजीवि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ जिजीविषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजीविषाञ्चकार जिजीविषाम्बभूव
७ जिजीविष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजीविषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजीविषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिजीविषिष्या–
मि वः मः (अजिजीविषिष्या–व म
१० अजिजीविषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ४६६ पीव ( पीव् ) स्थौल्ये ।

१ पिपीविष–ति तः न्ति सि थः थ पिपीविषा–मि वः म
२ पिपीविषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपीविष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपीविषा–णि व म
४ अपिपीविष–त् ताम् न् : तम् त म् अपिपीविषा–व म
५ अपिपीवि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ पिपीविषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पिपीविषाम्बभूव पिपीविषामास
७ पिपीविष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपीविषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपीविषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिपीविषिष्या
मि वः मः (अपिपीविषिष्या–व म
१० अपिपीविषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४६७ मीव ( मीव् ) स्थौल्ये ।

१ मिमीविष-ति तः न्ति सि थः थ मिमीविषा मि वः मः
२ मिमीविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमीविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमीविषा-णि व म
४ अमिमीविष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमीविषा व म
५ अमिमीवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमीविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमीविषाञ्चकार मिमीविषामास
७ मिमीविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमीविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमीविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमीविषिष्या-
मि वः मः (अमिमीविषिष्या-व म
१० अमिमीविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४६८ तीव ( तीव् ) स्थौल्ये ।

१ तितीविष ति तः न्ति सि थः थ तितीविषा-मि वः मः
२ तितीविषे-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ तितीविष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त
तितीविषा-णि व म
४ अतितीविष-त् ताम् न्: तम् त म अतितीविषा-व म
५ अतितीवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितीविषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितीविषाञ्चकार तितीविषामास
७ तितीविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम् स्व स्म
८ तितीविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितीविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितीविषि-
ष्या-मि व मः (अतितीविषिष्या-व म
१० अतितीविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४६९ नीव ( नीव् ) स्थौल्ये ।

१ निनीविष-ति तः न्ति सि थः थ निनीविषा-मि वः मः
२ निनीविषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ निनीविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनीविषा-णि व म
४ अनिनीविष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनीविषा व म
५ अनिनीवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनीविषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनीविषाञ्चकार निनीविषाम्बभूव
७ निनीविष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनीविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनीविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनीविषिष्या-
मि वः मः (अनिनीविषिष्या-व म
१० अनिनीविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४७० ऊर्वँ ( ऊर्व् ) हिंसायाम् ।

१ ऊर्विविष-ति तः न्ति सि थः थ ऊर्विविषा-मि वः मः
२ ऊर्विविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ऊर्विविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ऊर्विविषा-णि व म
४ और्विविष-त् ताम् न् : तम् त म् और्विविषा-व म
५ और्विवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ऊर्विविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ऊर्विविषाञ्चकार ऊर्विविषामास
७ ऊर्विविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ऊर्विविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ऊर्विविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ऊर्विविषिष्या
मि वः मः (और्विविषिष्या-व म
१० और्विविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४७१ तुर्वै ( तूर्व् ) हिंसायाम् ।

१ तुतूर्विष–ति तः न्ति सि थः थ तुतूर्विषा–मि वः मः
२ तुतूर्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतूर्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतूर्विषा–णि व म
४ अतुतूर्विष–त् ताम् न् : तम् त म अतुतूर्विषा–व म
५ अतुतूर्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतूर्विषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतूर्विषाश्चकार तुतूर्विषामास
७ तुतूर्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतूर्विषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतूर्विषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुतूर्विषिष्या–मि वः मः (अतुतूर्विषिष्या–व म
१० अतुतूर्विषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४७२ थुर्वै ( थूर्व् ) हिंसायाम् ।

१ तुथूर्विष–ति तः न्ति सि थः थ तुथूर्विषा–मि वः मः
२ तुथूर्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुथूर्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुथूर्विषा–णि व म
४ अतुथूर्विष–त् ताम् न् : तम् त म अतुथूर्विषा–व म
५ अतुथूर्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुथूर्विषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुथूर्विषाश्चकार तुथूर्विषाम्बभूव
७ तुथूर्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुथूर्विषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुथूर्विषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुथूर्विषिष्या–मि वः मः (अतुथूर्विषिष्या–व म
१० अतुथूर्विषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४७३ दुर्वै ( दूर्व् ) हिंसायाम् ।

१ दुदूर्विष–ति तः न्ति सि थः थ दुदूर्विषा–मि वः मः
२ दुदूर्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुदूर्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुदूर्विषा–णि व म
४ अदुदूर्विष–त् ताम् न् : तम् त म् अदुदूर्विषा–व म
५ अदुदूर्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुदूर्विषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दुदूर्विषाश्चकार दुदूर्विषाम्बभूव
७ दुदूर्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुदूर्विषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुदूर्विषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दुदूर्विषिष्या–मि वः मः (अदुदूर्विषिष्या–व म
१० अदुदूर्विषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४७४ धुर्वै ( धूर्व् ) हिंसायाम् ।

१ दुधूर्विष–ति तः न्ति सि थः थ दुधूर्विषा–मि वः मः
२ दुधूर्विषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुधूर्विष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुधूर्विषा–णि व म
४ अदुधूर्विष–त् ताम् न् : तम् त म् अदुधूर्विषा–व म
५ अदुधूर्वि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ दुधूर्विषाश्च–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
दुधूर्विषाम्बभूव दुधूर्विषामास
७ दुधूर्विष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधूर्विषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधूर्विषिष्य–ति तः न्ति सिथः थ दुधूर्विषिष्या मि वः मः (अदुधूर्विषिष्या–व म
१० अदुधूर्विषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४७५ जुर्व ( जूर्व् ) हिंसायाम् ।

१ जुजूर्विष-ति तः न्ति सि थः थ जुजूर्विषा-मि वः मः
२ जुजूर्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुजूर्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुजूर्विषा--णि व म
४ अजुजूर्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुजूर्विषा-व म
५ अजुजूर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ जुजूर्विषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
जुजूर्विषाम्बभूव जुजूर्विषामास
७ जुजूर्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुजूर्विषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुजर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुजूर्विषिष्या-
मि वः मः (अजुजूर्विषिष्या-व म
१० अजुजूर्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४७६ अर्व ( अर्व् ) हिंसायाम् ।

१ अर्विविष-ति तः न्ति सि थः थ अर्विविषा-मि वः मः
२ अर्विविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अर्विविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्विविषा-णि व म
४ आर्विविष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्विविषा-व म
५ आर्विवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्विविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अर्विविषाञ्चकार अर्विविषामास
७ अर्विविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्विविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्विविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्विविषिष्या
-मि वः मः (आर्विविषिष्या-व म
१० आर्विविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४७७ भर्व ( भर्व् ) हिंसायाम् ।

१ बिभर्विष-ति तः न्ति सि थः थ बिभर्विषा-मि वः मः
२ बिभर्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभर्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभर्विषा-णि व म
४ अबिभर्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिभर्विषा-व म
५ अबिभर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ बिभर्विषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
बिभर्विषाम्बभूव बिभर्विषामास
७ बिभर्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभर्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभर्विषि-
ष्या-मि वः मः (अबिभर्विषिष्या-व म
१० अबिभर्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४७८ शर्व ( शर्व् ) हिंसायाम् ।

१ शिशर्विष ति तः न्ति सि थः थ शिशर्विषा-मि वः मः
२ शिशर्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशर्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशर्विषा-णि व म
४ अशिशर्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशर्विषा व म
५ अशिशर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ शिशर्विषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
शिशर्विषाम्बभूव शिशर्विषामास
७ शिशर्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशर्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशर्विषि-
ष्या मि वः मः (अशिशर्विषिष्या-व म
१० अशिशर्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४८० मव (मव्) बन्धने ।

१ मिमविष ति तः न्ति सि थः थ मिमविषा-मि वः मः
२ मिमविषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ मिमविष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
मिमविषा-णि व म
४ अमिमविष त् ताम् न् ः तम् त म अमिमविषा-व म
५ अमिमवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमविषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमविषाञ्चकार मिमविषामास
७ मिमविष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमविषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमविषि-
ष्या-मि व मः (अमिमविषिष्या-व म
१० अमिमविषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ४८१ गुर्वी (गुर्व्) उद्यमे ।

१ जुगूर्विष-ति तः न्ति सि थः थ जुगूर्विषा-मि वः मः
२ जुगूर्विषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ जुगूर्विष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
जुगूर्विषा-णि व म
४ अजुगूर्विष-त् ताम् न् ः तम् त म् अजुगूर्विषा-व म
५ अजुगूर्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगूर्विषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुगूर्विषाञ्चकार जुगूर्विषामास
७ जुगूर्विष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगूर्विषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगूर्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगूर्विषिष्या
-मि वः मः (अजुगूर्विषिष्या-व म
१० अजुगूर्विषिष्य-त ताम् न् ः तम् त म

### ४८२ पिवु (पिन्व्) सेचने ।

१ पिपन्विष-ति तः न्ति सि थः थ पिपन्विषा-मि वः मः
२ पिपन्विषे-त् ताम् युः ः, तम् त यम् व म
३ पिपन्विष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
पिपन्विषा-णि व म
४ अपिपन्विष-त् ताम् न् ः तम् त म् अपिपन्विषा-व म
५ अपिपन्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपन्विषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपन्विषाञ्चकार पिपन्विषाम्बभूव
७ पिपन्विष्या-त् स्ताम् सुः, ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपन्विषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपन्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपन्विषिष्या-
मि वः मः (अपिपन्विषिष्या-व म
१० अपिपन्विषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म

### ४८३ मिवु (मिन्व्) सेचने ।

१ मिमिन्विष ति तः न्ति सि थः थ मिमिन्विषा-मि वः मः
२ मिमिन्विषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ मिमिन्विष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
मिमिन्विषा-णि व म (व म
४ अमिमिन्विष-त् ताम् न् ः तम् त म् अमिमिन्विषा-
५ अमिमिन्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमिन्विषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमिन्विषाञ्चकार मिमिन्विषामास
७ मिमिन्विष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिन्विषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमिन्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमिन्विषि-
ष्या-मि वः मः (अमिमिन्विषिष्या-व म
१० अमिमिन्विषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ४८४ निवु ( निन्व् ) सेचने ।

१ निनिन्विष-ति तः न्ति सि थः थ निनिन्विषामि वः मः
२ निनिन्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनिन्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनिन्विषा-णि व म (व म
४ अनिनिन्विष त् ताम् न् : तम् त म अनिनिन्विषा-
५ अनिनिन्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनिन्विषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनिन्विषाञ्चकार निनिन्विषामास
७ निनिन्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिन्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनिन्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनिन्विषि
-ष्यामि वः मः (अनिनिन्विषिष्या-व म
१० अनिनिन्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४८५ हिवु ( हिन्व् ) प्रीणने ।

१ जिहिन्विष-ति तः न्ति सि थः थ जिहिन्विषामि वः मः
२ जिहिन्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहिन्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहिन्विषा-णि व म (व म
४ अजिहिन्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिहिन्विषा
५ अजिहिन्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ जिहिन्विषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिहिन्विषाञ्चकार जिहिन्विषाम्बभूव
७ जिहिन्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहिन्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहिन्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहिन्विषि
ष्या-मि वः मः (अजिहिन्विषिष्या-व म
१० अजिहिन्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ४८६ दिवु ( दिन्व् ) प्रीणने ।

१ दिदिन्विषति तः न्ति सि थः थ दिदिन्विषामि वः मः
२ दिदिन्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदिन्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदिन्विषा-णि व म (व म
४ अदिदिन्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदिन्विषा-
५ अदिदिन्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ दिदिन्विषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
दिदिन्विषाम्बभूव दिदिन्विषामास
७ दिदिन्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदन्विषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदिन्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदिन्विषि-
ष्या-मि वः मः (अदिदिन्विषिष्या-व म
१० अदिदिन्विषिष्य-त् ताम् न् : म् त तम्

### ४८७ जिवु ( जिन्व् ) प्रीणने ।

१ जिजिन्विषति तः न्ति सि थः थ जिजिन्विषामि वः मः
२ जिजिन्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजिन्विष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजिन्विषा-णि व म (व म
४ अजिजिन्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजिन्विषा-
५ अजिजिन्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजिन्विषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजिन्विषाञ्चकार जिजिन्विषाम्बभूव
७ जिजिन्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजिन्विषिता-" रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजिन्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजिन्विषि
ष्या-मि वः मः (अजिजिन्विषिष्या-व म
१० अजिजिन्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४८८ इवु (इन्व्) व्याप्तौ च।

१ इन्विविष ति तः न्ति सि थः थ इन्विविषा-मि वः मः
२ इन्विविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ इन्विविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
इन्विविषा-णि व म
४ ऐन्विविष-त् ताम् न् : तम् त म् ऐन्विविषा-व म
५ ऐन्विवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ इन्विविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
इन्विविषाञ्चकार इन्विविषामास
७ इन्विविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ इन्विविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ इन्विविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ इन्विविषिष्या-मि वः मः (अन्विविषिष्या-व म
१० ऐन्विविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४८९ अव (अव्) रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमनप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादहनभाववृद्धिषु.

१ अविविष-ति तः न्ति सि थः थ अविविषा-मि वः मः
२ अविविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अविविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अविविषा-णि व म
४ आविविष-त् ताम् न् : तम् त म् आविविषा-व म
५ आविवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अविविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अविविषाञ्चकार अविविषामास
७ अविविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अविविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अविविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अविविषिष्या-मि वः मः (आविविषिष्या-व म
१० आविविषिष्य-त् ताम् न् : तम् तम्

४९० कश (कश्) शब्दे।

१ चिकशिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकशिषा-मि वः मः
२ चिकशिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ चिकशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकशिषा-णि व म
४ अचिकशिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकशिषा-व म
५ अचिकशि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकशिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकशिषाञ्चकार चिकशिषाम्बभूव
७ चिकशिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकशिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकशिषिष्या-मि वः मः (अचिकशिषिष्या-व म
१० अचिकशिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

४९१ मिश (मिश्) रोषे च।

१ मिमिशिष ति तः न्ति सि थः थ मिमिशिषा-मि वः मः
२ मिमिशिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमिशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमिशिषा-णि व म (व म
४ अमिमिशिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमिशिषा-
५ अमिमिशि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमिशिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमिशिषाञ्चकार मिमिशिषामास
७ मिमिशिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिशिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमिशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमिशिषिष्या-मि वः मः (अमिमिशिषिष्या-व म
१० अमिमिशिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे मिमि-स्थाने मिमे इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



४९२ मश ( मश् ) रोषे च ।

१ मिमशिषति तः न्ति सि थः थ मिमशिषामि वः मः
२ मिमशिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमशिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमशिषा–णि व म (व म
४ अमिमशिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमशिषा
५ अमिमशि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमशिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमशिषाञ्चकार मिमशिषाम्बभूव
७ मिमशिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमशिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमशिषिष्या–मि वः मः (अमिमशिषिष्या–व म
१० अमिमशिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

४९४ णिश ( निश् ) समाधौ ।

१ निनिशिष-ति तः न्ति सि थः थ निनिशिषामि वः मः
२ निनिशिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनिशिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनिशिषा–णि व म (व म
४ अनिनिशिष-त् ताम् न् : तम् त म अनिनिशिषा-
५ अनिनिशि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ निनिशिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनिशिषाञ्चकार निनिशिषामास
७ निनिशिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिशिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनिशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनिशिषि–ष्यामि वः मः (अनिनिशिषिष्या–व म
१० अनिनिशिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे निनि-स्थाने नेनि-इति ज्ञेयम्

४९३ शश ( शश् ) प्लुतिगतौ ।

१ शिशशिषति तः न्ति सि थः थ शिशशिषामि वः मः
२ शिशशिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशशिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशशिषा–णि व म (व म
४ अशिशशिष–त् ताम् न् : तम् त म् अशिशशिषा-
५ अशिशशि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म
६ शिशशिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिशशिषाञ्चकार शिशशिषाम्बभूव
७ शिशशिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशशिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशशिषिष्या–मि वः मः (अशिशशिषिष्या–व म
१० अशिशशिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

४९५ दृशृ ( दृश् ) प्रेक्षणे ।

१ दिदृक्ष ति तः न्ति सि थः थ दिदृक्षा–मि वः मः
२ दिदृक्षे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ दिदृक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदृक्षा–णि व म (व म
४ अदिदृक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदृक्षा-
५ अदिदृ–क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषु क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम क्षिष्व क्षिष्म
६ दिदृक्षाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
दिदृक्षाम्बभूव दिदृक्षामास
७ दिदृक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदृक्षिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदृक्षिष्य-ति तः न्ति सिथः थ दिदृक्षिष्या–मि वः मः (अदिदृक्षिष्या-व म
१० अदिदृक्षिष्य–त् ताम् न् : म् त तम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ४९६ दंशं ( दंश् ) दशने ।

१ दिदंक्ष–ति तः न्ति सि थः थ दिदंक्षा-मि वः मः
२ दिदंक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदंक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदंक्षा–णि व म
४ अदिदंक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अदिदंक्षा-व म
५ अदिदं–क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्ष्म क्ष्व क्षिष्व क्षिष्म
६ दिदंक्षाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार-कर
दिदंक्षाम्बभूव दिदंक्षामास
७ दिदंक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदंक्षिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदंक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदंक्षिष्या-मि
वः मः ( अदिदंक्षिष्या-व म
१० अदिदंक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४९७ घुषृं ( घुष् ) शब्दे ।

१ जुघुषिष-ति तः न्ति सि थः थ जुघुषिषा-मि वः मः
२ जुघुषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुघुषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुघुषिषा–णि व म
४ अजुघुषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुगुषिषा–व म
५ अजुघुषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुघुषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
जुघुषिषाम्बभूव जुघुषिषामास
७ जुघुषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुघुषिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ जुघुषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुघुषिषिष्या-
मि वः मः ( अजुघुषिषष्या–व म
१० अजुघुषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे जुघु-स्थाने जुघो-इति ज्ञेयम्

## ४९८ चूष ( चूष् ) पाने ।

१ चुचूषिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचूषिषा-मि वः मः
२ चुचूषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचूषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचषिषा–णि व म
४ अचुचूषिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुचूषिषा व म
५ अचुचूषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचूषिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुचूषिषामास चुचूषिषाञ्चकार
७ चुचूषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचूषिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचषिषिष्य-ति तः न्ति सि थ. थ चुचूषिषिष्या
-मि वः मः ( अचुचूषिषिष्या–व म
१० अचुचूषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ४९९ तूष ( तूष् ) तुष्टौ ।

१ तुतूषिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतूषिषा-मि वः मः
२ तुतूषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतूषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतूषिषा–णि व म
४ अतुतूषिष त् ताम् न् : तम् त म् अतुतूषिषा-व म
५ अतुतूषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतूषिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतूषिषाञ्चकार तुतूषिषामास
७ तुतूषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतूषिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतूषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुतूषिषिष्या
मि वः मः ( अतुतूषिषिष्या–व म
१० अतुतूषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५०० पूष ( पूष् ) वृद्धौ ।

१ पुपूषिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपूषिषामि वः मः
२ पुपूषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपूषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूषिषा-णि व म
४ अपुपूषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपूषिषा-व म
५ अपुपूषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ पुपूषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पुपूषिषाम्बभूव पुपूषिषामास
७ पुपूषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूषिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपूषिषिष्या-
मि वः मः (अपुपूषिषिष्या-व म
१० अपुपूषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५०१ लुष ( लुष् ) स्तेये ।

१ लुलूषिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलूषिषा-मि वः मः
२ लुलूषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलूषि-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलूषिषा-णि व म
४ अलुलूषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलूषिषा-व म
५ अलुलूषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षि[illegible]म्
षिष्व षिष्म
६ लुलूषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
लुलूषिषामास लुलूषिषाम्बभूव
७ लुलूषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलूषिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलूषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलूषिषिष्या-
-मि वः मः (अलुलूषिषिष्या-व म
१० अलुलूषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५०२ मूष ( मूष् ) स्तेये ।

१ मुमूषिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमूषिषा-मि वः मः
२ मुमूषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमूषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमूषिषा-णि व म
४ अमुमूषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमूषिषा-व म
५ अमुमूषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ मुमूषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
मुमूषिषाम्बभूव मुमूषिषामास
७ मुमूषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमूषिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमूषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमूषिष्या-
-मि वः मः (अमुमूषिषिष्या-व म
१० अमुमूषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५०३ षूष ( सूष् ) प्रसवे ।

१ सुसूषिष ति तः न्ति सि थः थ सुसूषिषा मि वः मः
२ सुसूषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुसूषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसूषिषा-णि व म
४ असुसूषिष-त ताम् न् : तम् त म् असुसूषिषा-वम
५ असुसूषि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम [illegible]ष्व षिष्म
६ सुसूषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
सुसूषिषाम्बभूव सुसूषिषामास
७ सुसूषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसूषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुसूषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुसूषिषि-
ष्या मि वः मः (असुसूषिषिष्या-व म
१० असुसूषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५०४ ऊष ( ऊष् ) रुजायाम् ।

१ ऊषिषिष-ति तः न्ति सि थः थ ऊषिषिषा-मि वः मः
२ ऊषिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ऊषिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ऊषिषिषा-णि व म
४ औषिषिष-त् ताम् न् : तम् त म् औषिषिषाव म
५ औषिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ऊषिषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ऊषिषिषामास ऊषिषिषाञ्चकार
७ ऊषिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ऊषिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
० ऊषिषिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ ऊषिषिषिष्या
-मि वः मः (औषिषिषिष्या-व म
१० औषिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५०६ कृषं ( कृष् ) विलेखने ।

१ चिकृक्ष-ति तः न्ति सि थः थ चिकृक्षा-मि वः मः
२ चिकृक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकृक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चिकृक्षा-णि व म
४ अचिकृक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकृक्षा-व म
५ अचिकृ-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
कृम कृव क्षिष्व क्षिष्म
६ चिकृक्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार-कर
चिकृक्षाम्बभूव चिकृक्षामास
७ चिकृक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकृक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकृक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकृक्षिष्या-मि
वः मः (अचिकृक्षिष्या-व म
१० अचिकृक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५०५ ईष ( ईष् ) उञ्छे ।

१ ईषिषिष-ति तः न्ति सि थः थ ईषिषिषा मि वः मः
२ ईषिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ईषिषिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
ईषिषिषा-णि व म
४ ऐषिषिष त् ताम् न् : तम् त म् ऐषिषिषा-व म
५ ऐषिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ईषिषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ईषिषिषाञ्चकार ईषिषिषामास
७ ईषिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ईषिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ईषिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ईषिषिषिष्या
मि वः मः (ऐषिषिषिष्या-व म
१० ऐषिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५०७ कष ( कष् ) हिंसायाम् ।

१ चिकषिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकषिषा-मि वः मः
२ चिकषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
म चिकषिषा-णि व म
४ अचिकषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकषिषा-व
५ अचिकषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकषिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चिकषिषाम्बभूव चिकषिषामास
७ चिकषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिषिषिष्या-
मि वः मः (अचिकषिषष्या-व म
१० अचिकषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५०८ शिष ( शिष् ) हिंसायाम् ।

१शिशिषिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशिषिषामि वः म
२ शिशिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशिषिषा--णि व म (म
४अशिशि षष त्ताम् न् : तम् त म् अशिशिषिषा व
५अशिशिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्षम षिष्व षिष्म
६शिशिषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
शिशिषिषाम्बभूव शिशिषिषामास
७ शिशिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशिषिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशिषि
षिष्या-मि वः मः (अशिशिषिषिष्या-व म
१०अशिशिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे शिशि-स्थाने शिशे इति ज्ञेयम्

### ५०९ जष ( जष् ) हिंसायाम् ।

१जिजषिष-ति तः न्ति सि थ थ जिजषिषा-मि वः मः
२ जिजषिषे- त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजषिषा-णि व म
४ अजिजषिष- त् ताम् न् : तम् त म अजिजषिषा-व म
५ अजिजषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६जिजषिषाञ्च- कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिजषिषामास जिजषिषाम्बभूव
७ जिजषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजषिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजषिषिष्या-
-मि वः मः (अजिजषिषिष्या-व म
१०अजिजषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५१० झष ( झष् ) हिंसायाम् ।

१ जिझषिष ति तः न्ति सि थः थ जिझषिषा-मि वः मः
२ जिझषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिझषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिझषिषा-णि व म
४अजिझषिष त् ताम् न् : तम् त म् अजिझषा-व म
५ अजिझषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६जिझषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
जिझषिषाम्बभूव जिझषिषामास
७ जिझषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिझषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिझषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिषिषि-
ष्या-मि वः मः (अजिझषिषिष्या-व म
१०अजिझषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५११ वष ( वष् ) हिंसायाम् ।

१ विवषिष ति तः न्ति सि थः थ विवषिषा मि वः मः
२ विवषिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ विवषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम त
विवषिषा- णि व म
४अविवषिष-त ताम् न् तम् त म् अविवषिषा वम
५अविवषि-षीत षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६विवषिषाञ्च -कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
विवषिषाम्बभूव विवषिषामास
७ विवषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स स्व स्म
८ विवषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवषिषि-
ष्या मि वः मः (अविवषिषिष्या व म
१०अविवषिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



५१२ मष ( मष् ) हिंसायाम् ।

१ मिमषिषति तः न्ति सि थः थ मिमषिषामि वः मः
२ मिमषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमषिषा-णि व म (व म)
४ अमिमषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमषिषा-
५ अमिमषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमषिषाम्बभूव-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम मिमषिषाञ्चकार मिमषिषामास
७ मिमषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमषिषिष्या-मि वः मः (अमिमषिषिष्या-व म
१० अमिमषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५१३ मुष ( मुष् ) हिंसायाम् ।

१ मुमुषिष ति तः न्ति सि थः थ मुमुषिषा-मि वः मः
२ मुमुषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मुमुषिषा-णि व म
४ अमुमुषिष त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुषिषा-व म
५ अमुमुषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मुमुषिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम मुमुषिषाम्बभूव मुमुषिषामास
७ मुमुषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुषिष्या-मि वः मः (अमुमषिषिष्या-व म
१० अमुमुषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे मुमु-स्थाने मुमो इति ज्ञेयम्

५१४ रुष ( रुष् ) हिंसायाम् ।

१ रुरुषिष-ति तः न्ति सि थः थ रुरुषिषामि वः मः
२ रुरुषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरुषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रुरुषिषा-णि व म
४ अरुरुषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरुषिषा-व म
५ अरुरुषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रुरुषिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम रुरुषिषाम्बभूव रुरुषिषामास
७ रुरुषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रुरुषिषिष्या-मि वः मः (अरुरुषिषिष्या-व म
१० अरुरुषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे रुरु-स्थाने रुरो इति ज्ञेयम्

५१५ रिष ( रिष् ) हिंसायाम् ।

१ रिरिषिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरिषिषा-मि वः मः
२ रिरिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रिरिषिषा-णि व म
४ अरिरिषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरिषिषा-व म
५ अरिरिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रिरिषिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम रिरिषिषामास रिरिषिषाम्बभूव
७ रिरिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरिषिषिष्या-मि वः मः (अरिरिषिषिष्या-व म
१० अरिरिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे रिरि-स्थाने रिरे इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ५१६ यूष ( यूष् ) हिंसायाम् ।

१ युयूषिषति तः न्ति सि थः थ युयूषिषा मि वः मः
२ युयूषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ युयूषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त युयूषिषा–णि व म ( व म
४ अयुयूषिष–त् ताम् न् : तम् त म् अयुयूषिषा–
५ अयुयूषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ युयूषिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम युयूषिषाञ्चकार युयूषिषामास
७ युयूषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयूषिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व. स्मः
९ युयूषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ युयूषिषिष्या–मि वः मः (अयुयूषिषिष्या–व म
१० अयुयूषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ५१८ शष ( शष् ) हिंसायाम् ।

१ शिशषिष–ति तः न्ति सि थः थ शिशषिषामि वः मः
२ शिशषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शिशषिषा––णि व म
४ अशिशषिष त् ताम् न् : तम् त म् अशिशषिषा–व म
५ अशिशषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ शिशषिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव शिशषिषाम्बभूव शिशषिषामास
७ शिशषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशषिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ शिशषिषिष्या मि वः मः (अशिशषिषिष्या–व म
१० अशशिषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ५१७ जूष ( जूष् ) हिंसायाम् ।

१ जुजूषिष ति तः न्ति सि थः थ जुजूषिषा मि वः मः
२ जुजूषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुजूषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जुजूषिषा–णि व म
४ अजुजूषिष त् ताम् न् : तम् त म् अजुजूषिषा–व म
५ अजुजूषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ जुजूषिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव जुजूषिषाम्बभूव जुजूषिषामास
७ जुजूषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुजूषिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुजूषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुजूषिष्या––मि वः मः (अजुजूषिषिष्या–व म
१० अजुजूषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ५१९ चष ( चष् ) हिंसायाम् ।

१ चिचषिष ति तः न्ति सि थः थ चिचषिषा–मि वः मः
२ चिचषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिचषिषा–णि व म
४ अचिचषिष–त् ताम् न् : तम् त म अचिचषिषा–व म
५ अचिचषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिचषिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम चिचषिषामास चिचषिषाम्बभूव
७ चिचषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचषिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिचषिषिष्या –मि वः मः (अचिचषिषिष्या–व म
१० अचिचषिषिष्य–त् ताम् न्: तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ५२० वृषू ( वृषू ) सङ्घाते च ।

१ विवर्षिषति त. न्ति सि थः थ विवर्षिषा मि वः मः
२ विवर्षिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवर्षिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्षिषा–णि व म (व म
४ अविवर्षिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्षिषा–
५ अविवर्षि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ विवर्षिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवर्षिषाञ्चकार विवर्षिषामास
७ विवर्षिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्षिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्षिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवर्षिषि–
ष्या–मि वः मः (अविवर्षिषिष्या–व म
१० अविवर्षिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ५२१ भष ( भष् ) भर्त्सने ।

१ बिभषिष ति तः न्ति सि थः थ बिभषिषा मि वः मः
२ बिभषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बभषिषा–णि व म
४ अबिभषिष त् ताम् न् : तम् त म् अबिभषिषा व म
५ अबिभषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ बिभषिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
बिभषिषाम्बभूव बिभषिषामास
७ बिभषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभषिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभषिष्या–
–मि वः मः (अबिभषिषिष्या–व म
१० अबिभषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ५२२ जषू ( जष् ) सेचने ।

१ जिजिषिष–ति तः न्ति सि थः थ जिजिषिषामि वः मः
२ जिजिषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजिषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजिषिषा–णि व म (व म
४ अजिजिषिष त् ताम् न् : तम् त म् अजिजिषिषा–
५ अजिजिषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६ जिजिषिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
जिजिषिषाम्बभूव जिजिषिषामास
७ जिजिषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजिषिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजिषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिजिषिषि–
ष्या–मि वः मः (अजिजिषिषिष्या–व म
१० अजिजिषिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म
पक्षे जिजि–स्थाने जिजे–इति ज्ञेयम्

## ५२३ विषू ( विष् ) सेचने ।

१ विविषिष ति तः न्ति सि थः थ विविषिषा–मि वः मः
२ विविषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विविषिषा–णि व म (व म
४ अविविषिष–त् ताम् न् : तम् त म अविविषिषा–
५ अविविषि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विविषिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विविषिषामास विविषिषाम्बभूव
७ विविषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविषिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विविषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विविषिषिष्या
–मि वः मः (अविविषिषिष्या–व म
१० अविविषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे विवि–स्थाने विवे–इति–ज्ञेयम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९२४ मिषू ( मिष् ) सेचने ।

१ मिमिषिषति तः न्ति सि थः थ मिमिषिषामि वः मः
२ मिमिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमिषिषा-णि व म (व म
४ अमिमिषिष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमिषिषा
५ अमिमिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमिषिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमिषिषाञ्चकार मिमिषिषाम्बभूव
७ मिमिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमिषिषिष्या-मि वः मः (अमिमिषिषिष्या-व म
१० अमिमिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे मिमि-स्थाने मिमे-इति ज्ञेयम्

९२५ निषू ( निष् ) सेचने ।

१ निनिषिष-ति तः न्ति सि थः थ निनिषिषामि वः मः
२ निनिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त निनिषिषा-णि व म (व म
४ अनिनिषिष-त् ताम् न् : तम् त म अनिनिषिषा-
५ अनिनिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ निनिषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम निनिषिषाञ्चकार निनिषिषामास
७ निनिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनिषिषिष्यामि वः मः (अनिनिषिषिष्या-व म
१० अनिनिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे निनि-स्थाने निने-इति ज्ञेयम्

९२६ वृषू ( वृष् ) सेचने ।

१ विवर्षिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्षिषा-मि वः मः
२ विवर्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवर्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवर्षिषा-णि व म (व म
४ अविवर्षिष-त् ताम न् : तम् त म् अविवर्षिषा-
५ अविवर्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ विवर्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवर्षिषाञ्चकार विवर्षिषाम्बभूव
७ विवर्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्षिषिष्या-मि वः मः (अविवर्षिषिष्या-व म
१० अविवर्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

९२७ वृषू ( वृष् ) सेचने । वृषू ९२० वद्रूपाणि

९२८ मृषू ( मृष् ) सेचने च ।

१ मिमर्षिषा-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्षिषा-मि वः मः
२ मिमर्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमर्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमर्षिषा-णि व म (व म
४ अमिमर्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमर्षिषा-
५ अमिमर्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमर्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम मिमर्षिषाम्बभूव मिमर्षिषामास
७ मिमर्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमर्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमर्षिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ मिमर्षिषिष्या-मि वः मः (अमिमर्षिषिष्या-व म
१० अमिमर्षिषिष्य-त् ताम् न् : म् त तम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५२९ उषू ( उष् ) दाहे ।

औषिषिष-ति तः न्ति सि थः थ औषिषिषामि वः मः
२ औषिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ औषिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
औषिषिषा-णि व म
४ औषिषिष-त् ताम् न् : तम् त म् औषिषिषा व म
५ औषिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कर-कृम कृव षिष्व षिष्म
६ औषिषिषाञ्च-कार कतु कुः कर्थ कथुः क कार
औषिषिषाम्बभूव औषिषिषामास
७ औषिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ औषिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ औषिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ औषिषिषि
ष्या-मि वः मः ( औषिषिषिष्या-व म
१० औषिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५३० श्रिषू ( श्रिष् ) दाहे ।

१ शिश्रिषिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रिषिषा-मि वः मः
२ शिश्रिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्रिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रिषिषा-णि व म
४ अशिश्रिषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रिषिषा व म
५. अशिश्रिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्रिषिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
शिश्रिषिषाम्बभूव शिश्रिषिषामास
७ शिश्रिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रिषिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ शिश्रिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रिषिषि
ष्या-मि वः मः ( अशिश्रिषिषिष्या-व म
१० अशिश्रिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे शिश्रि-स्थाने शिश्रे इति ज्ञेयम्

### ५३१ श्लिषू ( श्लिष् ) दाहे ।

१ शिश्लिषिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्लिषिषामि वः मः
२ शिश्लिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्लिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
व म शिश्लिषिषा-णि व म
४ अशिश्लिषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्लिषिषा
५ अशिश्लिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्लिषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्लिषिषामास शिश्लिषिषाञ्चकार
७ शिश्लिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्लिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्लिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्लिषि-
षिष्य-मि वः मः ( अशिश्लिषिषिष्या-व म
१० अशिश्लिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे शिश्लि-स्थाने शिश्ले-इति ज्ञेयम्

### ५३२ प्रुषू ( प्रुष् ) दाहे ।

१ पुप्रुषिष-ति तः न्ति सि थः थ पुप्रुषिषा मि वः मः
२ पुप्रुषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुप्रुषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुप्रुषिषा-णि व म
४ अपुप्रुषिष त् ताम् न् : तम् त म् अपुप्रुषिषा-व म
५ अपुप्रुषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुप्रुषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुप्रुषिषाञ्चकार पुप्रुषिषामास
७ पुप्रुषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुप्रुषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुप्रुषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुप्रुषिषिष्या
मि वः मः ( अपुप्रुषिषिष्या-व म
१० अपुप्रुषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे पुप्रु स्थाने पुप्रो इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५३३ प्लुषू (प्लुष्) दाहे

१ पुप्लुषिष-ति तः न्ति सि थः थ पुप्लुषिषा-मि वः मः
२ पुप्लुषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुप्लुषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुप्लुषिषा-णि व म
४ अपुप्लुषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुप्लुषिषा-व म
५ अपुप्लुषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुप्लुषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुप्लुषिषाञ्चकार पुप्लुषिषामास
७ पुप्लुषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुप्लुषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुप्लुषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुप्लुषिषिष्या
-मि वः मः (अपुप्लुषिषिष्या-व म
१० अपुप्लुषिषिष्य-त ताम् न : तम तम
पक्षे पुप्लु-स्थाने पुप्लो-इति ज्ञेयम्

### ५३४ घृषू (घृष्) सङ्घर्षे

१ जिघर्षिष-ति तः न्ति सि थः थ जिघर्षिषा-मि वः मः
२ जिघर्षिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ जिघर्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघर्षिषा-णि व म
४ अजिघर्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिघर्षिषा व म
५ अजिघर्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिघर्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिघर्षिषाञ्चकार जिघर्षिषाम्बभूव
७ जिघर्षिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघर्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघर्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघर्षिषिष्या
-मि वः मः (अजिघर्षिषिष्या-व म
१० अजिघर्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### ५३५ हृषू (हृष्) अलीके ।

१ जिहर्षिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहर्षिषा-मि वः मः
२ जिहर्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहर्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहर्षिषा-णि व म
४ अजिहर्षिष-त ताम् न् : तम् त म् अजिहर्षिषा-व म
५ अजिहर्षि षीत षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ जिहर्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
जिहर्षिषाम्बभूव जिहर्षिषामास
७ जिहर्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ जिहर्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहर्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहर्षिषि-
ष्या मि वः मः (अजिहर्षिषिष्या-व म
१० अजिहर्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम तम्

### ५३६ पुष (पुष्) पुष्टौ ।

१ पुपुषिष ति तः न्ति सि थः थ पुपुषिषा-मि वः मः
२ पुपुषिषे-त् ताम युः : तम त यम् व म
३ पुपुषिष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त
पुपुषिषा-णि व म
४ अपुपुषिष त् ताम् न् : तम् त म अपुपुषिषा-व म
५ अपुपुषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ पुपुषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपुषिषाञ्चकार पुपुषिषामास
७ पुपुषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ पुपुषिषिता-" रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुषिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ पुपुषिषि-
ष्या-मिव मः (अपुपुषिषिष्या-व म
१० अपुपुषिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे पुपु-स्थाने पुपो-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५३७ भूष ( भूष् ) अलंकारे

१ बुभूषिष-ति तः न्ति सि थः थ बुभूषिषा-मि वः मः
२ बुभूषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बुभूषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुभूषिषा-णि व म
४ अबुभूषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबुभूषिषा-व म
५ अबुभूषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बुभूषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बुभूषिषाञ्चकार बुभूषिषामास
७ बुभूषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुभूषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुभूषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुभूषिषिष्या
-मि वः मः (अबुभूषिषिष्या-व म
१० अबुभूषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् तम्

### ५३८ तसु ( तंस ) अलङ्कारे

१ तितंसिष-ति तः न्ति सि थः थ तितंसिषा-मि वः मः
२ तितंसिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ तितंसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितंसिषा-णि व म
४ अतितंसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितंसिषा व म
५ अतितंसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितंसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितंसिषाञ्चकार तितंसिषाम्बभूव
७ तितंसिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितंसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितंसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितंसिषिष्या
मि वः मः (अतितंसिषिष्या-व म
१० अतितंसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### ५३९ तुस ( तुस् ) शब्दे ।

१ तुतुसिष ति तः न्ति सि थः थ तुतुसिषा मि वः मः
२ तुतुसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुसिषा-णि व म
४ अतुतुसिष-त ताम् न् : तम् त म् अतुतुसिषा-व म
५ अतुतुसि षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ तुतुसिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
तुतुसिषाम्बभूव तुतुसिषामास
७ तुतुसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुसिषि-
ष्या मि वः मः (अतुतुसिषिष्या-व म
१० अतुतुसिषिष्य-त् ताम् न् : तम तम
पक्षे तुत-स्थाने तुतो-इति ज्ञेयम्

### ५४० ह्रस ( ह्रस् ) शब्दे ।

१ जिह्रसिष ति तः न्ति सि थः थ जिह्रसिषा-मि वः मः
२ जिह्रसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्रसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिह्रसिषा-णि व म
४ अजिह्रसिष-त् ताम् न् : तम् त म अजिह्रसिषा-व म
५ अजिह्रसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिह्रसिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिह्रसिषाञ्चकार जिह्रसिषामास
७ जिह्रसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्रसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्रसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्रसिषि-
ष्या-मि वः मः (अजिह्रसिषिष्या-व म
१० अजिह्रसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५४१ हस (ह्लस) शब्दे ।

१ जिह्लसिष ति तः न्ति सि थः थ जिह्लसिषा मि वः मः
२ जिह्लसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्लसिष-तु तात् ताम् न्तु ’’, तात् तम् त
जिह्लसिषा-णि व म
४ अजिह्लसिष-त् ताम् न् : तम् त म अजिह्लसिषा व म
५ अजिह्लसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिह्लसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिह्लसिषाञ्चकार जिह्लसिषामास
७ जिह्लसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्लसिषिता-’’ रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्लसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्लसिषि-ष्या-मि वः मः (अजिह्लसिषिष्या-व म
१० अजिह्लसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५४२ रस (रस्र) शब्दे

१ रिरसिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरसिषा-मि वः मः
२ रिरसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरसिष-तु तात् ताम् न्तु ’’ तात् तम् त
रिरसिषा-णि व म
४ अरिरसिष-त् ताम् न् : तम् त म अरिरसिषा व म
५ अरिरसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरसिषाञ्चकार रिरसिषामास
७ रिरसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरसिषिता-’’ रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरसिषिष्या-मि वः मः (अरिरसिषिष्या-व म
१० अरिरसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५४३ लस (लस्र) श्लेषणक्रीडनयोः

१ लिलसिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलसिषा-मि वः मः
२ लिलसिषे-त् ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ लिलसिष-तु तात् ताम् न्तु ’’ तात् तम् त
लिलसिषा-णि व म
४ अलिलसिष-त् ताम् न् : तम् त म अलिलसिषा-व म
५ अलिलसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलसिषाञ्चकार लिलसिषाम्बभूव
७ लिलसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलसिषिता-’’ रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलसिषिष्या मि वः मः (अलिलसिषिष्या-व म
१० अलिलसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५४४ घस्लृ (घस्र) अदने ।

१ जिघत्स ति तः न्ति सि थः थ जिघत्सा मि वः मः
२ जिघत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिघत्स-तु तात् ताम् न्तु ’’ तात् तम् त
जिघत्सा-णि व म
४ अजिघत्स-त् ताम् न् : तम् त म अजिघत्सा-व म
५ अजिघत् सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ जिघत्साञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
जिघत्साम्बभूव जिघत्सामास
७ जिघत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघत्सिता-’’ रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघत्सि-ष्या मि वः मः (अजिघत्सिष्या-व म
१० अजिघत्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५४५ हस (हस) हसने ।

१ जिहसिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहसिषामि वः मः
२ जिहसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहसिषा-णि व म (व म
४ अजिहसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिहसिषा
५ अजिहसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहसिषाम्बा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिहसिषाञ्चकार जिहसिषाम्बभूव
७ जिहसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहसिषि
ष्या-मि वः मः (अजिहसिषिष्या-व म
१० अजिहसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५४६ पिस्सृ (पिस्स) गतौ ।

१ पिपिसिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपिसिषामि वः मः
२ पिपिसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपिसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपिसिषा-णि व म (व म
४ अपिपिसिष-त् ताम् न् : तम् त म अपिपिसिषा-
५ अपिपिसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपिसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपिसिषाञ्चकार पिपिसिषामास
७ पिपिसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपिसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपिसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपिसिषि
-ष्यामि वः मः (अपिपिसिषिष्या-व म
१० अपिपिसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे पिपि-स्थाने पिपे-इति ज्ञेयम्

### ५४७ पेसृ (पेस) गतौ ।

१ पिपेसिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपेसिषा-मि वः मः
२ पिपेसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपेसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपेसिषा-णि व म (व म
४ अपिपेसिष-त् ताम न् : तम् त म अपिपेसिषा-
५ अपिपेसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ पिपेसिषाम्बा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपेसिषाञ्चकार पिपेसिषाम्बभूव
७ पिपेसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपेसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपेसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपेसिषि
ष्या-मि व म (अपिपेसिषिष्या-व म
१० अपिपेसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५४८ वेसृ (वेस) गतौ ।

१ विवेसिष-ति तः न्ति सि थः थ विवेसिषा मि वः मः
२ विवेसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवेसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवेसिषा-णि व म (व म
४ अविवेसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवेसिषा-
५ अविवेसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
कृम षिष्व षिष्म
६ विवेसिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
विवेसिषाम्बभूव विवेसिषामास
७ विवेसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवेसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवेसिषि
ष्या-मि वः मः (अविवेसिषिष्या-व म
१० अविवेसिषिष्य-त् ताम् न् : म त तम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५४९ शसू ( शस् ) हिंसायाम् ।

१ शिशसिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशसिषा-मि वः मः
२ शिशसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशसिषा-णि व म (व म
४ अशिशसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशसिषा
५ अशिशसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिशसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिशसिषाञ्चकार शिशसिषाम्बभूव
७ शिशसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशसिषिष्या-मि वः मः (अशिशसिषिष्या-व म
१० अशिशसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५५० शंसू ( शंस् ) स्तुतौ च ।

१ शिशंसिष-ति तः न्ति सि थ थ शिशंसिषा-मि वः म
२ शिशंसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशंसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशंसिषा-णि व म (व म
४ अशिशंसिष-त् ताम् न् : तम् त म अशिशंसिषा-
५ अशिशंसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ शिशंसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशंसिषाञ्चकार शिशंसिषामास
७ शिशंसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशंसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशंसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशंसिषिष्या-मि वः मः (अशिशंसिषिष्या-व म
१० अशिशंसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५५१ मिहं ( मिह् ) सेचने ।

१ मिमिक्ष-ति तः न्ति सि थः थ मिमिक्षा-मि वः मः
२ मिमिक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमिक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमिक्षा-णि व म
४ अमिमिक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमिक्षा-व म
५ अमिमि-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम् क्षिष्व क्षिष्म
६ मिमिक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमिक्षामास मिमिक्षाञ्चकार
७ मिमिक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमिक्षिष्य-ति त न्ति सि थ थ मिमिक्षिष्या-मि वः मः (अमिमिक्षिष्या-व म
१० अमिमिक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५५२ दहं ( दह् ) भस्मीकरणे ।

१ दिधक्षि-ति तः न्ति सि थः थ दिधक्षा मि वः मः
२ दिधक्षे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ दिधक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिधक्षा-णि व म (व म
४ अदिधक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिधक्षा-
५ अदिध-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम् क्षम क्षिष्व क्षिष्म
६ दिधक्षाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
दिधक्षाम्बभूव दिधक्षामास
७ दिधक्ष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधक्षिष्या--मि वः मः (अदिधक्षिष्या-व म
१० अदिधक्षिष्य-त् ताम् न् : म् त तम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ५५३ चह ( चह् ) कल्कने ।

१ चिचहिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचहिषा-मि वः मः
२ चिचहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचहिषा-णि व म (व म
४ अचिचहिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिचहिषा
५ अचिचहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचहिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचहिषाञ्चकार चिचहिषाम्बभूव
७ चिचहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचहिषिष्या-मि वः मः (अचिचहिषिष्या-व म
१० अचिचहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ५५४ रह ( रह् ) त्यागे ।

१ रिरहिष-ति तः न्ति सि थ. थ रिरहिषा-मि वः मः
२ रिरहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरहिषा-णि व म (व म
४ अरिरहिष-त् ताम् न् : तम् त म अरिरहिषा-
५ अरिरहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरहिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरहिषाञ्चकार रिरहिषामास
७ रिरहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरहिषिता-" रौ र. सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरहिषिष्या-मि वः मः (अरिरहिषिष्या-व म
१० अरिरहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ५५५ रहु ( रंह् ) गतौ ।

१ रिरंहिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरंहिषा-मि वः मः
२ रिरंहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरंहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरंहिषा-णि व म (व म
४ अरिरंहिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरंहिषा-
५ अरिरंहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरंहिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरंहिषाञ्चकार रिरंहिषाम्बभूव
७ रिरंहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरंहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरंहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरंहिषिष्या-मि वः मः (अरिरंहिषिष्या-व म
१० अरिरंहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ५५६ दृह ( दृह् ) वृद्धौ ।

१ दिदर्हिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदर्हिषा मि वः मः
२ दिदर्हिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदर्हिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदर्हिषा-णि व म (व म
४ अदिदर्हिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदर्हिषा-
५ अदिदर्हि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
कृम
६ दिदर्हिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
दिदर्हिषाम्बभूव दिदर्हिषामास
७ दिदर्हिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदर्हिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदर्हिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ दिदर्हिषिष्या--मि वः मः (अदिदर्हिषिष्या-व म
१० अदिदर्हिषिष्य-त् ताम् न् : म् त तम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



५५७ दृहु ( दृंह् ) वृद्धौ ।

१ दिदृंहिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदृंहिषा-मि वः मः
२ दिदृंहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदृंहिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
दिदृंहिषा-णि व म
४ अदिदृंहिष-त् ताम् न् : तम् त म अदिदृंहिषा व म
५ अदिदृंहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कम षिष्व षिष्म
६ दिदृंहिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
दिदृंहिषाम्बभूव दिदृंहिषामास
७ दिदृंहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदृंहिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदृंहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदृंहिष्या-मि वः मः (अदिदृंहिषिष्या-व म
१० अदिदृंहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५५८ वृह ( वृह् ) वृद्धौ ।

१ विवर्हिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्हिषा मि वः मः
२ विवर्हिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवर्हिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विवर्हिषा-णि व म ( व म
४ अविवर्हिष-त् ताम् न् : तम् त म अविवर्हिषा-
५ अविवर्हि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ विवर्हिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवर्हिषाञ्चकार विवर्हिषामास
७ विवर्हिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्हिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्हिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्हिषिष्या-मि वः मः (अविवर्हिषिष्या-व म
१० अविवर्हिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५५९ वृहि [ वृंह् ] शब्दे च ।

५६० वृहु ( वृह ) शब्दे च ।

१ विवृंहिष-ति तः न्ति सि थ थ विवृंहिषा-मि वः मः
२ विवृंहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवृंहिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विवृंहिषा-णि व म (व म
४ अविवृंहिष-त् ताम् न् : तम् त म अविवृंहिषा-
५ अविवृंहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवृंहिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विवृंहिषामास विवृंहिषाम्बभूव
७ विवृंहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवृंहिषिता-'' रौ रः सि स्थ. स्थ स्मि स्व. स्मः
९ विवृंहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवृंहिषिष्या-मि व मः (अविवृंहिषिष्या-व म
१० अविवृंहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५६१ उहिॅ ( उह् ) अर्दने ।

१ उजिहिष-ति तः न्ति सि थः थ उजिहिषा मि वः मः
२ उजिहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ उजिहिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
उजिहिषा-णि व म (व म
४ औजिहिष त् ताम् न् : तम् त म् औजिहिषा-
५ औजिहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कम षिष्व षिष्म
६ उजिहिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
उजिहिषाम्बभूव उजिहिषामास
७ उजिहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ उजिहिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ उजिहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ उजिहिषिष्या-मि वः मः (औजिहिषिष्या-व म
१० औजिहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८६२ तुहृ ( तुह ) अर्दने

१ तुतुहिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतुहिषा-मि वः मः
२ तुतुहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुहिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तुतुहिषा-णि व म
४ अतुतुहिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुहिषा-व म
५ अतुतुहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुहिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतुहिषाञ्चकार तुतुहिषामास
७ तुतुहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुहिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुहिषिष्या
मि वः मः (अतुतुहिषिष्या-व म
१० अतुतुहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तुतु-स्थाने तुतो-इति ज्ञेयम्

### ८६४ ( अर्ह ) ( अर्हँ ) पूजायाम् ।

१ अर्जिहिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्जिहिषा-मि वः मः
२ अर्जिहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अर्जिहिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
अर्जिहिषा-णि व म
४ आर्जिहिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्जिहिषा-व म
५ आर्जिहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्जिहिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
अर्जिहिषाम्बभूव अर्जिहिषामास
७ अर्जिहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्जिहिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्जिहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्जिहिषि-
ष्या मि वः मः (आर्जिहिषिष्या-व म
१० आर्जिहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### ८६३ दुहृ ( दुह ) अर्दने

१ दुदुहिष-ति तः न्ति सि थः थ दुदुहिषा-मि वः मः
२ दुदुहिषे-त ताम् युः :, तम् त यम् व म
३ दुदुहिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
दुदुहिषा-णि व म
४ अदुदुहिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुदुहिषा व म
५ अदुदुहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुदुहिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दुदुहिषाञ्चकार दुदुहिषाम्बभूव
७ दुदुहिष्या-त् स्ताम् सुः, : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुदुहिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुदुहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुदुहिषिष्या
-मि वः मः (अदुदुहिषिष्या-व म
१० अदुदुहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे दुदु-स्थाने दुदो-इति ज्ञेयम

### ८६५ ( मह ) ( मह ) पूजायाम् ।

१ मिमहिष ति तः न्ति सि थः थ मिमहिषा-मि वः मः
२ मिमहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमहिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
मिमहिषा-णि व म
४ अमिमहिष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमहिषा-व म
५ अमिमहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमहिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमहिषाञ्चकार मिमहिषामास
७ मिमहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमहिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमहिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ मिमहिषि-
ष्या-मि वः मः (अमिमहिषिष्या-व म
१० अमिमहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९६६ उक्ष ( उक्ष् ) सेचने ।

१ उचिक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ उचिक्षिषा-मि वः मः
२ उचिक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ उचिक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
उचिक्षिषा-णि व म
४ औचिक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् औचिक्षिषा--व म
५ औचिक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ उचिक्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
कर-कृम कृव
उचिक्षिषाम्बभूव उचिक्षिषामास
७ उचिक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ उचिक्षिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ उचिक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ उचिक्षिषिष्या-
मि वः मः (औचिक्षिषिष्या-व म
१० औचिक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९६८ मक्ष ( मक्ष् ) सङ्घाते ।

१ मिमक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमक्षिषा-मि वः मः
२ मिमक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमक्षिषा-णि व म [व म
४ अमिमक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमक्षिषा-
५ अमिमक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमक्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमक्षिषामास मिमक्षिषाञ्चकार
७ मिमक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमक्षिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमक्षिषिष्य-ति त न्ति सि थ थ मिमक्षि-
षिष्या-मि वः मः (अमिमक्षिषिष्या-व म
१० अमिमक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९६७ रक्ष ( रक्ष् ) पालने ।

१ रिरक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरक्षिषा-मि वः मः
२ रिरक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरक्षिषा-णि व म
४ अरिरक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरक्षिषा-व म
५ अरिरक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरक्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रिरक्षिषाम्बभूव रिरक्षिषामास
७ रिरक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरक्षिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ रिरक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरक्षिषिष्या-
मि वः मः (अरिरक्षिषिष्या-व म
१० अरिरक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९६९ मुक्ष ( मुक्ष् ) सङ्घाते ।

१ मुमुक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमुक्षिषा-मि वः मः
२ मुमुक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमुक्षिषा-णि व म
४ अमुमुक्षिष त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुक्षिषा-व म
५ अमुमुक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमुक्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुमुक्षिषाञ्चकार मुमुक्षिषामास
७ मुमुक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुक्षिषि-
ष्या-मि वः मः (अमुमुक्षिषिष्या-व म
१० अमुमुक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५७० अक्षौ ( अक्ष् ) व्याप्तौ च ।

१ अचिक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ अचिक्षिषा-मि वः मः
२ अचिक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अचिक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अचिक्षिषा-णि व म
४ आचिक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् आचिक्षिषा--व म
५ आचिक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अचिक्षिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार
कर-कृम कृव
अचिक्षिषाम्बभूव अचिक्षिषामास
७ अचिक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अचिक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ अचिक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अचिक्षिषिष्या-मि वः मः (आचिक्षिषिष्या-व म
१० आचिक्षिषिष्य--त् ताम् न् : तम् त म्

### पक्षे ।

१ तितक्ष-ति तः न्ति सि थः थ तितक्षा-मि वः मः
२ तितक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितक्षा-णि व म (व म
४ अतितक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितक्षा-
५ अतित-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट
क्षिषम् क्षिष्व क्षिष्म
६ तितक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितक्षाञ्चकार तितक्षाम्बभूव
७ तितक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितक्षिष्या-मि वः मः (अतितक्षिष्या-व म
१० अतितक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५७१ तक्षौ ( तक्ष् ) तनूकरणे ।

१ तितक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ तितक्षिषा-मि वः मः
२ तितक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितक्षिषा-णि व म
४ अतितक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितक्षिषा व म
५ अतितक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितक्षिषाञ्च कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
तितक्षिषाम्बभूव तितक्षिषामास
७ तितक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ तितक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितक्षिषिष्या-मि वः मः ( अतितक्षिषिष्या-व म
१० अतितक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५७२ त्वक्षौ ( त्वक्ष् ) तनूकरणे ।

१ तित्वक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्वक्षिषा-मि वः मः
२ तित्वक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्वक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तित्वक्षिषा-णि व म (व म
४ अतित्वक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतित्वक्षिषा-
५ अतित्वक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तित्वक्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तित्वक्षिषाञ्चकार तित्वक्षिषामास
७ तित्वक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्वक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्वक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्वक्षिषिष्या-मि वः मः (अतित्वक्षिषिष्या-व म
१० अतित्वक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५७२ त्वक्ष ( त्वक्ष् ) पक्षे

१ तित्वक्ष-ति तः न्ति सि थः थ तित्वक्षा-मि वः मः
२ तित्वक्षे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ तित्वक्ष-तु तात् ताम् न्तु '' तात तम् त
तित्वक्षा-णि व म
४ अतित्वक्ष-त् ताम् न् ः तम् त म् अतित्वक्षा-व म
५ अतित्व-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
कार-कृम कृव क्षिष्व क्षिष्म
६ तित्वक्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
तित्वक्षाम्बभूव तित्वक्षामास
७ तित्वक्ष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्वक्षिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्वक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्वक्षिष्या-मि वः मः
( अतित्वक्षिष्या-व म
१० अतित्वक्षिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ५७३ णिक्ष ( निक्ष् ) चुम्बने ।

१ निनिक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ निनिक्षिषा-मि वः मः
२ निनिक्षिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ निनिक्षिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
निनिक्षिषा-णि व म
४ अनिनिक्षिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अनिनिक्षिषाव म
५ अनिनिक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनिक्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
निनिक्षिषाम्बभूव निनिक्षिषामास
७ निनिक्षिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिक्षिषिता '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ निनिक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनिक्षिषिष्या-मि वः मः
( अनिनिक्षिषिष्या-व म
१० अनिनिक्षिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ५७४ तृक्ष ( तृक्ष् ) गतौ ।

१ तितृक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ तितृक्षिषा-मि वः मः
२ तितृक्षिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ तितृक्षिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
तितृक्षिषा-णि व म
४ अतितृक्षिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अतितृक्षिषा-व म
५ अतितृक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितृक्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितृक्षिषामास तितृक्षिषाञ्चकार
७ तितृक्षिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितृक्षिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितृक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितृक्षिषिष्य-मि वः मः
(अतितृक्षिषिष्या-व म
१० अतितृक्षिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ५७५ स्तृक्ष ( स्तृक्ष् ) गतौ ।

१ तिस्तृक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तृक्षिषामि वः मः
२ तिस्तृक्षिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ तिस्तृक्षिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
तिस्तृक्षिषा-णि व म
४ अतिस्तृक्षिषत् ताम् न् ः तम् त म् अतिस्तृक्षिषाव म
५ अतिस्तृक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्तृक्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तृक्षिषाञ्चकार तिस्तृक्षिषामास
७ तिस्तृक्षिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तृक्षिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्तृक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तृक्षिषिष्यामि वः मः
(अतिस्तृक्षिषिष्या-व म
१० अतिस्तृक्षिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५७६ णक्ष ( नक्ष् ) गतौ।

१ निनक्षिष ति त: न्ति सि थ: थ निनक्षिषा-मि व: म:
२ निनक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनक्षिषा-णि व म
४ अनिनक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनक्षिषा व म
५ अनिनक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनक्षिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
निनक्षिषाम्बभूव निनक्षिषामास
७ निनक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनक्षिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनक्षिषिष्या-
मि वः मः (अनिनक्षिषिष्या-व म
१० अनिनक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५७८ त्वक्ष ( त्वक्ष् ) त्वचने।

१ तित्वक्षिष ति तः न्ति सि थः थ तित्वक्षिषा-मि वः मः
२ तित्वक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्वक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तित्वक्षिषा-णि व म (व म
४ अतित्वक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतित्वक्षिषा-
५ अतित्वक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तित्वक्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तित्वक्षिषाञ्चकार तित्वक्षिषाम्बभूव
७ तित्वक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्वक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्वक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्वक्षिष्या-
मि वः मः (अतित्वक्षिषिष्या-व म
१० अतित्वक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५७७ वक्ष ( वक्ष् ) रोषे।

१ विवक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ विवक्षिषा-मि वः मः
२ विवक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवक्षिषा-णि व म (व म
४ अविवक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवक्षिषा-
५ अविवक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवक्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवक्षिषाञ्चकार विवक्षिषामास
७ विवक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवक्षिषि-
ष्या-मि वः मः (अविवक्षिषिष्या-व म
१० अविवक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ५७९ सूर्क्ष ( सूर्क्ष् ) अनादरे।

१ सुसूर्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ सुसूर्क्षिषा-मि वः मः
२ सुसूर्क्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुसूर्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसूर्क्षिषा-णि व म
४ असुसूर्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् असुसूर्क्षिषा-व म
५ असुसूर्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ सुसूर्क्षिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार
सुसूर्क्षिषाम्बभूव सुसूर्क्षिषामास
७ सुसूर्क्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसूर्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुसूर्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुसूर्क्षिषि-
ष्या-मि वः मः (असुसूर्क्षिषिष्या-व म
१० असुसूर्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



५८० काक्षु ( काङ्क्ष् ) काङ्क्षायाम् ।

चिकाङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकाङ्क्षिषा-मि वः मः
२ चिकाङ्क्षिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म
३ चिकाङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकाङ्क्षिषा-णि व म (षा-व म
४अचिकाङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकाङ्क्षि
५अचिकाङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६चिकाङ्क्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकाङ्क्षिषाञ्चकार चिकाङ्क्षिषाम्बभूव
७चिकाङ्क्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८चिकाङ्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिकाङ्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकाङ्क्षिषिष्या-मि वः मः (अचिकाङ्क्षिषिष्या-व म
१० अचिकाङ्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५८२ माक्षु ( माङ्क्ष् ) काङ्क्षायाम् ।

१मिमाङ्क्षिष-ति त न्ति सि थः थ मिमाङ्क्षिषा-मि वः मः
२ मिमाङ्क्षिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ मिमाङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमाङ्क्षिषा-णि व म (षा-व म
४अमिमाङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमाङ्क्षि-
५ अमिमाङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमाङ्क्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमाङ्क्षिषामास मिमाङ्क्षिषाञ्चकार
७ मिमाङ्क्षिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमाङ्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९मिमाङ्क्षिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ मिमाङ्क्षिषिष्या-मि वः मः (अमिमाङ्क्षिषिष्या व म
१० अमिमाङ्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

५८१ वाक्षु ( वाङ्क्ष् ) काङ्क्षायाम् ।

१विवाङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ विवाङ्क्षिषा-मि वः म
२ विवाङ्क्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवाङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवाङ्क्षिषा-णि व म (षा-व म
४अविवाङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म अविवाङ्क्षि-
५ अविवाङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवाङ्क्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवाङ्क्षिषाञ्चकार विवाङ्क्षिषामास
७ विवाङ्क्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवाङ्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवाङ्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवाङ्क्षिषिष्या-मि वः मः (अविवाङ्क्षिषिष्या-व म
१० अविवाङ्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

५८३ द्राक्षु ( द्राङ्क्ष ) घोरवासिते ।

१दिद्राङ्क्षिष-ति त न्ति सि थः थ दिद्राङ्क्षिषा मि वः मः
२ दिद्राङ्क्षिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ दिद्राङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिद्राङ्क्षिषा-णि व म (षा-व म
४अदिद्राङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिद्राङ्क्षि-
५ अदिद्राङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म कृम
६ दिद्राङ्क्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव
दिद्राङ्क्षिषाम्बभूव दिद्राङ्क्षिषामास
७ दिद्राङ्क्षिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिद्राङ्क्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिद्राङ्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिद्राङ्क्षिषिष्या-मि वः मः (अदिद्राङ्क्षिषिष्या-व म
१० अदिद्राङ्क्षिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**९८३ ध्राक्षु ( ध्राङ्क्ष् ) घोरवासिते च ।**

१ दिध्राङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्राङ्क्षिषा मि वः मः
२ दिध्राङ्क्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्राङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
दिध्राङ्क्षिषा-णि व म (षा-व म
४ अदिध्राङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्राङ्क्षि-
५ अदिध्राङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म क्रम
६ दिध्राङ्क्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
दिध्राङ्क्षिषाम्बभूव दिध्राङ्क्षिषामास
७ दिध्राङ्क्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्राङ्क्षिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्राङ्क्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्राङ्क्षिषिष्या-मि वः मः (अदिध्राङ्क्षिषिष्या-व म
१० अदिध्राङ्क्षिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म

**९८२ ध्वाक्षु ( ध्वाङ्क्ष् ) घोरवासिते च ।**

१ दिध्वाङ्क्षिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्वाङ्क्षिषा-
मि वः मः
२ दिध्वाङ्क्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्वाङ्क्षिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
दिध्वाङ्क्षिषा-णि व म ( ङ्क्षिषा-व म
४ अदिध्वाङ्क्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्वा-
५ अदिध्वाङ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिध्वाङ्क्षिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्वाङ्क्षिषामास दिध्वाङ्क्षिषाञ्चकार
७ दिध्वाङ्क्षिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्वाङ्क्षिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्वाङ्क्षिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ दिध्वाङ्क्षिषिष्या-मि व मः (अदिध्वाङ्क्षिषिष्या-व म
१० अदिध्वाङ्क्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ॥ अथ भ्वादावात्मनेपदिनः ॥

### ५८६ गाङ् ( गा ) गतौ ।

१ जिगा-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ जिगासे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगा-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अजिगा-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगासि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगासामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम जिगासाञ्चक्रे जिगासाम्बभूव (य वहि महि
७ जिगासिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगासिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगासि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिगासि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ५८८ डीङ् ( डी ) विहायसां गतौ ।

१ डिडयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डिडयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ डिडयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अडिडयि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अडिडयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ डिडयिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे डिडयिषाम्बभूव डिडयिषामास (य वहि महि
७ डिडयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठा यास्थाम् ध्वम्
८ डिडयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डिडयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडिडयिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ५८७ ष्मिङ् ( स्मि ) ईषद्धसने ।

१ सिस्मयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिस्मयिषे-त याताम् रन् था याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिस्मयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ असिस्मयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ असिस्मयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिस्मयिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथु व व विव विम सिस्मयिषाञ्चक्रे सिस्मयिषामास (य वहि महि
७ सिस्मयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिस्मयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिस्मयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिस्मयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ५८९ उङ् ( उ ) शब्दे ।

१ ऊषि षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ऊषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ऊषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ औषि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ औषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ऊषिषाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः व व विव विम ऊषिषाञ्चक्रे ऊषिषामास (य वहि महि
७ ऊषिषिषी ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ऊषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ऊषिषि ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० औषिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ५९० कुंङ् ( कु ) शब्दे ।

१ चुकू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचुकू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुकूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुकूषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुकूषाम्बभूव चुकूषामास ( य वहि महि
७ चुकूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुकूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुकूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ५९१ गुंङ् ( गु ) शब्दे ।

१ जुगू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजुगू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुगूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुगूषाञ्चक्रे जुगूषामास ( य वहि महि
७ जुगूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुगूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अजुगूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ५९२ घुंङ् ( घु ) शब्दे ।

१ जुघू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुघूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजुघू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघूषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुघूषाञ्चक्रे जुघूषाम्बभूव ( य वहि महि
७ जुघूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघूषिता-" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुघूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ५९३ ङुंङ् ( ङु ) शब्दे ।

१ ञुङू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ञुङूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ञुङू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अञुङू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अञुङूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ञुङूषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
ञुङूषाम्बभूव ञुङूषामास ( य वहि महि
७ ञुङूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ञुङूषिता-" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ञुङूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अञुङूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५९४ च्युङ् ( च्यु ) गतौ ।

१ चुच्यू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुच्यूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुच्यू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुच्यू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचुच्यूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुच्यूषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुच्यूषाम्बभूव चुच्यूषामास (य वहि महि
७ चुच्यूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुच्यूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुच्यूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुच्यूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ५९५ ज्युङ् ( ज्यु ) गतौ ।

१ जुज्यू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुज्यूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुज्यू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुज्यू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजुज्यूषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुज्यूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुज्यूषाञ्चक्रे जुज्यूषामास ( य वहि महि
७ जुज्यूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुज्यूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुज्यूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुज्यूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ५९६ जुंङ् ( जु ) गतौ ।

१ जुजू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुजूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुजू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुजू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुजूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुजूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुजूषाञ्चक्रे जुजूषाम्बभूव [य वहि महि
७ जुजूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुजूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुजूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुजूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ५९७ प्रुंङ् ( प्रु ) गतौ ।

१ पुप्रू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पुप्रूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पुप्रू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपुप्रू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अपुप्रूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पुप्रूषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
पुप्रूषाम्बभूव पुप्रूषामास [य वहि महि
७ पुप्रूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पुप्रूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पुप्रूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपुप्रूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ५९८ प्लुङ् ( प्लु ) गतौ ।

१ पुप्लू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पुप्लूषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पुप्लू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपुप्लू–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपुप्लूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पुप्लूषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे पुप्लूषाम्बभूव पुप्लूषामास ( य वहि महि
७ पुप्लूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पुप्लूषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पुप्लूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपुप्लूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ५९९ रुङ् ( रु ) रषणे च ।

१ रुरू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रुरूषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रुरू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरुरू–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरुरूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रुरूषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम रुरूषाञ्चक्रे रुरूषामास ( य वहि महि
७ रुरूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रुरूषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रुरूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरुरूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०० पूङ् ( पू ) पवने ।

१ पिपवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिपवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपविषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम पिपविषाञ्चक्रे पिपविषाम्बभूव ( य वहि महि
७ पिपविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपविषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०१ मूङ् ( मू ) बन्धने ।

१ मुमू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मुमूषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मुमू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमुमू–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमुमूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मुमूषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे मुमूषाम्बभूव मुमूषामास ( य वहि महि
७ मुमूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मुमूषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मुमूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमुमूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६०२ धृङ् ( धृ ) अविध्वंसने ।

१ **दिधीर्**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **दिधीर्षे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **दिधीर्**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अदिधीर्**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अदिधीर्षि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **दिधीर्षाम्बभू**-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
**दिधीर्षाञ्चक्रे दिधीर्षामास** (य वहि महि
७ **दिधीर्षिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **दिधीर्षिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **दिधीर्षि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अदिधीर्षि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०३ मेङ् ( मे ) प्रतिदाने ।

१ **मित**-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **मित्से**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मित्**-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अमित्**-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमित्सि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मित्सामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स स्वि सिम
**मित्साञ्चक्रे मित्साम्बभूव** (य वहि महि
७ **मित्सिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मित्सिता**-" रौ रः से साथे ध्वे से स्वहे स्महे
९ **मित्सि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अमित्सि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०४ देङ् ( दे ) पालने ।

१ **दित्**-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **दित्से**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **दित्**-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अदित्**-सत सेताम् सन्त सथा सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अदित्सि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **दित्साञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**दित्साम्बभूव दित्सामास** ( य वहि महि
७ **दित्सिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **दित्सिता**-" रौ रः से साथे ध्वे से स्वहे स्महे
९ **दित्सि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अदित्सि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०५ त्रैङ् ( त्रै ) पालने ।

१ **तित्रा**-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **तित्रासे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **तित्रा**-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अतित्रा**-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अतित्रासि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **तित्रासाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तित्रासाञ्चक्रे तित्रासामास** (य वहि महि
७ **तित्रासिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **तित्रासिता**-" रौ रः से सासे ध्वे से स्वहे स्महे
९ **तित्रासि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अतित्रासि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६०६ श्यैङ् ( श्यै ) गतौ ।

१ शिश्या–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ शिश्यासे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिश्या–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अशिश्या–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्यासि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्यासाम्बभू–व वतु वुः विथ वथु व व विव विम शिश्यासाञ्चक्रे शिश्यासामास (य वहि महि
७ शिश्यासिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्यासिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्यासि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिश्यासि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०७ प्यैङ् ( प्यै ) वृद्धौ ।

१ पिप्या–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ पिप्यासे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिप्या–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अपिप्या–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्यासि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्यासामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम पिप्यासाञ्चक्रे पिप्यासाम्बभूव (य वहि महि
७ पिप्यासिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिप्यासिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्यासि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिप्यासि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०८ वकुङ् ( वङ्क ) कौटिल्ये ।

१ विवङ्कि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवङ्किषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवङ्कि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवङ्कि–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवङ्किषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवङ्किषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे विवङ्किषाम्बभूव विवङ्किषामास (य वहि महि
७ विवङ्किषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवङ्किषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवङ्किषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवङ्किषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६०९ मकुङ् ( मङ्क ) मण्डने ।

१ मिमङ्कि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमङ्किषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमङ्कि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमङ्कि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमङ्किषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमङ्किषाम्बभू–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम मिमङ्किषाञ्चक्रे मिमङ्किषामास (य वहि महि
७ मिमङ्किषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमङ्किषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमङ्किषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अमिमङ्किषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६१० अकुङ् ( अङ्क् ) लक्षणे ।

१ अञ्चिकि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अञ्चिकिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अञ्चिकि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आञ्चिकि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आञ्चिकिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अञ्चिकिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अञ्चिकिषाञ्चक्रे अञ्चिकिषाम्बभूव (य वहि महि
७ अञ्चिकिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अञ्चिकिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अञ्चिकिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आञ्चिकिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६११ शीकृङ् ( शीक् ) सेचने ।

१ शिशीकि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशीकिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशीकि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशीकि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशीकिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ शिशीकिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशीकिषाञ्चक्रे शिशीकिषामास (य वहि महि
७ शिशीकिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशीकिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशीकिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशीकिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६१२ लोकृङ् ( लोक् ) दर्शने ।

१ लुलोकि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लुलोकिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लुलोकि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलुलोकि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलुलोकिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लुलोकिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
लुलोकिषाम्बभूव लुलोकिषामास (य वहि महि
७ लुलोकिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लुलोकिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लुलोकिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलुलोकिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६१३ श्लोकृङ् ( श्लोक् ) संघाते ।

१ शुश्लोकि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शुश्लोकिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शुश्लोकि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशुश्लोकि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशुश्लोकिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शुश्लोकिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुश्लोकिषाञ्चक्रे शुश्लोकिषाम्बभूव (य वहि महि
७ शुश्लोकिषिषी ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शुश्लोकिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शुश्लोकिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशुश्लोकिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६१४ द्रेकृङ् ( द्रेक् ) शब्दोत्साहे ।

१ **दिद्रेकि**–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **दिद्रेकिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **दिद्रेकि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अदिद्रेकि**–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अदिद्रेकिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **दिद्रेकिषाश्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **दिद्रेकिषाम्बभूव दिद्रेकिषामास** (य वहि महि
७ **दिद्रेकिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **दिद्रेकिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **दिद्रेकिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अदिद्रेकिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६१६ रेकृङ् ( रेक् ) शंकायाम् ।

१ **रिरेकि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **रिरेकिषे**–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ **रिरेकि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अरिरेकि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अरिरेकिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **रिरेकिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **रिरेकिषाश्चक्रे रिरेकिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **रिरेकिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **रिरेकिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **रिरेकिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अरिरेकिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६१५ ध्रेकृङ् ( ध्रेक् ) शब्दोत्साहे ।

१ **दिध्रेकि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **दिध्रेकिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **दिध्रेकि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अदिध्रेकि**–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अदिध्रेकिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **दिध्रेकिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **दिध्रेकिषाश्चक्रे दिध्रेकिषामास** ( य वहि महि
७ **दिध्रेकिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **दिध्रेकिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **दिध्रेकिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अदिध्रेकिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६१७ शकुङ् ( शङ्क् ) शंकायाम् ।

१ **शिशङ्कि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शिशङ्किषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **शिशङ्कि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अशिशङ्कि**–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ **अशिशङ्किषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **शिशङ्किषाश्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **शिशङ्किषाम्बभूव शिशङ्किषामास** (य वहि महि
७ **शिशङ्किषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शिशङ्किषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शिशङ्किषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशिशङ्किषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६१८ ककि ( कक् ) लौल्ये ।

१ चिककि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिककिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिककि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिककि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिककिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिककिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिककिषाञ्चक्रे चिककिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिककिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिककिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिककिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिककिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६१९ कुकि ( कुक् ) आदाने ।

१ चुकोकि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकोकिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकोकि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् सै षावहै षामहै
४ अचुकोकि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुकोकिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुकोकिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकोकिषाञ्चक्रे चुकोकिषामास (य वहि महि
७ चुकोकिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुकोकिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकोकिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचुकोकिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

### ६२० वृकि ( वृक् ) आदाने ।

१ विवर्कि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवर्किषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवर्कि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवर्कि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवर्किषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवर्किषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवर्किषाञ्चक्रे विवर्किषामास (य वहि महि
७ विवर्किषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवर्किषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवर्किषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवर्किषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६२१ चकि ( चक् ) तृप्तिप्रतीघातयोः ।

१ चिचकि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचकिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचकि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अचिचकि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचकिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिचकिषाञ्च-क्रेकाते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिचकिषाम्बभूव चिचकिषामास [य वहि महि
७ चिचकिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचकिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचकिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यते ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिचकिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६२२ ककुङ् ( कङ्क् ) गतौ ।

१ चिकङ्किक–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकङ्किकषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकङ्किक–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिकङ्किक–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकङ्किकषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकङ्किकषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकङ्किकषाम्बभूव चिकङ्किकषामास (य वहि महि
७ चिकङ्किकषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकङ्किकषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकङ्किकषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकङ्किकषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६२३ श्वकुङ् ( श्वङ्क् ) गतौ ।

१ शिश्वङ्कि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिश्वङ्किषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिश्वङ्कि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिश्वङ्कि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्वङ्किषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्वङ्किषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिश्वङ्किषाम्बभूव शिश्वङ्किषामास (य वहि महि
७ शिश्वङ्किषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्वङ्किषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्वङ्किषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिश्वङ्किषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६२४ त्रकुङ् ( त्रङ्क् ) गतौ ।

१ तित्रङ्किक–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तित्रङ्किकषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तित्रङ्किक–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षाणहै
४ अतित्रङ्किक–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतित्रङ्किकषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तित्रङ्किकषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तित्रङ्किकषाञ्चक्रे तित्रङ्किकषाम्बभूव [य वहि महि
७ तित्रङ्किकषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तित्रङ्किकषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तित्रङ्किकषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतित्रङ्किकषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६२५ श्रकुङ् ( श्रङ्क् ) गतौ ।

१ शिश्रङ्कि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिश्रङ्किषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिश्रङ्कि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिश्रङ्कि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्रङ्किषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्रङ्किषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिश्रङ्किषाम्बभूव शिश्रङ्किषामास (य वहि महि
७ शिश्रङ्किषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्रङ्किषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्रङ्किषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिश्रङ्किषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६२६ श्लकुङ् ( श्लङ्क् ) गतौ ।

१ शिश्लङ्कि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिश्लङ्किषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिश्लङ्कि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिश्लङ्कि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्लङ्किषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्लङ्किषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिश्लङ्किषाम्बभूव शिश्लङ्किषामास (य वहि महि
७ शिश्लङ्किषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्लङ्किषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्लङ्किषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिश्लङ्किषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६२७ ढौकृङ् ( ढौक् ) गतौ ।

१ डुढौकि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डुढौकिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ डुढौकि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अडुढौकि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अडुढौकिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ डुढौकिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
डुढौकिषाञ्चक्रे डुढौकिषामास (य वहि महि
७ डुढौकिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ डुढौकिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डुढौकिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडुढौकिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६२८ त्रौकृङ् ( त्रौक् ) गतौ ।

१ तुत्रौकि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तुत्रौकिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तुत्रौकि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अतुत्रौकि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतुत्रौकिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तुत्रौकिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुत्रौकिषाञ्चक्रे तुत्रौकिषाम्बभूव [य वहि महि
७ तुत्रौकिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तुत्रौकिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुत्रौकिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अतुत्रौकिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६२९ ष्वष्कि ( ष्वष्क् ) गतौ ।

१ षिष्वष्कि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ षिष्वष्किषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ षिष्वष्कि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अषिष्वष्कि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अषिष्वष्किषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ षिष्वष्किषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
षिष्वष्किषाम्बभूव षिष्वष्किषामास [य वहि महि
७ षिष्वष्किषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ षिष्वष्किषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ षिष्वष्किषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अषिष्वष्किषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६३० वस्कि ( वस्क् ) गतौ ।

१ विवस्कि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवस्किषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवस्कि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवस्कि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवस्किषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवस्किषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहे कृमहे
विवस्किषाम्बभूव विवस्किषामास (य वहि महि
७ विवस्किषिषो-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवस्किषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवस्किषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवस्किषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६३१ मस्क ( मस्क् ) गतौ ।

१ मिमस्कि षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमस्किषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमस्कि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमस्कि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमस्किषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमस्किषाम्बभू-व वतुः वु विथ वथुः व व विव विम
मिमस्किषाञ्चक्रे मिमस्किषामास (य वहि महि
७ मिमस्किषिषी ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमस्किषिता-" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमस्किषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमस्किषि-ष्यत ष्येताम्ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६३२ तिकि ( तिक् ) गतौ ।

१ तितेकि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितेकिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितेकि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितेकि-षत षेताम् षन्त सथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अतितेकिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितेकिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
तितेकिषाञ्चक्रे तितेकिषामास (य वहि महि
७ तितेकिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितेकिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितेकिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितेकिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्
पक्षे तिते-स्थाने तिति-इति ज्ञेयम्

### ६३३ टिकि ( टिक् ) गतौ ।

१ टिटेकि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ टिटेकिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ टिटेकि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अटिटेकि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अटिटेकिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ टिटेकिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे
टिटेकिषाम्बभूव टिटेकिषामास (य वहि महि
७ टिटेकिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ टिटेकिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ टिटेकिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अटिटेकिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे टिटे-स्थाने टिटि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६३४ टीकृङ् ( टीकृ ) गतौ ।

१ **टिटीकि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **टिटीकिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **टिटीकि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अटिटीकि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अटिटीकिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **टिटीकिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**टिटीकिषाम्बभूव टिटीकिषामास** (य वहि महि
७ **टिटीकिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **टिटीकिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **टिटीकिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अटिटीकिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६३५ सेकृङ् ( सेकृ ) गतौ ।

१ **सिसेकि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिसेकिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिसेकि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिसेकि**–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिसेकिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिसेकिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**सिसेकिषाञ्चक्रे सिसेकिषामास** ( य वहि महि
७ **सिसेकिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिसेकिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिसेकिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिसेकिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६३६ स्रेकृङ् ( स्रेकृ ) गतौ ।

१ **सिस्रेकि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिस्रेकिषे**- त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिस्रेकि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिस्रेकि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिस्रेकिषि** ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिस्रेकिषामा** स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**सिस्रेकिषाञ्चक्रे सिस्रेकिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **सिस्रेकिषिषी** ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिस्रेकिषिता**–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिस्रेकिषि** ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिस्रेकिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६३७ रघुङ् ( रङ्घृ ) गतौ ।

१ **रिरङ्घि** -षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **रिरङ्घिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **रिरङ्घि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अरिरङ्घि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अरिरङ्घिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **रिरङ्घिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**रिरङ्घिषाम्बभूव रिरङ्घिषामास** (य वहि महि
७ **रिरङ्घिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **रिरङ्घिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **रिरङ्घिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अरिरङ्घिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथा ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६३८ लघुङ् ( लङ्घ् ) गतौ ।

१ **लिलङ्घि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **लिलङ्घिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **लिलङ्घि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अलिलङ्घि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अलिलङ्घिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **लिलङ्घिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स स्विव सिम
**लिलङ्घिषाञ्चक्रे लिलङ्घिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **लिलङ्घिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **लिलङ्घिषिता**-" रौ रः से सा थे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **लिलङ्घिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अलिलङ्घिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाःष्येथामृष्यध्वम्

## ६३९ अघुङ् ( अङ्घ् ) गत्याक्षेपे ।

**अञ्जिघि**-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **अञ्जिघिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **अञ्जिघि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **आञ्जिघि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **आञ्जिघिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **अञ्जिघिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
**अञ्जिघिषाम्बभूव अञ्जिघिषामास** (य वहि महि
७ **अञ्जिघिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **अञ्जिघिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **अञ्जिघिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **आञ्जिघिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६४० वघुङ् ( वङ्घ् ) गत्याक्षेपे ।

१ **विवङ्घि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवङ्घिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवङ्घि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अविवङ्घि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवङ्घिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवङ्घिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**विवङ्घिषाञ्चक्रे विवङ्घिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **विवङ्घिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवङ्घिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवङ्घिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवङ्घिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाःष्येथामृष्यध्वम्

## ६४१ मघुङ् ( मङ्घ् ) कैतवे च ।

१ **मिमङ्घि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमङ्घिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमङ्घि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अमिमङ्घि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमङ्घिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमङ्घिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**मिमङ्घिषाञ्चक्रे मिमङ्घिषामास** (य वहि महि
७ **मिमङ्घिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमङ्घिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमङ्घिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमङ्घिषि**-ष्यतष्येताम् ष्यन्तष्यथा.ष्येथामृष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६४२ राघृङ् ( राघ् ) सामर्थ्ये ।

१ रिराघि–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिराघिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिराघि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिराघि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिराघिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिराघिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
गिराघिषाम्बभूव रिराघिषामास (य वहि महि
७ रिराघिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिराघिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिराघिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अरिराघिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६४४ द्राघृङ् ( द्राघ् ) आयासे च ।

१ दिद्राघि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिद्राघिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिद्राघि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिद्राघि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिद्राघिषि -ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिद्राघिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिद्राघिषाञ्चक्रे दिद्राघिषाम्बभूव (य वहि महि
७ दिद्राघिषिषी ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिद्राघिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिद्राघिषि- ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिद्राघिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ६४३ लाघृङ् ( लाघ् ) सामर्थ्ये ।

१ लिलाघि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलाघिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलाघि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलिलाघि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलाघिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलाघिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स स्वि सिम
लिलाघिषाञ्चक्रे लिलाघिषाम्बभूव (य वहि महि
७ लिलाघिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलाघिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलाघिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अलिलाघिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ६४५ श्लाघृङ् ( श्लाघ् ) कत्थने ।

१ शिश्लाघि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिश्लाघिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिश्लाघि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिश्लाघि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्लाघिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्लाघिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्लाघिषाञ्चक्रे शिश्लाघिषामास (य वहि महि
७ शिश्लाघिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्लाघिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्लाघिषि -ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अशिश्लाघिषि-ष्यतष्येताम् ष्यन्तष्यथा ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६४६ लोचृङ् ( लोच् ) दर्शने ।

१ **लुलोचि**–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **लुलोचिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **लुलोचि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अलुलोचि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अलुलोचिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ **लुलोचिषाञ्च**–के काते किरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहेकृमहे
**लुलोचिषाम्बभूव लुलोचिषामास** (य वहि महि
७ **लुलोचिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **लुलोचिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **लुलोचिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अलुलोचिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६४७ षचि ( सच् ) सेचने ।

१ **सिसचि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिसचिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिसचि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिसचि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिसचिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ **सिसचिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**सिसचिषाञ्चक्रे सिसचिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **सिसचिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिसचिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिसचिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिसचिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ६४८ शचि ( शच् ) व्यक्तायां वाचि ।

१ **शिशचि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शिशचिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **शिशचि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अशिशचि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अशिशचिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ **शिशचिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**शिशचिषाञ्चक्रे शिशचिषामास** (य वहि महि
७ **शिशचिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शिशचिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शिशचिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशिशचिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६४९ कचि ( कच् ) बन्धने ।

१ **चिकचि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **चिकचिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चिकचि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अचिकचि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अचिकचिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ **चिकचिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव मिम
**चिकचिषाञ्चक्रे चिकचिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **चिकचिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चिकचिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिकचिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अचिकचिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६५० कचुङ् ( कञ्च् ) दीप्तौ ।

१ चिकञ्चि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकञ्चिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकञ्चि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिकञ्चि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकञ्चिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकञ्चिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकञ्चिषाम्बभूव चिकञ्चिषामास (य वहि महि
७ चिकञ्चिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकञ्चिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकञ्चिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकञ्चिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६५१ श्वचि ( श्वञ्च् ) गतौ ।

१ शिश्वचि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिश्वचिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिश्वचि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिश्वचि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्वचिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्वचिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिश्वचिषाम्बभूव शिश्वचिषामास (य वहि महि
७ शिश्वचिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्वचिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्वचिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिश्वचिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ६५२ श्वचुङ् ( श्वञ्च् ) गतौ ।

१ शिश्वञ्चि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिश्वञ्चिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिश्वञ्चि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिश्वञ्चि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्वञ्चिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्वञ्चिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिश्वञ्चिषाम्बभूव शिश्वञ्चिषामास (य वहि महि
७ शिश्वञ्चिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्वञ्चिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्वञ्चिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिश्वञ्चिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६५३ वर्चि ( वर्च् ) दीप्तौ ।

१ विवर्चि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवर्चिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवर्चि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवर्चि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवर्चिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवर्चिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवर्चिषाञ्चक्रे विवर्चिषामास (य वहि महि
७ विवर्चिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवर्चिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवर्चिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवर्चिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६५४ मचि ( मच ) कल्कने ।

१ मिमचि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमचिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमचि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमचि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमचिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमचिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमचिषाञ्चक्रे मिमचिषाम्बभूव (य वहि महि
७ मिमचिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमचिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमचिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमचिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६५५ मुचुङ् ( मुञ्च् ) कल्कने ।

१ मुमुञ्चि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मुमुञ्चिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मुमुञ्चि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमुमुञ्चि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमुमुञ्चिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मुमुञ्चिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम मुमुञ्चिषाञ्चक्रे मुमुञ्चिषामास (य वहि महि
७ मुमुञ्चिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मुमुञ्चिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मुमुञ्चिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमुमुञ्चिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६५६ मचुङ् (मञ्च्) धारणोच्छ्रायपूजनेषु च ।

१ मिमञ्चि–षते षेते षन्ते षसे षे थेषध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमञ्चिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमञ्चि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अमिमञ्चि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमञ्चिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमञ्चिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे मिमञ्चिषाम्बभूव मिमञ्चिषामास [य वहि महि
७ मिमञ्चिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमञ्चिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमञ्चिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमञ्चिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६५७ पचुङ् ( पञ्च ) व्यक्तीकरणे ।

१ पिपञ्चि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपञ्चिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपञ्चि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अपिपञ्चि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपञ्चिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपञ्चिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम पिपञ्चिषाञ्चक्रे पिपञ्चिषाम्बभूव [य वहि महि
७ पिपञ्चिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपञ्चिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपञ्चिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपञ्चिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६५८ ष्टुचि ( स्तुच् ) प्रसादे ।

१ **तुस्तोचि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **तुस्तोचिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **तुस्तोचि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अतुस्तोचि**-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अतुस्तोचिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **तुस्तोचिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृ्ध्वे क्रे कृवहे कृमहे **तुस्तोचिषाम्बभूव तुस्तोचिषामास** (य वहि महि
७ **तुस्तोचिषिषी** ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठा यास्थाम् ध्वम्
८ **तुस्तोचिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **तुस्तोचिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अतुस्तोचिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

**पक्षे स्तो-स्थाने स्तु-इति ज्ञेयम्**

### ६६० भ्रेजृ ( भ्रेज् ) दीप्तौ ।

१ **बिभ्रेजि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **बिभ्रेजिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **बिभ्रेजि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अबिभ्रेजि**-षत षेताम् षन्त सथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अबिभ्रेजिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **बिभ्रेजिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **बिभ्रेजिषाञ्चक्रे बिभ्रेजिषामास** (य वहि महि
७ **बिभ्रेजिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **बिभ्रेजिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **बिभ्रेजिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अबिभ्रेजिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६५९ पजुङ् ( पज् ) दीप्तौ ।

१ **पजिजि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **पजिजिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **पजिजि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **पेजिजि**-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **पेजिजिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **पजिजिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **पजिजिषाञ्चक्रे पजिजिषामास** (य वहि महि
७ **पजिजिषिषी** ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठा यास्थाम् ध्वम्
८ **पजिजिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **पजिजिषि** ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **पेजिजिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६६१ भ्राजि ( भ्राज् ) दीप्तौ ।

१ **बिभ्राजि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **बिभ्राजिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **बिभ्राजि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अबिभ्राजि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अबिभ्राजिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **बिभ्राजिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृ्ध्वे क्रे कृवहे कृमहे **बिभ्राजिषाम्बभूव बिभ्राजिषामास** (य वहि महि
**बिभ्राजिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **बिभ्राजिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **बिभ्राजिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अबिभ्राजिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६६२ इजुङ् ( इञ्ज् ) गतौ ।

१ इञ्जिजि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ इञ्जिञ्जिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ इञ्जिजि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ ऐञ्जिजि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ ऐञ्जिजिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ इञ्जिजिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे इञ्जिजिषाम्बभूव इञ्जिजिषामास (य वहि महि
७ इञ्जिजिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ इञ्जिजिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ इञ्जिजिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० ऐञ्जिजिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६६३ ईजि ( ईञ्ज ) कुत्सने च ।

१ ईजिजि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ईजिञ्जिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ईजिजि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ ऐजिजि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ ऐजिजिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ईजिजिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम ईजिजिषाञ्चक्रे ईजिजिषामास (य वहि महि
७ ईजिजिषिषी ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ईजिजिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ईजिजिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० ऐजिजिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६६४ ऋजि (ऋज्) गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु ।

१ अर्जिजि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अर्जिजिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अर्जिजि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आर्जिजि–षत षेताम् षन्त सथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ आर्जिजिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अर्जिजिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम अर्जिजिषाञ्चक्रे अर्जिजिषामास (य वहि महि
७ अर्जिजिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अर्जिजिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अर्जिजिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आर्जिजिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६६५ ऋजुङ् ( ऋञ्ज् ) भर्जने ।

१ ऋञ्जिजि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ऋञ्जिजिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ऋञ्जिजि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आर्ञ्जिजि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ आर्ञ्जिजिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ऋञ्जिजिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे ऋञ्जिजिषाम्बभूव ऋञ्जिजिषामास (य वहि महि
७ ऋञ्जिजिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ऋञ्जिजिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ऋञ्जिजिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आर्ञ्जिजिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६६६ भृजैङ् (भृज्) भर्जने ।

१ बिभर्जि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभर्जिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभर्जि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभर्जि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभर्जिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभर्जिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम बिभर्जिषाञ्चक्रे बिभर्जिषामास (य वहि महि
७ बिभर्जिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभर्जिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभर्जिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिभर्जिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६६७ तिजि ( तिज् ) क्षमानिशानयोः ।

१ तितिक्षि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितिक्षिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितिक्षि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितिक्षि-षत षेताम् षन्त षथा· षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितिक्षिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ततितिक्षिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहे कृमहे तितिक्षिषाम्बभूव तितिक्षिषामास (य वहि महि
७ तितिक्षिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितिक्षिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितिक्षिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतितिक्षिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

### ६६८ घट्टि ( घट्ट् ) चलने ।

१ जिघट्टि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिघट्टिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिघट्टि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिघट्टि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिघट्टिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिघट्टिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम जिघट्टिषाञ्चक्रे जिघट्टिषामास (य वहि महि
७ जिघट्टिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिघट्टिषिता-" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिघट्टिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिघट्टिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६६९ स्फुटि ( स्फुट् ) विकसने ।

१ पुस्फोटि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पुस्फोटिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पुस्फोटि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपुस्फोटि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपुस्फोटिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६पुस्फोटिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे पुस्फोटिषाम्बभूव पुस्फोटिषामास (य वहि महि
७ पुस्फोटिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पुस्फोटिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पुस्फोटिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपुस्फोटिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६७० चेष्टि ( चेष्ट् ) चेष्टायाम् ।

१ चिचेष्टि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचेष्टिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचेष्टि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिचेष्टि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचेष्टिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिचेष्टिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चिचेष्टिषाञ्चक्रे चिचेष्टिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिचेष्टिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचेष्टिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचेष्टिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिचेष्टिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६७१ गोष्टि ( गोष्ट् ) संघाते ।

१ जुगोष्टि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगोष्टिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगोष्टि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुगोष्टि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगोष्टिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुगोष्टिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जुगोष्टिषाञ्चक्रे जुगोष्टिषामास (य वहि महि
७ जुगोष्टिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुगोष्टिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगोष्टिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुगोष्टिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६७२ लोष्टि ( लोष्ट् ) संघाते ।

१ लुलोष्टि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लुलोष्टिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लुलोष्टि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अलुलोष्टि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अलुलोष्टिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लुलोष्टिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे लुलोष्टिषाम्बभूव लुलोष्टिषामास [य वहि महि
७ लुलोष्टिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लुलोष्टिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लुलोष्टिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अलुलोष्टिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६७३ वेष्टि ( वेष्ट् ) वेष्टने ।

१ विवेष्टि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवेष्टिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवेष्टि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अविवेष्टि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवेष्टिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवेष्टिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवेष्टिषाञ्चक्रे विवेष्टिषाम्बभूव [य वहि महि
७ विवेष्टिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवेष्टिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवेष्टिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवेष्टिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६७४ अट्टि ( अट्ट् ) हिंसातिक्रमयोः ।

१ **अट्टिटि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **अट्टिटिषे**–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ **अट्टिटि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **आट्टिटि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **आट्टिटिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **अट्टिटिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**अट्टिटिषाञ्चक्रे अट्टिटिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **अट्टिटिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **अट्टिटिषिता**–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **अट्टिटिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **आट्टिटिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६७५ एठि ( एठ् ) विबाधायाम् ।

१ **एटिठि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **एटिठिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **एटिठि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **ऐटिठि**–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **ऐटिठिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **एटिठिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**एटिठिषाञ्चक्रे एटिठिषामास** (य वहि महि
७ **एटिठिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **एटिठिषिता**–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **एटिठिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **ऐटिठिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६७६ हेठि ( हेठ् ) विबाधायाम् ।

१ **जेहेठि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जेहेठिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जेहेठि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ **अजेहेठि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ **अजेहेठिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जेहेठिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृड्ढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**जेहेठिषाम्बभूव जेहेठिषामास** [य वहि महि
७ **जेहेठिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जेहेठिषिता**–'' रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जेहेठिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजेहेठिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
सर्वत्र जेहेस्थाने जिहिइति शुद्धम् ।

### ६७७ मठुङ् ( मण्ठ् ) शोके ।

१ **मिमण्ठि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमण्ठिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमण्ठि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षाणहै
४ **अमिमण्ठि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमण्ठिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमण्ठिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**मिमण्ठिषाञ्चक्रे मिमण्ठिषाम्बभूव** [य वहि महि
७ **मिमण्ठिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमण्ठिषिता**–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमण्ठिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमण्ठिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६७८ कठुङ् ( कण्ठ् ) शोके ।

१ चिकण्ठि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकण्ठिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकण्ठि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकण्ठि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकण्ठिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकण्ठिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव बिम
चिकण्ठिषाञ्चक्रे चिकण्ठिषामास (य वहि महि
७ चिकण्ठिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकण्ठिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकण्ठिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिकण्ठिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६७९ मुठुङ् ( मुण्ठ् ) पलायने ।

१ मुमुण्ठि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मुमुण्ठिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मुमुण्ठि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अमुमुण्ठि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अमुमुण्ठिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मुमुण्ठिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मुमुण्ठिषाम्बभूव मुमुण्ठिषामास [य वहि महि
७ मुमुण्ठिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मुमुण्ठिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मुमुण्ठिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमुमुण्ठिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६८० वठुङ् ( वण्ठ् ) एकचर्यायां ।

१ विवण्ठि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवण्ठिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवण्ठि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अविवण्ठि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवण्ठिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवण्ठिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवण्ठिषाञ्चक्रे विवण्ठिषाम्बभूव [य वहि महि
७ विवण्ठिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवण्ठिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवण्ठिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवण्ठिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६८१ अठुङ् ( अण्ठ् ) गतौ ।

१ अण्टिठि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अण्टिठिषे–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ अण्टिठि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आण्टिठि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आण्टिठिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अण्टिठिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अण्टिठिषाञ्चक्रे अण्टिठिषाम्बभूव (य वहि महि
७ अण्टिठिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अण्टिठिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अण्टिठिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये क्ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आण्टिठिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६८२ पडुङ् ( पण्ड् ) गतौ ।

१ पिपण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपण्डिषे–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिपण्डि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपण्डिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपण्डिषाञ्चक्रे पिपण्डिषाम्बभूव (य वहि महि
७ पिपण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६८४ पिडुङ् ( पिण्ड् ) संघाते ।

१ पिपिण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपिण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपिण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अपिपिण्डि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपिण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपिण्डिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपिण्डिषाञ्चक्रे पिपिण्डिषाम्बभूव [य वहि महि
७ पिपिण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपिण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपिण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपिण्डिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६८३ हुडुङ् ( हुण्ड् ) संघाते ।

१ जुहुण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुहुण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुहुण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अजुहुण्डि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अजुहुण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुहुण्डिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जुहुण्डिषाम्बभूव जुहुण्डिषामास [य वहि महि
७ जुहुण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुहुण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुहुण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुहुण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६८५ शडुङ् ( शण्ड् ) रुजायाञ्च ।

१ शिशण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशण्डि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशण्डिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशण्डिषाञ्चक्रे शिशण्डिषामास (य वहि महि
७ शिशण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशण्डिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६८६ तडुङ् ( तण्ड़ ) ताडने ।

१ **तितण्डि**–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **तितण्डिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **तितण्डि**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अतितण्डि**–सत साताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि [ सि स्वहि स्महि
५ **अतितण्डिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **तितण्डिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वेके कृवहे कृमहे
**तितण्डिषाम्बभूव तितण्डिषामास** (य वहि महि
७ **तितण्डिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **तितण्डिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **तितण्डिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अतितण्डिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६८७ कडुङ् ( कण्ड् ) मर्दे ।

१ **चिकण्डि**–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **चिकण्डिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चिकण्डि**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अचिकण्डि**–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( सि स्वहि स्महि
५ **अचिकण्डिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **चिकण्डिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**चिकण्डिषाम्बभूव चिकण्डिषामास** (य वहि महि
७ **चिकण्डिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चिकण्डिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिकण्डिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अचिकण्डिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६८८ खडुङ् ( खण्ड् ) मन्थे ।

१ **चिखण्डि**–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **चिखण्डिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चिखण्डि**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अचिखण्डि**–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (सि स्वहि स्महि
५ **अचिखण्डिषि**–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **चिखण्डिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**चिखण्डिषाञ्चक्रे चिखण्डिषामास** (य वहि महि
७ **चिखण्डिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चिखण्डिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिखण्डिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अचिखण्डिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६८९ खुडुङ् ( खुण्ड् ) गतिवैकल्ये ।

१ **चुखुण्डि**–सते सते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **चुखुण्डिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चुखुण्डि**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अचुखुण्डि**–सत सताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( सि स्वहि स्महि
५ **अचुखुण्डिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **चुखुण्डिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**चुखुण्डिषाम्बभूव चुखुण्डिषामास** (य वहि महि
७ **चुखुण्डिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चुखुण्डिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चुखुण्डिषि**–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अचुखुण्डिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ६९० कुडङ् ( कुण्ङ् ) दाहे ।

१ चुकुण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकुण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकुण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचुकुण्डि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचुकुण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुकुण्डिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुकुण्डिषाम्बभूव चुकुण्डिषामास (य वहि महि
७ चुकुण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुकुण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकुण्डिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुकुण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६९१ वडुङ् ( वण्ङ् ) वेष्टने ।

१ विवण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवण्डि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवण्डिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवण्डिषाम्बभूव विवण्डिषामास (य वहि महि
७ विवण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६९२ मडुङ् ( मण्ङ् ) वेष्टने ।

१ मिमण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमिमण्डि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमण्डिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मिमण्डिषाम्बभूव मिमण्डिषामास (य वहि महि
७ मिमण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ६९३ भडुङ् ( भण्ङ् ) परिभाषणे ।

१ बिभण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिभण्डि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभण्डिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभण्डिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभण्डिषाञ्चक्रे बिभण्डिषामास (य वहि महि
७ बिभण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६९४ मुडुङ् ( मुण्ड् ) मज्जने ।

१ मुमुण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मुमुण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मुमुण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमुमुण्डि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमुमुण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मुमुण्डिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मुमुण्डिषाम्बभूव मुमुण्डिषामास (य वहि महि
७ मुमुण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मुमुण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मुमुण्डिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमुमुण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६९५ तुडुङ् ( तुण्ड् ) तोडने ।

१ तुतुण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तुतुण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तुतुण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतुतुण्डि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतुतुण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तुतुण्डिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तुतुण्डिषाम्बभूव तुतुण्डिषामास (य वहि महि
७ तुतुण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तुतुण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुतुण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतुतुण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६९६ भुडुङ् ( भुण्ड् ) वरणे ।

१ बुभुण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बुभुण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बुभुण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबुभुण्डि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अबुभुण्डिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बुभुण्डिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
बुभुण्डिषाम्बभूव बुभुण्डिषामास (य वहि महि
७ बुभुण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बुभुण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बुभुण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबुभुण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६९७ चडुङ् ( चण्ड् ) कोपे ।

१ चिचण्डि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचण्डिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचण्डि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिचण्डि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचण्डिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिचण्डिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचण्डिषाञ्चक्रे चिचण्डिषामास (य वहि महि
७ चिचण्डिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचण्डिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचण्डिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिचण्डिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ६९८ द्राडृङ् ( द्राड् ) विशरणे ।

१ दिद्राडि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिद्राडिषे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिद्राडि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिद्राडि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिद्राडिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिद्राडिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिद्राडिषाम्बभूव दिद्राडिषामास (य वहि महि
७ दिद्राडिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिद्राडिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिद्राडिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिद्राडिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७०० शाडृङ् ( शाड् ) श्लाघायाम् ।

१ शिशाडि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशाडिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशाडि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिशाडि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशाडिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशाडिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिशाडिषाम्बभूव शिशाडिषामास (य वहि महि
७ शिशाडिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशाडिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशाडिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिशाडिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ६९९ ध्राडृङ् ( ध्राड् ) विशरणे ।

१ दिध्राडि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिध्राडिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिध्राडि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिध्राडि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिध्राडिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिध्राडिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिध्राडिषाम्बभूव दिध्राडिषामास (य वहि महि
७ दिध्राडिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिध्राडिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिध्राडिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिध्राडिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### ७०१ वाडृङ् ( वाड् ) आप्लाव्ये ।

१ विवाडि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवाडिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवाडि -षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवाडि -षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवाडिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवाडिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवाडिषाञ्चक्रे विवाडिषामास (य वहि महि
७ विवाडिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवाडिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवाडिषि- ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवाडिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७०२ हेडृङ् ( हेड् ) अनादरे ।

१ **जिहेडि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिहेडिषे**–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिहेडि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिहेडि**–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिहेडिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिहेडिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**जिहेडिषाञ्चक्रे जिहेडिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **जिहेडिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिहेडिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिहेडिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिहेडिषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम ष्यध्वम्

### ७०३ होडृङ् ( होड् ) अनादरे ।

१ **जुहोडि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जुहोडिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जुहोडि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ **अजुहोडि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ **अजुहोडिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जुहोडिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**जुहोडिषाम्बभूव जुहोडिषामास** [य वहि महि
७ **जुहोडिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जुहोडिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जुहोडिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजुहोडिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७०४ हिडृङ् ( हिण्ड् ) गतौ च ।

१ **जिहिण्डि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिहिण्डिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिहिण्डि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिहिण्डि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिहिण्डिषि**–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिहिण्डिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**जिहिण्डिषाञ्चक्रे जिहिण्डिषामास** (य वहि महि
७ **जिहिण्डिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिहिण्डिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिहिण्डिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिहिण्डिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७०५ घिणुङ् ( घिण्ण् ) ग्रहणे ।

१ **जिघिण्णि**–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिघिण्णिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिघिण्णि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिघिण्णि**–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिघिण्णिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिघिण्णिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**जिघिण्णिषाम्बभूव जिघिण्णिषामास** (य वहि महि
७ **जिघिण्णिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिघिण्णिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिघिण्णिषि**–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिघिण्णिषि**·ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७०६ घुणुङ् ( घुण्ण् ) ग्रहणे ।

१ जुघुण्णि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुघुण्णिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघुण्णि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजुघुण्णि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघुण्णिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघुण्णिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वेक्रेकृवहेकृमहे
जुघुण्णिषाम्बभूव जुघुण्णिषामास (य वहि महि
७ जुघुण्णिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघुण्णिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघुण्णिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुघुण्णिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा: ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७०७ घृणुङ् ( घृण्ण् ) ग्रहणे ।

१ जिघृण्णि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिघृण्णिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ जिघृण्णि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिघृण्णि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिघृण्णिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिघृण्णिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे
जिघृण्णिषाम्बभूव जिघृण्णिषामास (य वहि महि
७ जिघृण्णिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिघृण्णिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिघृण्णिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिघृण्णिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७०८ घुणि ( घुण् ) भ्रमणे ।

१ जुघुणि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुघुणिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघुणि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षाणहै
४ अजुघुणि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघुणिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघुणिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुघुणिषाञ्चक्रे जुघुणिषाम्बभूव [य वहि महि
७ जुघुणिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघुणिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघुणिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुघुणिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे जुघु–स्थाने जुघो–इति ज्ञेयम्

### ७०९ घूर्णि ( घूर्ण् ) भ्रमणे ।

१ जुघूर्णि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुघूर्णिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघूर्णि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजुघूर्णि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघूर्णिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघूर्णिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुघूर्णिषाञ्चक्रे जुघूर्णिषामास ( य वहि महि
७ जुघूर्णिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघूर्णिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघूर्णिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुघूर्णिषि–ष्यतष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



७१० पणि ( पण् ) व्यवहारस्तुत्योः ।

१ पिपणि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपणिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपणि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिपणि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपणिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपणिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपणिषाञ्चक्रे पिपणिषाम्बभूव (य वहि महि
७ पिपणिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपणिषिता–" रौ रः से सा थेध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपणिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिपणिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे पिपणिष–ति तः न्ति सि थः इत्यादि

७११ यतैङ् ( यत् ) प्रयत्ने ।

१ यियति–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ यियतिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ यियति–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अयियति–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अयियतिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ यियतिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
यियतिषाम्बभूव यियतिषामास (य वहि महि
७ यियतिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ यियतिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ यियतिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अयियतिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

७१२ युतृङ् (युत) भासने ।

१ युयुति–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ युयुतिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ युयुति–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अयुयुति–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अयुयुतिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ युयुतिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
युयुतिषाञ्चक्रे युयुतिषाम्बभूव (य वहि महि
७ युयुतिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ युयुतिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ युयुतिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अयुयुतिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे युयु–स्थाने युयो–इति ज्ञेयम्

७१३ जुतृङ् ( जुत् ) भासने ।

१ जुजुति–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुजुतिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुजुति–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजुजुति–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुजुतिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुजुतिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुजुतिषाञ्चक्रे जुजुतिषामास (य वहि महि
७ जुजुतिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुजुतिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुजुतिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुजुतिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे जुजु–स्थाने जुजो–इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७१४ विथृङ् ( विथ् ) याचने ।

१ **विविथि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विविथिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विविथि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अविविथि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविविथिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विविथिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**विविथिषाञ्चक्रे विविथिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **विविथिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विविथिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विविथिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविविथिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्
पक्षे विवि-स्थाने विवे इति ज्ञेयम्

### ७१५ वेथृङ् ( वेथ् ) याचने ।

१ **विवेथि**-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवेथिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवेथि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अविवेथि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवेथिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवेथिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**विवेथिषाम्बभूव विवेथिषामास** (य वहि महि
७ **विवेथिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवेथिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवेथिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवेथिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७१६ नाथृङ् (नाथ् उपतापैश्वर्याशीःषु च ।

१ **निनाथि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **निनाथिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **निनाथि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अनिनाथि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अनिनाथिषि** ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **निनाथिषामा** स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**निनाथिषाञ्चक्रे निनाथिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **निनाथिषिषी** ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **निनाथिषिता**-" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **निनाथिषि** ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अनिनाथिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

### ७१७ श्रथुङ् ( श्रन्थ् ) शैथिल्ये ।

१ **शिश्रन्थि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शिश्रन्थिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **शिश्रन्थि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अशिश्रन्थि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अशिश्रन्थिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **शिश्रन्थिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**शिश्रन्थिषाञ्चक्रे शिश्रन्थिषामास** (य वहि महि
७ **शिश्रन्थिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शिश्रन्थिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शिश्रन्थिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशिश्रन्थिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथा ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७१८ ग्रथुङ् ( ग्रन्थ् ) कौटिल्ये ।

१ **जिग्रन्थि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिग्रन्थिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिग्रन्थि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिग्रन्थि**-षत षेताम् षन्त सथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिग्रन्थिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिग्रन्थिषाम्बभू**–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम **जिग्रन्थिषाञ्चक्रे जिग्रन्थिषामास** (य वहि महि
७ **जिग्रन्थिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिग्रन्थिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिग्रन्थिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिग्रन्थिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७१९ कत्थि ( कत्थ् ) श्लाघायाम् ।

१ **चिकत्थि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **चिकत्थिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चिकत्थि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अचिकत्थि**–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अचिकत्थिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **चिकत्थिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहे कृमहे **चिकत्थिषाम्बभूव चिकत्थिषामास** (य वहि महि
७ **चिकत्थिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठा यास्थाम् ध्वम्
८ **चिकत्थिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिकत्थिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अचिकत्थिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७२० श्वदुङ् ( श्वन्द् ) श्वैत्ये ।

१ **शिश्विन्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शिश्विन्दिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **शिश्विन्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अशिश्विन्दि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अशिश्विन्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **शिश्विन्दिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **शिश्विन्दिषाम्बभूव शिश्विन्दिषामास** (यवहिमहि
७ **शिश्विन्दिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शिश्विन्दिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शिश्विन्दिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशिश्विन्दिषि**ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७२१ वदुङ ( वन्द् ) स्तुत्यभिवादनयोः ।

१ **विवन्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवन्दिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवन्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवन्दि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवन्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवन्दिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **विवन्दिषाञ्चक्रे विवन्दिषामास** (य वहि महि
७ **विवन्दिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवन्दिषिता**–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवन्दिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवन्दिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७२२ भदुङ् ( भन्द् ) सुखकल्याणयोः ।

१ **बिभन्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **बिभन्दिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **बिभन्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अबिभन्दि**–षत षेताम् षन्त सथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अबिभन्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **बिभन्दिषाम्बभू**–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
**बिभन्दिषाञ्चक्रे बिभन्दिषामास** (य वहि महि
७ **बिभन्दिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **बिभन्दिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **बिभन्दिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अबिभन्दिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७२३ मदुङ् (मन्द्) स्तुतिमोदमदस्वप्नगतिषु ।

१ **मिमन्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमन्दिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमन्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अमिमन्दि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमन्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमन्दिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**मिमन्दिषाञ्चक्रे मिमन्दिषामास** (य वहि महि
७ **मिमन्दिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमन्दिषिता**–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमन्दिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अमिमन्दिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्तष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७२४ स्पदुङ् ( स्पन्द् ) किंचिच्चलने ।

१ **पिस्पन्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **पिस्पन्दिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **पिस्पन्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अपिस्पन्दि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अपिस्पन्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६**पिस्पन्दिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे
**पिस्पन्दिषाम्बभूव पिस्पन्दिषामास** (यवहिमहि
७ **पिस्पन्दिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **पिस्पन्दिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **पिस्पन्दिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अपिस्पन्दिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७२५ क्लिदुङ् ( क्लिन्द् ) परिदेवने ।

१ **चिक्लिन्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **चिक्लिन्दिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चिक्लिन्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अचिक्लिन्दि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अचिक्लिन्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६**चिक्लिन्दिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे
**चिक्लिन्दिषाम्बभूव चिक्लिन्दिषामास** (य वहि महि
७ **चिक्लिन्दिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चिक्लिन्दिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिक्लिन्दिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**अचिक्लिन्दिषि**–ष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**७२६ मुदि ( मुद् ) हर्षे ।**

१ **मुमुदि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मुमुदिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मुमुदि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अमुमुदि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अमुमुदिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मुमुदिषाम्बभू**–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
**मुमुदिषाञ्चक्रे मुमुदिषामास** (य वहि महि
७ **मुमुदिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मुमुदिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मुमुदिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमुमुदिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**पक्षे मुमु-स्थाने मुमो-इति ज्ञेयम्**

**७२७ ददि ( दद् ) दाने ।**

१ **दिददि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **दिददिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **दिददि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अदिददि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अदिददिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **दिददिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**दिददिषाञ्चक्रे दिददिषामास** (य वहि महि
७ **दिददिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **दिददिषिता**–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **दिददिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अदिददिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यथा ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्

**७२८ हदिं ( हद् ) परिषोत्सर्गे ।**

१ **जिहत्**–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **जिहत्से**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिहत्**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अजिहत्**–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिहत्सि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिहत्साञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**जिहत्साम्बभूव जिहत्सामास** (य वहि महि
७ **जिहत्सिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिहत्सिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिहत्सि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिहत्सि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**७२९ ष्वदि ( स्वद् ) आस्वादने ।**

१ **सिस्वदि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिस्वदिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिस्वदि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिस्वदि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिस्वदिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिस्वदिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
**सिस्वदिषाम्बभूव सिस्वदिषामास** (य वहि महि
७ **सिस्वदिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिस्वदिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिस्वदिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिस्वदिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७३० स्वर्दि ( स्वर्द् ) आस्वादने ।

१ **सिस्वर्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिस्वर्दिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिस्वर्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिस्वर्दि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिस्वर्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिस्वर्दिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**सिस्वर्दिषाञ्चक्रे सिस्वर्दिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **सिस्वर्दिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिस्वर्दिषिता**–" रौ रः से सा थे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिस्वर्दिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिस्वर्दिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७३१ स्वादि ( स्वाद् ) आस्वादने ।

१ **सिस्वादि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिस्वादिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिस्वादि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिस्वादि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिस्वादिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिस्वादिषाञ्च**-क्रे काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**सिस्वादिषाम्बभूव सिस्वादिषामास** (य वहि महि
७ **सिस्वादिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिस्वादिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिस्वादिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिस्वादिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७३२ उर्दि ( ऊर्द् ) मानक्रीडयोश्च ।

१ **ऊर्दिदि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **ऊर्दिदिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **ऊर्दिदि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **और्दिदि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **और्दिदिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **ऊर्दिदिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**उर्दिदिषाञ्चक्रे ऊर्दिदिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **ऊर्दिदिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **ऊर्दिदिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **ऊर्दिदिषि** ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **और्दिदिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७३३ कुर्दि ( कूर्द् ) क्रीडायाम् ।

१ **चुकूर्दि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **चुकूर्दिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चुकूर्दि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अचुकूर्दि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अचुकूर्दिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **चुकूर्दिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**चुकूर्दिषाञ्चक्रे चुकूर्दिषामास** (य वहि महि
७ **चुकूर्दिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चुकूर्दिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चुकूर्दिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अचुकूर्दिषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७३४ गुर्दि ( गूर्द ) क्रीडायाम् ।

१ जुगूर्दि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगूर्दिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगूर्दि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजुगूर्दि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगूर्दिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुगूर्दिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुगूर्दिषाञ्चक्रे जुगूर्दिषाम्बभूव (य वहि महि
७ जुगूर्दिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुगूर्दिषिता–" रौ रः से सा थे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगूर्दिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुगूर्दिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम ष्यध्वम्

### ७३५ गुदि ( गुद ) क्रीडायाम् ।

१ जुगुदि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगुदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगुदि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजुगुदि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगुदिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुगुदिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जुगुदिषाम्बभूव जुगुदिषामास (य वहि महि
७ जुगुदिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुगुदिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगुदिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुगुदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे जुगु-स्थाने जुगो-इति ज्ञेयम्

### ७३६ षूदि ( सूद ) क्षरणे ।

१ सुसूदि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सुसूदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सुसूदि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असुसूदि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असुसूदिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सुसूदिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सुसूदिषाञ्चक्रे सुसूदिषाम्बभूव (य वहि महि
७ सुसूदिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सुसूदिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सुसूदिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०असुसूदिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७३७ ह्रादि ( ह्राद ) शब्दे ।

१ जिह्रादि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिह्रादिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिह्रादि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिह्रादि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिह्रादिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिह्रादिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिह्रादिषाञ्चक्रे जिह्रादिषामास (य वहि महि
७ जिह्रादिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिह्रादिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिह्रादिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिह्रादिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७३८ ह्लादैङ् ( ह्लाद् ) सुखे च ।

१ जिह्लादि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिह्लादिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिह्लादि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिह्लादि–षत षेताम् षन्त सथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिह्लादिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिह्लादिषाम्बभू–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
जिह्लादिषाञ्चक्रे जिह्लादिषामास (य वहि महि
७ जिह्लादिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिह्लादिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिह्लादिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिह्लादिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७३९ पर्दि ( पर्द् ) कुत्सिते शब्दे ।

१ पिपर्दि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपर्दिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपर्दि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिपर्दि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपर्दिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपर्दिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपर्दिषाञ्चक्रे पिपर्दिषामास (य वहि महि
७ पिपर्दिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपर्दिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपर्दिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिपर्दिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम

### ७४० स्कुदुङ् ( स्कुन्द् ) आप्रवणे ।

१ चुस्कुन्दि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुस्कुन्दिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुस्कुन्दि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुस्कुन्दि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुस्कुन्दिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६चुस्कुन्दिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुस्कुन्दिषाम्बभूव चुस्कुन्दिषामास (य वहि महि
७ चुस्कुन्दिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुस्कुन्दिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुस्कुन्दिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचुस्कुन्दिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७४१ पधि ( पध् ) वृद्धौ ।

१ पदिधि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पदिधिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पदिधि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ पैदिधि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ पैदिधिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६पदिधिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
पदिधिषाम्बभूव पदिधिषामास (य वहि महि
७ पदिधिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पदिधिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पदिधिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०पैदिधिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७४२ स्पर्धि ( स्पर्ध् ) सङ्घर्षे ।

१ पिस्पर्द्धि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिस्पर्द्धिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिस्पर्द्धि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिस्पर्द्धि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिस्पर्द्धिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिस्पर्द्धिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिस्पर्द्धिषाञ्चक्रे पिस्पर्द्धिषाम्बभूव (य वहि महि
७ पिस्पर्द्धिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिस्पर्द्धिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिस्पर्द्धिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिस्पर्द्धिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७४३ गाधृङ् (गाध्) प्रतिष्ठालिप्सायोर्ग्रन्थेषु ।

१ जिगाधि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगाधिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगाधि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिगाधि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगाधिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगाधिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिगाधिषाम्बभूव जिगाधिषामास (य वहि महि
७ जिगाधिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगाधिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगाधिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिगाधिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७४४ बाधृङ् ( बाध् ) रोटने ।

१ बिबाधि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिबाधिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिबाधि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिबाधि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिबाधिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिबाधिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिबाधिषाञ्चक्रे बिबाधिषाम्बभूव (य वहि महि
७ बिबाधिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिबाधिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिबाधिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिबाधिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७४५ दधि ( दध् ) धारणे ।

१ दिदधि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदधिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदधि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिदधि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदधिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदधिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिदधिषाञ्चक्रे दिदधिषामास (य वहि महि
७ दिदधिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदधिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदधिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदधिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७४६ बधि ( बध् ) बन्धने ।

वैरूप्ये-

१ बीभत्सि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बीभत्सिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बीभत्सि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबीभत्सि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबीभत्सिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बीभत्सिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे बीभत्सिषाम्बभूव बीभत्सिषामास (य वहि महि
७ बीभत्सिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बीभत्सिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बीभत्सिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबीभत्सिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
अर्थान्तरे-बिबधि-षते षेते षन्ते इत्यादि

### ७४७ नाधृङ् ( नाध् ) नाथृङ् वत् ।

१ निनाधि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनाधिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनाधि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अनिनाधि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनाधिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनाधिषाञ्च क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे निनाधिषाम्बभूव निनाधिषामास (य वहि महि
७ निनाधिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनाधिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनाधिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनाधिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७४८ पनि ( पन् ) स्तुतौ ।

१ पिपनि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपनिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपनि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिपनि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपनिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपनिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिपनिषाञ्चक्रे पिपनिषामास (य वहि महि
७ पिपनिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपनिषिता-" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपनिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपनिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यथा ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे पिपनायिष-ति तः न्ति सि थः थ मि वः मः

### ७४९ मानि ( मान् ) पूजायाम् ।

विचारे-

१ मीमांसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षें षावहे षामहे
२ मीमांसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मीमांसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमीमांसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अमीमांसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मीमांसिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम मीमांसिषाञ्चक्रे मीमांसिषामास (य वहि महि
७ मीमांसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मीमांसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मीमांसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमीमांसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
अर्थान्तरे मिमानयिष-ति तः न्ति सि थः थ इत्यादि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७५० तिपृङ् ( तिप् ) क्षरणे ।

१ तितिपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितिपिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितिपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितिपि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अतितिपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितिपिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तितिपिषाम्बभूव तितिपिषामास (य वहि महि
७ तितिपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितिपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितिपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितिपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे तिति-स्थाने तिते-इति ज्ञेयम्

### ७५१ ष्टिपृङ् ( स्तिप् ) क्षरणे ।

१ तिस्तिपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तिस्तिपिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ तिस्तिपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतिस्तिपि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतिस्तिपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तिस्तिपिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तिस्तिपिषाम्बभूव तिस्तिपिषामास (य वहि महि
७ तिस्तिपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तिस्तिपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तिस्तिपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतिस्तिपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे तिस्ति-स्थाने तिस्ते-इति ज्ञेयम्

### ७५२ ष्टेपृङ् ( स्तेप् ) क्षरणे ।

१ तिस्तेपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तिस्तेपिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तिस्तेपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतिस्तेपि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतिस्तेपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तिस्तेपिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तेपिषाञ्चक्रे तिस्तेपिषामास ( य वहि महि
७ तिस्तेपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तिस्तेपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तिस्तेपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतिस्तेपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७५३ तेपृङ् ( तेप् ) कम्पने च ।

१ तितेपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितेपिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितेपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अतितेपि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितेपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितेपिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितेपिषाञ्चक्रे तितेपिषाम्बभूव [य वहि महि
७ तितेपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितेपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितेपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितेपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७५४ टुवेपृङ् ( वेप् ) चलने ।

१ विवेपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवेपिषे–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवेपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवेपि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवेपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवेपिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवेपिषाञ्चक्रे विवेपिषाम्बभूव (य वहि महि
७ विवेपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवेपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवेपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवेपिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम ष्यध्वम्

### ७५६ गेपृङ् ( गेप् ) चलने ।

१ जिगेपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगेपिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगेपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिगेपि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगेपिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगेपिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जिगेपिषाञ्चक्रे जिगेपिषामास (य वहि महि
७ जिगेपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगेपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगेपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिगेपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७५५ केपृङ् ( केप् ) चलने ।

१ चिकेपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकेपिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकेपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अचिकेपि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकेपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६चिकेपिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे चिकेपिषाम्बभूव चिकेपिषामास [य वहि महि
७ चिकेपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकेपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकेपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकेपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७५७ कपुङ् ( कम्प् ) चलने ।

१ चिकम्पि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकम्पिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकम्पि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकम्पि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकम्पिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६चिकम्पिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे चिकम्पिषाम्बभूव चिकम्पिषामास (य वहि महि
७ चिकम्पिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकम्पिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकम्पिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकम्पिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७५८ ग्लेपृङ् ( ग्लेप् ) दैन्ये च ।

१ जिग्लेपि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिग्लेपिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ जिग्लेपि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिग्लेपि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिग्लेपिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिग्लेपिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे जिग्लेपिषाम्बभूव जिग्लेपिषामास (य वहि महि
७ जिग्लेपिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिग्लेपिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिग्लेपिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिग्लेपिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७६० रेपृङ् ( रेप् ) गतौ ।

१ रिरेपि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरेपिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरेपि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अरिरेपि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरेपिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरेपिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम रिरेपिषाञ्चक्रे रिरेपिषाम्बभूव [य वहि महि
७ रिरेपिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरेपिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरेपिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरेपिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७५९ मेपृङ् ( मेप् ) गतौ ।

१ मिमेपि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमेपिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमेपि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमेपि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमेपिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमेपिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे मिमेपिषाम्बभूव मिमेपिषामास (य वहि महि
७ मिमेपिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमेपिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमेपिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अमिमेपिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७६१ लेपृङ् ( लेप् ) गतौ ।

१ लिलेपि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलेपिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलेपि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलिलेपि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलेपिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलेपिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम लिलेपिषाञ्चक्रे लिलेपिषामास ( य वहि महि
७ लिलेपिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलेपिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलेपिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अलिलेपिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७६२ त्रपौषि ( त्रप् ) लज्जायाम् ।

१ तित्रपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तित्रपिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् थ वहि महि
३ तित्रपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतित्रपि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतित्रपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तित्रपिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तित्रपिषाञ्चक्रे तित्रपिषाम्बभूव (य वहि महि
७ तित्रपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तित्रपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तित्रपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतित्रपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे तित्रप्सते तित्रप्सेते तित्रप्सन्ते इत्यादि

### ७६३ गुपि ( गुप् ) गोपनकुत्सनयोः ।

गर्हायाम्–

१ जुगुप्सि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगुप्सिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगुप्सि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुगुप्सि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगुप्सिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुगुप्सिषाञ्च–क्रे काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जुगुप्सिषाम्बभूव जुगुप्सिषामास [य वहि महि
७ जुगुप्सिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुगुप्सिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगुप्सिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुगुप्सिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
अन्यत्र जुगोपि जुगुपि–षते षेते षन्ते षसे इत्यादि
जुगोपयिष–ति तः न्ति सि थः थ इत्यादि

### ७६४ अबुङ् ( अम्ब् ) शब्दे ।

१ अम्बिबि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अम्बिबिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अम्बिबि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आम्बिबि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ आम्बिबिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अम्बिबिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अम्बिबिषाञ्चक्रे अम्बिबिषामास (य वहि महि
७ अम्बिबिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अम्बिबिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अम्बिबिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०आम्बिबिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७६५ रबुङ् ( रम्ब् ) शब्दे ।

१ रिरम्बि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरम्बिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरम्बि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरम्बि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरम्बिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरम्बिषाञ्च–क्रे काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
रिरम्बिषाम्बभूव रिरम्बिषामास (य वहि महि
७ रिरम्बिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरम्बिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरम्बिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अरिरम्बिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७६६ लबुङ् ( लम्ब् ) अवस्रंसने च ।

१ लिलम्बि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलम्बिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलम्बि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलिलम्बि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलम्बिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलम्बिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलम्बिषाञ्चक्रे लिलम्बिषाम्बभूव (य वहि महि
७ लिलम्बिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलम्बिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलम्बिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अलिलम्बिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथामष्यध्वम्

### ७६७ कबृङ् ( कब् ) वर्णे ।

१ चिकबि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकबिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकबि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकबि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकबिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकबिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकबिषाम्बभूव चिकबिषामास (य वहि महि
७ चिकबिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकबिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकबिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकबिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### ७६८ क्लीबृङ् ( क्लीब् ) आधाष्टर्ये ।

१ चिक्लीबि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्लीबिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्लीबि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अचिक्लीबि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्लीबिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्लीबिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिक्लीबिषाम्बभूव चिक्लीबिषामास [य वहि महि
७ चिक्लीबिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्लीबिषिता–" रौ र. से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्लीबिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिक्लीबिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

### ७६९ क्षीबृङ् ( क्षीब् ) मदे ।

१ चिक्षीबि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्षीबिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्षीबि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्षीबि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्षीबिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम
६ चिक्षीबिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षीबिषाञ्चक्रे चिक्षीबिषामास (य वहि महि
७ चिक्षीबिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्षीबिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्षीबिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिक्षीबिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७७० शीभृङ् ( शीभ् ) कत्थने ।

१ शिशीभि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशीभिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशीभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशीभि–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशीभिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशीभिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिशीभिषाञ्चक्रे शिशीभिषाम्बभूव (य वहि महि
७ शिशीभिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशीभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशीभिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशीभिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७७१ वीभृङ् ( वीभ् ) कत्थने ।

१ विवीभि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवीभिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवीभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवीभि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवीभिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवीभिषाञ्च–क्रे काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवीभिषाम्बभूव विवीभिषामास (य वहि महि
७ विवीभिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवीभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवीभिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवीभिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७७२ शल्भि ( शल्भ् ) कत्थने ।

१ शिशल्भि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशल्भिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशल्भि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अशिशल्भि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशल्भिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशल्भिषाञ्च–क्रे काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिशल्भिषाम्बभूव शिशल्भिषामास [य वहि महि
७ शिशल्भिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशल्भिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशल्भिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशल्भिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७७३ वल्भि ( वल्भ् ) भोजने ।

१ विवल्भि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवल्भिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवल्भि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवल्भि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवल्भिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ विवल्भिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवल्भिषाञ्चक्रे विवल्भिषामास (य वहि महि
७ विवल्भिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवल्भिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवल्भिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवल्भिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७७४ गल्भि ( गल्भ् ) धार्ष्ट्ये ।

१ जिगल्भि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगल्भिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगल्भि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिगल्भि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगल्भिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगल्भिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिगल्भिषाम्बभूव जिगल्भिषामास [य वहि महि
७ जिगल्भिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगल्भिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगल्भिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिगल्भिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७७५ रेभृङ् ( रेभ् ) शब्दे ।

१ रिरेभि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरेभिषे–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरेभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरेभि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरेभिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरेभिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरेभिषाञ्चक्रे रिरेभिषाम्बभूव (य वहि महि
७ रिरेभिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरेभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरेभिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरेभिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथामष्यध्वम्

### ७७६ अभुङ् ( अम्भ् ) शब्दे ।

१ अम्बिभि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अम्बिभिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अम्बिभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आम्बिभि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आम्बिभिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अम्बिभिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
अम्बिभिषाम्बभूव अम्बिभिषामास (य वहि महि
७ अम्बिभिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अम्बिभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अम्बिभिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आम्बिभिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७७७ रभुङ् ( रम्भ् ) शब्दे ।

१ रिरम्भि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरम्भिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरम्भि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरम्भि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरम्भिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम
६ रिरम्भिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरम्भिषाञ्चक्रे रिरम्भिषामास (य वहि महि
७ रिरम्भिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरम्भिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरम्भिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरम्भिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७७८ लभुङ् ( लम्भ् ) शब्दे ।

१ लिलम्भि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलम्भिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलम्भि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलिलम्भि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलम्भिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलम्भिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
लिलम्भिषाम्बभूव लिलम्भिषामास [य वहि महि
७ लिलम्भिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलम्भिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलम्भिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलिलम्भिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७७९ ष्टभुङ् ( स्तम्भ् ) स्तम्भे ।

१ तिस्तम्भि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तिस्तम्भिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तिस्तम्भि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतिस्तम्भि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अतिस्तम्भिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तिस्तम्भिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तम्भिषाञ्चक्रे तिस्तम्भिषामास (य वहि महि
७ तिस्तम्भिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तिस्तम्भिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तिस्तम्भिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतिस्तम्भिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७८० स्कभुङ् ( स्कम्भ् ) स्तम्भे ।

१ चिस्कम्भि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिस्कम्भिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिस्कम्भि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिस्कम्भि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिस्कम्भिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिस्कम्भिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिस्कम्भिषाम्बभूव चिस्कम्भिषामास (य वहि महि
७ चिस्कम्भिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिस्कम्भिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिस्कम्भिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिस्कम्भिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७८१ ष्टुभूङ् ( स्तुभ् ) स्तम्भे ।

१ तुस्तोभि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तुस्तोभिषे–त याताम् रन् थाः यास्थाम् ध्वम् य वहि महि
३ तुस्तोभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतुस्तोभि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतुस्तोभिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तुस्तोभिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुस्तोभिषाञ्चक्रे तुस्तोभिषाम्बभूव (य वहि महि
७ तुस्तोभिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तुस्तोभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुस्तोभिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतुस्तोभिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे तुस्तो–स्थाने तुस्तु–इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७८२ जभुङ् ( जम्भ् ) गात्रविनामे ।

१ **जिजम्भि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिजम्भिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिजम्भि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिजम्भि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिजम्भिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिजम्भिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**जिजम्भिषाञ्चक्रे जिजम्भिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **जिजम्भिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिजम्भिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिजम्भिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिजम्भिषि** ष्यतष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७८३ जभैङ् ( जभ् ) गात्रविनामे ।

१ **जिजम्भि**–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिजम्भिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ **जिजम्भि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिजम्भि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिजम्भिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिजम्भिषाञ्च**–के कृते किरे कृषे क्राथे कृढ्वे केकृवहेकृमहे
**जिजम्भिषाम्बभूव जिजम्भिषामास** (य वहि महि
७ **जिजम्भिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिजम्भिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिजम्भिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिजम्भिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७८४ जृभुङ् ( जृम्भ् ) गात्रविनामे ।

१ **जिजृम्भि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिजृम्भिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिजृम्भि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिजृम्भि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिजृम्भिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिजृम्भिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**जिजृम्भिषाञ्चक्रे जिजृम्भिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **जिजृम्भिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिजृम्भिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिजृम्भिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिजृम्भिषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा.ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ७८५ रभिं ( रभ् ) राभस्ये ।

१ **आरिप्**–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **आरिप्से**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **आरिप्**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **आरिप्**–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **आरिप्सि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **आरिप्साम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**आरिप्साञ्चक्रे आरिप्सामास** (य वहि महि
७ **आरिप्सिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **आरिप्सिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **आरिप्सि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **आरिप्सि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ७८६ डुलभिंष् ( लभ् ) प्राप्तौ ।

१ लिप्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ लिप्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ लिप्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अलिप्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलिप्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ लिप्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिप्साञ्चक्रे लिप्सामास (य वहि महि
७ लिप्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिप्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिप्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अलिप्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ७८८ क्षमौषि ( क्षम् ) सहने ।

१ चिक्षमि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्षमिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ चिक्षमि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिक्षमि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्षमिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ चिक्षमिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्षमिषाञ्चक्रे चिक्षमिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिक्षमिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्षमिषिता-" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्षमिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिक्षमिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम
पक्षे चिक्षं-सते सेते सन्ते इत्यादि

## ७८७ भामि ( भाम् ) क्रोधे ।

१ बिभामि-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभामिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ बिभामि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिभामि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभामिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६बिभामिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
बिभामिषाम्बभूव बिभामिषामास (य वहि महि
७ बिभामिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभामिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभामिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिभामिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

## ७८९ कमूङ् ( कम् ) कान्तौ ।

१ चिकामि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकामिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकामि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिकामि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकामिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम्ध्वम्
६ चिकामिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकामिषाञ्चक्रे चिकामिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिकामिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकामिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकामिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकामिषि-ष्यतष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्
पक्षे चिकामि-स्थाने चिकामयि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७९० अयि ( अय् ) गतौ ।

१ **अयियि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **अयियिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ **अयियि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **आयियि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **आयियिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **अयियिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**अयियिषाश्चक्रे अयियिषामास** (य वहि महि
७ **अयियिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **अयियिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **अयियिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **आयियिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७९१ वयि ( वय् ) गतौ ।

१ **विवयि**–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवयिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ **विवयि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवयि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवयिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवयिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
**विवयिषाम्बभूव विवयिषामास** (य वहि महि
७ **विवयिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवयिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवयिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७९२ पयि ( पय् ) गतौ ।

१ **पिपयि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **पिपयिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ **पिपयि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अपिपयि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अपिपयिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **पिपयिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**पिपयिषाश्चक्रे पिपयिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **पिपयिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **पिपयिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **पिपयिषि** ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अपिपयिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम् ष्यध्वम

### ७९३ मयि ( मय् ) गतौ ।

१ **मिमयि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमयिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमयि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अमिमयि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमयिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमयिषामा**–स सतुः सु सिथ सथुः स स सिव सिम
**मिमयिषाश्चक्रे मिमयिषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **मिमयिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमयिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमयिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमयिषि**-ष्यतष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७९४ नयि ( नय् ) गतौ ।

१ निनयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ निनयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अनिनयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनयिषाञ्चक्रे निनयिषामास (य वहि महि
७ निनयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अनिनयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७९५ चयि ( चय् ) गतौ ।

१ चिचयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ चिचयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिचयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६चिचयिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे
चिचयिषाम्बभूव चिचयिषामास (य वहि महि
७ चिचयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिचयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७९६ रयि ( रय् ) गतौ ।

१ रिरयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ रिरयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरयिषाञ्चक्रे रिरयिषाम्बभूव (य वहि महि
७ रिरयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरयिषिता–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अरिरयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ७९७ तयि ( तय् ) रक्षणे च ।

१ तितयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितयिषाञ्चक्रे तितयिषाम्बभूव (य वहि महि
७ तितयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतितयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

७९८ णयि ( नय् ) रक्षणे च । नयि ७९४ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ७९९ दयि (दय्) दानगतिहिंसादहनेषु च ।

१ दिदयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिदयि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दिदयिषाञ्चक्रे दिदयिषामास (य वहि महि
७ दिदयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८०० ऊयैङ् ( ऊय् ) तन्तु सन्ताने ।

१ ऊयियि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ऊयियिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ऊयियि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ औयियि–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ औयियिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ऊयियिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे ऊयियिषाम्बभूव ऊयियिषामास (य वहि महि
७ ऊयियिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ऊयियिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ऊयियिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० औयियिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८०१ पूयैङ् (पूय्) दुर्गन्धविशरणयोः ।

१ पुपूयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पुपूयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पुपूयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपुपूयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अपुपूयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पुपूयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पुपूयिषाञ्चक्रे पुपूयिषामास (य वहि महि
७ पुपूयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पुपूयिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पुपूयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपुपूयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यथा ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८०२ क्नूयैङ् ( क्नूय् ) शब्दोन्दनयोः ।

१ चुक्नूयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुक्नूयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुक्नूयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अचुक्नूयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुक्नूयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुक्नूयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चुक्नूयिषाञ्चक्रे चुक्नूयिषाम्बभूव [य वहि महि
७ चुक्नूयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुक्नूयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुक्नूयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुक्नूयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८०३ क्ष्मायैङ् ( क्ष्माय् ) विधूनने ।

१ चिक्ष्मायि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्ष्मायिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्ष्मायि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्ष्मायि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्ष्मायिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्ष्मायिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिक्ष्मायिषाञ्चक्रे चिक्ष्मायिषामास (य वहि महि
७ चिक्ष्मायिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्ष्मायिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्ष्मायिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिक्ष्मायिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८०४ स्फायैङ् ( स्फाय् ) वृद्धौ ।

१ पिस्फायि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिस्फायिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिस्फायि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिस्फायि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिस्फायिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिस्फायिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे पिस्फायिषाम्बभूव पिस्फायिषामास (य वहि महि
७ पिस्फायिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिस्फायिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिस्फायिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिस्फायिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८०५ ओप्यायैङ् ( प्याय् ) वृद्धौ ।

१ पिप्यायि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिप्यायिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिप्यायि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिप्यायि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्यायिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्यायिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिप्यायिषाञ्चक्रे पिप्यायिषामास (य वहि महि
७ पिप्यायिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिप्यायिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्यायिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिप्यायिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यथा ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८०६ तायृङ् ( ताय् ) संतानपालनयोः ।

१ तितायि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितायिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितायि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अतितायि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितायिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितायिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम तितायिषाञ्चक्रे तितायिषाम्बभूव [य वहि महि
७ तितायिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितायिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितायिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितायिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८०७ वलि ( वल् ) संवरणे ।

१ **विवलि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवलिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवलि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवलि**–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवलिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ **विवलिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **विवलिषाञ्चक्रे विवलिषामास** (य वहि महि
७ **विवलिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवलिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवलिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवलिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### ८०८ वल्लि ( वल्ल् ) संवरणे ।

१ **विवल्लि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवल्लिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवल्लि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवल्लि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवल्लिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवल्लिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **विवल्लिषाम्बभूव विवल्लिषामास** (य वहि महि
७ **विवल्लिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवल्लिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवल्लिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवल्लिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८०९ शलि ( शल् ) चलने ।

१ **शिशलि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शिशलिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ **शिशलि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अशिशलि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अशिशलिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ **शिशलिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **शिशलिषाञ्चक्रे शिशलिषामास** (य वहि महि
७ **शिशलिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शिशलिषिता**–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शिशलिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशिशलिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम्ष्यध्वम

### ८१० मलि ( मल् ) धारणे ।

१ **मिमलि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमलिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमलि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ **अमिमलि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमलिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमलिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **मिमलिषाञ्चक्रे मिमलिषाम्बभूव** [य वहि महि
७ **मिमलिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमलिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमलिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमलिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८११ मल्लि ( मल्ल् ) धारणे ।

१ मिमल्लि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमल्लिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमल्लि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमल्लि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमल्लिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमल्लिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमल्लिषाञ्चक्रे मिमल्लिषाम्बभूव (य वहि महि
७ मिमल्लिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमल्लिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमल्लिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अमिमल्लिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८१२ भलि ( भल् ) परिभाषणहिंसादानेषु ।

१ बिभलि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभलिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभलि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभलि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभिलषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्न्वम् ध्वम्
६बिभलिषाञ्च–के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे बिभलिषाम्बभूव बिभलिषामास (य वहि महि
७ बिभलिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभलिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभलिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिभलिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ८१३ भल्लि ( भल्ल् ) परिभाषणहिंसादानेषु ।

१ बिभल्लि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभल्लिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभल्लि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अबिभल्लि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभल्लिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६बिभल्लिषाञ्च-केक्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे बिभल्लिषाम्बभूव बिभल्लिषामास [य वहि महि
७ बिभल्लिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभल्लिषिता–" रौ र. से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभल्लिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभल्लिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ८१४ कलि ( कल् ) शब्दसंख्यानयोः ।

१ चिकलि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकलिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकलि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकलि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकलिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ चिकलिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिकलिषाञ्चक्रे चिकलिषामास (य वहि महि
७ चिकलिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकलिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकलिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकलिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८१५ कल्लि ( कल्ल् ) अशब्दे ।

१ चिकल्लि–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकल्लिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ चिकल्लि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकल्लि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकल्लिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकल्लिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे
चिकल्लिषाम्बभूव चिकल्लिषामास (य वहि महि
७ चिकल्लिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकल्लिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकल्लिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकल्लिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८१६ तेवृङ् ( तेव् ) देवने ।

१ तितेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ तितेविषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितेविषाञ्चक्रे तितेविषाम्बभूव (य वहि महि
७ तितेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतितेविषि - ष्यतष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८१७ देवृङ् ( देव् ) देवने ।

१ दिदेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिदेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदेविषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदेविषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदेविषाञ्चक्रे दिदेविषाम्बभूव (य वहि महि
७ दिदेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदेविषि ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदेविषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

## ८१८ षेवृङ् ( सेव् ) सेवने ।

१ सिसेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिसेविषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिसेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ असिसेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिसेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिसेविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसेविषाञ्चक्रे सिसेविषामास (य वहि महि
७ सिसेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिसेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिसेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०असिसेविषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

८१९ सेवृङ् ( सेव् ) सेवने । षेवङ ८१८ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८२० केवृङ् ( केव् ) सेवने ।

१ चिकेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकेवि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकेविषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकेविषाम्बभूव चिकेविषामास (य वहि महि
७ चिकेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकेविषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८२१ खेवृङ् ( खेव् ) सेवने ।

१ चिखेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिखेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ चिखेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिखेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिखेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ चिखेविषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वेके कृवहे कृमहे
चिखेविषाम्बभूव चिखेविषामास (य वहि महि
७ चिचेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिखेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिखेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिखेविषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ८२२ गेवृङ् ( गेव् ) सेवने ।

१ जिगेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिगेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगेविषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिगेविषाम्बभूव जिगेविषामास (य वहि महि
७ जिगेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिगेविषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ८२३ ग्लेवृङ् ( ग्लेव् ) सेवने ।

१ जिग्लेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिग्लेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिग्लेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिग्लेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिग्लेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिग्लेविषाम्बभू–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
जिग्लेविषाञ्चक्रे जिग्लेविषामास (य वहि महि
७ जिग्लेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिग्लेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिग्लेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिग्लेविषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८२४ पेवृङ् ( पेव् ) सेवने ।

१ पिपेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिपेवि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपेविषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृड्वे क्रे कृवहे कृमहे
पिपेविषाम्बभूव पिपेविषामास (य वहि महि
७ पिपेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपेविषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८२६ मेवृङ् ( मेव् ) सेवने ।

१ मिमेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमेविषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मिमेविषाम्बभूव मिमेविषामास (य वहि महि
७ मिमेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमेविषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८२५ प्लेवृङ् ( प्लेव् ) सेवने ।

१ पिप्लेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिप्लेविषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ पिप्लेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिप्लेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्लेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्लेविषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
पिप्लेविषाम्बभूव पिप्लेविषामास (य वहि महि
७ पिप्लेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिप्लेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्लेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिप्लेविषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८२७ म्लेवृङ् ( म्लेव् ) सेवने ।

१ मिम्लेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिम्लेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिम्लेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिम्लेवि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अमिम्लेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिम्लेविषाम्बभू–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
मिम्लेविषाञ्चक्रे मिम्लेविषामास (य वहि महि
७ मिम्लेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिम्लेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिम्लेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिम्लेविषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८२८ रेवृङ् ( रेवृ ) गतौ ।

१ रिरेवि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरेविषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरेवि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरेवि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरेविषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरेविषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
रिरेविषाम्बभूव रिरेविषामास (य वहि महि
७ रिरेविषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरेविषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरेविषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अरिरेविषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

८२९ पवि ( पव ) गतौ । पू० ६०० वद्रूपाणि

## ८३० काशृङ् ( काश् ) दीप्तौ ।

१ चिकाशि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकाशिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ चिकाशि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकाशि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकाशिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ चिकाशिषाञ्च क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकाशिषाम्बभूव चिकाशिषामास (य वहि महि
७ चिकाशिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकाशिविता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकाशिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वं ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकाशिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

## ८३१ क्लेशि ( क्लेश् ) विबाधने ।

१ चिक्लेशि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२चिक्लेशिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्लेशि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्लेशि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्लेशिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ चिक्लेशिषाम्बभू–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्लेशिषाञ्चक्रे चिक्लेशिषामास (य वहि महि
७ चिक्लेशिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्लेशिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्लेशिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिक्लेशिषिष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

## ७४६ भाषिच ( भाष् ) व्यक्तायां वाचि ।

१ बिभषि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभषिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभषि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभषि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभषिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभषिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
बिभषिषाम्बभूव बिभषिषामास (य वहि महि
७ बिभषिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभषिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभषिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभषिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८३३ ईषि ( ईष् ) गतिहिंसादर्शनेषु ।

१ **ईषिषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **ईषिषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **ईषिषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **ऐषिषि**–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ **ऐषिषिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **ईषिषिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**ईषिषिषाम्बभूव ईषिषिषामास** (य वहि महि
७ **ईषिषिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **ईषिषिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **ईषिषिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **ऐषिषिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८३४ गेषृङ् ( गेष् ) अन्विच्छायाम् ।

१ **जिगेषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिगेषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिगेषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिगेषि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिगेषिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिगेषिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**जिगेषिषाम्बभूव जिगेषिषामास** (य वहि महि
७ **जिगेषिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिगेषिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिगेषिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिगेषिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८३५ येषृङ् ( येष् ) प्रयत्ने ।

१ **यियेषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **यियेषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **यियेषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अयियेषि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अयियेषिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ **यियेषिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**यियेषिषाम्बभूव यियेषिषामास** (य वहि महि
७ **यियेषिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **यियेषिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **यियेषिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अयियेषिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ८३६ जेषृङ् ( जेष् ) गतौ ।

१ **जिजेषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिजेषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिजेषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिजेषि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिजेषिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिजेषिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**जिजेषिषाञ्चक्रे जिजेषिषामास** (य वहि महि
७ **जिजेषिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जिजेषिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिजेषिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिजेषिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८३७ णेषृङ् ( नेष् ) गतौ ।

१ निनेषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनेषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ निनेषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अनिनेषि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनेषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनेषिषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे निनेषिषाम्बभूव निनेषिषामास (य वहि महि
७ निनेषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनेषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनेषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनेषिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८३८ एषृङ् ( एष् ) गतौ ।

१ एषिषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ एषिषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ एषिषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ ऐषिषि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ ऐषिषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ एषिषिषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे एषिषिषाम्बभूव एषिषिषामास (य वहि महि
७ एषिषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ एषिषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ एषिषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० ऐषिषिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८३९ हेषृङ् ( हेष् ) गतौ ।

१ जिहेषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिहेषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिहेषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिहेषि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिहेषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिहेषिषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे जिहेषिषाम्बभूव जिहेषिषामास (य वहि महि
७ जिहेषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिहेषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिहेषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिहेषिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८४० रेषृङ् ( रेष् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१ रिरेषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरेषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरेषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरेषि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरेषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरेषिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम रिरेषिषाञ्चक्रे रिरेषिषामास (य वहि महि
७ रिरेषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरेषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरेषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरेषिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८४१ हेषृङ् ( हेष् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१ जिहेषि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिहेषिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिहेषि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिहेषि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिहेषिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिहेषिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे जिहेषिषाम्बभूव जिहेषिषामास (य वहि महि
७ जिहेषिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिहेषिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिहेषिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिहेषिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८४२ पर्षि ( पर्ष् ) स्नेहने ।

१ पिपर्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपर्षिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ पिपर्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिपर्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपर्षिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ पिपर्षिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वेक्रे कृवहे कृमहे पिपर्षिषाम्बभूव पिपर्षिषामास (य वहि महि
पिपर्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
पिपर्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपर्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपर्षिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### ८४३ घुषुङ् ( घुंष् ) कान्तीकरणे ।

१ जुघुंषि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुघुंषिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघुंषि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुघुंषि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघुंषिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघुंषिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे जुघुंषिषाम्बभूव जुघुंषिषामास (य वहि महि
७ जुघुंषिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघुंषिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघुंषिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुघुंषिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८४४ स्रंसूङ् ( स्रंस् ) प्रमादे ।

१ सिस्रंसि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिस्रंसिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिस्रंसि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ असिस्रंसि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ असिस्रंसिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिस्रंसिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम सिस्रंसिषाञ्चक्रे सिस्रंसिषामास (य वहि महि
७ सिस्रंसिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिस्रंसिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिस्रंसिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिस्रंसिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८४५ कासृङ् ( कास् ) शब्दकुत्सायाम् ।

१ चिकासि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकासिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकासि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकासि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकासिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकासिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिकासिषाञ्चक्रे चिकासिषामास (य वहि महि
७ चिकासिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकासिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकासिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकासिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८४६ भासि ( भास् ) दीप्तौ ।

१ बिभासि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभासिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभासि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभासि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभासिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभासिषाञ्च-के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे बिभासिषाम्बभूव बिभासिषामास (य वहि महि
७ बिभासिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभासिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभासिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिभासिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८४७ भ्रासि ( भ्रास् ) दीप्तौ ।

१ बिभ्रासि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभ्रासिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभ्रासि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभ्रासि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभ्रासिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभ्रासिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम बिभ्रासिषाञ्चक्रे बिभ्रासिषाम्बभूव (य वहि महि
७ बिभ्रासिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभ्रासिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभ्रासिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिभ्रासिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथामष्यध्वम्

### ८४८ भ्लासि ( भ्लास् ) दीप्तौ ।

१ बिभ्लासि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभ्लासिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभ्लासि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अबिभ्लासि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभ्लासिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभ्लासिषाञ्च-क्रेकाते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वेक्रेकृवहेकृमहे बिभ्लासिषाम्बभूव बिभ्लासिषामास [य वहि महि
७ बिभ्लासिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभ्लासिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभ्लासिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिभ्लासिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८४९ रासृङ् ( रास् ) शब्दे ।

१ रिरासि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरासिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरासि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरासि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरासिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरासिषामा–स सतुः सु सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरासिषाञ्चक्रे रिरासिषाम्बभूव (य वहि महि
७ रिरासिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरासिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरासिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरासिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८५० णासृङ् ( नास् ) शब्दे ।

१ निनासि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनासिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनासि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अनिनासि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनासिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनासिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनासिषाञ्चक्रे निनासिषामास (य वहि महि
७ निनासिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनासिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनासिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनासिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८५१ णसि ( नस् ) कौटिल्ये ।

१ निनसि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनसिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनसि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अनिनसि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनसिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनसिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनसिषाञ्चक्रे निनसिषाम्बभूव (य वहि महि
७ निनसिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनसिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनसिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनसिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८५२ भ्यसि ( भ्यस् ) भये ।

१ बिभ्यसि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभ्यसिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ बिभ्यसि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभ्यसि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभ्यसिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभ्यसिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
बिभ्यसिषाम्बभूव बिभ्यसिषामास (य वहि महि
७ बिभ्यसिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभ्यसिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभ्यसिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभ्यसिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८५३ आङः-शसुङ् (आ-शंस्) इच्छायाम् ।

१ आशिशंसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२आशिशंसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ आशिशंसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ आशिशंसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ आशिशंसिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६आशिशंसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
आशिशंसिषाञ्चक्रे आशिशंसिषामास (य वहि महि
७ आशिशंसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ आशिशंसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ आशिशंसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०आशिशंसिषि-ष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

## ८५४ ग्रसूङ् ( ग्रस् ) अदने ।

१ जिग्रसि-षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिग्रसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिग्रसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिग्रसि-षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिग्रसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६जिग्रसिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिग्रसिषाम्बभूव जिग्रसिषामास (य वहि महि
७ जिग्रसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिग्रसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिग्रसिषि-ष्यतं ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिग्रसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८५५ ग्लसूङ् ( ग्लस् ) अदने ।

१ जिग्लसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिग्लसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिग्लसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अजिग्लसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अजिग्लसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६जिग्लसिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
जिग्लसिषाम्बभूव जिग्लसिषामास [य वहि महि
७ जिग्लसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिग्लसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिग्लसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिग्लसिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

## ८५६ घसुङ् ( घंस् ) करणे ।

१ जिघंसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिघंसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिघंसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिघंसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिघंसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिघंसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिघंसिषाञ्चक्रे जिघंसिषाम्बभूव (य वहि महि
७ जिघंसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिघंसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिघंसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिघंसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८५७ ईहि ( ईह् ) चेष्टायाम् ।

१ ईजिहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ईजिहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ईजिहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ ऐजिहि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ ऐजिहिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ ईजिहिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ईजिहिषाञ्चक्रे ईजिहिषामास (य वहि महि
७ ईजिहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ईजिहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ईजिहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ ऐजिहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### ८५८ अहुङ् ( अंह् ) गतौ ।

१ अञ्जिहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अञ्जिहिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अञ्जिहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ आञ्जिहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आञ्जिहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाःषाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ अञ्जिहिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
अञ्जिहिषाम्बभूव अञ्जिहिषामास (य वहि महि
७ अञ्जिहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अञ्जिहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अञ्जिहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०आञ्जिहिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८५९ प्लिहि ( प्लिह् ) गतौ ।

१ पिप्लिहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिप्लिहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिप्लिहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षाणहै
४ अपिप्लिहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्लिहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्लिहिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिप्लिहिषाञ्चक्रे पिप्लिहिषाम्बभूव [य वहि महि
७ पिप्लिहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिप्लिहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्लिहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिप्लिहिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम
पक्षे प्लिहि–स्थाने प्लेहि–इति ज्ञेयम्

### ८६० गर्हि ( गर्ह् ) कुत्सने ।

१ जिगर्हि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगर्हिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहिमहि
३ जिगर्हि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिगर्हि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगर्हिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ जिगर्हिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगर्हिषाञ्चक्रे जिगर्हिषामास (य वहि महि
७ जिगर्हिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगर्हिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगर्हिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिगर्हिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८६१ गर्हि ( गर्ह् ) कुत्सने ।

१ जिगर्हि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगर्हिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहिमहि
३ जिगर्हि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिगर्हि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगर्हिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ जिगर्हिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगर्हिषाञ्चक्रे जिगर्हिषामास (य वहि महि
७ जिगर्हिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगर्हिषिता-'' रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगर्हिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिगर्हिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्तष्येथाम्ष्यध्वम

### ८६३ बल्हि ( बल्ह् ) प्राधान्ये ।

१ बिबल्हि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिबल्हिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिबल्हि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिबल्हि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिबल्हिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ बिबल्हिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
बिबल्हिषाम्बभूव बिबल्हिषामास (य वहि महि
७ बिबल्हिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिबल्हिषिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिबल्हिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिबल्हिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

### ८६२ बर्हि ( बर्ह् ) प्राधान्ये ।

१ बिबर्हि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिबर्हिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिबर्हि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिबर्हि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिबर्हिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ बिबर्हिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिबर्हिषाञ्चक्रे बिबर्हिषामास (य वहि महि
७ बिबर्हिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिबर्हिषिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिबर्हिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिबर्हिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### ८६४ बर्हि (बर्ह्) परिभाषणहिंसाच्छादनेषु ।

१ बिबर्हि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिबर्हिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिबर्हि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षाणहै
४ अबिबर्हि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिबर्हिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिबर्हिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिबर्हिषाञ्चक्रे बिबर्हिषाम्बभूव [य वहि महि
७ बिबर्हिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिबर्हिषिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिबर्हिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिबर्हिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



८६५ बलिह (बल्ह्) परिभाषणहिंसाच्छादनेषु ।

१ बिबलिह–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिबलिहिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिबलिह–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिबलिह–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिबलिहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिबलिहिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम बिबलिहिषाञ्चक्रे बिबलिहिषाम्बभूव [य वहि महि
७ बिबलिहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिबलिहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिबलिहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिबलिहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

८६६ वेहृङ् ( वेह् ) प्रयत्ने ।

१ विवेहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवेहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवेहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवेहि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवेहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ विवेहिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम विवेहिषाञ्चक्रे विवेहिषामास (य वहि महि
७ विवेहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवेहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवेहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवेहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

८६७ जेहृङ् ( जेह् ) प्रयत्ने ।

१ जिजेहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिजेहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिजेहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिजेहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिजेहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाःषाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिजेहिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे जिजेहिषाम्बभूव जिजेहिषामास (य वहि महि
७ जिजेहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिजेहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिजेहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिजेहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

८६८ वाहृङ् ( वाह् ) प्रयत्ने ।

१ विवाहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवाहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ विवाहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवाहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवाहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवाहिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम विवाहिषाञ्चक्रे विवाहिषामास (य वहि महि
७ विवाहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवाहिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवाहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवाहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८६९ द्राहृङ् ( द्राह् ) निक्षेपे ।

१ दिद्राहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिद्राहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ दिद्राहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिद्राहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिद्राहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिद्राहिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिद्राहिषाञ्चक्रे दिद्राहिषामास (य वहि महि
७ दिद्राहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिद्राहिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिद्राहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिद्राहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८७० ऊहि ( ऊह् ) तर्के ।

१ ऊजिहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ऊजिहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ऊजिहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ औजिहि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ औजिहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ ऊजिहिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ऊजिहिषाञ्चक्रे ऊजिहिषामास (य वहि महि
७ ऊजिहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ऊजिहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ऊजिहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०औजिहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८७१ गाहौङ् ( गाह् ) विलोडने ।

१ जिगाहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगाहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगाहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिगाहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगाहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगाहिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिगाहिषाम्बभूव जिगाहिषामास (य वहिमहि
७ जिगाहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिगाहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगाहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिगाहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्
पक्षे जिघा–क्षते क्षेते क्षन्ते क्षसे क्षेथे क्षध्वे क्षे क्षावहे क्षामहे इ०

### ८७२ ग्लहौङ् ( ग्लह् ) ग्रहणे ।

१ जिग्लहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिग्लहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिग्लहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षाणहै
४ अजिग्लहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिग्लहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिग्लहिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिग्लहिषाञ्चक्रे जिग्लहिषाम्बभूव [य वहिमहि
७ जिग्लहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिग्लहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिग्लहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिग्लहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम
पक्षे जिघ्ल–क्षत क्षेते क्षन्ते क्षसे क्षेथे क्षध्वे क्षे क्षावहेक्षामहे इ०

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ८७३ बहुङ् ( बंह् ) वृद्धौ ।

१ बिबंहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिबंहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिबंहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिबंहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अबिबंहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिबंहिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे बिबंहिषाम्बभूव बिबंहिषामास (य वहि महि
७ बिबंहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिबंहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिबंहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अबिबंहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८७४ महुङ् ( मंह् ) वृद्धौ ।

१ मिमंहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमंहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमंहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षाणहै
४ अमिमंहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमंहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमंहिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमंहिषाञ्चक्रे मिमंहिषाम्बभूव [य वहि महि
७ मिमंहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमंहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमंहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यते ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अमिमंहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८७५ दक्षि ( दक्ष् ) शैघ्र्ये च ।

१ दिदक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदक्षिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिदक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदक्षिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदक्षिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दिदक्षिषाञ्चक्रे दिदक्षिषामास (य वहि महि
७ दिदक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदक्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदक्षिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ८७६ धुक्षि (धुक्ष्) सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु ।

१ दुधुक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दुधुक्षिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दुधुक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदुधुक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदुधुक्षिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दुधुक्षिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे दुधुक्षिषाम्बभूव दुधुक्षिषामास (य वहि महि
७ दुधुक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दुधुक्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दुधुक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदुधुक्षिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८७७ धिक्षि (धिक्ष्) संदीपनक्लेशनजीवनेषु ।

१ दिधिक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिधिक्षिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिधिक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अदिधिक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अदिधिक्षिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिधिक्षिषाञ्च-के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
दिधिक्षिषाम्बभूव दिधिक्षिषामास [य वहि महि
७ दिधिक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिधिक्षिषिता–" रौ र: से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिधिक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिधिक्षिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

## ८७९ शिक्षि ( शिक्ष् ) विद्योपादाने ।

१ शिशिक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२शिशिक्षिषे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशिक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशिक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशिक्षिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६शिशिक्षिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशिक्षिषाञ्चक्रे शिशिक्षिषामास (य वहि महि
७ शिशिक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशिक्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशिक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिशिक्षिषि-ष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

## ८७८ वृक्षि ( वृक्ष् ) वरणे ।

१ विवृक्षि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवृक्षिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवृक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवृक्षि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवृक्षिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६विवृक्षिषाञ्च-के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
विवृक्षिषाम्बभूव विवृक्षिषामास (य वहि महि
७ विवृक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवृक्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवृक्षिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवृक्षिषि- ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८८० भिक्षि ( भिक्ष् ) याञ्चायाम् ।

१ बिभिक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभिक्षिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभिक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभिक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभिक्षिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभिक्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभिक्षिषाञ्चक्रे बिभिक्षिषाम्बभूव (य वहि महि
७ बिभिक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभिक्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभिक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अबिभिक्षिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथामष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



८८१ दीक्षि ( दीक्ष् ) मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु ।

१ दिदीक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदीक्षिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदीक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिदीक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदीक्षिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदीक्षिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दिदीक्षिषाञ्चक्रे दिदीक्षिषामास (य वहि महि
७ दिदीक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदीक्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदीक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदीक्षिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

८८२ ईक्षि ( ईक्ष् ) दर्शने ।

१ ईचिक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ईचिक्षिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ईचिक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ ऐचिक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ ऐचिक्षिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ईचिक्षिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृड्ढ्वे क्रे कृवहे कृमहे ईचिक्षिषाम्बभूव ईचिक्षिषामास (य वहि महि
७ ईचिक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ईचिक्षिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ईचिक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० ऐचिक्षिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम–तीर्थरक्षणपरायण-विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि–अखण्ड-विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे

तृतीयभागे

॥ भ्वादावात्मनेपदिनः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ॥ अथोभयपदिनः ॥

### ८८३ श्रिग् ( श्रि ) सेवायाम् ।

१ शिश्रयिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रयिषा-मि वः मः
२ शिश्रयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्रयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रयिषा-णि व म (व म
४ अशिश्रयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रयिषा-
५ अशिश्रयि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्रयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्रयिषाञ्चकार शिश्रयिषामास
७ शिश्रयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रयिषिष्या-
मि वः मः (अशिश्रयिषिष्या-व म
१० अशिश्रयिषिष्य-त ताम न : तम त म्
पक्षे शिश्रयि-स्थाने शिश्री-इति ज्ञेयम्

१ शिश्रयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिश्रयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ शिश्रयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिश्रयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिश्रयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिश्रयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्रयिषाञ्चक्रे शिश्रयिषामास (य वहि महि
७ शिश्रयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिश्रयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिश्रयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिश्रयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे शिश्रयि-स्थाने शिश्री-इति ज्ञेयम्

### ८८४ णींग् ( नी ) प्रापणे ।

१ निनीष-ति तः न्ति सि थः थ निनीषा-मि वः मः
२ निनीषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनीष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनीषा-णि व म
४ अनिनीष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनीषा-व म
५ अनिनी-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनीषाञ्च कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
निनीषाम्बभूव निनीषामास
७ निनीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनीषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनीषिष्या-मि
वः मः ( अनिनीषिष्या-व म
१० अनिनीषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ निनी-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनीषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनी-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अनिनी-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनीषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनीषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनीषाञ्चक्रे निनीषामास (य वहि महि
७ निनीषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनीषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनीषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनीषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**८८५ हृंग् ( हृ ) हरणे ।**

१ जिहीर्ष–ति तः न्ति सि थः थ जिहीर्षा–मि वः मः
२ जिहीर्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहीर्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहीर्षा–णि व म
४ अजिहीर्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिहीर्षा–व म
५ अजिहीर्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ जिहीर्षाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिहीर्षाम्बभूव जिहीर्षामास
७ जिहीर्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहीर्षिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहीर्षिष्य–ति तःन्ति सि थः थ जिहीर्षिष्या–मि वः मः
(अजिहीर्षिष्या–व म
१० अजिहीर्षिष्य–त् ताम न् : तम् त म

१ जिहीर्–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिहीर्षे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिहीर्–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिहीर्–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिहीर्षि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिहीर्षाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिहीर्षाञ्चक्रे जिहीर्षामास (य वहि महि
७ जिहीर्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिहीर्षिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिहीर्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिहीर्षि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**८८६ भृंग् ( भृ ) भरणे ।**

१ बिभरिष–ति तः न्ति सि थः थ बिभरिषा–मि वः मः
२ बिभरिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभषरि–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभरिषा–णि व म
४ अबिभरिष–त् ताम् न् : तम् त म् अबिभरिषा–व म
५ अबिभरि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभरिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभरिषामास बिभरिषाञ्चकार
७ बिभरिषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभरिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभरिषिष्य–ति त न्ति सि थः थ बिभरिषिष्या–मि
वः मः (अबिभरिषिष्या–व म
१० अबिभरिविष्य–त् ताम् न् : तम त म
पक्षे बिभरि–स्थाने बुभूर्–इति ज्ञेयम्

१ बिभरि–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभरिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ बिभरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिभरि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभरिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभरिषाञ्च–के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहेकृमहे
बिभरिषाम्बभूव बिभरिषामास (य वहि महि
७ बिभरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभरिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८८७ धृंग् ( धृ ) धारणे ।

१ दिधीर्ष–ति तः न्ति सि थः थ दिधीर्षा–मि वः मः
२ दिधीर्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधीर्ष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
दिधीर्षा–णि व म
४ अदिधर्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अदिधीर्षा–व म
५ अदिधीर्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिधीर्षामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिधीर्षाञ्चकार दिधीर्षाम्बभूव
७ दिधीर्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधीर्षिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधीर्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिधीर्षिष्या–मि वः मः
( अदिधीर्षिष्या–व म
१० अदिधीर्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१ दिधीर्–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिधीर्षे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिधीर्–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिधीर्–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिधीर्षि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिधीर्षामा–स सतुः सु सिथ सथुः स स सिव सिम
दिधीर्षाञ्चक्रे दिधीर्षाम्बभूव (य वहि महि
७ दिधीर्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिधीर्षिता–” रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिधीर्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिधीर्षि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ८८८ डुकृंञ् ( कृ ) करणे ।

१ चिकीर्ष–ति तः न्ति सि थ. थचिकीर्षा–मि वः मः
२ चिकीर्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकीर्ष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
चिकीर्षा–णि व म
४ अचिकीर्ष–त् ताम् न् : तम् त म अचिकीर्षा–व म
५ अचिकीर्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकीर्षाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकीर्षाञ्चकार चिकीर्षामास
७ चिकीर्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकीर्षिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकीर्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिकीर्षिष्या–मि
वः मः (अचिकीर्षिष्या–व म
१० अचिकीर्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१ चिकीर्–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकीर्षे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकीर्–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिकीर्–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकीर्षि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकीर्षामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकीर्षाञ्चक्रे चिकीर्षाम्बभूव (य वहि महि
७ चिकीर्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकीर्षिता–” रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकीर्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिकीर्षि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८८९ हिक्की ( हिक्क् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१ जिहिक्किष-ति तः न्ति सि थः थ जिहिक्किषा-मि वः मः
२ जिहिक्किषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहिक्किष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहिक्किषा-णि व म
४ अजिहिक्किष-त् ताम् न् : तम् तम् अजिहिक्किषा-व म
५ अजिहिक्कि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहिक्किषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिहिक्किषाञ्चकार जिहिक्किषाम्बभूव
७ जिहिक्किष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहिक्किषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहिक्किषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहिक्किषिष्या-
मि वः मः ( अजिहिक्किषिष्या-व म
१० अजिहिक्किषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१ जिहिक्कि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिहिक्किषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिहिक्कि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिहिक्कि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिहिक्किषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिहिक्किषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिहिक्किषाञ्चक्रे जिहिक्किषाम्बभूव (य वहि महि
७ जिहिक्किषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिहिक्किषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिहिक्किषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिहिक्किषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८९० अञ्चूग् ( अञ्च् ) गतौ च ।

१ अञ्चिचिष-ति तः न्ति सि थः थ अञ्चिचिषा-मि वः मः
२ अञ्चिचिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अञ्चिचिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्चिचिषा-णि व म
४ आञ्चिचिष-त् ताम् न् : तम् त म आञ्चिचिषा-व म
५ आञ्चिचि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अञ्चिचिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अञ्चिचिषाञ्चकार अञ्चिचिषामास
७ अञ्चिचिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्चिचिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अञ्चिचिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अञ्चिचिषिष्या-
मि वः मः (आञ्चिचिषिष्या-व म
१० आञ्चिचिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ अञ्चिचि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अञ्चिचिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अञ्चिचि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ आञ्चिचि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आञ्चिचिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अञ्चिचिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अञ्चिचिषाञ्चक्रे अञ्चिचिषाम्बभूव (य वहि महि
७ अञ्चिचिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अञ्चिचिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अञ्चिचिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आञ्चिचिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ८९१ याचृ ( याच् ) याच्ञायाम् ।

१ यियाचिष-ति तः न्ति सि थः थ यियाचिषा-मि वः मः
२ यियाचिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ यियाचिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
यियाचिषा-णि व म
४ अयियाचिष-त् ताम् न् ः तम् तम् अयियाचिषा-व म
५ अयियाचि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ यियाचिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
यियाचिषाञ्चकार यियाचिषाम्बभूव
७ यियाचिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ यियाचिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ यियाचिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ यियाचिषिष्या-
मि वः मः ( अयियाचिषिष्या-व म
१० अयियाचिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

१ यियाचि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ यियाचिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ यियाचि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अयियाचि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अयियाचिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ यियाचिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
यियाचिषाञ्चक्रे यियाचिषाम्बभूव (य वहि महि
७ यियाचिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ यियाचिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ यियाचिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अयियाचिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ८९२ डुपचींष् ( पच् ) पाके ।

१ पिपक्ष-ति तः न्ति सि थः थ पिपक्षा-मि वः मः
२ पिपक्षे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ पिपक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपक्षा-णि व म
४ अपिपक्ष-त् ताम् न् ः तम् त म अपिपक्षा-व म
५ अपिप-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ पिपक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपक्षाञ्चकार पिपक्षामास
७ पिपक्ष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपक्षिष्या-मि वः मः
( अपिपक्षिष्या-व म
१० अपिपक्षिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

१ पिपक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिपक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपक्षाञ्चक्रे पिपक्षाम्बभूव (य वहि महि
७ पिपक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



८९३ राजृग् ( राज् ) दीप्तौ ।

१ रिराजिष-ति तः न्ति सि थः थ रिराजिषा-मि वः मः
२ रिराजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिराजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिराजिषा-णि व म
४ अरिराजिष-त् ताम् न् : तम् तम् अरिराजिषा-व म
५ अरिराजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रिराजिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिराजिषाञ्चकार रिराजिषाम्बभूव
७ रिराजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिराजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिराजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिराजिषिष्या-मि वः मः (अरिराजिषिष्या-व म
१० अरिराजिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

१ रिराजि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिराजिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिराजि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिराजि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिराजिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिराजिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिराजिषाञ्चक्रे रिराजिषाम्बभूव (य वहि महि
७ रिराजिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिराजिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिराजिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिराजिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

८९४ टुभ्राजि (भ्राज्) दीप्तौ । भ्राजि ६६१ वद्रूपाणि

८९५ भर्जी ( भज् ) सेवायाम् ।

१ बिभक्ष-ति तः न्ति सि थः थ बिभक्षा-मि वः मः
२ बिभक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभक्षा-णि व म
४ अबिभक्ष-त् ताम् न् : तम् त म अबिभक्षा-व म
५ अबिभक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ बिभक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभक्षाञ्चकार बिभक्षामास
७ बिभक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभक्षिष्या-मि वः मः ( अबिभक्षिष्या-व म
१० अबिभक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
कषयोः क्षो ज्ञेयः

१ बिभक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभक्षाञ्चक्रे बिभक्षाम्बभूव (य वहि महि
७ बिभक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
कषयोः क्षो ज्ञेयः

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



८९२ रञ्जीँ ( रञ्ज् ) रागे ।

१ रिरङ्क्ष-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्क्षा-मि वः मः
२ रिरङ्क्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरङ्क्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरङ्क्षा-णि व म
४ अरिरङ्क्ष-त् ताम् न् : तम् त म अरिरङ्क्षा-व म
५ अरिरङ्-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम् क्षिष्व क्षिष्म
६ रिरङ्क्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरङ्क्षाञ्चकार रिरङ्क्षामास
७ रिरङ्क्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरङ्क्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरङ्क्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्क्षिष्या-मि वः म ( अरिरङ्क्षिष्या-व म
१० अरिरङ्क्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ रिरङ्क्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरङ्क्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरङ्क्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरङ्क्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरङ्क्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरङ्क्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरङ्क्षाञ्चक्रे रिरङ्क्षाम्बभूव (य वहि महि
७ रिरङ्क्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरङ्क्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरङ्क्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरङ्क्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
कषयोः क्षो ज्ञेय

८९१ रेटृग् ( रेट् ) परिभाषणयाचनयोः ।

१ रिरेटिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरेटिषा-मि वः मः
२ रिरेटिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरेटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरेटिषा-णि व म
४ अरिरेटिष-त् ताम् न् : तम् तम् अरिरेटिषा-व म
५ अरिरेटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रिरेटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरेटिषाञ्चकार रिरेटिषाम्बभूव
७ रिरेटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरेटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरेटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरेटिषिष्या-मि वः मः ( अरिरेटिषिष्या-व म
१० अरिरेटिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१ रिरेटि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरेटिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरेटि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरिरेटि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरेटिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरेटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरेटिषाञ्चक्रे रिरेटिषाम्बभूव (य वहि महि
७ रिरेटिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरेटिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरेटिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरेटिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



८९८ वेणृग् ( वेण् ) गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु ।

१ विवेणिष-ति तः न्ति सि थः थ विवेणिषा-मि वः मः
२ विवेणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवेणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवेणिषा-णि व म
४ अविवेणिष-त् ताम न् : तम् त म् अविवेणिषा-व म
५ अविवेणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ विवेणिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवेणिषाञ्चकार विवेणिषाम्बभूव
७ विवेणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवेणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवेणिषिष्या-मि वः मः (अविवेणिषिष्या-व म
१० अविवेणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

८९९ चतेग् ( चत् ) याचने ।

१ चिचतिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचतिषा-मि वः मः
२ चिचतिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचतिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिचतिषा-णि व म
४ अचिचतिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचतिषा-व म
५ अचिचति-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ चिचतिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार चिचतिषाम्बभूव चिचतिषामास
७ चिचतिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचतिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचतिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचतिषिष्या-मि वः मः (अचिचतिषिष्या-व म
१० अचिचतिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ विवेणि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवेणिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ विवेणि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवेणि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवेणिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ विवेणिषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे विवेणिषाम्बभूव विवेणिषामास (य वहि महि
७ विवेणिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवेणिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवेणिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवेणिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ चिचति-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचतिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचति-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिचति-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचतिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिचतिषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे चिचतिषाम्बभूव चिचतिषामास (य वहि महि
७ चिचतिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचतिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचतिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिचतिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९०० प्रोथृग् ( प्रोथ् ) पर्याप्तौ ।

१ पुप्रोथिष-ति तः न्ति सि थः थ पुप्रोथिषा-मि वः मः
२ पुप्रोथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुप्रोथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुप्रोथिषा-णि व म
४ अपुप्रोथिष-त् ताम न्: तम् त म् अपुप्रोथिषा-व म
५ अपुप्रोथि-षीत् षिष्टाम् षिषु: षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुप्रोथिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पुप्रोथिषाञ्चकार पुप्रोथिषाम्बभूव
७ पुप्रोथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुप्रोथिषिता-" रौ रः सि स्थ. स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुप्रोथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुप्रोथिषिष्या-
मि वः मः (अपुप्रोथिषिष्या-व म
१० अपुप्रोथिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१ पुप्रोथि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पुप्रोथिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ पुप्रोथि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपुप्रोथि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् ये
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अपुप्रोथिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ पुप्रोथिषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
पुप्रोथिषाम्बभूव पुप्रोथिषामास (य वहि महि
७ पुप्रोथिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पुप्रोथिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पुप्रोथिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपुप्रोथिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

९०१ मिथृग् ( मिथ् ) मेधाहिंसनयो ।

१ मिमिथिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमिथिषा-मि वः मः
२ मिमिथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमिथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
मिमिथिषा-णि व म
४ अमिमिथिष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमिथिषा-व म
५ अमिमिथि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ मिमिथिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
मिमिथिषाम्बभूव मिमिथिषामास
७ मिमिथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमिथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमिथिषिष्या-
मि वः मः (अमिमिथिषिष्या-व म
१० अमिमिथिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म
पक्षे मिमि-स्थाने मिमे-इति ज्ञेयम्

१ मिमिथि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमिथिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमिथि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमिमिथि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमिथिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमिथिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
मिमिथिषाम्बभूव मिमिथिषामास (य वहि महि
७ मिमिथिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमिथिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमिथिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अमिमिथिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे मिमि-स्थाने मिमे-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९०२ मेथृग् ( मेथ् ) संगमे च ।

१ मिमेथिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमेथिषा-मि वः मः
२ मिमेथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमेथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमेथिषा-णि व म
४ अमिमेथिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमेथिषा-व म
५ अमिमेथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमेथिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमेथिषाञ्चकार मिमेथिषाम्बभूव
७ मिमेथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमेथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमेथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमेथिषिष्या-मि वः मः (अमिमेथिषिष्या-व म
१० अमिमेथिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

९०३ चदेग् ( चद् ) याचने ।

१ चिचदिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचदिषा-मि वः मः
२ चिचदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिचदिषा-णि व म
४ अचिचदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचदिषा-व म
५ अचिचदि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिचदिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर-कृम कृव चिचदिषाम्बभूव चिचदिषामास
७ चिचदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचदिषिष्या-मि वः मः (अचिचदिषिष्या-व म
१० अचिचदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ मिमेथि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमेथिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ मिमेथि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमेथि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमेथिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम
६ मिमेथिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे मिमेथिषाम्बभूव मिमेथिषामास (य वहि महि
७ मिमेथिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमेथिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमेथिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमेथिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ चिचदि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचदि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिचदि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम्
६ चिचदिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे चिचदिषाम्बभूव चिचदिषामास (य वहि महि
७ चिचदिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचदिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचदिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिचदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ९०४ ऊबुन्दृग् ( बुन्द् ) निशामने ।

१ बुबुन्दिष-ति तः न्ति सि थः थ बुबुन्दिषा-मि वः मः
२ बुबुन्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बुबुन्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुबुन्दिषा-णि व म
४ अबुबुन्दिष-त् ताम न् : तम् त म् अबुबुन्दिषा-व म
५ अबुबुन्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ बुबुन्दिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बुबुन्दिषाञ्चकार बुबुन्दिषाम्बभूव
७ बुबुन्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुबुन्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्म
९ बुबुन्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुबुन्दिषिष्या-
मि व मः (अबुबुन्दिषिष्या-व म
१० अबुबुन्दिषिष्य-त ताम न् : तम् त म्

१ बुबुन्दि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बुबुन्दिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ बुबुन्दि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबुबुन्दि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अबुबुन्दिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ बुबुन्दिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
बुबुन्दिषाम्बभूव बुबुन्दिषामास (य वहि महि
७ बुबुन्दिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बुबुन्दिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बुबुन्दिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबुबुन्दिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ९०५ णिदृग् ( निद् ) कुत्सासन्निकर्षयोः ।

१ निनिदिष-ति तः न्ति सि थः थ निनिदिषा-मि वः मः
२ निनिदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनिदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
निनिदिषा-णि व म
४ अनिनिदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनिदिषा-व म
५ अनिनिदि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कार क्रम कृव
६ निनिदिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
निनिदिषाम्बभूव निनिदिषामास
७ निनिदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनिदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनिदिषि-
ष्या-मि वः मः (अनिनिदिषिष्या-व म
१० अनिनिदिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म
पक्षे निनि-स्थाने निने-इति ज्ञेयम्

१ निनिदि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनिदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनिदि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अनिनिदि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनिदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनिदिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
निनिदिषाम्बभूव निनिदिषामास (य वहि महि
७ निनिदिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनिदिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनिदिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनिदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम
पक्षे निनि-स्थाने निने-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९०६ णेदृग् ( नेद् ) कुत्सासन्निकर्षयोः ।

१ निनेदिष-ति तः न्ति सि थः थ निनेदिषा-मि वः मः
२ निनेदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनेदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनेदिषा-णि व म
४ अनिनेदिष-त् ताम न्ः तम् त म् अनिनेदिषा-व म
५ अनिनेदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ निनेदिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स म सिव सिम
निनेदिषाञ्चकार निनेदिषाम्बभूव
७ निनेदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनेदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनेदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनेदिषिष्या-
मि व. मः (अनिनेदिषिष्या-व म
१० अनिनेदिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१ निनेदि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनेदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ निनेदि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अनिनेदि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनेदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ निनेदिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वेक्रे कृवहे कृमहे
निनेदिषाम्बभूव निनेदिषामास (य वहि महि
७ निनेदिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनेदिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनेदिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनेदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

९०७ मिदृग् ( मिद् ) मेधाहिंसयो ।

१ मिमिदिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमिदिषा-मि वः मः
२ मिमिदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमिदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमिदिषा-णि व म
४ अमिमिदिष-त् ताम् न्: तम् त म् अमिमिदिषा-व म
५ अमिमिदि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ मिमिदिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
मिमिदिषाम्बभूव मिमिदिषामास
७ मिमिदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ मिमिदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमिदिषिष्या-
मि वः मः (अमिमिदिषिष्या-व म
१० अमिमिदिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म
पक्षे मिमि-स्थाने मिमे-इति ज्ञेयम्

१ मिमिदि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमिदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमिदि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमिमिदि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमिदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमिदिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मिमिदिषाम्बभूव मिमिदिषामास (य वहि महि
७ मिमिदिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमिदिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमिदिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमिदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे मिमि-स्थाने मिमे-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar ...

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९०८ मेदृग् ( मेद् ) मेधाहिंसयोः ।

१ **मिमेदिष**–ति तः न्ति सि थः थ **मिमेदिषा**-मि वः मः
२ **मिमेदिषे**–त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ **मिमेदिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**मिमेदिषा**–णि व म
४ **अमिमेदिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अमिमेदिषा**–व म
५ **अमिमेदि** षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ **मिमेदिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**मिमेदिषामास** **मिमेदिषाञ्चकार**
७ **मिमेदिष्या**-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **मिमेदिषिता**– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **मिमेदिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **मिमेदिषिष्या**-
मि वः मः (**अमिमेदिषिष्या**-व म
१० **अमिमेदिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म

१ **मिमेदि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमेदिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ **मिमेदि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अमिमेदि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमेदिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमेदिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**मिमेदिषाम्बभूव** **मिमेदिषामास** (य वहि महि
७ **मिमेदिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमेदिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमेदिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमेदिषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ९०९ मेधृग् ( मेध् ) संगमे च ।

१ **मिमेधिष**–ति तः न्ति सि थः थ **मिमेधिषा**–मि वः म.
२ **मिमेधिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **मिमेधिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**मिमेधिषा**–णि व म
४ **अमिमेधिष** त् ताम् न् : तम् त म् **अमिमेधिषा**-व म
५ **अमिमेधि**–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ **मिमेधिषाञ्च**–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
**मिमेधिषाम्बभूव** **मिमेधिषामास**
७ **मिमेधिष्या**-त स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **मिमेधिषिता**– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **मिमेधिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **मिमेधिषिष्या**-मि
वः मः (**अमिमेधिषिष्या** -व म
१० **अमिमेधिषिष्य**–त् ताम न् : तम् त म

१ **मिमेधि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमेधिषे** त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमेधि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अमिमेधि**–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमेधिषि** ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमेधिषाम्बभू** ब वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**मिमेधिषाञ्चक्रे** **मिमेधिषामास** (य वहि महि
७ **मिमेधिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमेधिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमेधिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमेधिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९१० शृधूग् ( शृध् ) उन्दे ।

१ **शिशर्धिष**–ति तः न्ति सि थः थ **शिशर्धिषा**–मि वः मः
२ **शिशर्धिषे**–त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ **शिशर्धिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**शिशर्धिषा**–णि व म
४ **अशिशर्धिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अशिशर्धिषा**–व म
५ **अशिशर्धि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **शिशर्धिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**शिशर्धिषामास शिशर्धिषाञ्चकार**
७ **शिशर्धिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **शिशर्धिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **शिशर्धिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **शिशर्धिषिष्या**–मि वः मः (**अशिशर्धिषिष्या**–व म
१० **अशिशर्धिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

१ **शिशर्धि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शिशर्धिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ **शिशर्धि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अशिशर्धि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अशिशर्धिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **शिशर्धिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**शिशर्धिषाम्बभूव शिशर्धिषामास** (य वहि महि
७ **शिशर्धिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शिशर्धिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शिशर्धिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशिशर्धिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### ९११ मृधूग् ( मृध् ) उन्दे ।

१ **मिमर्धिष**–ति तः न्ति सि थः थ **मिमर्धिषा**–मि वः मः
२ **मिमर्धिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **मिमर्धिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**मिमर्धिषा**–णि व म
४ **अमिमर्धिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अमिमर्धिषा**–व म
५ **अमिमर्धि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म
६ **मिमर्धिषाञ्च**–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
**मिमर्धिषाम्बभूव मिमर्धिषामास**
७ **मिमर्धिष्या**–त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **मिमर्धिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **मिमर्धिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **मिमर्धिषिष्या**–मि वः मः (**अमिमर्धिषिष्या**–व म
१० **अमिमर्धिषिष्य**–त् ताम न् : तम् त म

१ **मिमर्धि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमर्धिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमर्धि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अमिमर्धि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमर्धिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमर्धिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**मिमर्धिषाञ्चक्रे मिमर्धिषामास** (य वहि महि
७ **मिमर्धिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **मिमर्धिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमर्धिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमर्धिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९१२ बुधृग् ( बुध् ) बोधने ।

१ बुबुधिष–ति तः न्ति सि थः थ बुबुधिषा–मि वः मः
२ बुबुधिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बुबुधिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
बुबुधिषा–णि व म
४ अबुबुधिष–त् ताम् न् : तम् त म् अबुबुधिषा–व म
५ अबुबुधि–षीत् षिष्टाम् षिषु: षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ बुबुधिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
बुबुधिषाम्बभूव बुबुधिषामास
७ बुबुधिष्या–त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुबुधिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुबुधिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बुबुधिषिष्या–मि वः मः (अबुबुधिषिष्या–व म
१० अबुबुधिषिष्य–त ताम न : तम त म
पक्षे बुबु–स्थाने बुबो–इति ज्ञेयम्

१ बुबुधि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बुबुधिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बुबुधि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबुबुधि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबुबुधिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बुबुधिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बुबुधिषाञ्चक्रे बुबुधिषामास (य वहि महि
७ बुबुधिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बुबुधिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बुबुधिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबुबुधिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे बुबु–स्थाने बुबो–इति ज्ञेयम्

९१३ खनूग् ( खन् ) अवदारणे ।

१ चिखनिष–ति तः न्ति सि थः थ चिखनिषा–मि वः मः
२ चिखनिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखनिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
चिखनिषा–णि व म
४ अचिखनिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिखनिषा–व म
५ अचिखनि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिखनिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिखनिषामास चिखनिषाञ्चकार
७ चिखनिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखनिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखनिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिनिषिष्या–मि वः मः (अचिखनिषिष्या–व म
१० अचिखनिषिष्य–त् ताम् न् : तम त म्

१ चिखनि–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिखनिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ चिखनि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिखनि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिखनिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिखनिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिखनिषाम्बभूव चिखनिषामास (य वहि महि
७ चिखनिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिखनिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिखनिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिखनिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९१४ दानी ( दान् ) अवखण्डने । तत्रार्जवे

१ दिदांसिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदांसिषा-मि वः मः
२ दिदांसिषि-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदांसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदांसिषा-णि व म
४ अदिदांसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदांसिषा-व म
५ अदिदांसि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदांसिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क ककार कर कृव कृम
दिदांसिषाम्बभूव दिदांसिषामास
७ दिदांसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदांसिषिता - " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदांसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदांसिषिष्या-
मि वः मः ( अदिदांसिषिष्या-व म
१० अदिदांसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ दिदांसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदांसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदांसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदांसि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदांसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ दिदांसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिदांसिषाञ्चक्रे दिदांसिषामास (य वहि महि
७ दिदांसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदांसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदांसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदांसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

९१५ शानो ( शान् ) तेजने । तत्र निशाने

१ शिशांसिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशांसिषा-मि वः मः
२ शिशांसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशांसिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशांसिषा-णि व म (व म
४ अशिशांसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशांसिषा-
५ अशिशांसि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशांसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशांसिषाञ्चकार शिशांसिषामास
७ शिशांसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशांसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशांसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशांसिषि-
ष्या-मि वः मः (अशिशांसिषिष्या -व म
१० अशिशांसिषिष्य-त् ताम न : तम त म्

१ शिशांसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशांसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ शिशांसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिशांसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशांसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः ाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशांसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशांसिषाञ्चक्रे शिशांसिषामास (य वहि महि
७ शिशांसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशांसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशांसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशांसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ९१६ शपीं ( शप् ) आक्रोशे ।

१ शिशप्स-ति तः न्ति सि थः थ शिशप्सा-मि वः म.
२ शिशप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशप्सा-णि व म
४ अशिशप्स-त ताम् न् : तम् त म् अशिशप्सा-व म
५ अशिशप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ शिशप्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशप्साञ्चकार शिशप्सामास
७ शिशप्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशप्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशप्सिष्या-मि वः मः ( अशिशप्सिष्या-व म
१० अशिशप्सिष्य-त ताम न : तम् त म्

१ शिशप्- सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ शिशप्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ शिशप्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अशिशप्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशप्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशप्साम्बभू-व वतुः वु विथ वथुः व व विव विम
शिशप्साञ्चक्रे शिशप्सामास (य वहि महि
७ शिशप्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशप्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशप्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशप्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ९१७ चायृग् ( चाय् ) पूजानिशामनयोः ।

१ चिचायिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचायिषा-मि वः मः
२ चिचायिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचायिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचायिषा-णि व म
४ अचिचायिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचायिषा-व म
५ अचिचायि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचायिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
चिचायिषाम्बभूव चिचायिषामास
७ चिचायिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचायिषिता "रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ चिचायिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचायिषिष्या-मि वः मः ( अचिचायिषिष्या-व म
१० अचिचायिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ चिचायि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचायिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचायि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिचायि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचायिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ चिचायिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचायिषाञ्चक्रे चिचायिषामास (य वहि महि
७ चिचायिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचायिषिता-" रौ रः से साथे ध्वें हे स्वहे स्महे
९ चिचायिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिचायिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथामृष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**९१८ व्ययी ( व्यय् ) गतौ ।**

१ **विव्ययिष**-ति तः न्ति सि थः थ **विव्ययिषा**-मि वः मः
२ **विव्ययिषे**-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **विव्ययिष**-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
**विव्ययिषा**-णि व म
४ **अविव्ययिष**-त् ताम् न् ः तम् त म् **अविव्ययिषा**-व म
५ **अविव्ययि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **विव्ययिषाञ्च**-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क ककार कर कृव कृम
**विव्ययिषाम्बभूव विव्ययिषामास**
७ **विव्ययिष्या**-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विव्ययिषिता** '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ **विव्ययिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विव्ययिषिष्या**-मि वः मः ( **अविव्ययिषिष्या**-व म
१० **अविव्ययिषिष्य**-त् ताम् न् ः तम् त म्

**९१९ अली ( अल् ) भूषणपर्याप्तिवारणेषु ।**

१ **अलिलिष**-ति तः न्ति सि थः थ **अलिलिषा**-मि वः मः
२ **अलिलिषे**-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **अलिलिष**-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
**अलिलिषा**-णि व म
४ **आलिलिष**-त् ताम् न् ः तम् त म् **आलिलिषा**-व म
५ **आलिलि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **अलिलिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
**अलिलिषाञ्चकार अलिलिषामास**
७ **अलिलिष्या**-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **अलिलिषिता**-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **अलिलिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **अलिलिषिष्या**-मि वः मः (**आलिलिषिष्या**-व म
१० **आलिलिषिष्य**-त ताम् न ः तम् त म्

१ **विव्ययि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विव्ययिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विव्ययि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविव्ययि**-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविव्ययिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ **विव्ययिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**विव्ययिषाञ्चक्रे विव्ययिषामास** (य वहि महि
७ **विव्ययिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विव्ययिषिता**-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विव्ययिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविव्ययिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ **अलिलि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **अलिलिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **अलिलि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **आलिलि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **आलिलिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **अलिलिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**अलिलिषाञ्चक्रे अलिलिषामास** (य वहि महि
७ **अलिलिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **अलिलिषिता**-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **अलिलिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **आलिलिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९२० धावूग् ( धाव् ) गतिशुध्योः ।

१ दिधाविष-ति तः न्ति सि थः थ दिधाविषा-मि वः मः
२ दिधाविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधाविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिधाविषा-णि व म
४अदिधाविष-त् ताम् न् :तम् तम् अदिधाविषा-व म
५ अदिधावि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिधाविषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिधाविषाञ्चकार दिधाविषाम्बभूव
७ दिधाविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधाविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिधाविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधाविषिष्या-
मि वः मः (अदिधाविषिष्या-व म
१०अदिधाविषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

९२१ चीवृग् ( चीव् ) झषीवत् ।

१चिचीविष-ति तः न्ति सि थः थ चिचीविषा-मि वः मः
२ चिचीविषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ चिचीविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचीविषा-णि व म
४अचिचीविष त् ताम् न् : तम् त म अचिचीविषा-वम
५ अचिचीवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचीविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचीविषाञ्चकार चिचीविषामास
७ चिचीविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचीविषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिचीविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचीविषिष्या
मि वः मः (अचिचीविषिष्या-व म
१०अचिचीविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ दिधावि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिधाविषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिधावि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिधावि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिधाविषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिधाविषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिधाविषाञ्चक्रे दिधाविषाम्बभूव (य वहि महि
७ दिधाविषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिधाविषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिधाविषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिधाविषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ चिचीवि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचीविषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचीवि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिचीवि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचीविषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिचीविषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचीविषाञ्चक्रे चिचीविषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिचीविषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचीविषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचीविषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिचीविषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**९२२ दाशृग् ( दाश् ) दाने ।**

१ दिदाशिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदाशिषा-मि वः मः
२ दिदाशिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदाशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदाशिषा-णि व म
४ अदिदाशिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदाशिषा-व म
५ अदिदाशि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदाशिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदाशिषाञ्चकार दिदाशिषाम्बभूव
७ दिदाशिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदाशिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदाशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदाशिषिष्या-
मि वः मः (अदिदाशिषिष्या-व म
१० अदिदाशिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ दिदाशि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदाशिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदाशि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदाशि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदाशिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदाशिषामा-स सतुः सु सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदाशिषाञ्चक्रे दिदाशिषाम्बभूव (य वहि महि
७ दिदाशिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदाशिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदाशिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदाशिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम्

**९२३ झषी ( झष् ) आदानसंवरणयोः ।**

१ जिझषिष-ति तः न्ति सि थः थ जिझषिषा-मि वः मः
२ जिझषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिझषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिझषिषा-णि व म
४ अजिझषिष-त् ताम् न् : तम् त म अजिझषिषा-व म
५ अजिझषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिझषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिझषिषाञ्चकार जिझषिषामास
७ जिझषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिझषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिझषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिझषिषिष्या-
मि वः मः ( अजिझषिषिष्या-व म
१० अजिझषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ जिझषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिझषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिझषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिझषि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिझषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिझषिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिझषिषाञ्चक्रे जिझषिषाम्बभूव (य वहि महि
७ जिझषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिझषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिझषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अजिझषिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९२४ भेषृग् ( भेष् ) भये ।

१ बिभेषिष–ति तः न्ति सि थः थ बिभेषिषा–मि वः मः
२ बिभेषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभेषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभेषिषा–णि व म
४ अबिभेषिष–त् ताम् न् : तम् त म अबिभेषिषा–व म
५ अबिभेषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभेषिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभेषिषाञ्चकार बिभेषिषामास
७ बिभेषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभेषिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभेषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभेषिषिष्या–मि वः मः ( अबिभेषिषिष्या–व म
१० अबिभेषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१ बिभेषि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभेषिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभेषि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिभेषि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभेषिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभेषिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभेषिषाञ्चक्रे बिभेषिषाम्बभूव (य वहि महि
७ बिभेषिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभेषिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभेषिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभेषिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ९२५ भ्रेषृग् ( भ्रेष् ) चलने च ।

१ बिभ्रेषिष–ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रेषिषा–मि वः मः
२ बिभ्रेषिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभ्रेषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभ्रेषिषा–णि व म
४ अबिभ्रेषिष–त् ताम् न् : तम् त म् अबिभ्रेषिषा–व म
५ अबिभ्रेषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभ्रेषिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभ्रेषिषाञ्चकार बिभ्रेषिषाम्बभूव
७ बिभ्रेषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभ्रेषिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभ्रेषिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रेषिषिष्या–मि वः मः (अबिभ्रेषिषिष्या–व म
१० अबिभ्रेषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१ बिभ्रेषि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभ्रेषिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभ्रेषि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिभ्रेषि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभ्रेषिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभ्रेषिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभ्रेषिषाञ्चक्रे बिभ्रेषिषाम्बभूव (य वहि महि
७ बिभ्रेषिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभ्रेषिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभ्रेषिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभ्रेषिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**९२६ पषी ( पष ) बाधनस्पर्शनयोः ।**

१ **पिपषिष**–ति तः न्ति सि थः थ **पिपषिषा**–मि वः मः
२ **पिपषिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **पिपषिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**पिपषिषा**–णि व म
४ **अपिपषिष**–त् ताम् न् : तम् त म **अपिपषिषा**–व म
५ **अपिपषि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **पिपषिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**पिपषिषाञ्चकार पिपषिषामास**
७ **पिपषिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **पिपषिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **पिपषिषिष्य**–ति तः न्ति सि थ थ **पिपषिषिष्या**–मि वः मः ( **अपिपषिषिष्य**–व म
१० **अपिपषिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

१ **पिपषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **पिपषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **पिपषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अपिपषि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अपिपषिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **पिपषिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**पिपषिषाञ्चक्रे पिपषिषाम्बभूव** ( य वहि महि
७ **पिपषिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **पिपषिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **पिपषिषि** ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अपिपषिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**९२७ लषी ( लष् ) कान्तौ ।**

१ **लिलषिष**–ति तः न्ति सि थः थ **लिलषिषा**–मि वः मः
२ **लिलषिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **लिलषिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**लिलषिषा**–णि व म
४ **अलिलषिष**–त् ताम् न् : तम् त म **अलिलषिषा** व म
५ **अलिलषि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **लिलषिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**लिलषिषाञ्चकार लिलषिषाम्बभूव**
७ **लिलषिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **लिलषिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **लिलषिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **लिलषिषिष्या**–मि वः मः ( **अलिलषिषिष्या**–व म
१० **अलिलषिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म

१ **लिलषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **लिलषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **लिलषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अलिलषि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अलिलषिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **लिलषिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**लिलषिषाञ्चक्रे लिलषिषाम्बभूव** ( य वहि महि
७ **लिलषिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **लिलषिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **लिलषिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अलिलषिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ९२८ चषी ( चष् ) भक्षणे ।

१ चिचषिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचषिषा-मि वः मः
२ चिचषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचषिषा-णि व म
४ अचिचषिष-त् ताम् न् : तम् त म अचिचषिषा-व म
५ अचिचषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचषिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचषिषाञ्चकार चिचषिषामास
७ चिचषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचषिषिष्या-
मि वः मः (अचिचषिषिष्या-व म
१० अचिचषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ९२९ छषी ( छष् ) हिंसायाम् ।

१ चिच्छषिष-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छषिषा-मि वः मः
२ चिच्छषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिच्छषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छषिषा-णि व म
४ अचिच्छषिष-त् ताम् न् : तम् तम् अचिच्छषिषा-व म
५ अचिच्छषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिच्छषिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिच्छषिषाञ्चकार चिच्छषिषाम्बभूव
७ चिच्छषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छषिषिष्या
मि वः मः (अचिच्छषिषिष्या-व म
१० अचिच्छषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

---

१ चिचषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिचषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिचषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिचषि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिचषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिचषिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचषिषाञ्चक्रे चिचषिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिचषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिचषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिचषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिचषिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ चिच्छषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिच्छषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिच्छषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिच्छषि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिच्छषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिच्छषिषामा-स सतुः सु सिथ सथुः स स सिव सिम
चिच्छषिषाञ्चक्रे, चिच्छषिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिच्छषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिच्छषिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिच्छषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिच्छषिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९३० त्विषीं ( त्विष् ) दीप्तौ ।

१ तित्विक्ष-ति तः न्ति सि थः थ तित्विक्षा-मि वः मः
२ तित्विक्षे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ तित्विक्ष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तित्विक्षा-णि व म
४ अतित्विक्ष-त् ताम न् ः तम् त म् अतित्विक्षा-व म
५ अतित्वि-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम
क्षिष्व क्षिष्म
६ तित्विक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तित्विक्षाञ्चकार तित्विक्षाम्बभूव
७ तित्विक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्विक्षिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्विक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्विक्षिष्या-
मि वः मः (अतित्विक्षिष्या-व म
१० अतित्विक्षिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

१ तित्विक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तित्विक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ तित्विक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतित्विक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतित्विक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ तित्विक्षाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तित्विक्षाम्बभूव तित्विक्षामास (य वहि महि
७ तित्विक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तित्विक्षिता-” रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तित्विक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतित्विक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

९०७ अर्षी :( अष् ) गत्यादानयोश्च ।

१ अषिषिष-ति तः न्ति सि थः थ अषिषिषा-मि वः मः
२ अषिषिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ अषिषिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात तम् त
अषिषिषा-णि व म
४ आषिषिष-त् ताम् न् ः तम् त म् आषिषिषा-व म
५ आषिषि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ अषिषिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
अषिषिषाम्बभूव अषिषिषामास
७ अषिषिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अषिषिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अषिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अषिषिषिष्या-मि
वः मः ( आषिषिषिष्या-व म
१० आषिषिषिष्य-त ताम् न् ः तम् त म्

१ अषिषि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अषिषिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अषिषि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ आषिषि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [ षि ष्वहि ष्महि
५ आषिषिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अषिषिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
अषिषिषाम्बभूव अषिषिषामास (य वहि महि
७ अषिषिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अषिषिषिता-” रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अषिषिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आषिषिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९३२ असी ( अस् ) गत्यादानयोश्च ।

१ असिसिष–ति तः न्ति सि थः थ असिसिषा–मि वः मः
२ असिसिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ असिसिष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
असिसिषा-नि व म
४ आसिसिष–त् ताम् न् : तम् त म् आसिसिषा–व म
५ आसिसि–षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर कृम कृव
६ असिसिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार
असिसिषाम्बभूव असिसिषामास
७ असिसिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ असिसिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ असिसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ असिसिषिष्या–
मि वः मः ( आसिसिषिष्या-व म
१० आसिसिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्.

१ असिसि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ असिसिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ असिसि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ आसिसि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आसिसिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ असिसिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
असिसिषाम्बभूव असिसिषामास (य वहि महे
७ असिसिषि–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम ध्वम्
८ असिसिषिता– " रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ असिसिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आसिसिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ९३३ दासृग् ( दास् ) दाने ।

१ दिदासिष–ति तः न्ति सि थः थ दिदासिषा–मि वः मः
२ दिदासिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदासिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदासिषा–णि व म
४ अदिदासिष–त् ताम् न् : तम् त म् अदिदासिषा–व म
५ अदिदासि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदासिषाञ्चा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदासिषाञ्चकार दिदासिषाम्बभूव
७ दिदासिष्या–त् स्ताम् सुः : स्ताम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदासिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्म
९ दिदासिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिदासिषिष्या
मि वः मः (अदिदासिषिष्या–व म
१० अदिदासिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१ दिदासि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदासिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ दिदासि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदासि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदासिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ दिदासिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिदासिषाम्बभूव दिदासिषामास (य वहि महि
७ दिदासिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदासिषिता– " रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदासिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदासिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९३४ माहृग् ( माह् ) माने ।

१ मिमाहिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमाहिषा-मि वः मः
२ मिमाहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमाहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमाहिषा-णि व म
४ अमिमाहिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमाहिषा-व म
५ अमिमाहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमाहिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमाहिषाञ्चकार मिमाहिषाम्बभूव
७ मिमाहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमाहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमाहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमाहिषिष्या
मि वः मः (अमिमाहिषिष्या-व म
१० अमिमाहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९३५ गुहौङ् ( गुह् ) संवरणे ।

१ जुघुक्ष-ति तः न्ति सि थः थ जुघुक्षा-मि वः मः
२ जुघुक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुघुक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुघुक्षा-णि व म
४ अजुघुक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुघुक्षा-व म
५ अजुघु-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म कर-कृम कृव
६ जुघुक्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
जुघुक्षाम्बभूव जुघुक्षामास
७ जुघुक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुघुक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुघुक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुघुक्षिष्या-मि वः मः
( अजुघुक्षिष्या-व म
१० अजुघुक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ मिमाहि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमाहिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमाहि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमिमाहि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमाहिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमाहिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मिमाहिषाम्बभूव मिमाहिषामास (य वहि महि
७ मिमाहिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमाहिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमाहिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमाहिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ जुघु-क्षते क्षेते क्षन्ते क्षसे क्षेथे क्षध्वे क्षे क्षावहे क्षामहे
२ जुघुक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघु-क्षताम् क्षेताम् क्षन्ताम् क्षस्व क्षेथाम् क्षध्वम् क्षै
क्षावहै क्षामहै
४ अजुघु-क्षत क्षेताम् क्षन्त क्षथाः क्षेथाम् क्षध्वम् क्षे
क्षावहि क्षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघुक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघुक्षाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जुघुक्षाम्बभूव जुघुक्षामास (य वहि महि
७ जुघुक्षि-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघुक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघुक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुघुक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९३४ भ्लक्षी ( भ्लक्ष् ) भक्षणे ।

१ बिभ्लक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभ्लक्षिषा-मि वः मः
२ बिभ्लक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभ्लक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभ्लक्षिषा-णि व म
४ अबिभ्लक्षिष-त्ताम न् : तम् त म् अबिभ्लक्षिषा-व म
५ अबिभ्लक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभ्लक्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभ्लक्षिषाञ्चकार बिभ्लक्षिषाम्बभूव
७ बिभ्लक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभ्लक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभ्लक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभ्लक्षिषिष्या
मि वः मः (अबिभ्लक्षिषिष्या-व म
१० अबिभ्लक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म् .

१ बिभ्लक्षि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभ्लक्षिषे-त यातास् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ बिभ्लक्षि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबिभ्लक्षि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभ्लक्षिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभ्लक्षिषाञ्च केकाते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
बिभ्लक्षिषाम्बभूव बिभ्लक्षिषामास (य वहि महि
७ बिभ्लक्षिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभ्लक्षिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभ्लक्षिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभ्लक्षिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

९३७ द्युति ( द्युत् ) दीप्तौ ।

१ दिद्युति-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिद्युतिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिद्युति-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिद्युति-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिद्युतिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिद्युतिषाञ्च-के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
दिद्युतिषाम्बभूव दिद्युतिषामास (य वहि महि
७ दिद्युतिषि-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिद्युतिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिद्युतिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिद्युतिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे दिद्यु-स्थाने दिद्यो-इति ज्ञेयम्

९३८ रुचि ( रुच् ) अभिप्रीत्याञ्च ।

१ रुरुचि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रुरुचिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रुरुचि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अरुरुचि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरुरुचिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रुरुचिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रुरुचिषाञ्चक्रे रुरुचिषामास (य वहि महि
७ रुरुचिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रुरुचिषिता-" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रुरुचिषि ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरुरुचिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे रुरु-स्थाने रुरो-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९३९ घुटि ( घुट् ) परिवर्तने ।

१ जुघुटि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुघुटिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघुटि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुघुटि-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघुटिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघुटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जुघुटिषाञ्चक्रे जुघुटिषामास (य वहि महि
७ जुघुटिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघुटिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघुटिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुघुटिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

**पक्षे जुघु-स्थाने जुघो-इति ज्ञेयम्**

### ९४० रुटि ( रुट् ) प्रतीघाते ।

१ रुरुटि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रुरुटिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रुरुटि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अरुरुटि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरुरुटिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रुरुटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम रुरुटिषाञ्चक्रे रुरुटिषामास (य वहि महि
७ रुरुटिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रुरुटिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रुरुटिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरुरुटिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम्

**पक्षे रुरु-स्थाने रुरो-इति ज्ञेयम्**

### ९४१ लुटि ( लुट् ) प्रतीघाते ।

१ लुलुटि-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लुलुटिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ लुलुटि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलुलुटि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलुलुटिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लुलुटिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे लुलुटिषाम्बभूव लुलुटिषामास (य वहि महि
७ लुलुटिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लुलुटिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लुलुटिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलुलुटिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**पक्षे लुलु-स्थाने लुलो-इति ज्ञेयम्**

### ९४२ लुठि ( लुठ् ) प्रतीघाते ।

१ लुलुठि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लुलुठिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लुलुठि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलुलुठि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलुलुठिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लुलुठिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम लुलुठिषाञ्चक्रे लुलुठिषामास (य वहि महि
७ लुलुठिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लुलुठिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लुलुठिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलुलुठिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

**पक्षे लुलु-स्थाने लुलो-इति ज्ञेयम्**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९४३ ञिष्विताङ् ( ष्वित् ) वर्णे ।

१ शिश्विति–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ शिश्वितिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ शिश्विति–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ अशिश्विति–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि

५ अशिश्वितिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ शिश्वितिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम शिश्वितिषाञ्चक्रे शिश्वितिषामास (य वहि महि

७ शिश्वितिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ शिश्वितिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ शिश्वितिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१०अशिश्वितिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे शिश्वि-स्थाने शिश्वे-इति ज्ञेयम्

९४४ ञिमिदाङ् ( मिद् ) स्नेहने ।

१ मिमिदि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ मिमिदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ मिमिदि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै

४ अमिमिदि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि

५ अमिमिदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ मिमिदिषाञ्च-के काते किरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे मिमिदिषाम्बभूव मिमिदिषामास [य वहि महि

७ मिमिदिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ मिमिदिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ मिमिदिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१०अमिमिदिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे मिमि स्थाने मिमे–इति ज्ञेयम्

९४५ ञिक्ष्विदाङ् ( क्ष्विद् ) मोचने च ।

१ चिक्ष्विदि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ चिक्ष्विदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ चिक्ष्विदि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ अचिक्ष्विदि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ अचिक्ष्विदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ चिक्ष्विदिषाञ्च-के काते किरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे चिक्ष्विदिषाम्बभूव चिक्ष्विदिषामास (य वहि महि

७ चिक्ष्विदिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ चिक्ष्विदिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ चिक्ष्विदिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१०अचिक्ष्विदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे चिक्ष्वि-स्थाने चिक्ष्वे-इति ज्ञेयम्

९४६ ञिष्विदाङ् ( ष्विद् ) मोचने च ।

१ सिस्विदि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ सिस्विदिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ सिस्विदि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ असिस्विदि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ असिस्विदिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ सिस्विदिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम सिस्विदिषाञ्चक्रे सिस्विदिषाम्बभूव (य वहि महि

७ सिस्विदिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ सिस्विदिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ सिस्विदिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१०असिस्विदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे सिस्वि स्थाने सिस्वे-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९४७ शुभि ( शुभ् ) दीप्तौ ।

१ शुशुभि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शुशुभिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ शुशुभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशुशुभि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशुशुभिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शुशुभिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शुशुभिषाम्बभूव शुशुभिषामास (य वहि महि
७ शुशुभिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शुशुभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शुशुभिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशुशुभिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे शुशु-स्थाने शुशो-इति ज्ञेयम्

### ९४८ क्षुभि ( क्षुभ् ) सञ्चलने ।

१ चुक्षुभि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुक्षुभिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुक्षुभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुक्षुभि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुक्षुभिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुक्षुभिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुक्षुभिषाञ्चक्रे चुक्षुभिषामास (य वहि महि
७ चुक्षुभिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुक्षुभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुक्षुभिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुक्षुभिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे चुक्षु-स्थाने चुक्षो-इति ज्ञेयम्

### ९४९ णभि ( नभ् ) हिंसायाम् ।

१ निनभि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनभिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अनिनभि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनभिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ निनभिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनभिषाञ्चक्रे निनभिषामास (य वहि महि
७ निनभिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनभिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनभिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनभिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ९५० तुभि ( तुभ् ) हिंसायाम् ।

१ तुतुभि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तुतुभिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तुतुभि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतुतुभि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतुतुभिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तुतुभिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
–तुतुभिषाञ्चक्रे तुतुभिषामास (य वहि महि
७ तुतुभिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तुतुभिषिता–" रौ रः से सासे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुतुभिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतुतुभिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यथाः ष्यन्त ष्येथाम् ष्यध्वम
पक्षे तुतु-स्थाने तुतो-इति ज्ञेयम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ९५१ स्रम्भूङ् ( स्रम्भ् ) विश्वासे ।

१ सिस्रम्भि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिस्रम्भिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिस्रम्भि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असिस्रम्भि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ असिस्रम्भिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिस्रम्भिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्रम्भिषाञ्चक्रे सिस्रम्भिषामास (य वहि महि
७ सिस्रम्भिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिस्रम्भिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिस्रम्भिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिस्रम्भिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ९५२ भ्रंशूङ् ( भ्रंश् ) अवस्रंसने ।

१ बिभ्रंशि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभ्रंशिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभ्रंशि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अबिभ्रंशि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभ्रंशिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभ्रंशिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
बिभ्रंशिषाम्बभूव बिभ्रंशिषामास [य वहि महि
७ बिभ्रंशिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभ्रंशिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभ्रंशिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभ्रंशिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ९५३ स्रंसूङ् ( स्रंस् ) अवस्रंसने ।

१ सिस्रंसि-षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिस्रंसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिस्रंसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असिस्रंसि-षत षताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिस्रंसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिस्रंसिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
सिस्रंसिषाम्बभूव सिस्रंसिषामास (य वहि महि
७ सिस्रंसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिस्रंसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिस्रंसिषि-ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिस्रंसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ९५४ ध्वंसूङ् ( ध्वंस ) गतौ च ।

१ दिध्वंसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिध्वंसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिध्वंसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिध्वंसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिध्वंसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिध्वंसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिध्वंसिषाञ्चक्रे दिध्वंसिषाम्बभूव (य वहि महि
७ दिध्वंसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिध्वंसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिध्वंसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिध्वंसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९९५ वृतूङ् ( वृत् ) वर्तने ।

१ विवर्ति–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवर्तिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवर्ति–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवर्ति–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवर्तिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवर्तिषाम्बभू–व वतु वु विथ वथुः व व विवविम
विवर्तिषाञ्चक्रे विवर्तिषामास (य वहि महि
७ विवर्तिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवर्तिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवर्तिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवर्तिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

१ विवृत्स-ति तः न्ति सि थः थ विवृत्सा–मि वः मः
२ विवृत्से–त् ताम् यु : तम त यम् व म
३ विवृत्स–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवृत्सा–णि व म
४ अविवृत्स–त् ताम् न् : तम् त म् अविवृत्सा–व म
५ अविवृत्–सोत् सष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ विवृत्साम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवृत्सामास विवृत्साञ्चकार
७ विवृत्स्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवृत्सिता–"रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवृत्सिष्य-ति त न्ति सि थः थ विवृत्सिष्या-मि वः
मः (अविवृत्सिष्या व म
१०अविवृत्सिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ९९६ स्यन्दौङ् ( स्यन्द् ) स्रवणे ।

१ सिस्यन्दि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिस्यन्दिषे–तयाताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिस्यन्दि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असिस्यन्दि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ असिस्यन्दिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम्ध्वम्
६ सिस्यन्दिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिस्यन्दिषाञ्चक्रे सिस्यन्दिषाम्बभूव (य वहि महि
७ सिस्यन्दिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिस्यन्दिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिस्यन्दिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०असिस्यन्दिषि-ष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

१ सिस्यन्त्–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ सिस्यन्त्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ सिस्यन्त्–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ असिस्यन्त्–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिस्यन्त्स–ष्ट षाताम् षत ष्ठाःषाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६सिस्यन्त्साञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृड्वे क्रे कृवहे कृमहे
सिस्यन्त्साम्बभूव सिस्यन्त्सामास (य वहि महि
७ सिस्यन्त्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिस्यन्त्सिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिस्यन्त्सि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०असिस्यन्त्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ सिस्यन्त्स-ति तः न्ति सि थः थ सिस्यन्त्सा-मि वः मः
२ सिस्यन्त्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्यन्त्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्यन्त्सा-नि व म
४ असिस्यन्त्स-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्यन्त्सा-व म
५ असिस्यन्त्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिस्यन्त्साञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
सिस्यन्त्साम्बभूव सिस्यन्त्सामास
७ सिस्यन्त्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्यन्त्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्यन्त्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्यन्त्सिष्या-मि वः मः (असिस्यन्त्सिष्या-व म
१० असिस्यन्त्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१ विवृत्स-ति तः न्ति सि थः थ विवृत्सा-मि वः मः
२ विवृत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवृत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवृत्सा-नि व म
४ अविवृत्स-त् ताम् न् : तम् त म् अविवृत्सा-व म
५ अविवृत्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवृत्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
विवृत्साञ्चकार विवृत्सामास
७ विवृत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवृत्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवृत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवृत्सिष्या-मि वः मः (अविवृत्सिष्या-व म
१० अविवृत्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९५७ वृधूङ् ( वृध् ) वृद्धौ ।

१ विवर्धि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवर्धिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवर्धि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवर्धि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवर्धिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम्
६ विवर्धिषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
विवर्धिषाम्बभूव विवर्धिषामास (य वहि महि
७ विवर्धिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवर्धिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवर्धिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवर्धिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ९५८ शृधूङ् ( शृध् ) शब्दकुत्सायाम् ।

१ शिशर्धि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशर्धिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशर्धि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिशर्धि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशर्धिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम्
६ शिशर्धिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिशर्धिषाञ्चक्रे शिशर्धिषाम्बभूव [य वहि महि
७ शिशर्धिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशर्धिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशर्धिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशर्धिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ शिशृत्स-ति तः न्ति सि थः थ शिशृत्सा-मि वः मः
२ शिशृत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशृत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशृत्सा-नि व म
४ अशिशृत्स-त् ताम् न् : तम् त म् अशृत्सा-व म
५ अशिशृत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ शिशृत्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशृत्सामास शिशृत्साञ्चकार
७ शिशृत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशृत्सिता-" रौ रः रि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशृत्सिष्य-ति त न्ति सि थः थ शिशृत्सिष्या-मि
वः मः (अशिशृत्सिष्या-व म
१० अशिशृत्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ चिक्लृप्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ चिक्लृप्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्लृप्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अचिक्लृप्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्लृप्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्लृप्साञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिक्लृप्साम्बभूव चिक्लृप्सामास (य वहि महि
७ चिक्लृप्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्लृप्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्लृप्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिक्लृप्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

९२९ कृपौङ् ( कृप् ) सामर्थ्ये ।

१ चिकल्पि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकल्पिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकल्पि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिकल्पि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकल्पिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकल्पिषाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः व व विव विम
चिकल्पिषाञ्चक्रे चिकल्पिषामास (य वहि महि
७ चिकल्पिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकल्पिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकल्पिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिकल्पिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ चिक्लृप्स-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लृप्सा-मि वः मः
२ चिक्लृप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्लृप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्लृप्सा-नि व म
४ अचिक्लृप्स-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्लृप्सा-व म
५ अचिक्लृप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिक्लृप्साञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
चिक्लृप्साम्बभूव चिक्लृप्सामास
७ चिक्लृप्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लृप्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्लृप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लृप्सिष्या-
मि वः मः (अचिक्लृप्सिष्या-व म
१० अचिक्लृप्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९६० ज्वल ( ज्वल् ) दीप्तौ ।

१ जिज्वलिष-ति तः न्ति सि थः थ जिज्वलिषा-मि वः मः
२ जिज्वलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिज्वलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिज्वलिषा-णि व म
४ अजिज्वलिष-त् ताम् न् : तम् तम् अजिज्वलिषा-व म
५ अजिज्वलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिज्वलिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिज्वलिषाम्बभूव जिज्वलिषामास
७ जिज्वलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिज्वलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिज्वलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिज्वलिषिष्या-मि वः मः ( अजिज्वलिषिष्या-व म
१० अजिज्वलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त न्

९६१ कुच (कुच्) संपर्चनकौटिल्यप्रतिष्टम्भविलेखनेषु ।
कुच वद्रूपाणि

१ पित्स-ति तः न्ति सि थः थ पित्सा-मि वः मः
२ पित्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पित्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पित्सा-नि व म
४ अपित्स-त् ताम् न् : तम् त म् अपित्सा-व म
५ अपित्सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ पित्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पित्सामास पित्साञ्चकार
७ पित्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पित्सिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पित्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पित्सिष्या-मि वः मः
( अपित्सिष्या-व म
१० अपित्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

९६२ पत्ल ( पत् ) गतौ ।

१ पिपतिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपतिषा-मि वः मः
२ पिपतिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपतिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपतिषा-णि व म
४ अपिपतिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपतिषा-व म
५ अपिपति-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपतिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपतिषाञ्चकार पिपतिषामास
७ पिपतिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपतिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपतिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपतिषिष्या-मि वः मः (अपिपतिषिष्या-व म
१० अपिपतिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

९६३ पथे ( पथ् ) गतौ ।

१ पिपथिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपथिषा-मि वः मः
२ पिपथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपथिषा-णि व म
४ अपिपथिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपथिषा-व म
५ अपिपथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपथिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पिपथिषाम्बभूव पिपथिषामास
७ पिपथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपथिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपथिषिष्या-मि वः मः (अपिपथिषिष्या-व म
१० अपिपथिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९६४ क्वथे ( क्वथ् ) निष्पाके ।

१ चिक्वथिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्वथिषा-मि व मः
२ चिक्वथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्वथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्वथिषा-णि व म म
४ अचिक्वथिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्वथिषा-व
५ अचिक्वथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्वथिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
चिक्वथिषाम्बभूव चिक्वथिषामास
७ चिक्वथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्वथिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्वथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्वथिषिष्या
मि वः मः (अचिक्वथिषिष्या-व म
१० अचिक्वथिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९६५ मथे ( मथ् ) विलोडने ।

१ मिमथिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमथिषा-मि वः मः
२ मिमथिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ मिमथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमथिषा-णि व म
४ अमिमथिष-त् ताम् न् : तम् त म अमिमथिषा-व म
५ अमिमथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमथिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमथिषाञ्चकार मिमथिषामास
७ मिमथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमथिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमथिषिष्या-
मि वः मः ( अमिमथिषिष्या-व म
१० अमिमथिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

### ९६६ षद्लं (सद्) विशरणगत्यवसादनेषु ।

१ सिषत्स-ति तः न्ति सि थः थ सिषत्सा-मि वः मः
२ सिषत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिषत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिषत्सा-नि व म
४ असिषत्स-त् ताम् न् : तम् त म् असिषत्सा-व म
५ असिषत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सी सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिषत्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिषत्साञ्चकार सिषत्साम्बभूव
७ सिषत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिषत्सिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिषत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिषत्सिष्या-मि वः
मः (असिषत्सिष्या-व म
१० असिषत्सिष्य-त् ताम् न् : तम त म

### ९६७ शद्लं (शद्) विशरणगत्यवसादनेषु ।

१ शिशत्स-ति तः न्ति सि थः थ शिशत्सा-मि वः मः
२ शिशत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशत्सा-नि व म
४ अशिशत्स-त् ताम न् : तम् त म् अशिशत्सा-व म
५ अशिशत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ शिशत्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिशत्साञ्चकार शिशत्साम्बभूव
७ शिशत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशत्सिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशत्सिष्या-मि
वः मः (अशिशत्सिष्या-व म
१० अशिशत्सिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९६८ बुध ( बुध् ) अवगमने ।

१ बुबुधिष–ति तः न्ति सि थः थ बुबुधिषा–मि वः मः
२ बुबुधिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बुबुधिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
बुबुधिषा–णि व म
४ अबुबुधिष–त् ताम् न् : तम् त म् अबुबुधिषा–व म
५ अबुबुधि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बुबुधिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
बुबुधिषाम्बभूव बुबुधिषामास
७ बुबुधिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुबुधिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुबुधिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बुबुधिषिष्या–मि
वः मः (अबुबुधिषिष्या–व म
१० अबुबुधिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म
पक्षे बुबु–स्थाने बुबो–इति ज्ञेयम्

### ९७० भ्रमू ( भ्रम् ) चलने ।

१ बिभ्रमिष–ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रमिषा–मि वः मः
२ बिभ्रमिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभ्रमिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात तम् त
बिभ्रमिषा–णि व म
४ अबिभ्रमिष–त् ताम् न् : तम् त म् अबिभ्रमिषा–व म
५ अबिभ्रमि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर–कृम कृव
६ बिभ्रमिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
बिभ्रमिषाम्बभूव बिभ्रमिषामास
७ बिभ्रमिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभ्रमिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभ्रमिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रमिषिष्या
मि वः मः (अबिभ्रमिषिष्या–व म
१० अबिभ्रमिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ९६९ टुवमू ( वम् ) उद्गिरणे ।

१ विवमिष–ति तः न्ति सि थः थ विवमिषा–मि वः मः
२ विवमिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवमिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विवमिषा–णि व म
४ अविवमिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविवमिषा–व म
५ अविवमि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवमिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
विवमिषाञ्चकार विवमिषामास
७ विवमिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवमिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवमिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवमिषिष्या–मि
वः मः (अविवमिषिष्या –व म
१० अविवमिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### ९७१ क्षर ( क्षर् ) सञ्चलने ।

१ चिक्षरिष–ति तः न्ति सि थः थ चिक्षरिषा–मि वः मः
२ चिक्षरिषे–त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ चिक्षरिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
चिक्षरिषा–णि व म
४ अचिक्षरिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षरिषा–व म
५ अचिक्षरि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षरिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षरिषामास चिक्षरिषाञ्चकार
७ चिक्षरिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षरिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षरिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिक्षरिषिष्या–मि
व. मः (अचिक्षरिषिष्या–व म
१० अचिक्षरिषिष्य–त् ताम् न् : तम त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९७२ चल ( चल् ) कम्पने ।

१ चिचलिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचलिषा-मि वः मः
२ चिचलिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचलिषा-णि व म
४अचिचलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचलिषा-व म
५ अचिचलि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ चिचलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
चिचलिषाम्बभूव चिचलिषामास
७ चिचलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचलिषिष्या-
मि वः मः (अचिचलिषिष्या-व म
१०अचिचलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९७३ जल ( जल् ) घात्ये ।

१ जिजलिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजलिषा-मि वः मः
२ जिजलिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजलिषा-णि व म
४अजिजलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजलिषा-व म
५ अजिजलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिजलिषाम्बभूव जिजलिषामास
७ जिजलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजलिषिष्या-
मि वः मः (अजिजलिषिष्या-व म
१०अजिजलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### ९७४ टल ( टल् ) वैक्लव्ये ।

१ टिटलिष-ति तः न्ति सि थः थ टिटलिषा-मि वः मः
२ टिटलिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ टिटलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
टिटलिषा-णि व म
४ अटिटलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अटिटलिषा-व म
५ अटिटलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ टिटलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
टिटलिषामास टिटलिषाञ्चकार
७ टिटलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ टिटलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ टिटलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ टिटलिषिष्या-मि
व मः (अटिटलिषिष्या-व म
१०अटिटलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ९७५ ट्वल ( ट्वल् ) वैक्लव्ये ।

१ टिट्वलिष-ति तः न्ति सि थः थ टिट्वलिषा-मि वः म
२ टिट्वलिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ टिट्वलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
टिट्वलिषा-णि व म म
४अटिट्वलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अटिट्वलिषा-व
५ अटिट्वलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ टिट्वलिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
टिट्वलिषाञ्चकार टिट्वलिषामास
७ टिट्वलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ टिट्वलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ टिट्वलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ टिट्वलिषिष्या
मि वः मः (अटिट्वलिषिष्या व म
१०अटिट्वलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९७६ ष्ठुल ( स्थल् ) स्थाने ।

१ तिस्थलिष-ति तः न्ति सि थः थ तिस्थलिषा-मि वः मः
२ तिस्थलिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ तिस्थलिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
तिस्थलिषा-णि व म
४ अतिस्थलिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अतिस्थलिषा वम
५ अतिस्थलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्थलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तिस्थलिषाम्बभूव तिस्थलिषामास
७ तिस्थलिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्थलिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्थलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तिस्थलिषिष्या
मि वः मः (अतिस्थलिषिष्या-व म
१० अतिस्थलिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

९७७ हल ( हल् ) विलेखने ।

१ जिहलिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहलिषा-मि वः मः
२ जिहलिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ जिहलिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
जिहलिषा-णि व म
४ अजिहलिष-त् ताम् न् ः तम् त म अजिहलिषा-व म
५ अजिहलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिहलिषाञ्चकार जिहलिषामास
७ जिहलिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहलिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहलिषिष्या-
मि वः मः ( अजिहलिषिष्या-व म
१० अजिहलिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

९७८ णल ( नल् ) दाने ।

१ निनलिष-ति तः न्ति सि थः थ निनलिषा-मि वः मः
२ निनलिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ निनलिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
निनलिषा-णि व म
४ अनिनलिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अनिनलिषा-व म
५ अनिनलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनलिषाञ्चकार निनलिषाम्बभूव
७ निनलिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनलिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनलिषिष्या-मि
वः मः (अनिनलिषिष्या-व म
१० अनिनलिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

९७९ बल ( बल् ) प्राणनधान्यावरोधयोः ।

१ बिबलिष-ति तः न्ति सि थः थ बिबलिषा-मि वः मः
२ बिबलिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ बिबलिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
बिबलिषा-णि व म
४ अबिबलिष-त् ताम न् ः तम् त म् अबिबलिषा-व म
५ अबिबलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिबलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिबलिषाञ्चकार बिबलिषाम्बभूव
७ बिबलिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिबलिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिबलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिबलिषिष्या-मि
वः मः (अबिबलिषिष्या-व म
१० अबिबलिषिष्य-त ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९८० पुल ( पुल् ) महत्त्वे ।

१ पुपुलिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपुलिषा-मि वः मः
२ पुपुलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपुलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपुलिषा-णि व म
४ अपुपुलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुलिषा-व म
५ अपुपुलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपुलिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
पुपुलिषाम्बभूव पुपुलिषामास
७ पुपुलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपुलिषिष्या-मि
वः मः (अपुपुलिषिष्या-व म
१० अपुपुलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे पुपु-स्थाने पुपो-इति ज्ञेयम्

९८१ कुल ( कुल् ) बन्धुसन्तत्यानयोः ।

१ चुकुलिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुलिषा-मि वः म
२ चुकुलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुलिषा-नि व म
४ अचुकुलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुलिषा-व म
५ अचुकुलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकुलिषाञ्चकार चुकुलिषामास
७ चुकुलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुलिषिष्या-मि
वः मः (अचुकुलिषिष्या-व म
१० अचुकुलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे चुकु-स्थाने चुको-इति ज्ञेयम्

९८२ पल ( पल् ) गतौ ।

१ पिपलिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपलिषा-मि वः मः
२ पिपलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
पिपलिषा-णि व म
४ अपिपलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपलिषा-व म
५ अपिपलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ पिपलिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
पिपलिषाम्बभूव पिपलिषामास
७ पिपलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपलिषिष्या
मि वः मः (अपिपलिषिष्या-व म
१० अपिपलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

९८२ फल ( फल् ) गतौ ।

१ पिफलिष-ति तः न्ति सि थः थ पिफलिषा-मि वः म
२ पिफलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिफलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिफलिषा-णि व म
४ अपिफलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिफलिषा-व म
५ अपिफलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिफलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिफलिषामास पिफलिषाञ्चकार
७ पिफलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिफलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिफलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिफलिषिष्या-मि
वः मः (अपिफलिषिष्या-व म
१० अपिफलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



९८४ शल ( शल् ) गतौ ।

१ शिशलिष–ति तः न्ति सि थः थ शिशलिषा-मि व मः
२ शिशलिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशलिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशलिषा–णि व म
४ अशिशलिष त् ताम् न् : तम् त म् अशिशलिषा-व म
५ अशिशलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
शिशलिषाम्बभूव शिशलिषामास
७ शिशलिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशलिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ शिशलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशलिषिष्या-मि वः मः (अशिशलिषिष्या–व म
१० अशिशलिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

९८५ हुल ( हुल् ) हिंसासंवरणयोश्च ।

१ जुहुलिष–ति तः न्ति सि थः थ जुहुलिषा–मि वः मः
२ जुहुलिषे–त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ जुहुलिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुहुलिषा–णि व म
४ अजुहुलिष–त् ताम् न् : तम् त म अजुहुलिषा–व म
५ अजुहुलि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुहुलिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुहुलिषाञ्चकार जुहुलिषामास
७ जुहुलिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहुलिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहुलिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुहुलिषिष्या-मि वः मः ( अजुहुलिषिष्या-व म
१० अजुहुलिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे जुहु-स्थाने जुहो-इति ज्ञेयम्

९८६ क्रुश ( क्रुश् ) आह्वानरोदनयोः ।

१ चुक्रुक्ष–ति तः न्ति सि थः थ चुक्रुक्षा–मि वः मः
२ चुक्रुक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुक्रुक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुक्रुक्षा–णि व म
४ अचुक्रुक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुक्रुक्षा–व म
५ अचुक्रु–क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ चुक्रुक्षामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुक्रुक्षाञ्चकार चुक्रुक्षाम्बभूव
७ चुक्रुक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्रुक्षिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुक्रुक्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुक्रुक्षिष्या-मि वः मः (अचुक्रुक्षिष्या–व म
१० अचुक्रुक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

९८७ कस ( कस् ) गतौ ।

१ चिकसिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकसिषा-मि वः मः
२ चिकसिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकसिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकसिषा–णि व म
४ अचिकसिष-त् ताम न् : तम् त म् अचिकसिषा-व म
५ अचिकसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकसिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकसिषाञ्चकार चिकसिषाम्बभूव
७ चिकसिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकसिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकसिषिष्या-मि वः मः (अचिकसिषिष्या–व म
१० अचिकसिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ९८८ रुहं ( रुह् ) जन्मनि ।

१ रुरुक्ष–ति तः न्ति सि थः थ रुरुक्षा–मि वः मः
२ रुरुक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरुक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरुक्षा–णि व म
४ अरुरुक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अरुरुक्षा–व म
५ अरुरु क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ रुरुक्षाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रुरुक्षाम्बभूव रुरुक्षामास
७ रुरुक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुक्षिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुक्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रुरुक्षिष्या–मि वः मः
(अरुरुक्षिष्या–व म
१० अरुरुक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ९८९ रमिं ( रम् ) क्रीडायाम् ।

१ रिरंसि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरंसिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरंसि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अरिरंसि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरंसिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरंसिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरंसिषाञ्चक्रे रिरंसिषाम्बभूव [य वहि महि
७ रिरंसिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरंसिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरंसिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरंसिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ९९० षहि ( षह् ) मर्षणे ।

१ सिसहि–षते षेते षन्ते षसे षेथे ष्ध्वे षे षावहे षामहे
२ सिसहिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिसहि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असिसहि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिसहिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिसहिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
सिसहिषाम्बभूव सिसहिषामास (य वहि महि
७ सिसहिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिसहिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिसहिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिसहिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ९९१ यजीं (यज्) देवपूजासंगतिकरणदानेषु ।

१ यियक्ष–ति त न्ति सि थः थ यियक्षा–मि वः मः
२ यियक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ यियक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
यियक्षा–णि व म
४ अयियक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अयियक्षा–व म
५ अयियक्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ यियक्षाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार-कर कृव कृम
यियक्षाम्बभूव यियक्षामास
७ यियक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ यियक्षिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ यियक्षिष्य–ति त न्ति सि थः थ यियक्षिष्या–मि
वः म (अयियक्षिष्या–व म
१० अयियक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ **यियक्ष**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **यियक्षे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **यियक्ष**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अयियक्ष**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अयियक्षि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इड्ढ्वम् ध्वम्
६ **यियक्षाम्बभू**–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम **यियक्षाञ्चक्रे यियक्षामास** (य वहि महि
७ **यियक्षिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **यियक्षिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **यियक्षि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अयियक्षि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ **विवा**–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **विवासे**–तयाताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवा**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अविवा**–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवासि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवासामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **विवासाञ्चक्रे विवासाम्बभूव** (य वहि महि
७ **विवासिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवासिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवासि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवासि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ९९२ वेंग् ( वे ) तन्तु सन्ताने ।

१ **विवास**–ति तः न्ति सि थः थ **विवासा**–मि वः मः
२ **विवासे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विवास**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **विवासा**–नि व म
४ **अविवास**–त् ताम् न् : तम् त म् **अविवासा**–व म
५ **अविवा**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टाम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **विवासामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **विवासाञ्चकार विवासाम्बभूव**
७ **विवास्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवासिता**–" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवासिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **विवासिष्या**–मि वः मः (**अविवासिष्या** व म
१० **अविवासिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

## ९९३ व्येंग् ( व्ये ) संवरणे ।

१ **विव्यास**–ति तः न्ति सि थः थ **विव्यासा**–मि वः मः
२ **विव्यासे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विव्यास**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **विव्यासा** नि व म
४ **अविव्यास**–त् ताम् न् : तम् त म् **अविव्यासा**–व म
५ **अविव्या**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टाम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **विव्यासाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **विव्यासाञ्चकार विव्यासामास**
७ **विव्यास्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विव्यासिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विव्यासिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **विव्यासिष्या**–मि वः मः (**अविव्यासिष्या**–व म
१० **अविव्यासिष्य**–त् ताम न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ विव्या–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ विव्यासे–तयाताम् रन् थाः थाथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विव्या–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अविव्या–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविव्यासि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ विव्यासामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विव्यासाञ्चक्रे विव्यासाम्बभूव (य वहि महि
७ विव्यासिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विव्यासिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विव्यासि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविव्यासि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ जुहू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२जुहूषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुहू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुहू–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजुहूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ जुहूषाम्बभू–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम जुहूषाञ्चक्रे जुहूषामास (य वहि महि
७ जुहूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुहूषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुहूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुहूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ९९४ ह्वग् ( ह्वे ) स्पर्धाशब्दयोः ।

१ जुहूष–ति तः न्ति सि थः थ जुहूषा–मि वः मः
२ जुहूषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुहूष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जुहूषा णि व म
४ अजुहूष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुहूषा–व म
५ अजुहू–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टाम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६जुहूषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जुहूषाञ्चकार जुहूषामास
७ जुहूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहूषिता–" रौ रः र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहूषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुहूषिष्या–मि वः मः (अजुहूषिष्या–व म
१०अजुहूषिष्य–त ताम न : तम् त म्

## ९९५ टुवपीं ( वप् ) बीजसन्ताने ।

१ विवप्स–ति तः न्ति सि थः थ विवप्सा–मि वः मः
२ विवप्से–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवप्स–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवप्सा–नि व म
४ अविवप्स–त् ताम् न् : तम् त म् अविवप्सा–व म
५ अविवप्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टाम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ विवप्सामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवप्साञ्चकार विवप्साम्बभूव
७ विवप्स्या–त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवप्सिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवप्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवप्सिष्या–मि वः मः ( अविवप्सिष्या–व म
१०अविवप्सिष्य–त् ताम् न : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ **विवप्स**-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **विवप्से**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवप्स**-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ **अविवप्स**-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवप्सि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवप्सामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**विवप्साञ्चक्रे विवप्साम्बभूव** [य वहि महि
७ **विवप्सिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवप्सिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवप्सि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवप्सि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ **विवक्**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवक्षे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवक्**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवक्**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवक्षि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवक्षाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**विवक्षाम्बभूव विवक्षामास** (य वहि महि
७ **विवक्षिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवक्षिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवक्षि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवक्षि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

९९६ **वहीं ( वह् ) प्रापणे ।**

१ **विवक्ष**-ति तः न्ति सि थः थ **विवक्षा**-मि वः मः
२ **विवक्षे**-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **विवक्ष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **विवक्षा**-णि व म
४ **अविवक्ष**-त् ताम् न् ः तम् त म् **अविवक्षा**-व म
५ **अविव**-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम् क्षिष्व क्षिष्म
६ **विवक्षाञ्च**-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव कृम
**विवक्षाम्बभूव विवक्षामास**
७ **विवक्ष्या**-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवक्षिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवक्षिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विवक्षिष्या**-मि वः मः (**अविवक्षिष्या**-व म
१० **अविवक्षिष्य**-त् ताम् न ः तम् त म्

९९७ **ट्वोश्वि ( श्वि ) गतिवृद्धयोः ।**

१ **शिश्वयिष**-ति त न्ति सि थः थ **शिश्वयिषा**-मि वः मः
२ **शिश्वयिषे**-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ **शिश्वयिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **शिश्वयिषा**-णि व म व म
४ **अशिश्वयिष**-त् ताम् न् ः तम् त म् **अशिश्वयिषा**-
५ **अशिश्वयि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् क्रम षिष्व षिष्म
६ **शिश्वयिषाञ्च**-कार कतुः क्रु कर्थ क्रथुः क कार-कर कृव
**शिश्वयिषाम्बभूव शिश्वयिषामास**
७ **शिश्वयिष्या**-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **शिश्वयिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **शिश्वयिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **शिश्वयिषिष्या** मि वः मः (**अशिश्वयिषिष्या**-व म
१० **अशिश्वयिषिष्य**-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ९९८ वद (वद्) व्यक्तायांवाचि ।

१ विवदिष-ति तः न्ति सि थः थ विवदिषा-मि वः मः
२ विवदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवदिषा-णि व म
४ अविवदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवदिषा-व म
५ अविवदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टाम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म
६ विविदिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम विवदिषाञ्चक्रे विवदिषामास
७ विवदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवदिषिता-" रौ रः र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवदिषिष्या-मि वः मः (अविवदिषिष्या-व म
१० अविवदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १००० घटि (घट्) चेष्टायाम् ।

१ जिघटि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिघटिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिघटि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिघटि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिघटिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिघटिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जिघटिषाञ्चक्रे जिघटिषामास (य वहि महि
७ जिघटिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिघटिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिघटिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिघटिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ९९९ वसं (वस्) निवासे ।

१ विवत्स-ति तः न्ति सि थः थ विवत्सा-मि वः मः
२ विवत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवत्सा-नि व म
४ अविवत्स-त् ताम् न् : तम् त म् अविवत्सा-व म
५ अविवत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टाम् सिष्ट सिषम्
६ विवत्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवत्साञ्चक्रे विवत्साम्बभूव
७ विवत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवत्सिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवत्सिष्या-मि वः मः (अविवत्सिष्या-व म
१० अविवत्सिष्य त् ताम् न : तम् त म्

इति यजादिः

### १००१ क्षजुङ् (क्षञ्ज्) गतिदानयोः ।

१ चिक्षञ्जि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्षञ्जिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्षञ्जि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्षञ्जि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्षञ्जिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्षञ्जिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विक्षञ्जिषाञ्चक्रे चिक्षञ्जिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिक्षञ्जिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्षञ्जिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्षञ्जिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिक्षञ्जिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १००२ व्यथिष् ( व्यथ् ) भयचलनयोः ।

१ विव्यथि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विव्यथिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विव्यथि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविव्यथि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविव्यथिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विव्यथिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रेकृवहेकृमहे
विव्यथिषाम्बभूव विव्यथिषामास (य वहि महि
७ विव्यथिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विव्यथिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विव्यथिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविव्यथिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १००३ प्रथिष् ( प्रथ् ) प्रख्याने ।

१ पिप्रथि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिप्रथिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिप्रथि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिप्रथि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्रथिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्रथिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिप्रथिषाञ्चक्रे पिप्रथिषामास (य वहि महि
७ पिप्रथिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिप्रथिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्रथिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिप्रथिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १००४ म्रदिष् ( म्रद् ) मर्दने ।

१ मिम्रदि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिम्रदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिम्रदि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमिम्रदि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिम्रदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ मिम्रदिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिम्रदिषाञ्चक्रे मिम्रदिषामास (य वहि महि
७ मिम्रदिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिम्रदिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिम्रदिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अमिम्रदिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १००५ स्खदिष् ( स्खद् ) स्खदने ।

१ चिस्खदि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिस्खदिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिस्खदि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिस्खदि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिस्खदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिस्खदिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिस्खदिषाञ्चक्रे चिस्खदिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिस्खदिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिस्खदिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिस्खदिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिस्खदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १००६ कदुङ् ( कन्द् ) वैकल्ये ।

१ चिकन्दि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकन्दिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकन्दि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकन्दि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकन्दिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकन्दिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकन्दिषाञ्चक्रे चिकन्दिषामास (य वहि महि
७ चिकन्दिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकन्दिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकन्दिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकन्दिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १००७ क्रदुङ् ( क्रन्द् ) वैक्लव्ये ।

१ चिक्रन्दि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्रन्दिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्रन्दि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्रन्दि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्रन्दिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्रन्दिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्रन्दिषाञ्चक्रे चिक्रन्दिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिक्रन्दिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्रन्दिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्रन्दिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिक्रन्दिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १००८ क्लदुङ् ( क्लन्द् ) वैक्लव्ये ।

१ चिक्लन्दि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्लन्दिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ चिक्लन्दि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्लन्दि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्लन्दिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्लन्दिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिक्लन्दिषाम्बभूव चिक्लन्दिषामास (य वहि महि
७ चिक्लन्दिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्लन्दिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्लन्दिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिक्लन्दिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १००९ क्रपि ( क्रप् ) कृपायाम् ।

१ चिक्रपि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्रपिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्रपि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्रपि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्रपिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्रपिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्रपिषाञ्चक्रे चिक्रपिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिक्रपिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्रपिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्रपिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिक्रपिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १०१० ञित्विरिष् ( त्वर् ) सम्भ्रमे ।

१ तित्वरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तित्वरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तित्वरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतित्वरि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अतित्वरिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तित्वरिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तित्वरिषाञ्चक्रे तित्वरिषामास (य वहि महि
७ तित्वरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तित्वरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तित्वरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतित्वरिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १०११ प्रसिष् ( प्रस् ) विस्तारे ।

१ पिप्रसि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिप्रसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिप्रसि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिप्रसि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्रसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्रसिषाञ्च-के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
पिप्रसिषाम्बभूव पिप्रसिषामास (य वहि महि
७ पिप्रसिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिप्रसिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्रसिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिप्रसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### १०१२ दक्षि ( दक्ष् ) हिंसागत्योः ।

१ दिदक्षि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदक्षिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदक्षि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अदिदक्षि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदक्षिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदक्षिषाञ्च–के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
दिदक्षिषाम्बभूव दिदक्षिषामास [य वहि महि
७ दिदक्षिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदक्षिषिता–" रौ र. से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदक्षिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदक्षिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१०१३ श्रां (श्रा) पाके । श्रै ४६ वद्रूपाणि
१०१४ स्मृं ( स्मृ ) आध्याने । स्मृ १८ वद्रूपाणि

### १०१५ दॄ ( दॄ ) भये ।

१ दिदरिष–ति तः न्ति सि थः थ दिदरिषा–मि वः मः
२ दिदरिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदरिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदरिषा–नि व म
४ अदिदरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदरिषा-व म
५ अदिदरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदरिषाञ्च–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्रकार कर कृव कृम
दिदरिषाम्बभूव दिदरिषामास
७ दिदरिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदरिषिता - " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ दिदरिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिदरिषिष्या–मि
वः मः (अदिदरिषिष्या–व म
१०अदिदरिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे दिदरि-स्थाने ददीर् दिदरि–इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०१६ नॄ (नॄ) नये ।

१ निनरिष-ति तः न्ति सि थः थ निनरिषा-मि वः मः
२ निनरिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनरिषा-णि व म
४ अनिनरिष-त ताम् न् : तम् त म् अनिनरिषा-व म
५ अनिनरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनरिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
निनरिषाम्बभूव निनरिषामास
७ निनरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनरिषिष्या-मि वः मः (अनिनरिषिष्या-व म
१० अनिनरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे निनरि-स्थाने निनरी निनोर्-इति ज्ञेयम्

१०१७ ष्टक (स्तक्) प्रतीघाते ।

१ तिस्तकिष-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तकिषा-मि वः मः
२ तिस्तकिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तिस्तकिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिस्तकिषा-णि व म म
४ अतिस्तकिष-त ताम् न् : तम् त म् अतिस्तकिषा-व
५ अतिस्तकि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्तकिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तकिषाञ्चकार तिस्तकिषामास
७ तिस्तकिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तकिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्तकिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तकिषिष्या मि वः मः (अतिस्तकिषिष्या-व म
१० अतिस्तकिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
१०१८ स्तक (स्तक्) प्रतीघाते । ष्टक १०१७ वद्रूपाणि

१०१९ चक (चक्) तृप्तौ च ।

१ चिचकिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचकिषा-मि वः मः
२ चिचकिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचकिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचकिषा-णि व म
४ अचिचकिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचकिषा-व म
५ अचिचकि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ चिचकिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
चिचकिषाम्बभूव चिचकिषामास
७ चिचकिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचकिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचकिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचकिषिष्या-मि वः मः (अचिचकिषिष्या-व म
१० अचिचकिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०२० अक (अक्) कुटिलायां गतौ ।

१ अचिकिष-ति तः न्ति सि थः थ अचिकिषा मि वः मः
२ अचिकिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अचिकिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अचिकिषा-णि व म
४ आचिकिष-त् ताम् न् : तम् त म् आचिकिषा-व म
५ आचिकि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अचिकिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अचिकिषामास अचिकिषाञ्चकार
७ अचिकिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अचिकिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अचिकिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ अचिकिषिष्या-मि वः मः (आचिकिषिष्या-व म
१० आचिकिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १०२१ कखे ( कख् ) हसने ।

१ चिकखिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकखिषा-मि व मः
२ चिकखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकखिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकखिषा-णि व म
४अचिकखिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिकखिषा-व म
५अचिकखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६चिकखिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
चिकखिषाम्बभूव चिकखिषामास
७ चिकखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकखिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९चिकखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकखिषिष्या-
मि वः मः (अचिकखिषिष्या-व म
१०अचिकखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०२३ रगे ( रग् ) शङ्कायाम् ।

१ रिरगिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरगिषा-मि वः मः
२ रिरगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरगिषा-णि व म
४अरिरगिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरगिषा-व म
५ अरिरगि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६रिरगिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरगिषाञ्चकार रिरगिषाम्बभूव
७ रिरगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९रिरगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरगिषिष्या-मि वः
मः (अरिरगिषिष्या-व म
१०अरिरगिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०२२ अग ( अग् ) अकवत् ।

१ अचिगिष-ति तः न्ति सि थः थ अचिगिषा-मि वः मः
२ अचिगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अचिगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अचिगिषा-णि व म
४ आचिगिष-त् ताम् न् : तम् त म आचिगिषा-व म
५ आचिगि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अचिगिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अचिगिषाञ्चकार अचिगिषामास
७ अचिगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अचिगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९अचिगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अचिगिषिष्या-
मि वः मः ( आचिगिषिष्या-व म
१०आचिगिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०२४ लगे ( लग् ) सङ्गे ।

१ लिलगिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलगिषा मि वः मः
२ लिलगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलगिषा-णि व म
४अलिलगिष-त् ताम न् : तम् त म् अलिलगिषा-व म
५ अलिलगि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६लिलगिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलगिषाञ्चकार लिलगिषाम्बभूव
७ लिलगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलगिषिष्या-
मि वः मः (अलिलगिषिष्या-व म
१० अलिलगिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १०२५ ह्लगे ( ह्लग् ) संवरणे ।

१ जिह्लगिष-ति तः न्ति सि थः थ जिह्लगिषा-मि वः मः
२ जिह्लगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्लगिष-तु तात् तात न्तु " तात् तम त
जिह्लगिषा-णि व म
४अजिह्लगिष त् ताम् न् : तम् त म् अजिह्लगिषा व म
५ अजिह्लगि-षीत् षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ जिह्लगिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिह्लगिषाञ्चकार जिह्लगिषामास
७ जिह्लगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्लगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्लगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्लगिषिष्या
मि वः मः (अजिह्लगिषिष्या-व म
१० अजिह्लगिषिष्य त् ताम् न : तम् त म्

### १०२६ ह्लगे ( ह्लग् ) संवरणे ।

१ जिह्लगिष ति तः न्ति सि थः थ जिह्लगिषा-मि वः मः
२ जिह्लगिषे-त ताम् युः : तम त यम् व म
३ जिह्लगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
जिह्लगिषा-णि व म
४ अजिह्लगिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिह्लगिषा-व म
५ अजिह्लगि-षीत् षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म.
६ जिह्लगिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिह्लगिषाञ्चकार जिह्लगिषाम्बभूव
७ जिह्लगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्लगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्लगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्लगिषिष्या-
मि वः मः (अजिह्लगिषिष्या-व म
१० अजिह्लगिषिष्य-त् ताम् त् : तम् त म

### १०२७ षगे ( सग् ) संवरणे ।

१ सिसगिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसगिषा-मि वः मः
२ सिसगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसगिषा-णि व म
४ असिसगिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसगिषा-व म
५ असिसगि-षीत् षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसगिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
सिसगिषाम्बभूव सिसगिषामास
७ सिसगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसगिषिष्या
मि वः मः (असिसगिषिष्या-व म
१० असिसगिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१०२८ सगं ( सग् ) संवरणे । षगं १०२७ वद्रूपाणि

### १०२९ ष्ठगे ( स्थग् ) संवरणे ।

१ तिस्थगिष ति त न्ति सि थः थ तिस्थगिषा-मि वः मः
२ तिस्थगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तिस्थगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिस्थगिषा-णि व म
४ अतिस्थगिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतिस्थगिषा-व म
५ अतिस्थगि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्थगिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्थगिषाञ्चकार तिस्थगिषामास
७ तिस्थगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्थगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्थगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तिस्थगिषिष्या
मि वः मः (अतिस्थगिषिष्या व म
१० अतिस्थगिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०३० स्थगं ( स्थग् ) संवरणे । ष्ठगे १०२९ वद्रूपाणि
१०३१ वट ( वट् ) परिभाषणे । वट १७६ वद्रूपाणि
१०३२ भट [ भट् ] परिभाषणे । भट १८४ वद्रूपाणि
१०३३ णट ( नट् ) नतौ । णट १८७ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०३४ गड ( गड् ) कम्पने ।

१ जिगडिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगडिषा-मि वः मः
२ जिगडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त जिगडिषा-णि व म
४अजिगडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगडिषा-व म
५ अजिगडि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६जिगडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर-कृम कृव
जिगडिषाम्बभूव जिगडिषामास
७ जिगडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगडिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिगडिषिष्य-ति तः न्ति सिं थः थ जिगडिषिष्या-मि वः मः (अजिगडिषिष्या-व म
१०अजिगडिषिष्य-त् ताम् न : तम् त म्
लत्वे जिगलिषतीत्यादि

१०३५ हेड ( हेड् ) वेष्टने ।

१जिहेडिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहेडिषा-मि वः मः
२ जिहेडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहेडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जिहेडिषा-णि व म
४अजिहेडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिहेडिषा-व म
५ अजिहेडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६जिहेडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिहेडिषाम्बभूव जिहेडिषामास
७ जिहेडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहेडिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिहेडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहेडिषिष्या-मि वः मः (अजिहेडिषिष्या-व म
१०अजिहेडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१०३६ लड ( लड् ) जिह्वोन्मथने ।

१ लिलडिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलडिषा-मि वः मः
२ लिलडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त लिलडिषा-णि व म
४अलिलडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलडिषा-व म
५ अलिलडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६लिलडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलडिषामास लिलडिषाञ्चकार
७ लिलडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलडिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लिलडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलडिषिष्या-मि वः मः (अलिलडिषिष्या-व म
१०अलिलडिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्
लत्वे लिललिषतीत्यादि ।

१०३७ फण ( फण् ) गतौ ।

१पिफणिष-ति तः न्ति सि थः थ पिफणिषा-मि वः म
२ पिफणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिफणिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त पिफणिषा-णि व म
४अपिफणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिफणिषा-व म
५अपिफणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६पिफणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
पिफणिषाञ्चकार पिफणिषामास
७ पिफणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिफणिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९पिफणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिफणिषिष्या-मि वः मः (अपिफणिषिष्या -व म
१०अपिफणिषिष्य-त ताम न् : तम् त म
१०३८ कण [ कण् ] गतौ । कण २७० वद्रूपाणि
१०३९ रण [ रण् ] गतौ । २६० वद्रूपाणि
१०४० चण [चण्] हिंसादानयोश्च । चण २७२ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १०४१ शण ( शण् ) दाने ।

१ शिशणिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशणिषा-मि वः म

२ शिशणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म

३ शिशणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शिशणिषा-णि व म

४ अशिशणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशणिषा-व म

५ अशिशणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म

६ शिशणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम शिशणिषाश्चकार शिशणिषामास

७ शिशणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ शिशणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ शिशणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशणिषिष्या-मि वः मः (अशिशणिषिष्या-व म

१० अशिशणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १०४२ श्रण ( श्रण् ) दाने ।

१ शिश्रणिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रणिषा-मि वः मः

२ शिश्रणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म

३ शिश्रणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शिश्रणिषा-णि व म

४ अशिश्रणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रणिषा-व म

५ अशिश्रणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म

६ शिश्रणिषाश्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम शिश्रणिषाम्बभूव शिश्रणिषामास

७ शिश्रणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ शिश्रणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ शिश्रणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रणिषिष्या-मि वः मः (अशिश्रणिषिष्या-व म

१० अशिश्रणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १०४३ स्नथ ( स्नथ् ) हिंसार्थः ।

१ सिस्नथिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्नथिषा-मि वः मः

२ सिस्नथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म

३ सिस्नथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त सिस्नथिषा-णि व म

४ असिस्नथिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्नथिषा-व म

५ असिस्नथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म

६ सिस्नथिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम सिस्नथिषामास सिस्नथिषाश्चकार

७ सिस्नथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ सिस्नथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ सिस्नथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्नथिषिष्या-मि वः मः (असिस्नथिषिष्या-व म

१० असिस्नथिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १०४४ क्नथ ( क्नथ् ) हिंसार्थः ।

१ चिक्नथिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्नथिषा-मि वः मः

२ चिक्नथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म

३ चिक्नथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिक्नथिषा-णि व म

४ अचिक्नथिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्नथिषा-व म

५ अचिक्नथि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म कर-कृम कृव

६ चिक्नथिषाश्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार चिक्नथिषाम्बभूव चिक्नथिषामास

७ चिक्नथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चिक्नथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ चिक्नथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्नथिषिष्या-मि वः मः (अचिक्नथिषिष्या-व म

१० अचिक्नथिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०४५ क्रथ ( क्रथ ) हिंसार्थः ।

१ चिक्रथिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्रथिषा-मि वः मः
२ चिक्रथिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्रथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिक्रथिषा-णि व म
४ अचिक्रथिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्रथिषा-व म
५ अचिक्रथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्रथिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिक्रथिषाञ्चकार चिक्रथिषामास
७ चिक्रथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्रथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्रथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्रथिषिष्या-मि मः वः (अचिक्रथिषिष्या-व म
१० अचिक्रथिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१०४६ क्लथ ( क्लथ् ) हिंसार्थः ।

१ चिक्लथिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लथिषा-मि वः मः
२ चिक्लथिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्लथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिक्लथिषा-णि व म
४ अचिक्लथिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्लथिषा-व म
५ अचिक्लथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्लथिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम चिक्लथिषाम्बभूव चिक्लथिषामास
७ चिक्लथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्लथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लथिषिष्या-मि वः मः (अचिक्लथिषिष्या-व म
१० अचिक्लथिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१०४७ छद ( छद् ) ऊर्जने ।

१ चिच्छदिष-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छदिषा-मि वः मः
२ चिच्छदिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिच्छदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिच्छदिषा-णि व म
४ अचिच्छदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छदिषा-व म
५ अचिच्छदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिच्छदिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिच्छदिषामास चिच्छदिषाञ्चकार
७ चिच्छदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छदिषिष्या-मि व. मः (अचिच्छदिषिष्या-व म
१० अचिच्छदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०४८ मदै ( मद् ) हर्षग्लपनयोः ।

१ मिमदिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमदिषा-मि वः मः
२ मिमदिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त मिमदिषा-णि व म
४ अमिमदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमदिषा-व म
५ अमिमदि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ मिमदिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार मिमदिषाम्बभूव मिमदिषामास
७ मिमदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमदिषिष्या-मि वः मः (अमिमदिषिष्या-व म
१० अमिमदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१०४९ ष्टन ( स्तन् ) शब्दे । स्तन ३२३ वद्रूपाणि
१०५० स्तन ( स्तन् ) शब्दे । वट ३२३ वद्रूपाणि
१०५१ ध्वन [ ध्वन् ] शब्दे । ध्वन ३२५ वद्रूपाणि
१०५२ स्वन ( स्वन् ) अवतंसे । ३२७ वद्रूपाणि
१०५३ चन [ चन् ] हिंसायाम् । चन ३२६ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०५४ ज्वर ( ज्वर् ) रोगे ।

१ जिज्वरिष-ति तः न्ति सि थः थ जिज्वरिषा-मि वः मः
२ जिज्वरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिज्वरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिज्वरिषा-णि व म
४ अजिज्वरिष त् ताम् न् : तम् त म् अजिज्वरिषा-व म
५ अजिज्वरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिज्वरिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृवकृम
जिज्वरिषाम्बभूव जिज्वरिषामास
७ जिज्वरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिज्वरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिज्वरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिज्वरिषिष्या-मि व मः (अजिज्वरिषिष्या-व म
१० अजिज्वरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०५५ चल [चल्] कम्पने । चल ९७२ वत्रूपाणि

१०५६ ह्वल ( ह्वल् ) चलने ।

१ जिह्वलिष-ति तः न्ति सि थः थ जिह्वलिषा-मि वः मः
२ जिह्वलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्वलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिह्वलिषा-णि व म
४ अजिह्वलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिह्वलषा-व म
५ अजिह्वलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिह्वलिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिह्वलिषाम्बभूव जिह्वलिषामास
७ जिह्वलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्वलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्वलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्वलिषिष्या-मि वः मः (अजिह्वलिषिष्या-व म
१० अजिह्वलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०५७ ह्मल ( ह्मल् ) चलने ।

१ जिह्मलिष-ति तः न्ति सि थः थ जिह्मलिषा-मि वः मः
२ जिह्मलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्मलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिह्मलिषा-णि व म
४ अजिह्मलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिह्मलिषा-व म
५ अजिह्मलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिह्मलिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिह्मलिषाञ्चकार जिह्मलिषाम्बभूव
७ जिह्मलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्मलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्मलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्मलिषिष्या-मि वः मः (अजिह्मलिषिष्या-व म
१० अजिह्मलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०५८ ज्वल [ज्वल्] दीप्तौ । ज्वल ९६० वत्रूपाणि

इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि-सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम-तीर्थरक्षणपरायण-विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि-अखण्ड-विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरायमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे
॥ भ्वादिगणः संपूर्णः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०५९ अदं ( अद् ) भक्षणे ।

१ जिघत्स-ति तः न्ति सि थः थ जिघत्सा-मि वः मः
२ जिघत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिघत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघत्सा-नि व म
४ अजिघत्स-त् ताम् न् : तम् त म् अजिघत्सा-व म
५ अजिघत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ जिघत्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिघत्साञ्चकार जिघत्साम्बभूव
७ जिघत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघत्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघत्सिष्या-मि वः मः (अजिघत्सिष्या-व म
१० अजिघत्सिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

१०६० प्सां ( प्सा ) भक्षणे ।

१ पिप्सास-ति तः न्ति सि थः थ पिप्सासा-मि वः मः
२ पिप्सासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिप्सास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिप्सासा-नि व म
४ अपिप्सास-त् ताम न् : तम् त म् अपिप्सासा-व म
५ अपिप्सा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ पिप्सासामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिप्सासाञ्चकार पिप्सासाम्बभूव
७ पिप्सास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिप्सासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिप्सासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिप्सासिष्या-मि वः मः (अपिप्सासिष्या-व म
१० अपिप्सासिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१०६१ भांक् ( भा ) दीप्तौ ।

१ बिभास-ति तः न्ति सि थः थ बिभासा-मि वः मः
२ बिभासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभासा-नि व म
४ अबिभास-त् ताम् न् : तम् त म अबिभासा-व म
५ अबिभा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ बिभासाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभासाञ्चकार बिभासामास
७ बिभास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभासिष्या-मि वः मः ( अबिभासिष्या-व म
१० अबिभासिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१०६२ यांक् ( या ) प्रापणे ।

१ यियास-ति तः न्ति सि थः थ यियासा-मि वः मः
२ यियासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ यियास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
यियासा-नि व म
४ अयियास-त् ताम् न् : तम् त म् अयियासा-व म
५ अयिया-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ यियासाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
यियासाम्बभूव यियासामास
७ यियास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ यियासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ यियासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ यियासिष्या-मि वः मः ( अयियासिष्या-व म
१० अयियासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०६३ वांक् (वा) गतिबन्धनयोः । ओवैं ४८ वद्रूपाणि
१०६४ ष्णांक् [ स्ना ] शौचे । ष्णैं ४१ वद्रूपाणि
१०६५ श्रांक् [ श्रा ] पाके । श्रां ४६ वद्रूपाणि
१०६६ द्रांक् [द्रा] कुत्सित गतौ । द्रै ३४ वद्रूपाणि
१०७७ पांक् [ पा ] रक्षणे । २ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०६८ लांक् ( ला ) आदाने ।

१ लिलास–ति तः न्ति सि थः थ लिलासा–मि व मः
२ लिलासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलास–तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त
लिलासा–नि व म
४ अलिलास–त् ताम् न् : तम् त म् अलिलासा–व म
५ अलिला–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ लिलासाञ्च–कार कतुः कु. कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
लिलासाम्बभूव लिलासामास
७ लिलास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलासिता "रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ लिलासिष्य–ति तः न्ति सि थ थ लिलासिष्या–मि
वः मः ( अलिलासिष्या–व म
१० अलिलासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१०६९ रांक् ( रा ) दाने । रैं ३८ वद्रूपाणि
१०७० दांवक् [ दा ] लवने । दैंव् २९ वद्रूपाणि

१०७१ ख्यांक् ( ख्या ) प्रकथने ।

१ चिख्यास–ति तः न्ति सि थः थ चिख्यासा–मि वः मः
२ चिख्यासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिख्यास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिख्यासा–नि व म
४ अचिख्यास–त् ताम न् : तम् त म् अचिख्यासा–व म
५ अचख्या–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम
सिष्व सिष्म
६ चिख्यासामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिख्यासाञ्चकार चिख्यासाम्बभूव
७ चिख्यास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिख्यासिता–" रौ र सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्म
९ चिख्यासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिख्यासिष्या–
मि व. मः (अचिख्यासिष्या–व म
१० अचिख्यासिष्य–त ताम् न् : तम् त म्

१०७२ प्रांक् ( प्रा ) पूरणे ।

१ पिप्रास–ति तः न्ति सि थः थ पिप्रासा–मि वः मः
२ पिप्रासे–त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ पिप्रास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिप्रासा–नि व म
४ अपिप्रास–त् ताम् न् : तम् त म अपिप्रासा–व म
५ अपिप्रा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ पिप्रासाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिप्रासाञ्चकार पिप्रासामास
७ पिप्रास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिप्रासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
पिप्रासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिप्रासिष्या–मि वः
मः ( अपिप्रासिष्या–व म
१० अपिप्रासिष्य–त ताम् न् : तम् त म्

१०७३ मांक् ( मा ) माने ।

१ मित्स–ति तः न्ति सि थः थ मित्सा–मि वः मः
२ मित्से–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मित्स–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मित्सा–नि व म
४ अमित्स–त् ताम् न् : तम् त म् अमित्सा–व म
५ अमित्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सी. सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ मित्सामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मित्साञ्चकार मित्साम्बभूव
७ मित्स्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मित्सिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मित्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मित्सिष्या–मि वः मः
(अमित्सिष्या–व म
१० अमित्सिष्य–त ताम् न् : तम त म

१०७४ इंक् [इ] स्मरणे । अज्ञानार्थे गम्लृं ३९८ वद्रूपाणि
१०७५ इंण्क् [इ] गतौ । गम्लृं ३९६ वद्रूपाणि
ज्ञाने तु इं ११ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०७६ वींकृ (वी) प्रजनकान्त्यसनखादने च ।
१ विवीष-ति तः न्ति सि थः थ विवीषा-मि वः मः
२ विवीषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवीष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवीषा-णि व म
४ अविवीष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवीषा-व म
५ अविवी-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवीषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विवीषाम्बभूव विवीषामास
७ विवीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवीषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवीषिष्य-ति त न्ति सि थः थ विवीषिष्या-मि वः म
(अविवीषिष्या-व म
१० अविवीषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
अत्र ईक इति प्रश्लेषेऽस्य रूपाणि ईं ११ वद्रूपाणि

१०७७ धुंकृ ( धु ) अभिगमने ।
१ दुद्यूष-ति तः न्ति सि थः थ दुद्यूषा-मि वः मः
२ दुद्यूषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुद्यूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुद्यूषा-णि व म
४ अदुद्यूष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुद्यूषा-व म
५ अदुद्यू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुद्यूषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार-कर कृव कृम
दुद्यूषाम्बभूव दुद्यूषामास
७ दुद्यूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुद्यूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुद्यूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुद्यूषिष्या-मि वः मः
(अदुद्यूषिष्या-व म
१० अदुद्यूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
१०७८ षुंकृ [सु] प्रसवैश्वर्ययोः । षुं १७ वद्रूपाणि

१०७९ तुंकृ ( तु ) वृत्तिहिंसापूरणेषु ।
१ तुतूष-ति तः न्ति सि थः थ तुतूषा-मि वः मः
२ तुतूषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतूषा-णि व म
४ अतुतूष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतूषा-व म
५ अतुतू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतूषाञ्चकार तुतूषामास
७ तुतूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतूषिष्या-मि वः मः
( अतुतूषिष्या-व म
१० अतुतूषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्

१०८० युकृ ( यु ) मिश्रणे ।
१ युयूष-ति तः न्ति सि थः थ युयूषा-मि व मः
२ युयूषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ युयूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
युयूषा-नि व म
४ अयुयूष-त् ताम् न् : तम् त म् अयुयूषा-व म
५ अयुयू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ युयूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
युयूषाञ्चकार युयूषाम्बभूव
७ युयूष्या-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ युयूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ युयूषिष्या-मि
वः मः ( अयुयूषिष्या-व म
१० अयुयूषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १०८१ णुक् ( नु ) स्तुतौ ।

१ नुनूष–ति तः न्ति सि थः थ नुनूषा–मि वः मः
२ नुनूषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ नुनूष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
नुनूषा–णि व म
४ अनुनूष–त ताम् न् : तम् त म् अनुनूषा–व म
५ अनुनू–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ नुनूषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
नुनूषाञ्चकार नुनूषामास
७ नुनूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ नुनूषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ नुनूषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ नुनूषिष्या–मि वः मः
(अनुनूषिष्या–व म
१० अनुनूषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १०८२ क्ष्णुक् ( क्ष्णु ) तेजने ।

१ चुक्ष्णूष–ति तः न्ति सि थः थ चुक्ष्णूषा–मि वः मः
२ चुक्ष्णूषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुक्ष्णूष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुक्ष्णूषा–णि व म
४ अचुक्ष्णूष–त् ताम् न् : तम् त म अचुक्ष्णूषा–व म
५ अचुक्ष्णू–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुक्ष्णूषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चुक्ष्णूषाम्बभूव चुक्ष्णूषामास
७ चुक्ष्णूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्ष्णूषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुक्ष्णूषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुक्ष्णूषिष्या–मि
वः मः (अचुक्ष्णूषिष्या–व म
१० अचुक्ष्णूषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

## १०८३ स्नुक् ( स्नु ) प्रस्नवने ।

१ सुस्नूष–ति तः न्ति सि थः थ सुस्नूषा–मि वः मः
२ सुस्नूषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुस्नूष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुस्नूषा–णि व म
४ असुस्नूष–त् ताम् न् : तम् त म असुस्नूषा–व म
५ असुस्नू–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सुस्नूषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सुस्नूषामास सुस्नूषाञ्चकार
७ सुस्नूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुस्नूषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुस्नूषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सुस्नूषिष्या–मि वः मः
(असुस्नूषिष्या–व म
१० असुस्नूषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १०८४ टुक्षु ( क्षु ) शब्दे ।

१ चुक्षूष–ति तः न्ति सि थः थ चुक्षूषा–मि वः मः
२ चुक्षूषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुक्षूष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चुक्षूषा–णि व म
४ अचुक्षूष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुक्षूषा–व म
५ अचुक्षू षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर–कृम कृव
६ चुक्षूषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार
चुक्षूषाम्बभूव चुक्षूषामास
७ चुक्षूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्षूषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुक्षूषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुक्षूषिष्या–मि वः मः
(अचुक्षूषिष्या–व म
१० अचुक्षूषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १०८५ रूङ् ( रू ) शब्दे ।

१ रुरूष-ति तः न्ति सि थः थ रुरूषा-मि वः मः
२ रुरूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरूषा-णि व म
४ अरुरूष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरूषा-व म
५ अरुरू षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरूषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव कृम
रुरूषाम्बभूव रुरूषामास
७ रुरूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरूषिष्य- ति तः न्ति सि थः थ रुरूषिष्या-मि वः मः
(अरुरूषिप्या-व म
१०अरुरूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०८७ रुदृङ् ( रुद् ) अश्रुविमोचने ।

१ रुरुदिष-ति तः न्ति सि थः थ रुरुदिषा-मि वः मः
२ रुरुदिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरुदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरुदिषा-णि व म
४ अरुरुदिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरुदिषा-व म
५ अरुरुदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरुदिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रुरुदिषाञ्चकार रुरुदिषामास
७ रुरुदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुदिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रुरुदिषिष्या-मि वः
मः (अरुरुदिषिष्या-व म
१०अरुरुदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०८६ कुंङ् ( कु ) शब्दे ।

१ चुकूष-ति तः न्ति सि थः थ चुकूषा-मि वः मः
२ चुकूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकूषा-णि व म
४ अचुकूष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकूषा-व म
५ अचुकू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकूषाञ्च कार कतुः कु कर्थ क्रथुः क कार-कर कृव कृम
चुकूषाम्बभूव चुकूषामास
७ चुकूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चुकूषिष्य ति तः न्ति सि थः थ चुकूषिष्या-मि वः म
(अचुकूषिष्या-व म
१०अचुकूषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १०८८ ञिस्वपंङ् ( स्वप् ) शये ।

१ सुषुप्स-ति तः न्ति सि थः थ सुषुप्सा-मि वः मः
२ सुषुप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुषुप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुषुप्सा-नि व म
४ असुषुप्स-त् ताम् न् : तम् त म् असुषुप्सा-व म
५ असुषुप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सुषुप्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सुषुप्साञ्चकार सुषुप्साम्बभूव
७ सुषुप्स्या-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुषुप्सिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुषुप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुषुप्सिष्या-मि
वः मः ( असुषुप्सिष्या-व म
१०असुषुप्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१०८९ अन ( अन् ) प्राणने ।

१ अनिनिष-ति तः न्ति सि थः थ अनिनिषा-मि वः मः
२ अनिनिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अनिनिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अनिनिषा-णि व म
४ आनिनिष-त् ताम् न् : तम् त म् आनिनिषा-व म
५ आनिनि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृप षिष्व षिष्म
६ अनिनिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
अनिनिषाम्बभूव अनिनिषामास
७ अनिनिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अनिनिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अनिनिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अनिनिषिष्या-मि वः मः
(आनिनिषिष्या-व म
१० आनिनिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१०९० श्वसक् ( श्वस् ) प्राणने ।

१ शिश्वसिष-ति त न्ति सि थः थ शिश्वसिषा मि वः म
२ शिश्वसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्वसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्वसिषा-णि व म म
४ अशिश्वसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्वसिषा-व
५ अशिश्वसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्वसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्वसिषाञ्चकार शिश्वसिषामास
७ शिश्वसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्वसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्वसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्वसिषिष्या मि वः मः
(अशिश्वसिषिष्या-व म
१० अशिश्वसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०९१ जक्षक् ( जक्ष् ) भक्षहसनयोः ।

१ जिजक्षिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजक्षिषा-मि वः मः
२ जिजक्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजक्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजक्षिषा-णि व म
४ अजिजक्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजक्षिषा-व म
५ अजिजक्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजक्षिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजक्षिषाञ्चकार जिजक्षिषाम्बभूव
७ जिजक्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजक्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजक्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजक्षिषिष्या-मि वः मः
(अजिजक्षिषिष्या-व म
१० अजिजक्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१०९२ दरिद्राक् ( दरिद्रा ) दुर्गतौ ।

१ दिदरिद्रास-ति तः न्ति सि थः थ दिदरिद्रासा-मि वः मः
२ दिदरिद्रासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदरिद्रास-तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त
दिदरिद्रासा-णि व म व म
४ अदिदरिद्रास-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदरिद्रासा
५ अदिदरिद्रा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ दिदरिद्रासाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिदरिद्रासाञ्चकार दिदरिद्रासामास
७ दिदरिद्रास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदरिद्रासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदरिद्रासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदरिद्रासिष्या मि वः मः
(अदिदरिद्रासिष्या-व म
१० अददरिद्रासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ददरिद्रिष-तिं तः न्ति सि थः थ ददिरिद्रिषा-मि वः मः
२ दिदरिद्रिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदरिद्रिष-तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त
दिदरिद्रिषा-णि व म व म
४अदिदरिद्रिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदरिद्रिषा
५ अदिदरिद्रि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६दिदरिद्रिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिदरिद्रिषाञ्चकार दिदरिद्रिषामास
७ दिदरिद्रिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदरिद्रिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिदरिद्रिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदरिद्रिषिष्या
मि वः मः (अदिदरिद्रिषिष्या-व म
१०अददरिद्रिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १०९३ जागृक् ( जागृ ) निद्राक्षये ।

१जिजागरिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजागरिषा-मि वः मः
२ जिजागरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजागरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजागरिषा-णि व म व म
४अजिजागरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजागरिषा-
५ अजिजागरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजागरिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजागरिषाञ्चकार जिजागरिषाम्बभूव
७ जिजागरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजागरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिजागरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजागरिषिष्या-मि वः मः (अजिजागरिषिष्या-व म
१०अजिजागरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १०९४ चकासृक् ( चकास् ) दीप्तौ ।

१ चिचकासिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचकासिषा-मि वः मः
२ चिचकासिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचकासिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचकासिषा-णि व म व म
४अचिचकासिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचकासिषा
५ अचिचकासि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६चिचकासिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिचकासिषाम्बभूव चिचकासिषामास
७ चिचकासिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचकासिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिचकासिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचकासिषिष्या-मि वः मः (अचिचकासिषिष्या-व म
१०अचिचकासिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १०९५ शासू ( शास् ) अनुशिष्टौ ।

१शिशासिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशासिषा-मि वः मः
२ शिशासिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशासिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशासिषा-णि व म म
४ अशिशासिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशासिषा-व
५ अशिशासि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६शिशासिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशासिषाञ्चकार शिशासिषामास
७ शिशासिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशासिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९शिशासिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशासिषिष्या
मि वः मः (अशिशासिषिष्या-व म
१०अशिशासिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १०९६ वचंक् ( वच् ) भाषणे ।

१ **विवक्ष**-ति तः न्ति सि थः थ **विवक्षा**-मि वः मः
२ **विवक्षे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विवक्ष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**विवक्षा**-णि व म
४ **अविवक्ष** त् ताम् न् : तम् त म् **अविवक्षा**-व म
५ **अविव** क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ **विवक्षाञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**विवक्षाम्बभूव** **विवक्षामास**
७ **विवक्ष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवक्षिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवक्षिष्य**-ति त न्ति सि थः थ **विवक्षिष्या**-मि वः मः
(**अविवक्षिष्या**-व म
१० **अविवक्षिष्य**-त् ताम न् : तम् त म्

### १०९७ मृजौक् ( मृज् ) शुद्धौ ।

१ **मिमार्जिष**-ति तः न्ति सि थः थ **मिमार्जिषा**-मि वः मः
२ **मिमार्जिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **मिमार्जिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**मिमार्जिषा**-णि व म
४ **अमिमार्जिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अमिमार्जिषा**-व म
५ **अमिमार्जि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **मिमार्जिषाञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**मिमार्जिषाम्बभूव** **मिमार्जिषामास**
७ **मिमार्जिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **मिमार्जिषिता**-" रौ र. सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **मिमार्जिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **मिमार्जिषिष्या**-मि
व मः (**अमिमार्जिषिष्या** व म
१० **अमिमार्जिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे मिमार्जि-स्थाने मिमृक्-इति ज्ञेयम्**

### १०९८ मस्तुक् ( संस्त् ) स्वप्ने ।

१ **सिसंस्तिष**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसंस्तिषा**-मि वः मः
२ **सिसंस्तिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **सिसंस्तिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**सिसंस्तिषा**-णि व म म
४ **असिसंस्तिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **असिसंस्तिषा**-व
५ **असिसंस्ति**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **सिसंस्तिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**सिसंस्तिषाञ्चकार** **सिसंस्तिषामास**
७ **सिसंस्तिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसंस्तिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिसंस्तिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसंस्तिषिष्या**
मि वः मः (**असिसंस्तिषिष्या**-व म
१० **असिसंस्तिषिष्य**-त् ताम न् : तम् त म्

### १०९९ विदक् ( विद् ) ज्ञाने ।

१ **विविदिष**-ति तः न्ति सि थः थ **विविदिषा**-मि वः मः
२ **विविदिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विविदिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**विविदिषा**-णि व म
४ **अविविदिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अविविदिषा**-व म
५ **अविविदि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **विविदिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**विविदिषाञ्चकार** **विविदिषाम्बभूव**
७ **विविदिष्या**-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विविदिषिता**-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विविदिषिष्य** ति तः न्ति सि थः थ **विविदिषिष्या**-
मि वः मः (**अविविदिषिष्या** व म
१० **अविविदिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११०० हनंक् ( हन् ) हिंसागत्योः ।

१ जिघांस-ति तः न्ति सि थः थ जिघांसा-मि वः मः
२ जिघांसे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिघांस-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघांसा-नि व म
४ अजिघांस-त् ताम् न् : तम् त म् अजिघांसा-व म
५ अजिघां-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ जिघांसामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिघांसाञ्चकार जिघांसाम्बभूव
७ जिघांस्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघांसिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघांसिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघांसिष्या-मि वः
मः (अजिघांसिष्या-व म
१० अजिघांसिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ११०१ वशक् ( वश् ) कान्तौ ।

१ विवशिष-ति तः न्ति सि थः थ विवशिषा-मि वः मः
२ विवशिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवशिषा-णि व म
४ अविवशिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवशिषा-व म
५ अविवशि-षीत् षिष्टाम् सिषुः पीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवशिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवशिषाञ्चकार विवशिषाम्बभूव
७ विवशिष्या-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवशिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवशिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ विवशिषिष्या-
मि वः मः (अविवशिषिष्या व म
१० अविवशिषिष्य-त् ताम् न : तम् त म्

११०२ असक् ( अस्-भू ) भुवि । भू. १ वद्रूपाणि

### ११०३ षसक् ( सस् ) स्वप्ने ।

१ सिससिष-ति तः न्ति सि थः थ सिससिषा-मि वः मः
२ सिससिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिससिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिससिषा णि व म
४ असिससिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिससिषा-व म
५ असिससि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिससिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिससिषाञ्चकार सिससिषामास
७ सिससिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिससिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिससिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिससिषिष्या-मि
वः मः (असिससिषिष्या-व म
१० असिससिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ११०४ इंड्क् ( इ ) अध्ययने ।

१ अधिजिगां-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ अधिजिगांसे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अधिजिगां-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अध्यजिगां-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अध्यजिगांसि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम्
६ अधिजिगांसामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अधिजिगांसाञ्चक्रे अधिजिगांसाम्बभूव [वहि महि
७ अधिजिगांसिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ अधिजिगांसिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अधिजिगांसि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अध्यजिगांसि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११०५ शीङ्क् ( शी ) स्वप्ने ।

१ शिशयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशयिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे शिशयिषाम्बभूव शिशयिषामास (य वहि महि
७ शिशयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ११०६ ह्नुङ्क् ( ह्नु ) अपनयने ।

१ जुह्नू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुह्नूषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुह्नू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुह्नू–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुह्नूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुह्नूषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जुह्नूषाञ्चक्रे जुह्नूषामास (य वहि महि
७ जुह्नूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुह्नूषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुह्नूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुह्नूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ११०७ षूङौक् ( सू ) प्राणिगर्भविमोचने ।

१ सुसू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सुसूषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सुसू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ असुसू–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असुसूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सुसूषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम सुसूषाञ्चक्रे सुसूषामास (य वहि महि
७ सुसूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सुसूषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सुसूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असुसूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ११०८ पृचैङ् ( पृच् ) संपर्चने ।

१ पिपर्चि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपर्चिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपर्चि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिपर्चि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपर्चिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपर्चिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम पिपर्चिषाञ्चक्रे पिपर्चिषाम्बभूव (य वहि महि
७ पिपर्चिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपर्चिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपर्चिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिपर्चिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११०९ पृजुङ् ( पृञ्ज् ) सम्पर्चने ।

१ पिपृञ्जि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपृञ्जिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपृञ्जि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिपृञ्जि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपृञ्जिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपृञ्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपृञ्जिषाञ्चक्रे पिपृञ्जिषामास (य वहि महि
७ पिपृञ्जिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपृञ्जिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपृञ्जिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिपृञ्जिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ११११ वृजैङ्कि ( वृज् ) वर्जने ।

१ विवर्जि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवर्जिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् यवहि महि
३ विवर्जि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवर्जि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवर्जिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवर्जिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवर्जिषाम्बभूव विवर्जिषामास (य वहि महि
७ विवर्जिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवर्जिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवर्जिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवर्जिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १११० पिजुङ्कि ( पिञ्ज ) सम्पर्चने ।

१ पिपिञ्जि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपिञ्जिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपिञ्जि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिपिञ्जि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपिञ्जिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपिञ्जिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपिञ्जिषाञ्चक्रे पिपिञ्जिषाम्बभूव (य वहि महि
७ पिपिञ्जिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिपिञ्जिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपिञ्जिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिपिञ्जिषि-ष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

### १११२ णिजुङ्कि ( निञ्ज् ) विशुद्धौ ।

१ निनिञ्जि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनिञ्जिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनिञ्जि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अनिनिञ्जि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनिञ्जिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनिञ्जिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनिञ्जिषाञ्चक्रे निनिञ्जिषाम्बभूव (य वहि महि
७ निनिञ्जिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनिञ्जिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनिञ्जिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अनिनिञ्जिषि-ष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १११३ शिजुकि ( शिञ्ज् ) अव्यक्ते शब्दे ।

१ शिशिञ्जि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशिञ्जिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशिञ्जि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशिञ्जि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशिञ्जिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशिञ्जिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम शिशिञ्जिषाञ्चक्रे शिशिञ्जिषामास (य वहि महि
७ शिशिञ्जिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिशिञ्जिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशिञ्जिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिशिञ्जिषि-ष्यत ष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम

### १११४ ईडिकृ ( ईड् ) स्तुतौ ।

१ ईडिडि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ईडिडिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ईडिडि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ ऐडिडि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ ऐडिडिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ईडिडिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स स्वि सिम ईडिडिषाञ्चक्रे ईडिडिषाम्बभूव (य वहि महि
७ ईडिडिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ईडिडिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ईडिडिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०ऐडिडिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १११५ ईरिकृ ( ईर् ) गतिकम्पनयोः ।

१ ईरिरि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ईरिरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ईरिरि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ ऐरिरि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ ऐरिरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ईरिरिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे ईरिरिषाम्बभूव ईरिरिषामास (य वहि महि
७ ईरिरिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ईरिरिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ईरिरिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०ऐरिरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### १११६ ईशिकृ ( ईश् ) ऐश्वर्ये ।

१ ईशिशि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ ईशिशिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ ईशिशि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ ऐशिशि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ ऐशिशिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम्ड्ढ्वम् ध्वम्
६ ईशिशिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम ईशिशिषाञ्चक्रे ईशिशिषाम्बभूव (य वहि महि
७ ईशिशिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ ईशिशिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ ईशिशिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०ऐशिशिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १११७ वसिङ् (वस्) आच्छादने ।

१ विवसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविवसिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवसिषाञ्चक्रे विवसिषाम्बभूव (य वहि महि
७ विवसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १११९ आसिक् ( आस् ) उपवेशने ।

१ आसिसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ आसिसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ आसिसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आसिसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आसिसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ आसिसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम आसिसिषाञ्चक्रे आसिसिषाम्बभूव (य वहि महि
७ आसिसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ आसिसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ आसिसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आसिसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १११८ आङःशासूकि (आ-शास्) इच्छायाम् ।

१ आशिशासि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ आशिशासिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहिमहि
३ आशिशासि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आशिशासि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आशिशासिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ आशिशासिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम आशिशासिषाञ्चक्रे आशिशासिषामास (य वहि महि
७ आशिशासिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ आशिशासिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ आशिशासिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आशिशासिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ११२० कसुकि ( कंस् ) गतिसातनयोः ।

१ चिकंसि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकंसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकंसि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकंसि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकंसिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकंसिषाञ्च-के काते किरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे चिकंसिषाम्बभूव चिकंसिषामास (य वहि महि
७ चिकंसिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकंसिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकंसिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिकंसिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११२१ णिसुकि ( निंस ) चुम्बने ।

१ निनिंसि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ निनिंसिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ निनिंसि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ अनिनिंसि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि

५ अनिनिंसिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ निनिंसिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम निनिंसिषाञ्चक्रे निनिंसिषामास (य वहि महि

७ निनिंसिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ निनिंसिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ निनिंसिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० अनिनिंसिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ चिक्शास–ति तः न्ति सि थः थ चिक्शासा–मि वः मः

२ चिक्शासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म

३ चिक्शास–तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त चिक्शासा–नि व म

४ अचिक्शास-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्शासा-व म

५ अचिक्शा–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म

६ चिक्शासाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिक्शासाञ्चकार चिक्शासामास

७ चिक्शास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चिक्शासिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ चिक्शासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्शासिष्या-मि वः मः (अचिक्शासिष्या–व म

१० अचिक्शासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

पक्षे चिक्शा-स्थाने चिख्शा इति चिख्या इति च ज्ञेयम्

११२२ चक्षिक् ( चक्ष ) व्यक्तायांवाचि ।

१ चिक्शा–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे

२ चिक्शासे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ चिक्शा–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै

४ अचिक्शा–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ अचिक्शासि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ चिक्शासाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे चिक्शासाम्बभूव चिक्शासामास (य वहि महि

७ चिक्शासि-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ चिक्शासिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ चिक्शासि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० अचिक्शासि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे चिक्शा-स्थाने चिख्शा-इति चिख्या इति च ज्ञेयम्

११२३ ऊर्णुग्क् ऊर्णु) आच्छादने । प्रपूर्वोऽयम्

१ प्रोर्णुनू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ प्रोर्णुनूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ प्रोर्णुनू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ प्रौर्णुनू–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ प्रौर्णुनूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ प्रोर्णुनूषाञ्च-के क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे प्रोर्णुनूषाम्बभूव प्रोर्णुनूषामास (य वहि महि

७ प्रोर्णुनूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ प्रोर्णुनूषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ प्रोर्णुनूषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० प्रौर्णुनूषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

पक्षे प्रोर्णुनू-स्थाने प्रौर्णुनू स्थाने प्रोर्णुनवि प्रौर्णुनवि प्रोर्णुनुवि प्रौर्णुनुवि इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ प्रोर्णुनूष-ति तः न्ति सि थः थ प्रोर्णुनूषा-मि वः मः
२ प्रोर्णुनूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ प्रोर्णुनूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
प्रोर्णुनूषा-णि व म
४ प्रौर्णुनूष-त् ताम् न् : तम् त म् प्रौर्णुनूषा-व म
५ प्रौर्णुनू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ प्रोर्णुनूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
प्रोर्णुनूषाञ्चकार प्रोर्णुनूषाम्बभूव
७ प्रोर्णुनूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ प्रोर्णुनूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ प्रोर्णुनूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ प्रोर्णुनूषिष्या-मि वः
मः (प्रौर्णुनूषिष्या-व म
१० प्रौर्णुनूषिष्य-त् ताम् न् : तम त म
पक्षे प्रोर्णुनु-स्थाने प्रोर्णुनुवि प्रोर्णुनवि
प्रौर्णुनु स्थाने प्रौर्णुनुवि प्रौर्णुनवि

१ तुष्टूष-ति तः न्ति सि थः थ तुष्टूषा-मि वः मः
२ तुष्टूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुष्टूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुष्टूषा-णि व म
४ अतुष्टूष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुष्टूषा-व म
५ अतुष्टू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुष्टूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुष्टूषाञ्चकार तुष्टूषाम्बभूव
७ तुष्टूष्या-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुष्टूषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुष्टूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुष्टूषिष्या-मि वः
मः (अतुष्टूषिष्या-व म
१० अतुष्टूषिष्य-त् ताम् न : तम् त म्
११२५ ष्टुंगक् (ष्टु-वच्) व्यक्तायां वाचि। वहीं ९.९.६ वद्रपाणि

## ११२४ ष्टुंगक् ( स्तु ) स्तुतौ।

१ तुष्टू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तुष्टूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तुष्टू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतुष्टू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतुष्टूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तुष्टूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुष्टूषाञ्चक्रे तुष्टूषाम्बभूव [य वहि महि
७ तुष्टूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तुष्टूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुष्टूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतुष्टूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ११२६ श्लिषींक् ( श्लिष् ) अप्रीतौ।

१ दिश्लिक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिश्लिक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिश्लिक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिश्लिक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिश्लिक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिश्लिक्षाञ्च-क्रे काते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिश्लिक्षाम्बभूव दिश्लिक्षामास (य वहि महि
७ दिश्लिक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिश्लिक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिश्लिक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिश्लिक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ दिद्विक्ष-ति तः न्ति सि थः थ दिद्विक्षा-मि वः मः
२ दिद्विक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिद्विक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिद्विक्षा-णि व म
४ अदिद्विक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिद्विक्षा-व म
५ अदिद्वि-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम् क्षिष्व क्षिष्म
६ दिद्विक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिद्विक्षाञ्चकार दिद्विक्षामास
७ दिद्विक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिद्विक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिद्विक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिद्विक्षिष्या-मि वः मः (अदिद्विक्षिष्या-व म
१०अदिद्विक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ दुधुक्ष-ति तः न्ति सि थः थ दुधुक्षा-मि वः मः
२ दुधुक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुधुक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुधुक्षा-णि व म
४ अदुधुक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुधुक्षा-व म
५ अदुधुक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दुधुक्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
दुधुक्षाम्बभूव दुधुक्षामास
७ दुधुक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधुक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधुक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुधुक्षिष्या-मि वः मः ( अदुधुक्षिष्या-व म
१०अदुधुक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ११२७ दुहीं ( दुह् ) क्षरणे ।

१ दुधुक्ष-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२दुधुक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दुधुक्ष-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदुधुक्ष-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदुधुक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६दुधुक्षाम्बभू-व वतु वु. विथ वथुः व व विव विम
दुधुक्षाञ्चक्रे दुधुक्षामास (य वहि महि
७ दुधुक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दुधुक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दुधुक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदुधुक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ११२८ दिहींक् ( दिह् ) लेपे ।

१ दिधिक्ष-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिधिक्षे-तयाताम् रन् थाः थाथाम् ध्वम्य वहि महि
३ दिधिक्ष-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिधिक्ष-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिधिक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ दिधिक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिधिक्षाञ्चक्रे दिधिक्षाम्बभूव (य वहि महि
७ दिधिक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिधिक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिधिक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिधिक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ११३१ ओहांक् ( हा ) त्यागे ।

१ जिहास–ति तः न्ति सि थः थ जिहासा–मि वः मः
२ जिहासे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहासा–नि व म
४ अजिहास–त् ताम् न् : तम् त म् अजिहासा–व म
५ अजिहा सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म करं–क्रम कृव
६ जिहासाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
जिहासाम्बभूव जिहासामास
७ जिहास्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहासिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिहासिष्या–मि वः
मः (अजिहासिष्या–व म
१० अजिहासिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ११३२ ञिभींक् ( भी ) भये ।

१ बिभीष–ति तः न्ति सि थः थ बिभीषा–मि वः मः
२ बिभीषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभीषा–णि व म
४ अबिभीष–त् ताम् न् : तम् त म् अबिभीषा–व म
५ अबिभी–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ बिभीषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभीषामास बिभीषाञ्चकार
७ बिभीष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभीषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभीषिष्या–मि वः
मः (अबिभीषिष्या–व म
१० अबिभीषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ११३३ ह्रींक् ( ह्री ) लज्जायाम् ।

१ जिह्रीष–ति तः न्ति सि थः थ जिह्रीषा–मि वः मः
२ जिह्रीषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिह्रीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिह्रीषा–णि व म
४ अजिह्रीष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिह्रीषा–व म
५ अजिह्री–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिह्रीषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिह्रीषाञ्चकार जिह्रीषाम्बभूव
७ जिह्रीष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्रीषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्रीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिह्रीषिष्या–मि वः
मः (अजिह्रीषिष्या–व म
१० अजिह्रीषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## ११३४ पॄंक् ( पॄ ) पालनपूरणयोः ।

१ पुपूर्ष–ति तः न्ति सि थः थ पुपूर्षा–मि वः मः
२ पुपूर्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपूर्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूर्षा–णि व म
४ अपुपूर्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुपूर्षा–व म
५ अपुपूर्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपूर्षाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पुपूर्षाम्बभूव पुपूर्षामास
७ पुपूर्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूर्षिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूर्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुपूर्षिष्या–मि वः मः
(अपुपूर्षिष्या–व म
१० अपुपूर्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

११३५ ऋंक् [ ऋ ] गतौ । ऋं २६ चक्रपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ दिधिक्ष-ति तः न्ति सि थः थ दिधिक्षा- मि वः मः
२ दिधिक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधिक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिधिक्षा-णि व म
४ अदिधिक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदिक्षा व म
५ अदिधिक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ दिधिक्षाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
दिधिक्षाम्बभूव दिधिक्षामास
७ दिधिक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधिक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधिक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधिक्षिष्या-मि वः मः (अदिधिक्षिष्या-व म
१० अदिधिक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१ लिलिक्ष-ति त न्ति सि थः थ लिलिक्षा मि वः मः
२ लिलिक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलिक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलिक्षा-णि व म
४ अलिलिक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलिक्षा-व म
५ अलिलिक षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलिक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलिक्षाञ्चकार लिलिक्षामास
७ लिलिक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलिक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलिक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलिक्षिष्या-मि वः मः (अलिलिक्षिष्या व म
१० अलिलिक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ११२७ लिहींक् ( लिह् ) आस्वादने ।

१ लिलिक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलिक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलिक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अलिलिक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलिक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलिक्षाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
लिलिक्षाम्बभूव लिलिक्षामास [य वहि महि
७ लिलिक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलिक्षिता-" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलिक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलिलिक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### ११३० हुंक् ( हु ) दानादानयोः ।

१ जुहूक्ष-ति तः न्ति सि थः थ जुहूक्षा मि वः मः
२ जुहूक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुहूक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुहूक्षा-णि व म
४ अजुहूक्ष त् ताम् न् : तम् त म् अजुहूक्षा-व म
५ अजुहूक -षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुहूक्षामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुहूक्षाञ्चकार जुहूक्षाम्बभूव
७ जुहूक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहूक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहूक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुहूक्षिष्या-मि वः मः
(अजुहूक्षिष्या-व म
१० अजुहूक्षिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११३१ ओहांक् ( हा ) त्यागे ।

१ जिहास–ति तः न्ति सि थः थ जिहासा–मि वः मः
२ जिहासे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ जिहास–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहासा–नि व म
४ अजिहास–त् ताम् न् ः तम् त म् अजिहासा–व म
५ अजिहा सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म कर–कृम कृव
६ जिहासाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
जिहासाम्बभूव जिहासामास
७ जिहास्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहासिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहासिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिहासिष्या–मि वः
मः (अजिहासिष्या–व म
१० अजिहासिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

### ११३२ त्रिभींक् ( भी ) भये ।

१ बिभीष–ति तः न्ति सि थः थ बिभीषा–मि वः मः
२ बिभीषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ बिभीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभीषा–णि व म
४ अबिभीष–त् ताम् न् ः तम् त म् अबिभीषा–व म
५ अबिभी–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ बिभीषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभीषामास बिभीषाञ्चकार
७ बिभीष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभीषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभीषिष्या–मि वः
मः (अबिभीषिष्या–व म
१० अबिभीषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

### ११३३ ह्रींक् ( ह्री ) लज्जायाम् ।

१ जिह्रीष–ति तः न्ति सि थः थ जिह्रीषा–मि वः मः
२ जिह्रीषे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ जिह्रीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिह्रीषा–णि व म
४ अजिह्रीष–त् ताम् न् ः तम् त म् अजिह्रीषा–व म
५ अजिह्री–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिह्रीषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिह्रीषाञ्चकार जिह्रीषाम्बभूव
७ जिह्रीष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्रीषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्रीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिह्रीषिष्या–मि वः
मः (अजिह्रीषिष्या–व म
१० अजिह्रीषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

### ११३४ पॄंक् ( पॄ ) पालनपूरणयोः ।

१ पुपूर्ष–ति तः न्ति सि थः थ पुपूर्षा–मि वः मः
२ पुपूर्षे–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ पुपूर्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूर्षा–णि व म
४ अपुपूर्ष–त् ताम् न् ः तम् त म् अपुपूर्षा–व म
५ अपुपूर्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपूर्षाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पुपूर्षाम्बभूव पुपूर्षामास
७ पुपूर्ष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूर्षिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूर्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुपूर्षिष्या–मि वः मः
(अपुपूर्षिष्या–व म
१० अपुपूर्षिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म

११३५ ऋंक् [ ऋ ] गतौ । क्रं २६ चक्रपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११३६ ओहांङ्क् ( हा ) गतौ ।

१ जिहा–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ जिहासे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिहा–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अजिहा–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिहासि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिहासाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिहासाम्बभूव जिहासामास (य वहि महि
७ जिहासिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिहासिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिहासि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिहासि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

११३७ मांङ्क् [मा] माने । में ६०३ वद्रूपाणि
११३८ डुदांङ्क् [दा] दाने । परस्मैपदे दांम् ३४ वद्रूपाणि आत्मनेपदे ङ्कु ३०४ वद्रूपाणि

### ११३९ डुधांगृक ( धा ) धारणे ।

१ धित्–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ धित्से–तयाताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ धित्–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अधित्–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अधित्सि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ धित्सामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
धित्साञ्चक्रे धित्साम्बभूव (य वहि महि
७ धित्सिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ धित्सिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ धित्सि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अधित्सि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

परस्मैपदेतु टेंध ३८ वद्रूपाणि
० डुडुभृंगृक् (भृ) पोषणे च । भृंग् ४८ वद्रूपाणि नवरं इडभावात् इड्रहितानि

### ११४१ णिजृंकी ( निज् ) शौचे च ।

१निनिक्ष–ति तः न्ति सि थः थ निनिक्षा–मि वः मः
२ निनिक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनिक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त निनिक्षा–नि व म
४अनिनिक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अनिनक्षा–व म
५अनिनिक्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६निनिक्षाञ्च–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
निनिक्षाम्बभूव निनिक्षामास
७ निनिक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिक्षिता - " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनिक्षिष्य -ति तः न्ति सि थः थ निनिक्षिष्या–मि वः मः ( अनिनिक्षिष्या–व म
१०अनिनिक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१ निनिक्ष–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२निनिक्षे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनिक्ष–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४अनिनिक्ष–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनिक्षि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६निनिक्षाम्बभू–व वतु वु विथ वथुः व व विव विम
निनिक्षाञ्चक्रे निनिक्षामास (य वहि महि
७ निनिक्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनिक्षिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनिक्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अनिनिक्षि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ११४२ विजृंकी ( विज् ) पृथग्भावे ।

१ विविक्ष-ति तः न्ति सि थः थ विविक्षा-मि वः मः
२ विविक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विविक्षा णि व म
४ अविविक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अविविक्षा-व म
५ अविवि-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ विविक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विविक्षाञ्चकार विविक्षामास
७ विविक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विविक्षिष्य ति तः न्ति सि थः थ विविक्षिष्या-मि
वः मः (अविविक्षिष्या-व म
१० अविविक्षिष्य-त् ताम् न : तम् त म्

१ विविक्ष-ते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विविक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विविक्ष-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविविक्ष-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविविक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विविक्षाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः व व विव विम
विविक्षाञ्चक्रे विविक्षामास (य वहि महि
७ विविक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विविक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विविक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविविक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## ११४३ विष्लृंकि ( विष् ) व्याप्तौ ।

१ विविक्ष-ति तः न्ति सि थः थ विविक्षा-मि व मः
२ विविक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विविक्षा-णि व म
४ अविविक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अविविक्षा-व म
५ अविविक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विविक्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
विविक्षाम्बभूव विविक्षामास
७ विविक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ विविक्षिष्य-ति तः न्ति सि थ थ विविक्षिष्या-मि वः
मः ( अविविक्षिष्या-व म
१० अविविक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ विविक्ष-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विविक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विविक्ष-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविविक्ष-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अविविक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विविक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विविक्षाञ्चक्रे विविक्षाम्बभूव (य वहि महि
७ विविक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विविक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विविक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविविक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम–तीर्थरक्षणपरायण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि–अखण्ड-
विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-
यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य
सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे

॥ अदादिगणः संपूर्णः ॥

## ॥ अथ दिवादयः ॥

११४४ दिवूच् ( दिव् ) क्रीडाजयेच्छापणिद्युतिस्तुतिगतिषु ।

१ दिदेविष–ति तः न्ति सि थः थ दिदेविषा-मि वः मः
२ दिदेविषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदेविष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदेविषा–णि व म
४अदिदेविष–त् ताम् न् : तम् त म् अदिदेविषा-व म
५ अदिदेवि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदेविषांमा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदेविषाञ्चकार दिदेविषाम्बभूव
७ दिदेविष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदेविषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिदेविषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिदेविषिष्या-मि
वः मः (अदिदेविषिष्या–व म
१०अदिदेविषिष्य–त् ताम् न् : तम त म
पक्षे दिदेवि-स्थाने दुद्यु–इति ज्ञेयम्

११४५ जृष ( जृ ) जरसि ।

१ जिजरिष–ति तः न्ति सि थः थजिजरिषा-मि वः मः
२ जिजरिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजरिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजरिषा–णि व म
४ अजिजरिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिजरिषा–व म
५ अजिजरि–षीत् षिष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजरिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजरिषाञ्चकार जिजरिषाम्बभूव
७ जिजरिष्या–त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजरिषिता–" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिजरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थजिजरिषिष्या-मि
व. मः (अजिजरिषिष्या-व म
१०अजिजरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे जिजरि–स्थाने जिजरी इति जिजीर्
इति च ज्ञेयम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११४६ झॄष् ( झॄ ) जरसि ।

१ जिझरिष-ति त न्ति सि थः थ जिझरिषा-मि वः मः
२ जिझरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिझरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिझरिषा-णि व म
४ अजिझरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिझरिषा-व म
५ अजिझरि-षीत् षिष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिझरिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिझरिषाञ्चकार जिझरिषाम्बभूव
७ जिझरिष्या-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिझरिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिझरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिझरिषिष्या-मि
व. मः (अजिझरिषिष्या-व म
१० अजिझरिषिष्य-त् ताम् न : तम् त म्
पक्षे जिझरि-स्थाने जिझरी इति जिझीर्
इति च ज्ञेयम् ।

११४९ छोंच् ( छो ) छेदने ।

१ चिच्छास-ति त न्ति सि थः थ चिच्छासा मि वः मः
२ चिच्छासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिच्छास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छासा-नि व म
४ अचिच्छास -त् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छासा-व म
५ अचिच्छा सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिच्छासाम्बभू-व वतुः वु विथ वथुः व व विव विम
चिच्छासाञ्चकार चिच्छासामास
७ चिच्छास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छासिष्या-मि
वः मः (अचिच्छासिष्या व म
१० अचिच्छासिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

११४७ शोंच् ( शो ) तक्षणे ।

१ शिशास-ति तः न्ति सि थः थ शिशासा-मि वः मः
२ शिशासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशासा-नि व म
४ अशिशास-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशासा-व म
५ अशिशा सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ शिशासाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
शिशासाम्बभूव शिशासामास
७ शिशास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशासिष्य-ति त न्ति सि थः थ शिशासिष्या-मि
वः मः (अशिशासिष्या-व म
१० अशिशासिष्य-त ताम् न् : तम् त म्
११४८ दोंच् [ दो ] छेदने । दाम् ७ वद्रूपाणि

११५० षोंच् ( सो ) अन्तकर्मणि ।

१ सिषास-ति तः न्ति सि थः थ सिषासा-मि वः मः
२ सिषासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिषास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिषासा-नि व म
४ सिषास-त् ताम् न् : तम् त म् सिषासा-व म
५ सिषा-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
कृप सिष्व सिष्म
६ सिषासाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
सिषासाम्बभूव सिषासामास
७ सिषास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिषासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिषासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिषासिष्या-मि वः
मः (सिषासिष्या-व म
१० असिषासिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ११५१ व्रीडच् (व्रीड्) लज्जायाम् ।

१ विव्रीडिष-ति तः न्ति सि थः थ विव्रीडिषा-मि वः मः
२ विव्रीडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विव्रीडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विव्रीडिषा-णि व म
४ अविव्रीडिष त् ताम् न् : तम् त म् अविव्रीडिषा-व म
५ अविव्रीडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विव्रीडिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
विव्रीडिषाम्बभूव विव्रीडिषामास
७ विव्रीडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्रीडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्रीडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विव्रीडिषिष्या-मि
व मः (अविव्रीडिषिष्या-व म
१० अविव्रीडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ११५२ नृतैच् (नृत्) नर्तने ।

१ निनर्तिष-ति तः न्ति सि थः थ निनर्तिषा-मि वः मः
२ निनर्तिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनर्तिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनर्तिषा-णि व म
४ अनिनर्तिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनर्तिषा-व म
५ अनिनर्ति षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनर्तिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
निनर्तिषाम्बभूव निनर्तिषामास
७ निनर्तिष्या-त् स्ताम् सुः ; स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनर्तिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनर्तिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनर्तिषिष्या-मि
वः मः (अनिनर्तिषिष्या-व म
१० अनिनर्तिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१ निनृत्स-ति तः न्ति सि थः थ निनृत्सा-मि वः मः
२ निनृत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनृत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनृत्सा-नि व म
४ अनिनृत्स-त् ताम् न् : तम् त म अनिनृत्सा-व म
५ अनिनृत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ निनृत्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनृत्साञ्चकार निनृत्सामास
७ निनृत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनृत्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनृत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनृत्सिष्या-मि वः
मः (अनिनृत्सिष्या-व म
१० अनिनृत्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १०४९ कुथच् (कुथ) पूतीभावे ।

१ चुकुथिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुथिषा-मि वः मः
२ चुकुथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुथिषा-णि व म
४ अचुकुथिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुथिषा-व म
५ अचुकुथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुथिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
चुकुथिषाञ्चकार चुकुथिषामास
७ चुकुथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुथिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुथिषिष्या-मि
मः वः (अचुकुथिषिष्या-व म
१० अचुकुथिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे कुथि-स्थाने कोथि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११५४ पुथच् ( पुथ् ) हिंसायाम् ।

१ पुपुथिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपुथिषा-मि वः मः
२ पुपुथिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपुथिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपुथिषा-णि व म
४ अपुपुथिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुथिषा-व म
५ अपुपुथि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपुथिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पुपुथिषाम्बभूव पुपुथिषामास
७ पुपुथिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुथिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुथिषिष्य-ति तः न्ति सि थःथ पुपुथिषिष्या-मि
वः मः (अपुपुथिषिष्या-व म
१०अपुपुथिषिष्य-त ताम न : तम त म
पक्षे पुथि-स्थाने पोथि-इति ज्ञेयम्

११५५ गुधच् ( गुध् ) परिवेष्टने ।

१ जुगुधिष-ति तः न्ति सि थः थ जुगुधिषा-मि वः मः
२ जुगुधिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगुधिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगुधिषा-णि व म
४ अजुगुधिष-त् ताम न् : तम् त म् अजुगुधिषा-व म
५ अजुगुधि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगुधिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुगुधिषाञ्चकार जुगुधिषाम्बभूव
७ जुगुधिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगुधिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगुधिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगुधिषिष्या-मि
वः मः (अजुगुधिषिष्या-व म
१० अजुगुधिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म
पक्षे गुधि-स्थाने गोधि-इति ज्ञेयम्

११५६ राधंच् ( राध् ) वृद्धौ ।

१ रिरात्स-ति तः न्ति सि थः थ रिरात्सा-मि वः मः
२ रिरात्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरात्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरात्सा-णि व म
४ अरिरात्स-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरात्सा-व म
५ अरिरात्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ रिरात्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरात्सामास रिरात्साञ्चकार
७ रिरात्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरात्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरात्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरात्सिष्या-मि वः
मः (अरिरात्सिष्या-व म
१० अरिरात्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

११५७ व्यधंच् ( व्यध् ) ताडने ।

१ विव्यत्स-ति तः न्ति सि थः थ विव्यत्सा-मि वः मः
२ विव्यत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विव्यत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
विव्यत्सा-णि व म
४ अविव्यत्स-त् ताम् न् : तम् त म् अविव्यत्सा-व म
५ अविव्यत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म कर-कृम कृव
६ विव्यत्साञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
विव्यत्साम्बभूव विव्यत्सामास
७ विव्यत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्यत्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्यत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विव्यत्सिष्या-मि
वः मः (अविव्यत्सिष्या-व म
१० अविव्यत्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## ११५८ क्षिपंच् ( क्षिप् ) प्रेरणे ।

१ चिक्षिप्स-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षिप्सा-मि वः मः
२ चिक्षिप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षिप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षिप्सा-नि व म
४ अचिक्षिप्स-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षिप्सा-व म
५ अचिक्षिप् सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म कर-कृम कृव
६ चिक्षिप्साञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
चिक्षिप्साम्बभूव चिक्षिप्सामास
७ चिक्षिप्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षिप्सिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षिप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षिप्सिष्या-मि वः मः (अचिक्षिप्सिष्या-व म
१० अचिक्षिप्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## ११६० तिम ( तिम् ) आर्द्रभावे ।

१ तितिमिष-ति तः न्ति सि थः थ तितिमिषा-मि वः मः
२ तितिमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितिमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितिषा-णि व म
४ अतितिमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितिमिषा-व म
५ अतितिमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितिमिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितिमिषाञ्चकार तितिमिषाम्बभूव
७ तितिमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितिमिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितिमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितिमिषिष्या-मि वः मः (अतितिमिषिष्या-व म
१० अतितिमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तिमि-स्थाने तेमि इति ज्ञेयम्

## ११५९ पुष्पच् ( पुष्प् ) विकसने ।

१ पुपुष्पिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपुष्पिषा-मि वः मः
२ पुपुष्पिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपुष्पिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपुष्पिषा-णि व म
४ अपुपुष्पिष त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुष्पषा-व म
५ अपुपुष्पि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिश्म्
षिष्व षिष्म
६ पुपुष्पिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पुपुष्पिषाम्बभूव पुपुष्पिषामास
७ पुपुष्पिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुष्पिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुष्पिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपुष्पिषिष्या-मि वः मः (अपुपुष्पिषिष्या-व म
१० अपुपुष्पिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## ११६१ तीम ( तीम् ) आर्द्रभावे ।

१ तितीमिष ति तः न्ति सि थः थ तितीमिषा-मि वः मः
२ तितीमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितीमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितीमिषा-णि व म
४ अतितीमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितीमिषा-व म
५ अतितीमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितीमिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितीमिषामास तितीमिषाञ्चकार
७ तितीमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितीमिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितीमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितीमिषिष्या-मि वः मः (अतितीमिषिष्या-व म
१० अतितीमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**११६२ ष्टिमच ( स्तिम् ) आर्द्रभावे ।**

१ **तिस्तिमिष**-ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तिमिषा**-मि वः मः
२ **तिस्तिमिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तिस्तिमिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**तिस्तिमिषा**-णि व म म
४ **अतिस्तिमिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अतिस्तिमिषा**-व
५ **अतिस्तिमि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ **तिस्तिमिषाञ्च**-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृम
**तिस्तिमिषाम्बभूव तिस्तिमिषामास**
७ **तिस्तिमिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तिस्तिमिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तिस्तिमिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तिमिषिष्य**
मि व मः (**अतिस्तिमिषिष्या** व म
१० **अतिस्तिमिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे स्तिमि-स्थाने स्तेमि-इति ज्ञेयम्**

**११६३ ष्टीमच ( स्तीम् ) आर्द्रभावे ।**

१ **तिस्तीमिष**-ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तीमिषा**-मि वः मः
२ **तिस्तीमिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तिस्तीमिष**-तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त
**तिस्तीमिषा**-णि व म
४ **अतिस्तीमिष**-त् ताम् न् : तम् तम् **अतिस्तीमिषा**-व म
५ **अतिस्तीमि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **तिस्तीमिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तिस्तीमिषाञ्चकार तिस्तीमिषामास**
७ **तिस्तीमिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तिस्तीमिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तिस्तीमिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तीमिषिष्या**
मि वः मः (**अतिस्तीमिषिष्या**-व म
१० **अतिस्तीमिषिष्य** त ताम् न् : तम् त म्

**११६४ षिवूच ( सिव् ) उतौ ।**

१ **सिसेविष**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसेविषा**-मि वः मः
२ **सिसेविषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **सिसेविष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**सिसेविषा**-णि व म
४ **असिसेविष**-त् ताम् न् : तम् त म **असिसेविषा**-व म
५ **असिसेवि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **सिसेविषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**सिसेविषाञ्चकार सिसेविषामास**
७ **सिसेविष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसेविषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
**सिसेविषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसेविषिष्या**-
मि वः मः (**असिसेविषिष्या**-व म
१० **असिसेविषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे सिसेवि-स्थाने सुस्यू इति ज्ञेयम्**

**११६५ श्रिवूच ( श्रिव् ) गतिशोषणयोः ।**

१ **शुश्रूष**-ति तः न्ति सि थः थ **शुश्रूषा**-मि वः मः
२ **शुश्रूषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **शुश्रूष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**शुश्रूषा**-णि व म
४ **अशुश्रूष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अशुश्रूषा**-व म
५ **अशुश्रू**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **शुश्रूषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**शुश्रूषाञ्चकार शुश्रूषामास**
७ **शुश्रूष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **शुश्रूषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **शुश्रूषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **शुश्रूषिष्या**-मि वः मः
(**अशु षिष्या**-व म
१० **अशुश्रूषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म
**पक्षे शुश्रू-स्थाने शिश्रवि-इति ज्ञेयम्**

११६६ ष्ठिवूच ( ष्ठिव्) निरसने । वहीं ४६३ वद्रूपाणि
११६७ क्षिवूच ( क्षिव् ) निरसने । क्षिवू ४६४ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११६८ इषच् ( इष् ) गतौ ।

१ एषिषिष-ति तः न्ति सि थः थ एषिषिषा मि वः मः
२ एषिषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ एषिषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
एषिषिषा-णि व म
४ ऐषिषिष-त् ताम् न् : तम् त म् ऐषिषिषा-व म
५ ऐषिषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्रम षिष्व षिष्म
६ एषिषिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
एषिषिषाम्बभूव एषिषिषामास
७ एषिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ एषिषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९एषिषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ एषिषिषिष्या-मि
वः मः (ऐषिषिषिष्या-व म
१०ऐषिषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

११६९ ष्णसूच ( स्नस् ) निरसने ।

१सिस्नसिष-ति त न्ति सि थः थ सिस्नसिषा मि वः म
२ सिस्नसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्नसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्नसिषा-णि व म म
४असिस्नसिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्नसिषा-व
५ असिस्नसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६सिस्नसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्नसिषाञ्चकार सिस्नसिषामास
७ सिस्नसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्नसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९सिस्नसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्नसिषिष्या
मि वः म. (असिस्नसिषिष्या-व म
१०असिस्नसिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

११७० क्नसूच ( क्नस् ) ह्वृतिदीप्त्योः ।

१चिक्नसिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्नसिषा मि वः मः
२ चिक्नसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चक्नसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्नसिषा-णि व म व म
४अचिक्नसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्नसिषा-
५ अचिक्नसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्नसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्नसिषाञ्चकार चिक्नसिषाम्बभूव
७ चक्नसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चक्नसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चक्नसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चक्नसिषिष्या-
मि वः मः (अचिक्नसिषिष्या-व म
१०अचिक्नसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

११७१ त्रसैच ( त्रस् ) भये ।

१तित्रसिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्रसिषा-मि वः मः
२ तित्रसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तित्रसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तित्रसिषा-णि व म
४अतित्रसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतित्रसिषा-व म
५ अतित्रसि षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६तित्रसिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क्र कार कर कृव कृम
तित्रसिषाम्बभूव तित्रसिषामास
७ तित्रसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्रसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तित्रसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्रसिषिष्या-मि
वः मः (अतित्रसिषिष्या-व म
१०अतित्रसिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११७२ प्युसच् ( प्युस् ) दाहे ।

१ पुप्युसिष-ति तः न्ति सि थः थ पुप्युसिषा-मि वः मः
२ पुप्युसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुप्युसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुप्युसिषा-णि व म
४ अपुप्युसिष-त् ताम् नः तम् त म् अपुप्युसिषा व म
५ अपुप्युसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुप्युसिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पुप्युसिषाञ्चकार पुप्युसिषाम्बभूव
७ पुप्युसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुप्युसिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुप्युसिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ पुप्युसिषिष्या
मि वः मः (अपुप्युसिषिष्या-व म
१० अपुप्युसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे प्युसि-स्थाने प्योसि-इति ज्ञेयम्

### ११७३ षहच् ( षह् ) शक्तौ ।

१ सिसहिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसहिषा-मि वः मः
२ सिसहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसहिषा-णि व म
४ असिसहिष त् ताम् नः तम् त म् असिसहिषा-व म
५ असिसहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसहिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
सिसहिषाम्बभूव सिसहिषामास
७ सिसहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसहिषिष्या-मि
वः मः (असिसहिषिष्या-व म
१० असिसहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ११७४ षुहच् ( षुह् ) शक्तौ ।

१ सुसुहिष-ति तः न्ति सि थः थ सुसुहिषा मि वः म
२ सुसुहिषे त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुसुहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसुहिषा-णि व म
४ असुसुहिष-त् ताम् नः तम् त म् असुसुहिषा-व म
५ असुसुहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सुसुहिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सुसुहिषाञ्चकार सुसुहिषाम्बभूव
७ सुसुहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसुहिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्व स्मः
९ सुसुहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुसुहिषिष्या-
मि वः मः (असुसुहिषिष्या-व म
१० असुसुहिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे सुहि-स्थाने सोहि इति ज्ञेयम

### ११७५ पुषंच ( पुष् ) पुष्टौ ।

१ पुपुक्ष-ति तः न्ति सि थः थ पुपुक्षा-मि वः मः
२ पुपुक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ पुपुक्ष तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
पुपुक्षा णि व म
४ अपुपुक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुक्षा-व म
५ अपुपुक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपुक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ विथुः व व विव विम
पुपुक्षाञ्चकार पुपुक्षामास
७ पुपुक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुक्षिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपुक्षिष्या-मि वः मः)
(अपुपुक्षिष्या-व म
१० अपुपुक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११७६ उचच् ( उच् ) समवाये ।

१ अचिचिष-ति तः न्ति सि थः थ अचिचिषा-मि वः मः
२ अचिचिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अचिचिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अचिचिषा-णि व म
४ औचिचिष-त् ताम् न् : तम् तम् औचिचिषा व म
५ औचिचि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अचिचिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अचिचिषाञ्चकार अचिचिषामास
७ अचिचिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अचिचिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अचिचिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अचिचिषिष्या मि
वः मः (औचिचिषिष्या-व म
१० औचिचिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
११७७ लुटच् ( लुट् ) विलोटने । लुट १९० वद्रूपाणि

११७२ क्लिदौच् ( क्लिद् ) आर्द्रभावे ।

१ चिक्लिदिष-तितः न्ति सिथः थ चिक्लिदिषा-मि वः मः
२ चिक्लिदिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्लिदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्लिदिषा-णि व म
४ अचिक्लिदिष-त्ताम्न्:तम्तम् अचिक्लिदिषा-वम
५ अचिक्लिदि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्लिदिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
चिक्लिदिषाञ्चकार चिक्लिदिषामास
७ चिक्लिदिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लिदिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्लिदिषिष्य-तितः न्ति सिथः थ चिक्लिदिषिष्या-
मि वः मः (अचिक्लिदिषिष्या-व म
१० अचिक्लिदिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे चिक्लिदि-स्थाने चिक्लेदि इति ज्ञेयम्

११७८ ष्विदांच् ( स्विद् ) गात्रप्रक्षरणे ।

१ सिष्वित्स-ति तः न्ति सि थः थ सिष्वित्सा-मि वः मः
२ सिष्वित्से-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिष्वित्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिष्वित्सा-नि व म
४ असिष्वित्स-त् ताम् नः तम् त म् असिष्वित्सा-वम
५ असिष्वित्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिष्वित्साञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
सिष्वित्साम्बभूव सिष्वित्सामास
७ सिष्वित्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिष्वित्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिष्वित्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिष्वित्सिष्या-मि
वः मः (असिष्वित्सिष्या-व म
१० असिष्वित्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ चिक्लित्स-तितः न्ति सिथः थ चिक्लित्सा-मि वः मः
२ चिक्लित्से-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ चिक्लित्स तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
चिक्लित्सा-नि व म
४ अचिक्लित्स-त् ताम् न् : तम् तम् अचिक्लित्सा-व म
५ अचिक्लित्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
कृम सिष्व सिष्म
६ चिक्लित्साञ्च-कारकतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव
चिक्लित्साम्बभूव चिक्लित्सामास
७ चिक्लित्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लित्सिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्लित्सिष्य-तितः न्तिसिथः थ चिक्लित्सिष्या-
मि वः मः (अचिक्लित्सिष्या-व म
१० अचिक्लित्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११८० ञिमिदाच् ( मिद् ) स्नेहने ।

१ मिमेदिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमेदिषा-मि वः मः
२ मिमेदिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ मिमेदिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमेदिषा-णि व म
४ अमिमेदिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अमिमेदिषा व म
५ अमिमेदि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमेदिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमेदिषाञ्चकार मिमेदिषामास
७ मिमेदिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमेदिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमेदिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमेदिषिष्या-मि वः मः
( अमिमेदिषिष्या-व म
१० अमिमेदिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्
पक्षे मिमेदि-स्थाने मिमेदि-इति ज्ञेयम्
११८१ ञिक्ष्विदाच् ( क्ष्विद् ) मोचने च । ञिक्ष्वदा
३०० वद्रूपाणि

### ११८२ क्षुधंच् ( क्षुध् ) बुभुक्षायाम् ।

१ चुक्षुत्स-ति तः न्ति सि थः थ चुक्षुत्सा-मि वः मः
२ चुक्षुत्से-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चुक्षुत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुक्षुत्सा-नि व म
४ अचुक्षुत्स त् ताम् न् ः तम् त म् अचुक्षुत्सा-वम
५ अचुक्षुत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चुक्षुत्साञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चुक्षुत्साम्बभूव चुक्षुत्सामास
७ चुक्षुत्स्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्षुत्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुक्षुत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुक्षुत्सिष्या-मि वः मः
(अचुक्षुत्सिष्या-व म
१० अचुक्षुत्सिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ११८३ शुधंच् ( शुध् ) शौचे ।

१ शुशुत्स-ति तः न्ति सि थः थ शुशुत्सा-मि वः मः
२ शुशुत्से-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ शुशुत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्लिदिषा-नि व म
४ अशुशुत्स-त् ताम् न् ः तम् त म् अशुशुत्सा-व म
५ अशुशुत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ शुशुत्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
शुशुत्साञ्चकार शुशुत्सामास
७ शुशुत्स्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुत्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशुत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुत्सिष्या-मि वः मः
( अशुशुत्सिष्या-व म
१० अशुशुत्सिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

### ११८४ क्रुधंच् ( क्रुध् ) कोपे ।

१ चुक्रुत्स-ति तः न्ति सि थः थ चुक्रुत्सा-मि वः मः
२ चुक्रुत्से-त् ताम् युः ः तम् त यम व म
३ चुक्रुत्स तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
चुक्रुत्सा-नि व म
४ अचुक्रुत्स-त् ताम् न् ः तम् त म् अचुक्रुत्सा-व म
५ अचुक्रुत्-सीत् सिष्टाम् सिषु सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
क्ष्म
६ चुक्रुत्साञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चुक्रुत्साम्बभूव चुक्रुत्सामास
७ चुक्रुत्स्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्रुत्सिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुक्रुत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुक्रुत्सिष्या-मि वः
मः (अचुक्रुत्सिष्या-व म
१० अचुक्रुत्सिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११८५ षिधंच् ( सिध् ) संराद्धौ ।

१ सिषित्स-ति तः न्ति सि थः थ सिषित्सा-मि वः मः
२ सिषित्से-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिषित्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिषित्सा-नि व म
४ असिषित्स-त् ताम् न् : तम् त म् असिषित्सा व म
५ असिषित् सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिषित्साञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
सिषित्साम्बभूव सिषित्सामास
७ सिषित्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिषित्सिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिषित्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिषित्सिष्या-मि
वः मः ( असिषित्सिष्या-व म
१० असिषित्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ ईर्त्स-ति तः न्ति सि थः थ ईर्त्सा-मि वः मः
२ ईर्त्से-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ईर्त्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ईर्त्सा-नि व म
४ ऐर्त्स-त् ताम् न् : तम् त म् ऐर्त्सा-व म
५ ऐर्त्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ ईर्त्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ईर्त्साञ्चकार ईर्त्सामास
७ ईर्त्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ईर्त्सिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ईर्त्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ईर्त्सिष्या-मि वः मः
( ऐर्त्सिष्या-व म
१० ऐर्त्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

११८६ ऋधूच् ( ऋध् ) वृद्धौ ।

१ अर्दिधिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्दिधिषा-मि वः मः
२ अर्दिधिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अर्दिधिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्दिधिषा-णि व म
४ आर्दिधिष त् ताम् न् : तम् त म् आर्दिधिषा-वम
५ आर्दिधि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्दिधिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अर्दिधिषाञ्चकार अर्दिधिषामास
७ अर्दिधिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्दिधिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्दिधिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्दिधिषिष्या-मि
वः मः (आर्दिधिषिष्या-व म
१० आर्दिधिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

११८७ गृधूच् ( गृध् ) अभिकाङ्क्षायाम् ।

१ जिगर्धिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्धिषा-मि वः मः
२ जिगर्धिषे-त ताम् युः : तम् त यम व म
३ जिगर्धिष तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
जिगर्धिषा-णि व म
४ अजिगर्धिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगर्धिषा-व म
५ अजिगर्धि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगर्धिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगर्धिषाञ्चकार जिगर्धिषामास
७ जिगर्धिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगर्धिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगर्धिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्धिषिष्या-मि वः
मः (अजिगर्धिषिष्या-व म
१० अजिगर्धिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११८८ रधौच् ( रध् ) हिंसासंराद्ध्योः ।

१ रिरधिष-ति तःन्ति सि थःथ रिरधिषा-मि वः मः
२ रिरधिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरधिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरधिषा-णि व म
४ अरिरधिष त् ताम् नः तम् त म् अरिरधिषा-वम
५ अरिरधि-षीत् विष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरधिषाञ्च- कार क्रतुः क्रुःकर्थ क्रथुः क्र कारकरकृव कृम
रिरधिषाम्बभूव रिरधिषामास
७ रिरधिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरधिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरधिषिष्य-ति तः न्ति सि थःथ रिरधिषिष्या-मि
वः मः (अरिरधिषिष्या-व म
१० अरिरधिषिष्य-त् ताम् नः तम् त म्

### ११८९ तृपौच् ( तृप् ) प्रीतौ ।

१ तितर्पिष-तित:न्ति सिथःथतितर्पिषा-मि वः मः
२ तितर्पिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ तितर्पिष तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
तितर्पिषा-णि व म
४ अतितर्पिष-त्ताम्नःतम्तम्अतितर्पिषा-व म
५ अतितर्पि-षीत् षिष्टाम् षिषुःषीःषिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितर्पिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितर्पिषामास तितर्पिषाञ्चकार
७ तितर्पिष्या-त्स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्पिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्पिषिष्य-तितःन्ति सिथःथ तितर्पिषिष्या-मिवः
मः (अतितर्पिषिष्या-व म
१० अतितर्पिषिष्य-त् ताम् नः तम् त म्

---

१ रिरित्स-ति तःन्ति सि थः थ रिरत्सा-मि वः मः
२ रिरत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरत्सा-नि व म
४ अरिरत्स-त् ताम् नः तम् त म् अरिरत्सा व म
५ अरिरत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीःसिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ रिरत्साञ्च कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
रिरत्साम्बभू रिरत्सामास
७ रिरत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरत्सिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरत्सिष्य-ति तःन्ति सि थःथ रिरत्सष्या-मि वः मः
( अरिरत्सिष्या-व म
१० अरिरत्सिष्य-त् ताम् नः : तम् त म्

१ तितृप्स-ति तः न्ति सिथः थ तितृप्स मि वःमः
२ तितृप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितृप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितृप्सा-नि व म
४ अतितृप्स-त् ताम् नः : तम् त म् अतितृप्सा-व म
५ अतितृप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ तितृप्साञ्च-कार क्रतुःक्रुः कर्थक्रथुःक्र कारकरकृवकृम
तितृप्साम्बभूव तितृप्सामास
७ तितृप्स्या- त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितृप्सिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितृप्सिष्य-तितःन्तिसिथःथ तितृप्सिष्या-मि वः
मः ( अतितृप्सिष्या-व म
१० अतितृप्सिष्य-त् ताम् नः : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११९० दृपौच् ( दृप् ) हर्षमोहनयोः ।

१ दिदर्पिष-तितःन्ति सिथःथदिदर्पिषा-मि वः मः
२ दिदर्पिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ दिदर्पिष-तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
दिदर्पिषा-णि व म
४ अदिदर्पिष-त् ताम्नःतम्तम्अदिदर्पिषा-व म
५ अदिदर्पि-षीत् षिष्टाम् षिषुःषीःषिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदर्पिषाञ्च-कार कतुः कुःकर्थ कथुः क कार करकृव कृम
दिदर्पिषाम्बभूव दिदर्पिषामास
७ दिदर्पिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदर्पिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदर्पिषिष्य-तितःन्ति सिथःथ दिदर्पिषिष्या-मिवः
मः (अदिदर्पिषिष्या-व म
१० अदिदर्पिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ दिदृप्स-ति तः न्ति सिथः थ दिदृप्सा मि वःमः
२ दिदृप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदृप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदृप्सा-नि व म
४ अदिदृप्स-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदृप्सा-व म
५ अदिदृप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ दिदृप्साञ्च-कार कतुःकुःकर्थकथुःक कारकरकृवकृम
दिदृप्साम्बभूव दिदृप्सामास
७ दिदृप्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदृप्सिता-" रौ रः सि स्थ. स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदृप्सिष्य-तितःन्तिसिथःथ दिदृप्सिष्या-मि वः मः
( अदिदृप्सिष्या-व म
१० अदिदृप्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

११९१ कुपच् ( कुप् ) क्रोधे ।

१ चुकोपिष-ति तःन्ति सि थःथ चुकोपिषा-मि वः मः
२ चुकोपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकोपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकोपिषा-णि व म
४ अचुकोपिष त् ताम् नः तम् त म् अरिरधिषा-वम
५ अचुकोपि षीत् षिष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६चुकोपिषाम्बभू- व वतुः वुः विथ वथुःव व विव विम
चुकोपिषामास चुकोपिषाञ्चकार
७ चुकोपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकोपिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकोपिषिष्य-ति तः न्ति सि थःथ चुकोपिषिष्या-
मि वः मः (अचुकोपिषिष्या-व म
१० अचुकोपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चुकोपि-स्थाने चुकोपि-इति ज्ञेयम्

११९२ गुपच् (गुप्) व्याकुलत्वे ।

१ जुगोपिष-ति तःन्ति सि थः थजुगोपिषा-मि वः मः
२ जुगोपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् वम
३ जुगोपिष-तु तात् ताम् न्तु "तात् तम् त
जुगोपिषा-नि व म
४ अजुगोपिष-त् ताम् न् :तम् तम् अजुगोपिषा व म
५ अजुगोपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीःषिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगोपिषाम्बभू-व वतुः वुःविथ वथुः व व विव विम
जुगोपिषाञ्चकार जुगोपिषामास
७ जुगोपिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगोपिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगोपिषिष्य-ति तःन्ति सिथः थ जुगोपिषिष्या-मि
वः मः ( अजुगोपिषिष्या-व म
१० अजुगोपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे जुगो-स्थाने जुगि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



११९३ युपच् ( युप् ) विमोहने ।

१ युयोपिष-तितःन्ति सिथःथयुयोपिषा-मि वः मः
२ युयोपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ युयोपिष-तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
युयोपिषा-णि व म
४ अयुयोपिष-त् ताम्नः तम्तम् अयुयोपिषा-व म
५ अयुयोपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ युयोपिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार करकृव कृम
युयोपिषाम्बभूव युयोपिषामास
७ युयोपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयोपिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ युयोपिषिष्य-तितःन्ति सिथःथ युयोपिषिष्या-मि
वः मः (अयुयोपिषिष्या-व म
१० अयुयोपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे युयो-स्थाने युयु इति ज्ञेयम्

११९४ रुपच् ( रुप् ) विमोहने ।

१ रुरोपिष-ति तः न्ति सिथः थ रुरोपिषा-मि वःमः
२ रुरोपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरोपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरोपिषा-णि व म
४ अरुरोपिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरोपिषा--व म
५ अरुरोपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरोपिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रुरोपिषाञ्चकार | रुरोपिषामास
७ रुरोपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरोपिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरोपिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ रुरोपिषिष्या-मि
वः मः ( अरुरोपिषिष्या-व म
१० अरुरोपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे रुरो-स्थाने रुरु-इति ज्ञेयम्

११९५ लुपच् ( लुप् ) विमोहने ।

१ लुलोपिष-ति तःन्ति सि थःथ लुलोपिषा-मि वः मः
२ लुलोपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलोपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलोपिषा-णि व म
४ अलुलोपिष त् ताम् नः तम्त म् अलुलोपिषा-वम
५ अलुलोपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलोपिषाम्बभू- व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलोपिषामास लुलोपिषाञ्चकार
७ लुलोपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलोपिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलोपिषिष्य-ति तः न्ति सि थःथलुलोपिषिष्या-मि
वः मः (अलुलोपिषिष्या-व म
१० अलुलोपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे लुलो-स्थाने लुलु-इति ज्ञेयम्

११९६ डिपच् ( डिप् ) क्षेपे ।

१ डिडेपिष-ति तःन्ति सि थः थडिडेपिषा-मि वः मः
२ डिडेपिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् वम
३ डिडेपिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
डिडेपिषा-णि व म
४ अडिडेपिष-त् ताम् न् :तम् तम् अडिडेपिषा -व म
५ अडिडेपि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीःषिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर कृव कृम
६ डिडेपिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
डिडेपिषाम्बभूव डिडेपिषामास
७ डिडेपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ डिडेपिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ डिडेपिषिष्य-ति तःन्ति सिथः थ डिडेपिषिष्या-मि
वःमः ( अडिडेपिषिष्या-व म
१० अडिडेपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### ११९७ ष्टूपच् ( स्तूप् ) समुच्छ्राये ।

१ तुस्तूपिष-ति तः न्ति सिथः थतुस्तूपिषा-मि वः मः
२ तुस्तूपिषे-त ताम् युः : तम् त यम व म
३ तुस्तूपिष-तु तात् ताम् न्तु " ताम् तम् त
तुस्तूपिषा-णि व म
४ अतुस्तूपिष-त् ताम् न् : तम् तम् अतुस्तूपिषा-व म
५ अतुस्तूपि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुस्तूपिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुस्तूपिषाञ्चकार तुस्तूपिषाम्बभूव
७ तुस्तूपिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुस्तूपिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुस्तूपिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ तुस्तूपिषिष्या-मि
वः मः (अतुस्तूपिषिष्या-व म
१० अतुस्तूपिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### ११९८ लुभच् ( लुभ् ) गार्द्ध्ये ।

१ लुलोभिष-ति तः न्ति सिथः थ लुलोभिषा-मि वः मः
२ लुलोभिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलोभिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलोभिषा-णि व म
४ अलुलोभिष त् ताम् न् : तम् त म् अलुलोभिषा-व म
५ अलुलोभि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलोभिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथु व व विव विम
लुलोभिषाञ्चकार लुलोभिषामास
७ लुलोभिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलोभिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलोभिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थलुलोभिषिष्या-मि
वः मः (अलुलोभिषिष्या-व म
१० अलुलोभिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे लुलो-स्थाने लुलु-इति ज्ञेयम्

### ११९९ क्षुभच् ( क्षुभ् ) संचलने ।

१ चुक्षोभिष-ति तः न्ति सिथः थ चुक्षोभिषा मि वः मः
२ चुक्षोभिषे त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुक्षोभिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुक्षोभिषा-णि व म
४ अचुक्षोभिष-त् ताम् न् : तम् तम् अचुक्षोभिषा-व म
५ अचुक्षोभि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुक्षोभिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कारकरकृव कृम
चुक्षोभिषाम्बभूव चुक्षोभिषामास
७ चुक्षोभिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्षोभिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्व स्मः
९ चुक्षोभिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ चुक्षोभिषिष्या-मि
वः मः ( अचुक्षोभिषिष्या-व म
१० अचुक्षोभिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १२०० णभच् ( नभ् ) हिंसायाम् ।

१ निनभिष-ति तः न्ति सिथः थनिनभिषा-मि वः मः
२ निनभिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् वम
३ निनभिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनभिषा-णि व म
४ अनिनभिष-त् ताम् न् : तम् तम् अनिनभिषा-व म
५ अनिनभि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनभिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनभिषाञ्चकार निनभिषाम्बभूव
७ निनभिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनभिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनभिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ निनभिषिष्या-मि
वः मः ( अनिनभिषिष्या-व म
१० अनिनभिषिष्य-ताम् तन् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२०१ तुभच् ( तुभ् ) हिंसायाम् ।

१ तुतोभिष–ति तः न्ति सि थः थतुतोभिषा–मि वः मः
२ तुतोभिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतोभिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतोभिषा–णि व म
४ अतुतोभिष–त् ताम् न् : तम् त म् अतुतोभिषा–व म
५ अतुतोभि–षीत् षिष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतोभिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुतोभिषाञ्चकार तुतोभिषाम्बभूव
७ तुतोभिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतोभिषिता–" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतोभिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थतुतोभिषिष्या–मि
वः मः (अतुतोभिषिष्या–व म
१० अतुतोभिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तुतो–स्थाने तुतु–इति ज्ञेयम्

१२०२ नशौच् ( नश् ) अदर्शने ।

१ निनशिष–ति तः न्ति सि थः थ निनशिषा–मि वः मः
२ निनशिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनशिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनशिषा–णि व म
४ अनिनशिष–त् ताम् न् : तम् त म् अनिनशिषा–व म
५ अनिनशि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनशिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
निनशिषाम्बभूव निनशिषामास
७ निनशिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनशिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनशिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ निनशिषिष्या–मि
वः मः (अनिनशिषिष्या–व म
१० अनिनशिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे निनशि–स्थाने निनङ्क्ष–इति ज्ञेयम्

१२०३ कुशच् ( कुश् ) श्लेषणे ।

१ चुकोशिष–ति तः न्ति सि थः थ चुकोशिषा–मि वः मः
२ चुकोशिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकोशिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकोशिषा णि व म
४ अचुकोशिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुकोशिषा–व म
५ अचुकोशि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकोशिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकोशिषाञ्चकार चुकोशिषामास
७ चुकोशिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकोशिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकोशिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुकोशिषिष्या–मि
वः मः (अचुकोशिषिष्या–व म
१० अचुकोशिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे चुको–स्थाने चुकु इति ज्ञेयम्

१२०४ भृशूच ( भृश् ) अधःपतने ।

१ बिभर्शिष–ति तः न्ति सि थः थ बिभर्शिषा–मि वः मः
२ बिभर्शिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभर्शिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभर्शिषा–णि व म
४ अबिभर्शिष–त् ताम् न् : तम् त म् अबिभर्शिषा–व म
५ अबिभर्शि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभर्शिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव कृम
बिभर्शिषाम्बभूव बिभर्शिषामास
७ बिभर्शिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभर्शिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभर्शिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभर्शिषिष्या–
मि वः मः (अबिभर्शिषिष्या–व म
१० अबिभर्शिषिष्य–त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२०५ भ्रंशूच् ( भ्रश् ) अधःपतने ।

१ बिभ्रंशिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रंशिषा-मि वः मः
२ बिभ्रंशिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभ्रंशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभ्रंशिषा-णि व म
४ अबिभ्रंशिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिभ्रंशिषा-व म
५ अबिभ्रंशि-षीत् षिष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभ्रंशिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभ्रंशिषाञ्चकार बिभ्रंशिषाम्बभूव
७ बिभ्रंशिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभ्रंशिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभ्रंशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रंशिषिष्या-मि
व. मः (अबिभ्रंशिषिष्या-व म
१० अबिभ्रंशिषिष्य-त् ताम् न : तम् त म्

१२०६ वृशच् ( वृश् ) वरणे ।

१ विवर्शिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्शिषा-मि वः मः
२ विवर्शिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्शिषा-णि व म
४ अविवर्शिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्शिषा-व म
५ अविवर्शि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवर्शिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
विवर्शिषाम्बभूव विवर्शिषामास
७ विवर्शिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्शिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्शिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्शिषिष्या-मि
वः मः (अविवर्शिषिष्या-व म
१० अविवर्शिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२०७ कृशच् ( कृश् ) तनुत्वे ।

१ चिकर्शिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्शिषा-मि वः मः
२ चिकर्शिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकर्शिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकर्शिषा-णि व म
४ अचिकर्शिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकर्शिषा-वम
५ अचिकर्शि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकर्शिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकर्शिषाञ्चकार चिकर्शिषामास
७ चिकर्शिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकर्शिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकर्शिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्शिषिष्या-
मि वः मः (अचिकर्शिषिष्या-व म
१० अचिकर्शिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्

१२०८ शुषंच् ( शुष् ) शोषणे ।

१ शुशुक्ष-ति त न्ति सि थः थ शुशुक्षा मि वः मः
२ शुशुक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुक्षा-नि व म
४ अशुशुक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशुक्षा-व म
५ अशुशुक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शुशुक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शुशुक्षाञ्चकार शुशुक्षामास
७ शुशुक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशुक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुक्षिष्या-मि वः मः
(अशुशुक्षिष्या व म
१० अशुशुक्षिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१२०९ दुषंच ( दुष् ) वैकृत्ये ।**

१ दुदुक्ष-ति त. न्ति सि थः थ दुदुक्षा मि वः मः
२ दुदुक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुदुक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुदुक्षा-णि व म
४ अदुदुक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुदुक्षा-व म
५ अदुदुक्-षीत् षिष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुदुक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दुदुक्षाञ्चकार दुदुक्षाम्बभूव
७ दुदुक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुदुक्षिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुदुक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुदुक्षिष्या मि वः मः
(अदुदुक्षिष्या व म
१० अदुदुक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

**१२१० श्लिषंच ( श्लिष् ) आलिङ्गने ।**

१ शिश्लिक्ष-ति त न्ति सि थः थ शिश्लिक्षा मि वः म
२ शिश्लिक्षे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ शिश्लिक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्लिक्षा-णि व म
४ अशिश्लिक्ष त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्लिक्षा व म
५ अशिश्लिक् षीत् षिष्टाम् षि[illegible]ः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्लिक्षाम्बभू-व वतुः वु विथ वथुः व व विव विम
शिश्लिक्षाञ्चकार शिश्लिक्षामास
७ शिश्लिक्ष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्लिक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्लिक्षिष्य-ति तः न्ति सि थ. थ शिश्लिक्षिष्या-मि
वः मः (अशिश्लिक्षिष्या व म
१० अशिश्लिक्षिष्य-त ताम् न् : तम् त म्
१२११ प्लुषूच् [प्लुष्] दाहे । प्लुषू ५३३ वद्रूपाणि

**१२१२ ञितृषच् ( तृष् ) पिपासायाम् ।**

१ तितर्षिष-ति तः न्ति सि थः थ तितर्षिषा-मि वः मः
२ तितर्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितर्षिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितर्षिषा-णि व म
४ अतितर्षिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितर्षिषा-व म
५ अतितर्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितर्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
तितर्षिषाम्बभूव तितर्षिषामास
७ तितर्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्षिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितर्षिषिष्या-मि
वः मः (अतितर्षिषिष्या-व म
१० अतितर्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

**१२१३ तुषंच ( तुष् ) तुष्टौ ।**

१ तुतुक्ष-ति तः न्ति सि थः थ तुतुक्षा-मि वः मः
२ तुतुक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुक्षा-णि व म
४ अतुतुक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुक्षा-व म
५ अतुतुक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतुक्षाञ्चकार तुतुक्षामास
७ तुतुक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुक्षिष्या-मिवः मः
(अतुतुक्षिष्या-व म
१० अतुतुक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
१२१४ हृषच् ( हृष् ) तुष्टौ । हृषू ५३५ वद्रूपाणि
१२१५ रुषच् ( रुष् ) रोषे । रुष ५१४ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२१६ प्युषच् ( प्युष् ) विभागे ।

१ पुप्योषिष-ति तः न्ति सि थः थपुप्योषिषा-मि वः मः
२ पुप्योषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुप्योषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुप्योषिषा-णि व म
४अपुप्योषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुप्योषिषा-व म
५ अपुप्योषि-षीत् षिष्टाम् सिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुप्योषिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पुप्योषिषाञ्चकार पुप्योषिषाम्बभूव
७ पुप्योषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुप्योषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९पुप्योषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थपुप्योषिषिष्या-मि
व. मः (अपुप्योषिषिष्या-व म
१०अपुप्योषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२१७ प्युसच् [प्युस्] विभागे । प्युसच ११७३ वद्रूपाणि

१२१८ पुसच् ( पुस् ) विभागे ।

१ पुपोसिष-ति त न्ति सि थः थ पुपोसिषा मि वः म
२ पुपोसिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ पुपोसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपोसिषा-नि व म
४ अपुपोसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपोसिषा-व म
५ अपुपोसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६पुपोसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपोसिषाञ्चकार पुपोसिषामास
७ पुपोसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपोसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९पुपोसिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ पुपोसिषिष्या-मि
वः मः (अपुपोसिषिष्या व म
१०अपुपोसिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्
पक्षे पुपो-स्थाने पुपु-इति ज्ञेयम्

१२१९ विसच् ( विस् ) प्रेरणे ।

१विवेसिष ति तः न्ति सि थः थ विवेसिषा-मि वः मः
२ विवेसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ विवेसिष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त
विवेसिषा-णि व म
४अविवेसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवेसिषा-व म
५ अविवेसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६विवेसिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
विवेसिषाम्बभूव विवेसिषामास
७ विवेसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवेसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थविवेसिषिष्या-मि
वः मः (अविवेसिषिष्या-व म
१०अविवेसिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१२२० कुसच् ( कुस् ) श्लेषे ।

१चुकोसिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकोसिषा-मि वः मः
२ चुकोसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकोसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकोसिषा णि व म
४अचुकोसिष त् ताम् न् : तम् त म् अचुकोसिषा-व म
५ अचुकोसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकोसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकोसिषाञ्चकार चुकोसिषामास
७ चुकोसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकोसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चुकोसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकोसिषिष्या-मि
वः मः (अचुकोसिषिष्या-व म
१०अचुकोसिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे चुको-स्थाने चुकु-इति ज्ञेयम्

१२२१ असूच ( अस् ) क्षेपणे । असी ९३२ वद्रूपाणि नवरं
परस्मैपदमेव

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२२२ यसूच् ( यस् ) प्रयत्ने ।

१ यियसिष-ति तः न्ति सि थः थ यियसिषा-मि वः मः
२ यियसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ यियसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
यियसिषा-णि व म
४अयियसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अयियसिषा-व म
५ अयियसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६यियसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
यियसिषाञ्चकार यियसिषाम्बभूव
७ यियसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ यियसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ यियसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ यियसिषिष्या-मि वः मः (अयियसिषिष्या-व म
१० अयियसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२२३ जसूच् ( जस् ) मोक्षणे ।

१ जिजसिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजसिषा-मि वः मः
२ जिजसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजसिषा-णि व म
४अजिजसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजसिषा-व म
५ अजिजसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजसिषाञ्चकार जिजसिषाम्बभूव
७ जिजसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिजसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजसिषिष्या मि वः मः (अजिजसिषिष्या-व म
१०अजिजसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१२२४ तसूच् ( तस् ) उपक्षये ।

१ तितसिष-ति तः न्ति सि थः थ तितसिषा-मि वः मः
२ तितसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितसिषा-णि व म
४अतितसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितसिषा-व म
५ अतितसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितसिषाञ्चकार तितसिषाम्बभूव
७ तितसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तितसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितसिषिष्या मि वः मः (अतितसिषिष्या-व म
१०अतितसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२२५ दसूच् ( दस् ) उपक्षये ।

१ दिदसिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदसिषा-मि वः मः
२ दिदसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदसिषा-णि व म
४ अदिदसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदसिषा-व म
५ अदिदसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६दिदसिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिदसिषाम्बभूव दिदसिषामास
७ दिदसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९दिदसिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ दिदसिषिष्या-मि वः मः (अदिदसिषिष्या-व म
१०अदिदसिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२२६ वसूच् ( वस् ] स्तम्भे ।

१ विवसिष-ति तः न्ति सि थः थ विवसिषा-मि वः मः
२ विवसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवसिषा-णि व म
४अविवसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवसिषा-व म
५ अविवसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६विवसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवसिषाञ्चकार विवसिषाम्बभूव
७ विवसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवसिषिष्या-मि वः मः (अविवसिषिष्या-व म
१० अविवसिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१२२७ वुसूच् ( वुस् ) उत्सर्गे ।

१ वुवोसिष-ति तः न्ति सि थः थ वुवोसिषा मि वः मः
२ वुवोसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ वुवोसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
वुवोसिषा-णि व म
४अवुवोसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अवुवोसिषा व म
५ अवुवोसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ वुवोसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
वुवोसिषाञ्चकार वुवोसिषाम्बभूव
७ वुवोसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ वुवोसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९वुवोसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ वुवोसिषिष्या मि वः मः (अवुवोसिषिष्या-व म
१०अवुवोसिषिष्य-त् ताम् त् : तम् त म्
पक्षे वुवो-स्थाने वुवु-इति ज्ञेयम्

१२२८ मुसूच् ( मुस् ) खण्डने ।

१ मुमोसिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमोसिषा-मि वः मः
२ मुमोसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमोसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोसिषा-णि व म
४अमुमोसिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमोसिषा-व म
५ अमुमोसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमोसिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मुमोसिषाञ्चकार मुमोसिषाम्बभूव
७ मुमोसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९मुमोसिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमोसिषिष्या-मि वः मः (अमुमोसिषिष्या-व म
१०अमुमोसिषिष्य-त ताम् न् : तम त म
पक्षे मुमो-स्थाने मुमु-इति ज्ञेयम्

१२२९ मसैच् ( मस् ) परिणामे ।

१ मिमसिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमसिषा-मि वः मः
२ मिमसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमसिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमसिषा-णि व म
४ अमिमसिष-त् ताम् न् तम् त म् अमिमसिषा-व म
५ अमिमसि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६मिमसिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
मिमसिषाम्बभूव मिमसिषामास
७ मिमसिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमसिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९मिमसिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ मिमसिषिष्या-मि वः मः (अमिमसिषिष्या-व म
१०अमिमसिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२३० शमूच् ( शम् ) उपशमे ।

१ शिशमिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशमिषा-मि वः मः
२ शिशमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशमिषा-णि व म
४ अशिशमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशमिषा-व म
५ अशिशमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशमिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिशमिषाञ्चकार शिशमिषाम्बभूव
७ शिशमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशमिषिष्या
मि वः मः (अशिशमिषिष्या-व म
१० अशिशमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १२३१ दमूच् ( दम् ) उपशमे ।

१ दिदमिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदमिषा-मि वः मः
२ दिदमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदमिषा-णि व म
४ अदिदमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदमिषा-व म
५ अदिदमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदमिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिदमिषाम्बभूव दिदमिषामास
७ दिदमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदमिषिष्या-मि
वः मः (अदिदमिषिष्या-व म
१० अदिदमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १२३२ तमूच् ( तम् ) काङ्क्षायाम् ।

१ तितमिष-ति तः न्ति सि थः थ तितमिषा-मि वः मः
२ तितमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितमिषा-णि व म
४ अतितमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितमिषा-व म
५ अतितमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितमिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितमिषाञ्चकार तितमिषाम्बभूव
७ तितमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितमिषिष्या-मि
वः मः (अतितमिषिष्या-व म
१० अतितमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १२३३ श्रमूच् ( श्रम् ) खेदतपसोः ।

१ शिश्रमिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रमिषा-मि वः मः
२ शिश्रमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्रमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रमिषा-णि व म
४ अशिश्रमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रमिषा-व म
५ अशिश्रमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्रमिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिश्रमिषाञ्चकार शिश्रमिषाम्बभूव
७ शिश्रमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रमिषिष्या-
मि वः मः (अशिश्रमिषिष्या-व म
१० अशिश्रमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२३४ भ्रमूच् (भ्रम्) अनवस्थाने । भ्रमू ९५० वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२३५ क्षमौच् ( क्षम् ] सहने ।

१ चिक्षमिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षमिषा-मि वः मः
२ चिक्षमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षषा-णि व म
४अचिक्षमिष-त् ताम न् : तम् त म् अचिक्षमिषा व म
५ अचिक्षमि-षीत् षिष्टाम् षि षुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६चिक्षमिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्षमिषाञ्चकार चिक्षमिषाम्बभूव
७ चिक्षमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षमिषिष्या
मि व मः (अचिक्षमिषिष्या-व म
१० अचिक्षमिषिष्य-त ताम न् : तम् त म

१ चिक्षंस-ति त न्ति सि थः थ चिक्षंसा मि वः मः
२ चिक्षंसे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षंस-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षंसा-नि व म
४ अचिक्षंस-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षंसा-व म
५ अचिक्षं सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६चिक्षंसाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षंसाञ्चकार चिक्षंसामास
७ चिक्षंस्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षंसिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिक्षंसिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षंसिष्या-मि वः
म. (अचिक्षंसिष्या व म
१०अचिक्षंसिष्य-त ताम् न् : तम् त म्
१२३६ मदैच् [ मद् ] हर्षे । मदै १०४८ वद्रूपाणि

११३७ क्लमूच् ( क्लम् ) ग्लानौ ।

१चिक्लमिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लमिषा-मि वः मः
२ चिक्लमिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चक्लमिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्लमिषा-णि व म व म
४अचिक्लमिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्लमिषा -
५ अचिक्लमि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्लमिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्लमिषाञ्चकार चिक्लमिषाम्बभूव
७ चिक्लमिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लमिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिक्लमिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लमिषिष्या
मि वः मः (अचिक्लमिषिष्या-व म
१०अचिक्लमिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२३८ मुहौच् ( मुह् ) वैचित्ये ।

१ मुमोहिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमोहिषा-मि वः मः
२ मुमोहिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमोहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोहिषा-णि व म
४अमुमोहिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमोहिषा-व म
५ अमुमोहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमोहिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मुमोहिषाञ्चकार मुमोहिषाम्बभूव
७ मुमोहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९मुमोहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमोहिषिष्या-मि
वः मः (अमुमोहिषिष्या-व म
१०अमुमोहिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म
पक्षे मुमोहि स्थाने मुमुहि इति मुमुक्
इति च ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१२३९ द्रुहौच् ( द्रुह् ) जिघांसायाम् ।

१ दुद्रोहिष-ति तः न्ति सि थः थ दुद्रोहिषा-मि वः मः
२ दुद्रोहिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुद्रोहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुद्रोहिषा-णि व म
४ अदुद्रोहिष त् ताम् न् : तम् त म् अदुद्रोहिषा-व म
५ अदुद्रोहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुद्रोहिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दुद्रोहिषाम्बभूव दुद्रोहिषामास
७ दुद्रोहिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुद्रोहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुद्रोहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुद्रोहिषिष्या-मि
वः मः (अदुद्रोहिषिष्या-व म
१० अदुद्रोहिषिष्य-त ताम न : तम त म
पक्षे दुद्रोहि-स्थाने दुद्रुहि इति दुध्रुक्षु
इति च ज्ञेयम्

१२४० ष्णुहौच् ( स्नुह् ) उद्गिरणे ।

१ सुस्नोहिष-ति तः न्ति सि थः थ सुस्नोहिषा-मि वः मः
२ सुस्नोहिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सुस्नोहिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
सुस्नोहिषा-णि व म
४ असुस्नोहिष-त् ताम् न् : तम् त म् असुस्नोहिषा-व म
५ असुस्नोहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सुस्नोहिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
सुस्नोहिषाञ्चकार सुस्नोहिषामास
७ सुस्नोहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुस्नोहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुस्नोहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुस्नोहिषिष्या-मि
वः मः (असुस्नोहिषिष्या-व म
१० असुस्नोहिषिष्य-त ताम् न् : तम त म
पक्षे सुस्नोहि-स्थाने सुस्नुहि-इति सुस्नुक्षु
इति च ज्ञेयम्

१२४१ ष्णिहौच् ( स्निह् ) प्रीतौ ।

१ सिस्नेहिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्नेहिषा-मि वः मः
२ सिस्नेहिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिस्नेहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्नेहिषा-णि व म
४ असिस्नेहिष-त् ताम् न् : तम् त म असिस्नेहिषा-व म
५ असिस्नेहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ सिस्नेहिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्नेहिषामास सिस्नेहिषाञ्चकार
७ सिस्नेहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्नेहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्नेहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्नेहिषिष्या-
मि वः मः (असिस्नेहिषिष्या-व म
१० असिस्नेहिषिष्य-त ताम् न् : तम त म
पक्षे सिस्नेहि-स्थाने सिस्निहि-इति सिस्निक्षु
इति च ज्ञेयम

१२४२ षूङौच् ( सू ) प्राणिप्रसवे। षूङौक् ११०७ वद्रूपाणि

१२४३ दूङ्च् ( दू ) परितापे ।

१ दुदू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दुदूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दुदू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदुदू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदुदूषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दुदूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दुदूषाञ्चक्रे दुदूषाम्बभूव (य वहि महि
७ दुदूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दुदूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दुदूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदुदूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १२४४ दींङ्च् ( दी ) क्षये ।

१ दिदी-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदीषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदी-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदी-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदीषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ दिदीषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिदीषाञ्चक्रे दिदीषामास (य वहि महि
७ दिदीषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदीषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदीषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदीषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १२४५ धींङ्च् ( धी ) अनादरे ।

१ दिधी-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिधीषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिधी-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिधी-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिधीषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ दिधीषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिधीषाम्बभूव दिधीषामास (य वहि महि
७ दिधीषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिधीषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिधीषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिधीषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१२४६ मींङ्च [मी] हिंसायाम् । मेंङ् ६०३ वद्रूपाणि

१ दिदा-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ दिदासे-तयाताम् रन् थाः याथाम् ध्वम्य वहि महि
३ दिदा-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अदिदा-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदासि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ दिदासामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदासाञ्चक्रे दिदासाम्बभूव (य वहि महि
७ दिदासिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदासिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदासि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदासि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### १२४७ रींङ्च ( री ) स्रवणे ।

१ रिरी-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरीषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरी-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अरिरी-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरीषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ रिरीषाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः व व विव विम
रिरीषाञ्चक्रे रिरीषामास (य वहि महि
७ रिरीषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरीषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरीषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथें ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अरिरीषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१२४८ लींङ्च् ( ली ) श्लेषणे ।**

१ **लिली**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **लिलीषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **लिली**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अलिली**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अलिलीषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **लिलीषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **लिलीषाम्बभूव लिलीषामास** (य वहि महि
७ **लिलीषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **लिलीषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **लिलीषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ **अलिलीषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१२४९ डीङ्च् ( डी ) गतौ । डीङ् वद्रूपाणि

**१२५० व्रींङ्च् ( व्री ) वरणे ।**

१ **विव्री**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विव्रीषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विव्री**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविव्री**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अविव्रीषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विव्रीषाञ्च** क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **विव्रीषाम्बभूव विव्रीषामास** (य वहि महि
७ **विव्रीषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विव्रीषिता**–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विव्रीषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविव्रीषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**१२५१ पींङ्च् ( पी ) पाने ।**

१ **पिपी**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **पिपीषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **पिपी**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अपिपी**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अपिपीषि**–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **पिपीषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **पिपीषाञ्चक्रे पिपीषामास** (य वहि महि
७ **पिपीषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **पिपीषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **पिपीषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अपिपीषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

**१२५२ ईङ्च् ( ई ) गतौ ।**

१ **ईषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **ईषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **ईषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ **ऐषि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ **ऐषिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **ईषिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **ईषिषाम्बभूव ईषिषामास** [य वहि महि
७ **ईषिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **ईषिषिता**–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **ईषिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **ऐषिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १२५३ प्रीङ्च् ( प्री ) प्रीतौ ।

१ पिप्री–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिप्रीषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिप्री–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिप्री–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्रीषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्रीषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिप्रीषाञ्चक्रे पिप्रीषामास (य वहि महि
७ पिप्रीषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पिप्रीषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्रीषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिप्रीषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### १२५४ युजिंच ( युज् ) समाधौ ।

१ युयुक्–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ युयुक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ युयुक्–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अयुयुक्–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अयुयुक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ युयुक्षाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
युयुक्षाम्बभूव युयुक्षामास [य वहि महि
७ युयुक्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ युयुक्षिता–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ युयुक्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अयुयुक्षि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### १२५५ सृजिंच् ( सृज् ) विसर्गे ।

१ सिसृक्–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिसृक्षे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिसृक्–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असिसृक्–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिसृक्षि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिसृक्षाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
सिसृक्षाम्बभूव सिसृक्षामास (य वहि महि
७ सिसृक्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिसृक्षिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिसृक्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिसृक्षि -ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १२५६ वृतुचि ( वृत् ) वरणे ।

१ विवर्ति–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवर्तिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवर्ति–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवर्ति–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवर्तिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवर्तिषाञ्च क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवर्तिषाम्बभूव विवर्तिषामास (य वहि महि
७ विवर्तिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवर्तिषिता–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवर्तिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवर्तिषि- ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२५७ पदिंच् ( पद् ) गतौ ।

१ पित्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ पित्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पित्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अपित्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपित्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पित्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पित्साञ्चक्रे पित्सामास (य वहि महि
७ पित्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पित्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पित्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपित्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १२५९ खिदिंच् ( खिद् ) दैन्ये ।

१ चिखित्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ चिखित्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिखित्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अचिखित्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिखित्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिखित्साञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे चिखित्साम्बभूव चिखित्सामास (य वहि महि
७ चिखित्सि-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिखित्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिखित्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिखित्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १२५८ विदिंच् (विद्) सत्तायाम् ।

१ विवित्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ विवित्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवित्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अविवित्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवित्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवित्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम विवित्साञ्चक्रे विवित्साम्बभूव (य वहि महि
७ विवित्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवित्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवित्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवित्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १२६० युधिंच् ( युध् ) सम्प्रहारे ।

१ युयुत्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ युयुत्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ युयुत्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अयुयुत्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अयुयुत्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ युयुत्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम युयुत्साञ्चक्रे युयुत्साम्बभूव (य वहि महि
७ युयुत्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ युयुत्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ युयुत्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अयुयुत्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२६१ अनोरुधिंच् ( अनु-रुध् ) कामे ।

१ अनुरुरुत्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ अनुरुरुत्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अनुरुरुत्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अन्वरुरुत्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अन्वरुरुत्सि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अनुरुरुत्साञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
अनुरुरुत्साम्बभूव अनुरुरुत्सामास (य वहि महि
७ अनुरुरुत्सि-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अनुरुरुत्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अनुरुरुत्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अन्वरुरुत्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १२६२ बुधिंच् ( बुध् ) ज्ञाने ।

१ बुभुत्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ बुभुत्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बुभुत्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अबुभुत्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबुभुत्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बुभुत्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बुभुत्साञ्चक्रे बुभुत्साम्बभूव (य वहि महि
७ बुभुत्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बुभुत्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बुभुत्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबुभुत्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १२६३ मनिंच् ( मन् ) ज्ञाने ।

१ मिमं-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ मिमंसे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमं-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अमिमं-सत सेताम् सन्त सथा सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमंसि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमंसाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमंसाञ्चक्रे मिमंसामास (य वहि महि
७ मिमंसिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमंसिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमंसि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमंसि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १२६४ अनिंच् ( अन् ) प्राणने ।

१ अनिनि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अनिनिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अनिनि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ आनिनि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आनिनिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अनिनिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अनिनिषाञ्चक्रे अनिनिषाम्बभूव (य वहि महि
७ अनिनिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अनिनिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अनिनिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आनिनिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १२६५ जनैचि ( जन् ) प्रादुर्भावे ।

१ जिजनि–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिजनिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिजनि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिजनि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिजनिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिजनिषाञ्च–क्रे काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिजनिषाम्बभूव जिजनिषामास (य वहि महि
७ जिजनिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिजनिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिजनिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजिजनिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम ष्यध्वम्

### १२६६ दीपैचि ( दीप् ) दीप्तौ ।

१ दिदीपि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदीपिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदीपि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदीपि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदीपिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदीपिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदीपिषाञ्चक्रे दिदीपिषाम्बभूव [य वहि महि
७ दिदीपिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदीपिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदीपिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहिं ष्यामहि
१०अदिदीपिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १२६७ तपिंच् ( तप् ) ऐश्वर्ये वा ।

१ तितप्–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ तितप्से–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितप्–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अतितप्–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितप्सि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितप्सामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितप्साञ्चक्रे तितप्साम्बभूव (य वहि महि
७ तितप्सिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितप्सिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितप्सि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतितप्सि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम ष्यध्वम

### १२६८ पूरैचि ( पूर् ) आप्यायने ।

१ पुपूरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पुपूरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पुपूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपुपूरि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपुपूरिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ पुपूरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपूरिषाञ्चक्रे पुपूरिषामास (य वहि महि
७ पुपूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ पुपूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पुपूरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपुपूरिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२६९ घूरेङ्च् ( घूर् ) जरायाम् ।

१ जुघूरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुघूरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुघूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुघूरि–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुघूरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुघूरिषाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे जुघूरिषाम्बभूव जुघूरिषामास (य वहि महि
७ जुघूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुघूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुघूरिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुघूरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## १२७० जूरेचि ( जूर् ) जरायाम् ।

१ जुजूरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुजूरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुजूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुजूरि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुजूरिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुजूरिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम जुजूरिषाञ्चक्रे जुजूरिषाम्बभूव [य वहि महि
७ जुजूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुजूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुजूरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुजूरिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## १२६१ धूरेङ्च् ( धूर् ) गतौ ।

१ दुधूरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दुधूरिषे त याताम् रन् था याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दुधूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदुधूरि–षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदुधूरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ दुधूरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दुधूरिषाञ्चक्रे दुधूरिषामास (य वहि महि
७ दुधूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दुधूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दुधूरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदुधूरिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १२७२ गूरेचि ( गूर् ) गतौ ।

१ जुगूरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगूरिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुगूरि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगूरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुगूरिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम जुगूरिषाञ्चक्रे जुगूरिषाम्बभूव (य वहि महि
७ जुगूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुगूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगूरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुगूरिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १२७३ शूरैचि ( शूर् ) स्तम्भे ।

१ शुशूरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शुशूरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शुशूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशुशूरि–षत षेताम् षन्त षथा: षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशुशूरिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शुशूरिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शुशूरिषाञ्चक्रे शुशूरिषामास (य वहि महि
७ शुशूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शुशूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शुशूरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशुशूरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १२७४ तूरैचि ( तूर् ) त्वरायाम् ।

१ तुतूरि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तुतूरिषे–तयाताम् रन् थाः थाथाम् ध्वम्य वहि नहि
३ तुतूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतुतूरि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अतुतूरिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तुतूरिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुतूरिषाञ्चक्रे तुतूरिषाम्बभूव (य वहि महि
७ तुतूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तुतूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुतूरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यते ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतुतूरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

### १२७५ चूरैचि ( चूर् ) दाहे ।

१ चुचूरि–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुचूरिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुचूरि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचुचूरि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुचूरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुचूरिषाञ्च क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुचूरिषाम्बभूव चुचूरिषामास (य वहि महि
७ चुचूरिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुचूरिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुचूरिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुचूरिषि- ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १२७६ क्लिशिच ( क्लिश् ) उपतापे ।

१ चिक्लेशि - षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्लेशिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्लेशि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिक्लेशि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्लेशिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्लेशिषाम्बभू--व वतु वु विथ वथुः व व विव विम
चिक्लेशिषाञ्चक्रे चिक्लेशिषामास (य वहि महि
७ चिक्लेशिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिक्लेशिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्लेशिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिक्लेशिषिष्यतष्येताम्ष्यन्तष्यथाःष्येथाम्ष्यध्वम्
पक्षे चिक्लेशि स्थाने चिक्लिशि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public D

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १२७७ लिशिंच् ( लिश् ) अल्पत्वे ।

१ लिलिक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलिक्षि-त याताम् रन् था याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलिक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अलिलिक्-षत षाताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलिक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलिक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलिक्षाञ्चक्रे लिलिक्षामास (य वहि महि
७ लिलिक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलिक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलिक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अलिलिक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१२७८ काशिंच् [ काश् ) दीप्तौ । काशृङ् ८३० वद्रूपाणि

### १२७९ वाशिंच् ( वाश् ) शब्दे ।

१ विवाशि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवाशिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवाशि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवाशि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवाशिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षेथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवाशिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवाशिषाञ्चक्रे विवाशिषाम्बभूव (य वहि महि
७ विवाशिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवाशिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवाशिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अविवाशिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

### १२८० शकींच् ( शक् ) मर्षणे ।

१ शिक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अशिक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिक्षाञ्चक्रे शिक्षाम्बभूव [य वहि महि
७ शिक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शिक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अशिक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ शिक्ष-ति तः न्ति सि थः थ शिक्षा-मि वः मः
२ शिक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिक्ष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
शिक्षा-णि व म
४ अशिक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिक्षा-व म
५ अशिक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व वविव विम
शिक्षाञ्चकार शिक्षामास
७ शिक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९शिक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिक्षिष्या-मि वः मः
(अशिक्षिष्या-व म
१०अशिक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२८१ शुचृंगैच् ( शुच् ) पूतिभावे ।

१ शुशोचि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शुशोचिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शुशोचि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशुशोचि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अशुशोचिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शुशोचिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शुशोचिषाञ्चक्रे शुशोचिषामास (य वहि महि
७ शुशोचिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ शुशोचिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शुशोचिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशुशोचिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे शुशो-स्थाने शुशु-इति ज्ञेयम्

परस्मैपदेतु शुष ९९ वद्रूपाणि

१२८२ रञ्जीच् ( रञ्ज् ) रागे । रञ्जी ८९६ वद्रूपाणि

१२८३ शपींच् [ शप् ] आक्रोशे । शपीं ९१६ वद्रूपाणि

## १२८४ मृषीच् ( मृष् ) तितिक्षायाम् ।

१ मिमर्षि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमर्षिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमर्षि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमर्षि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमर्षिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमर्षिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मिमर्षिषाम्बभूव मिमर्षिषामास [य वहि महि
७ मिमर्षिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मिमर्षिषिता-" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमर्षिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमर्षिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

परस्मैपदे मृषू ५२८ वद्रूपाणि ।

## १२८५ णहींच् ( नह् ) बन्धने ।

१ निनत्-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ निनत्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनत्-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अनिनत्-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( सि स्वहि स्महि
५ अनिनत्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनत्साञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
निनत्साम्बभूव निनत्सामास (य वहि महि
७ निनत्सि-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ निनत्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनत्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनत्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ निनत्स-ति तः न्ति सि थः थ निनत्सा-मि वः मः
२ निनत्से-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ निनत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त निनत्सा-नि व म
४ अनिनत्स-त् ताम् न् ः तम् त म् अनिनत्सा-व म
५ अनिनत् सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ निनत्साञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर-कृम कृव
निनत्साम्बभूव निनत्सामास
७ निनत्स्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनत्सिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनत्सिष्या-मि वः मः (अनिनत्सिष्या-व म
१० अनिनत्सिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम–तीर्थरक्षणपरायण-
विद्यापीठादिमस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि–अखण्ड-
विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-
यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य
सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे
॥ दिवादिगणः संपूर्णः ॥

१२८६ षुंगट् (सु) अभिषवे । आत्मनेपदे पूङौच् १२४२ वद्रूपाणि परस्मैपदेतु षुंकू १०७८ वद्रूपाणि

**१२८७ षिंगृट् ( सि ) बन्धने ।**

१ **सिसी**–षते षते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिसीषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिसी**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिसी**–षत षताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिसीषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिसीषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे **सिसीषाम्बभूव सिसीषामास** (य वहि महि
७ **सिसीषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिसीषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिसीषि**–ष्यत ष्यते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०**असिसीषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ **सिसीष**–ति तः न्ति सि थः थ **सिसीषा**–मि वः मः
२ **सिसीषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **सिसीष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **सिसीषा**–णि व म
४ **असिसीष**-त् ताम् न् : तम् त म् **असिसीषा**–व म
५ **असिसी**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **सिसीषाञ्च**–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम **सिसीषाम्बभूव सिसीषामास**
७ **सिसीष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसीषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिसीषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसीषिष्या**-मि वः मः (**असिसीषिष्या**–व म
१०**असिसीषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१२८८ शिंगट् ( शि ) निशाने ।**

१ **शिशी**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शिशीषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि.
३ **शिशी**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अशिशी**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अशिशीषि** ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **शिशीषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **शिशीषाञ्चक्रे शिशीषाम्बभूव** (य वहि महि
७ **शिशीषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शिशीषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शिशीषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशिशीषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ **शिशीष**–ति तः न्ति सि थः थ **शिशीषा**–मि वः मः
२ **शिशीषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **शिशीष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **शिशीषा**–णि व म
४ **अशिशीष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अशिशीषा**–व म
५ **अशिशी**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **शिशीषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **शिशीषामास शिशीषाञ्चकार**
७ **शिशीष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **शिशीषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **शिशीषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **शिशीषिष्या**–मि वः मः (**अशिशीषिष्या**–व म
१० **अशिशीषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म

१२८९ टुमिंगृद् (मि) प्रक्षेपणे । परस्मैपदे मांक १०७३ वद्रूपाणि आत्मनेपदेतु माङ्क ११३७ वद्रूपाणि

**१२९० चिंगट् ( चि ) चयने ।**

१ **चिची**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **चिचीषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चिची**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अचिची**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अचिचीषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **चिचीषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **चिचीषाञ्चक्रे चिचीषाम्बभूव** [य वहि महि
७ **चिचीषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चिचीषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिचीषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अचिचीषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

**पक्षे चिची-स्थाने चिकी-इति ज्ञेयम्**

१ **चिची**–षति तः न्ति सि थः थ **चिचीषा**–मि वः मः
२ **चिचीषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चिचीष**–तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त **चिचीषा**–णि व म
४ **अचिचीष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अचिचीषा**–व म
५ **अचिची**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **चिचीषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **चिचीषाञ्चकार चिचीषामास**
७ **चिचीष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चिचीषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चिचीषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **चिचीषिष्या**–मि वः मः (**अचिचीषिष्या**–व म
१० **अचिचीषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म

**पक्षे चिची-स्थाने चिकी-इति ज्ञेयम्**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १२९१ धगूट् ( धू ) कम्पने ।

१ दुधू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दुधूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दुधू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदुधू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदुधूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ दुधूषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दुधूषाञ्चक्रे दुधूषामास (य वहि महि
७ दुधूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दुधूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दुधूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदुधूषि- ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ दुधूष-ति तः न्ति सि थः थ दुधूषा-मि वः मः
२ दुधूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुधूष-तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त
दुधूषा-णि व म
४ अदुधूष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुधूषा व म
५ अदुधू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुधूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दुधूषाञ्चकार दुधूषामास
७ दुधूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुधूषिष्या-मि वः मः
(अदुधूषिष्या-व म
१ अदुधूषिष्य त ताम् न् : तम् त म्

## १२९२ स्तृंगूट् ( स्तृ ) आच्छादने ।

१ तिस्तीर्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तिस्तीर्षे-तयाताम् रन् थाः याथाम् ध्वम्य वहि महि
३ तिस्तीर्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतिस्तीर्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अतिस्तीर्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ तिस्तीर्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तिस्तीर्षाञ्चक्रे तिस्तीर्षाम्बभूव (य वहि महि
७ तिस्तीर्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तिस्तीर्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तिस्तीर्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतिस्तीर्षि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ तिस्तीर्ष-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तीर्षा-मि वः मः
२ तिस्तीर्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तिस्तीर्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिस्तीर्षा-णि व म
४अतिस्तीर्ष त् ताम् न् : तम् त म् अतिस्तीर्षा-व म
५ अतिस्ती-र्षीत् र्षिष्टाम् र्षिषुः र्षीः र्षिष्टम् र्षिष्ट र्षिषम्
र्षिष्व र्षिष्म
६तिस्तीर्षाञ्च-कार कतुः क्रु कर्थ क्रथुः क्रकार कर कृव कृम
तिस्तीर्षाम्बभूव तिस्तीर्षामास
७ तिस्तीर्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तीर्षिता-" रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्तीर्षिष्य-ति त न्ति सि थः थ तिस्तीर्षिष्या-मि
व मः (अतिस्तीर्षिष्या-व म
१०अतिस्तीर्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१२९३ कृगूट् [कृ] हिंसायाम् । डुकृंग् ८८८ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१२९४ वृगट् ( वृ ) वरणे ।**

१ **विवरि**-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवरिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवरि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवरि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवरिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ **विवरिषाञ्च** क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**विवरिषाम्बभूव विवरिषामास** (य वहि महि
७ **विवरिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवरिषिता**-" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवरिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवरिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**पक्षे विवरि-स्थाने विवरी इति वुवूर् इति च ज्ञेयम्**

१ **विवरिष**-ति तः न्ति सि थः थ **विवरिषा**-मि वः मः
२ **विवरिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विवरिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **विवरिषा**-णि व म
४ **अविवरिष**-त् ताम् न् : तम् त म **अविवरिषा**-व म
५ **अविवरि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **विवरिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**विवरिषाञ्चकार विवरिषामास**
७ **विवरिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवरिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवरिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विवरिषिष्या**-मि वः मः (**अविवरिषिष्या**-व म
१० **अविवरिषिष्य**-त ताम न् : तम् त म

**पक्षे विवरि-स्थाने विवरी इति वुवूर् इति च ज्ञेयम्**

**१२९५ हिंट् ( हि ) गतिवृद्ध्योः ।**

१ **जिघीष**-ति तः न्ति सि थः थ **जिघीषा**-मि वः मः
२ **जिघीषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **जिघीष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **जिघीषा**-णि व म
४ **अजिघीष** त् ताम् न् : तम् त म **अजिघीषा**-व म
५ **अजिघी**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **जिघीषाञ्च** कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
**जिघीषाम्बभूव जिघीषामास**
७ **जिघीष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **जिघीषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **जिघीषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **जिघीषिष्या**-मि वः मः (**अजिघीषिष्या**-व म
१० **अजिघीषिष्य**-त् ताम् न : तम् त म

**१२९६ श्रुंट् ( श्रु ) श्रवणे ।**

१ **शुश्रू** षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **शुश्रूषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **शुश्रू**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अशुश्रू**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अशुश्रूषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ **शुश्रूषाम्बभू**-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
**शुश्रूषाञ्चक्रे शुश्रूषामास** (य वहि महि
७ **शुश्रूषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **शुश्रूषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **शुश्रूषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अशुश्रूषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१२९७ टुदुंट् ( दु ) उपतापे । दुं १२ वद्रूपाणि
१२९८ पृंट् ( पृ ) प्रीतौ । पृंक् ११३४ वद्रूपाणि
१२९९ स्मृंट् [स्मृ] पालने च । स्मृं १८ वद्रूपाणि
१३०० शक्लृंट् [ शक् ] व्याप्तौ । शकींच् १२८० वद्रूपाणि तत्र जिज्ञासायामात्मनेपदघटितं रूपम् । अन्यत्र परस्मैपदघटितं रूपमिति विवेक्तव्यम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३०१ तिक (तिक्) हिंसायाम् ।

१ तितेकिष-ति तः न्ति सि थः थ तितेकिषा-मि वः मः
२ तितेकिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितेकिष-तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त
तितेकिषा-णि व म
४ अतितेकिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितेकिषा-व म
५ अतितेकि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितेकिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितेकिषाञ्चकार तितेकिषामास
७ तितेकिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितेकिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितेकिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितेकिषिष्या-मि
वः मः (अतितेकिषिष्या-व म
१ अतितेकिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तिते-स्थाने तिति-इति ज्ञेयम्

### १३०२ तिग (तिग्) हिंसायाम् ।

१ तितेगिष-ति तः न्ति सि थः थ तितेगिषा-मि वः मः
२ तितेगिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितेगिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितेगिषा-नि व म
४ अतितेगिष त् ताम् न् : तम् त म् अतितेगिषा-व म
५ अतितेगि-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ तितेगिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तितेगिषाम्बभूव तितेगिषामास
७ तितेगिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितेगिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितेगिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितेगिषिष्या-मि
व मः (अतितेगिषिष्या-व म
१० अतितेगिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तिते-स्थाने तिति-इति ज्ञेयम्

### १३०३ षघद (सघ्) हिंसायाम् ।

१ सिसघिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसघिषा-मि वः मः
२ सिसघिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ सिसघिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसघिषा-णि व म
४ असिसघिष-त् ताम् न् : तम् त म असिसघिषा-व म
५ असिसघि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसघिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसघिषाञ्चकार सिसघिषामास
७ सिसघिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसघिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसघिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसघिषिष्या-मि
वः मः (असिसघिषिष्या-व म
१० असिसघिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

### १३०४ राधंट् (राध्) संसिद्धौ । राधंच् ११५६ इतिवद्रूपम् ।

वधे तु—
१ रित्स-ति तः न्ति सि थः थ रित्सा-मि वः मः
२ रित्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रित्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रित्सा-नि व म
४ अरित्स-त् ताम् न् : तम् त म् अरित्सा-व म
५ अरित्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ रित्साञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
रित्साम्बभूव रित्सामास
७ रित्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रित्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रित्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रित्सिष्या-मि वः मः
(अरित्सिष्या-व म
१० अरित्सिष्य-त् ताम् न : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१३०५ साधंट् ( साध् ) संसिद्धौ ।**

१ **सिसात्स**–ति तः न्ति सि थः थ **सिसात्सा**–मि वः मः
२ **सिसात्से**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **सिसात्स**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **सिसात्सा**–नि व म
४ **असिसात्स**–त् ताम् न् : तम् त म् **असिसात्सा**–व म
५ **असिसा**त्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **सिसात्साम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **सिसात्साञ्चकार** **सिसात्सामास**
७ **सिसात्स्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसात्सिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिसात्सिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **सिसात्सिष्या**–मि वः मः (**असिसात्सिष्या**–व म
१० **असिसात्सिष्य**–त् ताम् न : तम त म्

१३०६ ऋधूट् (ऋध् ) **वृद्धौ** । ऋधूच् ११८६ वद्रूपाणि

**१३०७ आप्लृंट् ( आप् ) व्याप्तौ ।**

१ **ईप्स**–ति तः न्ति सि थः थ **ईप्सा**–मि वः मः
२ **ईप्से**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **ईप्स**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **ईप्सा**–नि व म
४ **ऐप्स** त् ताम् न् : तम् त म् **ऐप्सा**–व म
५ **ऐप्**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **ईप्साञ्च**–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम **ईप्साम्बभूव** **ईप्सामास**
७ **ईप्स्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **ईप्सिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **ईप्सिष्य**–ति त न्ति सि थः थ **ईप्सिष्या**–मि व मः (**ऐप्सिष्या**–व म
१० **ऐप्सिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

१३०८ तृपट् (तृप् ) प्रीणने । तृपौच् ११८९ वद्रूपाणि । नवरं तितर्पि षटितानि इड्रहितान्येव

**१३०९ दम्भूट् ( दम्भ् ) दम्भे ।**

१ **दिदम्भिष**–ति तः न्ति सि थः थ **दिदम्भिषा**–मि वः मः
२ **दिदम्भिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **दिदम्भिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **दिदम्भिषा**–णि व म
४ **अदिदम्भिष**–त् ताम् न : तम् त म् **अदिदम्भिषा**–व म
५ **अदिदम्भि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **दिदम्भिषामा** स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **दिदम्भिषाञ्चकार** **दिदम्भिषाम्बभूव**
७ **दिदम्भिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **दिदम्भिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **दिदम्भिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **दिदम्भिषिष्या** मि वः मः (**अदिदम्भिषिष्या**–व म
१० **अदिदम्भिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

१ **धीप्स**–ति तः न्ति सि थः थ **धीप्सा**–मि वः मः
२ **धीप्से**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **धीप्स**–तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त **धीप्सा**–नि व म
४ **अधीप्स**–त् ताम् न् : तम् त म् **अधीप्सा** व म
५ **अधीप्**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ **धीप्साम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **धीप्साञ्चकार** **धीप्सामास**
७ **धीप्स्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **धीप्सिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **धीप्सिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **धीप्सिष्या**–मि वः मः (**अधीप्सिष्या**–व म
१ **अधीप्सिष्य** त ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे धीप् स्थाने धिप्–इति ज्ञेयम्**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public D...

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३१० कृवुङ् ( कृण्व् ) हिंसागत्योः ।

१ चिकृण्विष-ति तः न्ति सि थः थ चिकृण्विषा-मि वः मः
२ चिकृण्विषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकृण्विष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
चिकृण्विषा-णि व म म
४ अचिकृण्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकृण्विषा-व
५ अचिकृण्वि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकृण्विषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकृण्विषाञ्चकार चिकृण्विषाम्बभूव
७ चिकृण्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकृण्विषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकृण्विषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकृण्विषिष्या
मि वः मः (अचिकृण्विषिष्या-व म
१० अचिकृण्विषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१३११ धिवुङ् ( धिन्व् ) गतौ ।

१ दिधिन्विष-ति तः न्ति सि थः थ दिधिन्विषा-मि वः मः
२ दिधिन्विषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ दिधिन्विष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
दिधिन्विषा-णि व म व म
४ अदिधिन्विष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिधिन्विषा-
५ अदिधिन्वि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिधिन्विषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिधिन्विषामास दिधिन्विषाञ्चकार
७ दिधिन्विष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधिन्विषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधिन्विषिष्य तितः न्ति सि थः थ दिधिन्विषिष्या
मि वः मः (अदिधिन्विषिष्या-व म
१० अदिधिन्विषिष्य-त् ताम न् : तम् त म

१३१२ ञिधृषाट् ( धृष् ) प्रागल्भ्ये ।

१ दिधर्षिष-ति तः न्ति सि थः थ दिधर्षिषा-मि वः मः
२ दिधर्षिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधर्षिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
दिधर्षिषा-णि व म
४ अदिधर्षिष त् ताम् न् : तम् त म् अदिधर्षिषा-व म
५ अदिधर्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिधर्षिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिधर्षिषाम्बभूव दिधर्षिषामास
७ दिधर्षिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधर्षिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधर्षिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधर्षिषिष्या-मि
वः मः (अदिधर्षिषिष्या-व म
१० अदिधर्षिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१३१३ ष्टिघिङ् ( स्तिघ् ) आस्कन्दने ।

१ तिस्तेघि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तिस्तेघिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तिस्तेघि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतिस्तेघि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतिस्तेघिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तिस्तेघिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तिस्तेघिषाञ्चक्रे तिस्तेघिषाम्बभूव [य वहि महि
७ तिस्तेघिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तिस्तेघिषिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तिस्तेघिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतिस्तेघिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे तिस्ते-स्थाने तिस्ति-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३१४ अशौटि ( अश् ) व्याप्तौ ।

१ अशिशि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अशिशिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अशिशि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ आशिशि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ आशिशिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अशिशिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अशिशिषाञ्चक्रे, अशिशिषाम्बभूव (य वहि महि
७ अशिशिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अशिशिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अशिशिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०आशिशिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम–तीर्थरक्षणपरायण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि–अखण्ड-
विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-
यमाणान्तिपन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य
सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे
॥ स्वादिगणः संपूर्णः ॥

### १३१५ तुदींत् ( तुद् ) व्यथने ।

१ तुतुत्–सते सेते सन्तेससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ तुतुत्से–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तुतुत्–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अतुतुत्–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम सध्वम् से
सावहि सामहि ( सि स्वहि स्महि
५ अतुतुत्सि ष्ट साताम् सत ष्ठाः साथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तुतुत्साञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तुतुत्साम्बभूव तुतुत्सामास (य वहि महि
७ तुतुत्सिषी–ष्ट यास्ताम् रन ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तुतुत्सिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुतुत्सि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतुतुत्सि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ **तुतुत्स**–ति तः न्ति सि थः थ **तुतुत्सा**–मि वः मः
२ **तुतुत्से**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तुतुत्स**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**तुतुत्सा**–नि व म
४ **अतुतुत्स**–त् ताम् न् : तम् त म **अतुतुत्सा** व म
५ **अतुतुत्**–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **तुतुत्साम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तुतुत्साञ्चकार** **तुतुत्सामास**
७ **तुतुत्स्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तुतुत्सिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तुतुत्सिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **तुतुत्सिष्या**–मि वः म
(**अतुतुत्सिष्या**–व म
१ **अतुतुत्सिष्य**–त ताम न : तम त म्

१ **बिभ्रज्जिष**–ति तः न्ति सि थः थ **बिभ्रज्जिषा**–मि वः मः
२ **बिभ्रज्जिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **बिभ्रज्जिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**बिभ्रज्जिषा**–णि व म
४ **अबिभ्रज्जिष** त् ताम् न् : तम् त म् **अबिभ्रज्जिषा**–व म
५ **अबिभ्रज्ज**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **बिभ्रज्जिषाञ्च**–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
कृम
**बिभ्रज्जिषाम्बभूव** **बिभ्रज्जिषामास**
७ **बिभ्रज्जिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **बिभ्रज्जिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **बिभ्रज्जिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **बिभ्रज्जिषिष्या**
मि वः मः (**अबिभ्रज्जिषिष्या**–व म
१० **अबिभ्रज्जिषिष्य**–त ताम् न : तम् त म
पक्षे बिभ्रज्ज-स्थाने बिभर्जि इति बिभर्क
इति बिभ्रक् इति च ज्ञेयम्

## १३१८ भ्रस्जींत् ( भ्रस्ज् ) पाके ।

१ **बिभ्रज्ञि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **बिभ्रज्ञिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **बिभ्रज्ञि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अबिभ्रज्ञि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अबिभ्रज्ञिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **बिभ्रज्ञिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**बिभ्रज्ञिषाम्बभूव** **बिभ्रज्ञिषामास** (य वहि महि
७ **बिभ्रज्ञिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **बिभ्रज्ञिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **बिभ्रज्ञिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अबिभ्रज्ञिषि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे बिभ्रज्ञि-स्थाने बिभर्जि इति बिभर्क्ष् इति
बिभ्रक्ष् इति च ज्ञेयम्

## १३१९ क्षिपीं ( क्षिप् ) प्रेरणे ।

१ **चिक्षिप्**–सते सेते सन्तेससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ **चिक्षिप्से**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **चिक्षिप्**–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ **अचिक्षिप्**–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अचिक्षिप्सि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **चिक्षिप्सामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**चिक्षिप्साञ्चक्रे** **चिक्षिप्साम्बभूव** (य वहि महि
७ **चिक्षिप्सिषी** ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **चिक्षिप्सिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिक्षिप्सि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अचिक्षिप्सि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे क्षिप् ११५८ वद्रूपाणि ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १३१८ दिशीँत् ( दिश् ) अतिसर्जने ।

१ दिदिक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदिक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदिक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदिक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदिक्षि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदिक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिदिक्षाञ्चक्रे दिदिक्षामास (य वहि महि
७ दिदिक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदिक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदिक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदिक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ दिदिक्ष-ति तः न्ति सि थः थ दिदिक्षा-मि वः मः
२ दिदिक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदिक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदिक्षा-णि व म
४ अदिदिक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदिक्षा-व म
५ अदिदिक् षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ दिदिक्षाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार
दिदिक्षाम्बभूव दिदिक्षामास
७ दिदिक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदिक्षिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदिक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदिक्षिष्या-मि व. म:
(अदिदिक्षिष्या-व म
१०अदिदिक्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १३१९ कृषींत् ( कृष् ) विलेखने ।

१ चिकृक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकृक्षे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकृक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अचिकृक-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकृक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकृक्षाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकृक्षाम्बभूव चिकृक्षामास [य वहि महि
७ चिकृक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकृक्षिता-" रौ र मेः साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकृक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचिकृक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे कृ० ५०६ वद्रूपाणि

## १३२० मुच्लृंती ( मुच् ) मोक्षणे ।

१ मुमुक्-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मुमुक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मुमुक्-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमुमुक्-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमुमुक्षि ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मुमुक्षाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
मुमुक्षाम्बभूव मुमुक्षामास (य वहि महि
७ मुमुक्षि-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ मुमुक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मुमुक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अमुमुक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे मुमु-स्थाने मो-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ मुमुक्ष–ति तः न्ति सि थः थ मुमुक्षा–मि वः मः
२ मुमुक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुक्ष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
मुमुक्षा–णि व म
४ अमुमुक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुक्षा–व म
५ अमुमुक्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमुक्षाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुमुक्षामास मुमुक्षाञ्चकार
७ मुमुक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुक्षिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुक्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मुमुक्षिष्या–मि वः मः
(अमुमुक्षिष्या–व म
१० अमुमुक्षिष्य–त् ताम् न् : तम त म

पक्षे मुमु-स्थाने मो-इति ज्ञेयम्

अत्राय विवेकः—कर्मकर्तृकस्य सन्नन्तमुच्धातोः मोक्षते 'मुमुक्षते' इतिरूपद्वयं भवति, अविवक्षितकर्मकाद् मुच्धातोः सनि 'फलवति कर्तरि' 'मोक्षते–'मुमुक्षते' तद्भिन्ने कर्तरि' 'मुमुक्षति' इति रूपम् सकर्मकाद् मुच्धातोः सनि 'फलवति कर्तरि' 'मुमुक्षते' 'तद्भिन्नकर्तरि 'मुमुक्षति–इति रूपमिति.

१३२१ षिचींत् ( सिच् ) क्षरणे ।

१ सिसिक्–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिसिक्षे–त यातान् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिसिक्–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असिसिक्–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिसिक्षि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिसिक्षामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिसिक्षाञ्चक्रे सिसिक्षाम्बभूव [य वहि महि
७ सिसिक्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिसिक्षिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिसिक्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिसिक्षि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ सिसिक्ष–ति तः न्ति सि थः थ सिसिक्षा–मि वः मः
२ सिसिक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसिक्ष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
सिसिक्षा–णि व म
४ असिसिक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् असिसिक्षा–व म
५ असिसिक्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसिक्षाञ्च–कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
सिसिक्षाम्बभूव सिसिक्षामास
७ सिसिक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसिक्षिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसिक्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सिसिक्षिष्या–मि वः
मः (असिसिक्षिष्या–व म
१० असिसिक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१३२२ विद्लृंती ( विद् ) लाभे ।

१ विवित्स–ति तः न्ति सि थः थ विवित्सा–मि वः मः
२ विवित्से–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवित्स–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विवित्सा–नि व म
४ अविवित्स–त् ताम् न् : तम् त म् अविवित्सा–व म
५ अविवित्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ विवित्साम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवित्साञ्चकार विवित्सामास
७ विवित्स्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवित्सिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवित्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवित्सिष्या–मि
वः मः (अविवित्सिष्या–व म
१० अविवित्सिष्य–त् ताम् न् : तम् त म
आत्मनेपदेतु विविदिषु १२५८ चक्रपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १३२३ लुप्लृती ( लुप ) छेदने ।

१ लुलुप्स–ति तः न्ति सि थः थ लुलुप्सा–मि वः मः
२ लुलुप्से–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ लुलुप्स–तु तात् तात् न्तु '' तात् तम् त
लुलुप्सा–नि व म
४ अलुलुप्स–त् ताम् न् ः तम् त म अलुलुप्सा व म
५ अलुलुप्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ लुलुप्साम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलुप्साञ्चकार लुलुप्सामास
७ लुलुप्स्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुप्सिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुप्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लुलुप्सिष्या–मि वः मः
(अलुलुप्सिष्या–व म
१० अलुलुप्सिष्य–त ताम न् ः तम् त म

## १३२४ लिपींत ( लिप् ) उपदेहे ।

१ लिलिप्–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ लिलिप्से–तयाताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलिप्–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अलिलिप्–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलिप्सि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलिप्सामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलिप्साञ्चक्रे लिलिप्साम्बभूव (य वहि महि
७ लिलिप्सिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलिप्सिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलिप्सि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलिलिप्सि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ लुलुप्–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ लुलुप्से त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लुलुप्–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अलुलुप्–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलुलुप्सि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लुलुप्साम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलुप्साञ्चक्रे लुलुप्सामास (य वहि महि
७ लुलुप्सिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लुलुप्सिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लुलुप्सि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अलुलुप्सि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ लिलिप्स–ति तः न्ति सि थः थ लिलिप्सा–मि वः मः
२ लिलिप्से–त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ लिलिप्स–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
लिलिप्सा–णि व म
४ अलिलिप्स–त् ताम् न् ः तम् त म् अलिलिप्सा–व म
५ अलिलिप्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ लिलिप्साञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः कचार कर कृव कृम
लिलिप्साम्बभूव लिलिप्सामास
७ लिलिप्स्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलिप्सिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलिप्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लिलिप्सिष्या–मि
व मः (अलिलिप्सिष्या–व म
१० अलिलिप्सिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३२५ कृतैत् ( कृत् ) छेदने ।

१ **चिकर्तिष**-ति तः न्ति सि थः थ **चिकर्तिषा**-मि वः मः
२ **चिकर्तिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चिकर्तिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**चिकर्तिषा**-णि व म
४ **अचिकर्तिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अचिकर्तिषा**-व म
५ **अचिकर्ति**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **चिकर्तिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**चिकर्तिषाञ्चकार** **चिकर्तिषाम्बभूव**
७ **चिकर्तिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चिकर्तिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चिकर्तिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **चिकर्तिषिष्या**-मि वः मः (**अचिकर्तिषिष्या** व म
१० **अचिकर्तिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

१ **चिकृत्स**-ति तः न्ति सि थः थ **चिकृत्सा**-मि वः मः
२ **चिकृत्से**-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चिकृत्स**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**चिकृत्सा**-नि व म
४ **अचिकृत्स**-त ताम् न् : तम् त म् **अचिकृत्सा**-व म
५ **अचिकृत्**-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **चिकृत्साम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**चिकृत्साञ्चकार** **चिकृत्सामास**
७ **चिकृत्स्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चिकृत्सिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चिकृत्सिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **चिकृत्सिष्या**-मि वः मः (**अचिकृत्सिष्या** व म
१० **अचिकृत्सिष्य**-त ताम् न् : तम् त म्

### १३२६ खिदत् ( खिद् ) परिघाते ।

१ **चिखित्स**-ति तः न्ति सि थः थ **चिखित्सा**-मि वः मः
२ **चिखित्से**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चिखित्स**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**चिखित्सा**-नि व म
४ **अचिखित्स**-त् ताम् न् : तम् त म् **अचिखित्सा**-व म
५ **अचिखित्**-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **चिखित्साञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**चिखित्साम्बभूव** **चिखित्सामास**
७ **चिखित्स्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चिखित्सिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चिखित्सिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **चिखित्सिष्या**-मि वः मः (**अचिखित्सिष्या**-व म
१० **अचिखित्सिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

### १३२७ पिशत् ( पिश् ) अवयवे ।

१ **पिपेशिष**-ति तः न्ति सि थः थ **पिपेशिषा**-मि वः मः
२ **पिपेशिषे**-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **पिपेशिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**पिपेशिषा**-णि व म
४ **अपिपेशिष**-त ताम् न् : तम् त म् **अपिपेशिषा**-व म
५ **अपिपेशि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **पिपेशिषाञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**पिपेशिषाम्बभूव** **पिपेशिषामास**
७ **पिपेशिष्या** त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **पिपेशिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **पिपेशिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **पिपेशिषिष्या**-मि वः मः (**अपिपेशिषिष्या**-व म
१० **अपिपेशिषिष्य**-त ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे पिपे-स्थाने पिपि-इति ज्ञेयम्**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३२८ रिंत् ( रि ) गतौ ।

१ **रिरीष**-ति तः न्ति सि थः थ **रिरीषा**-मि वः मः
२ **रिरीषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **रिरीष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **रिरीषा** णि व म
४ **अरिरीष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अरिरीषा**-व म
५ **अरिरी**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **रिरीषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **रिरीषाञ्चकार** **रिरीषामास**
७ **रिरीष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **रिरीषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **रिरीषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **रिरीषिष्या**-मि वः मः (**अरिरीषिष्या**-व म
१० **अरिरीषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

### १३२९ पिंत् ( पि ) गतौ ।

१ **पिपीष**-ति तः न्ति सि थ थ **पिपीषा**-मि वः मः
२ **पिपीषे**-त् ताम युः : तम त यम व म
३ **पिपीष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **पिपीषा**-णि व म
४ **अपिपीष**-त् ताम् न् : तम् त म **अपिपीषा**-व म
५ **अपिपी**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **पिपीषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **पिपीषाञ्चकार** **पिपीषामास**
७ **पिपीष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **पिपीषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **पिपीषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **पिपीषिष्या**-मि व. म (**अपिपीषिष्या**-व म
१० **अपिपीषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

### १३३० धिंत् ( धि ) धारणे ।

१ **दिधीष**-ति त न्ति सि थः थ **दिधीषा**-मि वः मः
२ **दिधीषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **दिधीष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **दिधीषा**-णि व म
४ **अदिधीष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अदिधीषा**-व म
५ **अदिधी** षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **दिधीषाञ्चकार** कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृम कृव **दिधीषाम्बभूव** **दिधीषामास**
७ **दिधीष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **दिधीषिता**- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **दिधीषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **दिधीषिष्या**-मि वः मः (**अदिधीषिष्या**-व म
१० **अदिधीषिष्य**-त् ताम् न् : तम त म

१३३१ क्षिंत् ( क्षि ) निवासगत्योः । क्षि १० वद्रूपाणि

१३३२ प्रृंत् ( प्रृ ) प्रेरणे । प्रृं १० वद्रूपाणि

### १३३३ मृंत् ( मृ ) प्राणत्यागे ।

१ **मुमूर्ष**-ति तः न्ति सि थः थ **मुमूर्षा**-मि वः मः
२ **मुमूर्षे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **मुमूर्ष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **मुमूर्षा**-णि व म
४ **अमुमूर्ष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अमुमूर्षा**-व म
५ **अमुमू**-र्षीत् र्षिष्टाम् र्षिषुः र्षीः र्षिष्टम् र्षिष्ट र्षिषम् र्षिष्व र्षिष्म
६ **मुमूर्षाञ्च** कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम **मुमूर्षाम्बभूव** **मुमूर्षामास**
७ **मुमूर्ष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **मुमूर्षिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **मुमूर्षिष्य** ति तः न्ति सि थः थ **मुमूर्षिष्या**-मि वः मः (**अमुमूर्षिष्या**-व म
१० **अमुमूर्षिष्य**-त् ताम् न : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

१३३४ कृत् ( कृ ) विक्षेपे ।

१ चिकरीष-ति तः न्ति सि थः थ चिकरीषा-मि वः मः
२ चिकरीषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकरीष-तु तात् ताम् न्तु '' तात तम् त
चिकरीषा-णि व म
४ अचिकरीष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकरीषा-व म
५ अचिकरी-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकरीषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकरीषाञ्चकार चिकरीषामास
७ चिकरीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकरीषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकरीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकरीषिष्या-मि वः मः (अचिकरीषिष्या-व म
१० अचिकरीषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे करी-स्थाने करि-इति ज्ञेयम

१३३६ लिखत् ( लिख् ) अक्षरविन्यासे ।

१ लिलेखिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलेखिषा-मि वः मः
२ लिलेखिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलेखिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
लिलेखिषा-णि व म
४ अलिलेखिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलेखिषा व म
५ अलिलेखि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलेखिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
लिलेखिषाम्बभूव लिलेखिषामास
७ लिलेखिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलेखिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलेखिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलेखिषिष्या-मि वः मः (अलिलेखिषिष्या-व म
१० अलिलेखिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे लिले-स्थाने लिलि-इति ज्ञेयम्

१३३५ गृत ( गृ ) निगरणे ।

१ जिगरीष-ति तः न्ति सि थः थ जिगरीषा-मि वः मः
२ जिगरीषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिगरीष-तु तात ताम् न्तु '' तात तम् त
जिगरीषा-णि व म
४ अजिगरीष-त् ताम् न् : तम् त म अजिगरीषा-व म
५ अजिगरी-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगरीषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगरीषाञ्चकार जिगरीषामास
७ जिगरीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगरीषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगरीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगरीषिष्या-मि वः मः (अजिगरीषिष्या-व म
१० अजिगरीषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे जिगरि स्थाने जिगरि इति जिगरी
इति जिगली इति च ज्ञेयम्

१३३७ जर्चत् ( जर्च् ) परिभाषणे ।

१ जिजर्चिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजर्चिषा-मि वः मः
२ जिजर्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजर्चिष-तु तात ताम् न्तु '' तात तम् त
जिजर्चिषा-णि व म
४ अजिजर्चिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजर्चिषा-व म
५ अजिजर्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजर्चिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिजर्चिषाम्बभूव जिजर्चिषामास
७ जिजर्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजर्चिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजर्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजर्चिषिष्या-मि वः मः (अजिजर्चिषिष्या-व म
१० अजिजर्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३३८ झर्चत् ( झर्च् ) परिभाषणे ।

१ जिझर्चिष-ति तः न्ति सि थः थ जिझर्चिषा-मि वः मः
२ जिझर्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिझर्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जिझर्चिषा-णि व म
४ अजिझर्चिष-त् ताम् न् तम् त म् अजिझर्चिषा-व म
५ अजिझर्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिझर्चिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जिझर्चिषाञ्चकार जिझर्चिषामास
७ जिझर्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिझर्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिझर्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिझर्चिषिष्या-मि वः मः (अजिझर्चिषिष्या-व म
१० अजिझर्चिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१३३९ त्वचत् ( त्वच् ) संवरणे ।

१ तित्वचिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्वचिषा-मि वः मः
२ तित्वचिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ तित्वचिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तित्वचिषा-णि व म
४ अतित्वचिष-त् ताम् न् : तम् त म अतित्वचिषा-व म
५ अतित्वचि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तित्वचिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम तित्वचिषाञ्चकार तित्वचिषामास
७ तित्वचिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्वचिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्वचिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्वचिषिष्या-मि वः मः (अतित्वचिषिष्या-व म
१० अतित्वचिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१३४० ऋचत् [ऋच्] स्तुतौ । अर्च १३८ वद्रूपाणि

१३४१ ओव्रश्चौत् ( व्रश्च् ) छेदने ।

१ विव्रश्चिष-ति तः न्ति सि थः थ विव्रश्चिषा-मि वः मः
२ विव्रश्चिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विव्रश्चिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विव्रश्चिषा-णि व म
४ अविव्रश्चिष-त् ताम् न् : तम् त म अविव्रश्चिषा व म
५ अविव्रश्चि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ विव्रश्चिषाञ्च कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव कृम विव्रश्चिषाम्बभूव विव्रश्चिषामास
७ विव्रश्चिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्रश्चिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्रश्चिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विव्रश्चिषिष्या मि वः मः (अविव्रश्चिषिष्या-व म
१० अविव्रश्चिषिष्य-त् ताम् न : तम् त म
पक्षे विव्रश्चि स्थाने विव्रक् इति ज्ञेयम

१३४२ ऋछत (ऋछ्) इन्द्रियप्रलयमूर्तिभावयोः ।

१ ऋचिच्छिष-ति तः न्ति सि थः थ ऋचिच्छिषा-मि वः मः
२ ऋचिच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ऋचिच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त ऋचिच्छिषा-णि व म
४ आर्चिच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्चिच्छिषा-व म
५ आर्चिच्छि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ ऋचिच्छिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर-कृम कृव ऋचिच्छिषाम्बभूव ऋचिच्छिषामास
७ ऋचिच्छिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ऋचिच्छिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ ऋचिच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ऋचिच्छिषिष्या-मि वः मः (आर्चिच्छिषिष्या-व म
१० आर्चिच्छिषिष्य-त ताम् न : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३४३ विछत् ( विच्छ् ) गतौ ।

१विविच्छिष-ति तः न्तिसि थः थविविच्छिषा-मिवः मः
२ विविच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विविच्छिषा-णि व म व म
४अविविच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविविच्छिषा-
५ अविविच्छि-षीत् षिष्टाम् षिषु: षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विविच्छिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
विविच्छिषाञ्चकार विविच्छिषाम्बभूव
७ विविच्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविच्छिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९विविच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विविच्छिषिष्या-मि वः मः (अविविच्छिषिष्या व म
१०अविविच्छिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे विविच्छि-स्थाने विविच्छायि-इति ज्ञेयम्

१३४५ मिछत् ( मिच्छ् ) उत्क्लेशे ।

१मिमिच्छिष-ति तः न्तिसिथः थमिमिच्छिषा-मिवःमः
२ मिमिच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमिच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमिच्छिषा-णि व म व म
४अमिमिच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमिच्छिषा
५ अमिमिच्छि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
क्म षिष्व षिष्म
६ मिमिच्छिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव
मिमिच्छिषाम्बभूव मिमिच्छिषामास
७ मिमिच्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिच्छिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९मिमिच्छिषिष्य-ति तःन्ति सिथःथमिमिच्छिषिष्या
मिवः मः (अमिमिच्छिषिष्या-व म
१०अमिमिच्छिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१३४४ उछैत् ( उच्छ् ) विवासे ।

१उचिच्छिष-ति त न्ति सि थः थ उचिच्छिषा-मि वः मः
२ उचिच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ उचिच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
उचिच्छिषा-णि व म
४औचिच्छिष त् ताम् न् : तम् त म् औचिच्छिषा-व म
५ औचिच्छि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६उचिच्छिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
उचिच्छिषाञ्चकार उचिच्छिषामास
७ उचिच्छिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ उचिच्छिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९उचिच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थःथ उचिच्छिषिष्या
मि वः मः (औचिच्छिषिष्या व म
१०औचिच्छिषिष्य त ताम् न : तम् त म्

१३४६ उञ्छृत् ( उञ्छ् ) उञ्छे ।

१उञ्चिच्छिष-ति तः न्ति सि थः थउञ्चिच्छिषा-मिवः मः
२ उञ्चिच्छिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ उञ्चिच्छिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
उञ्चिच्छिषा-णि व म
४ औञ्चिच्छिष-त् ताम् न् : तम् त म् औञ्चिच्छिषा-व म
५ औञ्चिच्छि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
कृम षिष्व षिष्म
६उञ्चिच्छिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव
उञ्चिच्छिषाम्बभूव उञ्चिच्छिषामास
७ उञ्चिच्छिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ उञ्चिच्छिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ उञ्चिच्छिषिष्य-ति तः न्ति सि थःथ उञ्चिच्छिषिष्या
मिवः मः (औञ्चिच्छिषिष्या-व म
१०औञ्चिच्छिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१३४७ प्रछंत् ( प्रच्छ् ) ज्ञीप्सायाम् ।**

१ **पिपृच्छिष**-ति तः न्ति सि थः थ **पिपृच्छिषा**-मिवः मः
२ **पिपृच्छिषे**-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **पिपृच्छिष**-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
**पिपृच्छिषा**-णि व म
४ **अपिपृच्छिष**-त ताम् न् : तम् त म् **अपिपृच्छिषा**-व म
५ **अपिपृच्छि** षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ **पिपृच्छिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**पिपृच्छिषाञ्चकार** **पिपृच्छिषामास**
७ **पिपृच्छिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **पिपृच्छिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **पिपृच्छिषिष्य**-ति तः न्ति सि थःथ **पिपृच्छिषिष्या**-
मि वः मः (**अपिपृच्छिषिष्या**-व म
१० **अपिपृच्छिषिष्य**-त ताम न : तम् त म

**१३४८ उब्जत् ( उब्ज् ) आर्जवे ।**

१ **उब्जिजिष**-ति तः न्ति सि थः थ **उब्जिजिषा**-मि वः मः
२ **उब्जिजिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **उब्जिजिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**उब्जिजिषा**-णि व म
४ **औब्जिजिष** त् ताम् न् : तम् त म् **औब्जिजिषा**-व म
५ **औब्जिजि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **उब्जिजिषाञ्च**-कार कतुः क्रु कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
**उब्जिजिषाम्बभूव** **उब्जिजिषामास**
७ **उब्जिजिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **उब्जिजिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **उब्जिजिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **उब्जिजिषिष्या**
मि व मः (**औब्जिजिषिष्या**-व म
१० **औब्जिजिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**१३४९ सृजंत ( सृज् ) विसर्गे ।**

१ **सिसृक्ष**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसृक्षा**-मि वः मः
२ **सिसृक्षे**-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ **सिसृक्ष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**सिसृक्षा**-णि व म
४ **असिसृक्ष** त् ताम न : तम् त म **असिसृक्षा**-व म
५ **असिसृक्**-षीत षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **सिसृक्षामा** स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**सिसृक्षाञ्चकार** **सिसृक्षाम्बभूव**
७ **सिसृक्ष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसृक्षिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिसृक्षिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसृक्षिष्या**-मि वः
मः (**असिसृक्षिष्या**-व म
१० **असिसृक्षिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

१३५० रुजांत् ( रुज ) भङ्गे । रूह्यं ९८८ वद्रूपाणि

**१३५१ भुजोंत ( भुज् ) कौटिल्ये ।**

१ **बुभुक्ष**-ति तः न्ति सि थः थ **बुभुक्षा**-मि वः मः
२ **बुभुक्षे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **बुभुक्ष**-तु तात् तात् न्तु " तात् तम् त
**बुभुक्षा**-णि व म
४ **अबुभुक्ष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अबुभुक्षा**-व म
५ **अबुभुक्**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **बुभुक्षाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**बुभुक्षाञ्चकार** **बुभुक्षामास**
७ **बुभुक्ष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **बुभुक्षिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **बुभुक्षिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **बुभुक्षिष्या**-मि वः मः
(**अबुभुक्षिष्या**-व म
१ **अबुभुक्षिष्य**-त ताम न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३५२ टुमस्जोंत ( मस्ज् ) शुद्धौ ।

१ मिमङ्क्ष-ति तः न्ति सि थः थ मिमङ्क्षा-मि वः मः
२ मिमङ्क्षे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमङ्क्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमङ्क्षा-णि व म
४ अमिमङ्क्ष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमङ्क्षा-व म
५ अमिमङ्क्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमङ्क्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृवकृम
मिमङ्क्षाम्बभूव मिमङ्क्षामास
७ मिमङ्क्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमङ्क्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमङ्क्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमङ्क्षिष्या-मि वः मः
(अमिमङ्क्षिष्या-व म
१० अमिमङ्क्षिष्य-त ताम् न् : तम् त म

### १३५३ जर्जत् ( जर्ज् ) परिभाषणे ।

१ जिजर्जिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजर्जिषा-मि वः मः
२ जिजर्जिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिजर्जिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजर्जिषा-णि व म
४ अजिजर्जिष-त् ताम न् : तम् त म् अजिजर्जिषा-व म
५ अजिजर्जि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजर्जिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजर्जिषाञ्चकार जिजर्जिषाम्बभूव
७ जिजर्जिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजर्जिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजर्जिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजर्जिषिष्या-मि वः मः
(अजिजर्जिषिष्या-व म
१० अजिजर्जिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

### १३५४ झर्झत् ( झर्झ् ) परिभाषणे ।

१ जिझर्झिष-ति तः न्ति सि थः थ जिझर्झिषा-मि वः मः
२ जिझर्झिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ जिझर्झिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिझर्झिषा-णि व म
४ अजिझर्झिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिझर्झिषा-व म
५ अजिझर्झि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिझर्झिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिझर्झिषाञ्चकार जिझर्झिषाम्बभूव
७ जिझर्झिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिझर्झिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिझर्झिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिझर्झिषिष्या-मि वः मः
(अजिझर्झिषिष्या-व म
१० अजिझर्झिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १३५५ उदझत् ( उज्झ् ) उत्सर्गे ।

१ उज्झिझिष-ति तः न्ति सि थः थ उज्झिझिषा-मि वः मः
२ उज्झिझिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ उज्झिझिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
उज्झिझिषा-णि व म
४ औज्झिझिष त् ताम् न् तम् त म् औज्झिझिषा-व म
५ औज्झिझि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ उज्झिझिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
उज्झिझिषामास उज्झिझिषाञ्चकार
७ उज्झिझिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ उज्झिझिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ उज्झिझिषिष्य तितः न्ति सि थः थ उज्झिझिषिष्या मि वः मः
(औज्झिझिषिष्या-व म
१० औज्झिझिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३५६ जुडत् ( जुड ) गतौ ।

१जुजोडिष-ति तः न्ति सि थः थ जुजोडिषा-मि वः मः
२ जुजोडिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुजोडिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
जुजोडिषा-णि व म
४अजुजोडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुजोडिषा-व म
५ अजुजोडि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः ष्ट्रिम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुजोडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुजोडिषाञ्चकार जुजोडिषामास
७ जुजोडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुजोडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जुजोडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुजोडिषिष्या-मि वः मः (अजुजोडिषिष्या-व म
१०अजुजोडिषिष्य-त ताम न : तम त म
पक्षे जुजो-स्थाने जुजु-इति ज्ञेयम्

### १३५७ पृडत् ( पृड ) सुखने ।

१पिपर्डिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्डिषा-मि वः मः
२ पिपर्डिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपर्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपर्डिषा-णि व म
४अपिपर्डिष त् ताम् न् : तम् त म् अपिपर्डिषा-व म
५ अपिपर्डि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६पिपर्डिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पिपर्डिषाम्बभूव पिपर्डिषामास
७ पिपर्डिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपर्डिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९पिपर्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्डिषिष्या-मि वः मः (अपिपर्डिषिष्या व म
१०अपिपर्डिषिष्य त ताम् न : तम् त म्

### १३५८ मृडत् ( मृड ) सुखने ।

१मिमर्डिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्डिषा-मि वः मः
२ मिमर्डिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमर्डिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम त
मिमर्डिषा-णि व म
४अमिमर्डिष-त् ताम न : तम् त म अमिमर्डिषा-व म
५ अमिमर्डि-षीत षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमर्डिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमर्डिषाञ्चकार मिमर्डिषाम्बभूव
७ मिमर्डिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ मिमर्डिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९मिमर्डिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्डिषिष्या-मि वः मः (अमिमर्डिषिष्या-व म
१०अमिमर्डिषिष्य-त ताम् न : तम त म

### १३५९ कडत ( कड ) मदे ।

१ चिकडिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकडिषा-मि व मः
२ चिकडिषे-त ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चिकडिष-तु तात् तात् न्तु " तात् तम त
चिकडिषा-णि व म
४अचिकडिष-त् ताम् न् : तम त म अचिकडिषा व म
५ अचिकडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकडिषाञ्चकार चिकडिषामास
७ चिकडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिकडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकडिषिष्या-मि वः मः (अचिकडिषिष्या-व म
१० अचिकडिषिष्य त ताम न : तम त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३६० पृणत् ( पृण् ) प्रीणने ।

१ पिपर्णिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्णिषा-मि वः मः
२ पिपर्णिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपर्णिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिपर्णिषा-णि व म
४ अपिपर्णिष-त् ताम न् : तम् त म् अपिपर्णिषा व म
५ अपिपर्णि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिपर्णिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम पिपर्णिषाञ्चकार पिपर्णिषाम्बभूव
७ पिपर्णिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपर्णिषिता-" रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपर्णिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्णिषिष्या-मि वः मः (अपिपर्णिषिष्या-व म
१० अपिपर्णिषिष्य-त् ताम न : तम् त म

१३६२ मृणत् ( मृण् ) हिंसायाम् ।

१ मिमर्णिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्णिषा-मि वः मः
२ मिमर्णिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमर्णिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमर्णिषा-णि व म
४ अमिमर्णिष त् ताम् न् : तम् त म् अमिमर्णिषा-व म
५ अमिमर्णि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमर्णिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम मिमर्णिषाम्बभूव मिमर्णिषामास
७ मिमर्णिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमर्णिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमर्णिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्णिषिष्या-मि वः मः (अमिमर्णिषिष्या-व म
१० अमिमर्णिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म

१३६१ तुणत् ( तुण् ) कौटिल्ये ।

१ तुतोणिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतोणिषा-मि वः मः
२ तुतोणिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ तुतोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त तुतोणिषा-णि व म
४ अतुतोणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतोणिषा-व म
५ अतुतोणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तुतोणिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम तुतोणिषाञ्चकार तुतोणिषाम्बभूव
७ तुतोणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतोणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतोणिषिष्या-मि वः मः (अतुतोणिषिष्या-व म
१० अतुतोणिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म
पक्षे तुतो स्थाने तुतु इति ज्ञेयम्

१३६३ द्रुणत् ( द्रुण् ) गतिकौटिल्ययोश्च ।

१ दुद्रोणिष-ति तः न्ति सि थः थ दुद्रोणिषा-मि वः मः
२ दुद्रोणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुद्रोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त दुद्रोणिषा-णि व म
४ अदुद्रोणिष त् ताम् न् : तम् त म् अदुद्रोणिषा-व म
५ अदुद्रोणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ दुद्रोणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम दुद्रोणिषामास दुद्रोणिषाञ्चकार
७ दुद्रोणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुद्रोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुद्रोणिषिष्य तितः न्ति सि थः थ दुद्रोणिषिष्या-मि वः मः (अदुद्रोणिषिष्या-व म
१० अदुद्रोणिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्
पक्षे दुद्रो-स्थाने दुद्रु इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३६४ पुणत् ( पुण् ) शुभे ।

१ पुपोणिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपोणिषा-मि वः मः
२ पुपोणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपोणिषा णि व म
४ अपुपोणिष-त् ताम् न् तम् त म् अपुपोणिषा-व म
५ अपुपोणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपोणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपोणिषाञ्चकार पुपोणिषामास
७ पुपोणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपोणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपोणिषिष्या-मि
वः मः (अपुपोणिषिष्या-व म
१० अपुपोणिषिष्य त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे पुपो-स्थाने पुपु-इति ज्ञेयम्

१३६५ मुणत् ( मुण् ) प्रतीज्ञाने ।

१ मुमोणिष-ति तः न्ति सि थ थ मुमोणिषा-मि वः मः
२ मुमोणिषे-त् ताम यु : तम त यम व म
३ मुमोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोणिषा-णि व म
४ अमुमोणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमोणिषा-व म
५ अमुमोणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमोणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुमोणिषाञ्चकार मुमोणिषामास
७ मुमोणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमोणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमोणिषिष्या-मि
वः मः (अमुमोणिषिष्या-व म
१० अमुमोणिषिष्य-त ताम न : तम् त म्
पक्षे मुमो-स्थाने मुमु-इति ज्ञेयम

१३६६ कुणत् ( कुण् ) शब्दोपकरणयोः ।

१ चुकोणिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकोणिषा-मि वः मः
२ चुकोणिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकोणिष-तु तात ताम् न्तु " तात तम् त
चुकोणिषा-णि व म
४ अचुकोणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकोणिषा-व म
५ अचुकोणि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकोणिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार करकृव कृम
चुकोणिषाम्बभूव चुकोणिषामास
७ चुकोणिष्या-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकोणिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ चुकोणिषिष्या-मि
वः मः (अचुकोणिषिष्या-व म
१० अचुकोणिषिष्य-त् ताम् न : तम् त म
पक्षे चुको स्थाने चुकु-इति ज्ञेयम्

१३६७ घुणत् ( घुण् ) भ्रमणे ।

१ जुघोणिष-ति तः न्ति सि थः थ जुघोणिषा-मि वः मः
२ जुघोणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुघोणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
जुघोणिषा-णि व म
४ अजुघोणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुघोणिषा-व म
५ अजुघोणि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर-कृम कृव
६ जुघोणिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथु क कार
जुघोणिषाम्बभूव जुघोणिषामास
७ जुघोणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुघोणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ जुघोणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुघोणिषिष्या-मि
वः मः (अजुघोणिषिष्या-व म
१० अजुघोणिषिष्य-त् ताम न : तम त म
पक्षे जुघो स्थाने जुघु-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३६८ घूर्णत् ( घूर्ण् ) भ्रमणे ।

१ जुघूर्णिष–ति तः न्ति सि थः थ जुघूर्णिषा–मि वः मः
२ जुघूर्णिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुघूर्णिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुघूर्णिषा–णि व म
४ अजुघूर्णिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुघूर्णिषा–व म
५ अजुघूर्णि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुघूर्णिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
जुघूर्णिषाम्बभूव जुघूर्णिषामास
७ जुघूर्णिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुघूर्णिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुघूर्णिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुघूर्णिषिष्या–मि वः मः
(अजुघूर्णिषिष्या–व म
१० अजुघूर्णिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१ चिचृत्स–ति तः न्ति सि थ थ चिचृत्सा–मि वः मः
२ चिचृत्से–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चिचृत्स–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचृत्सा–नि व म
४ अचिचृत्स–त् ताम् न् : तम् त म अचिचृत्सा–व म
५ अचिचृत्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिचृत्साम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचृत्साञ्चकार चिचृत्सामास
७ चिचृत्स्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचृत्सिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचृत्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिचृत्सिष्या–मि वः मः (अचिचृत्सिष्या–व म
१० अचिचृत्सिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१३६९ चृतैत् ( चृत् ) हिंसाग्रन्थयोः ।

१ चिचर्तिष–ति तः न्ति सि थः थ चिचर्तिषा–मि वः मः
२ चिचर्तिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चिचर्तिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचर्तिषा–णि व म
४ अचिचर्तिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिचर्तिषा–व म
५ अचिचर्ति–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचर्तिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचर्तिषाञ्चकार चिचर्तिषामास
७ चिचर्तिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचर्तिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचर्तिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिचर्तिषिष्या–मि वः म (अचिचर्तिषिष्या–व म
१० अचिचर्तिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१३७० णुदंत् ( नुद् ) प्रेरणे ।

१ नुनुत्स–ति तः न्ति सि थः थ नुनुत्सा–मि वः मः
२ नुनुत्से–त् ताम् युः तम् त यम् व म
३ नुनुत्स–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
नुनुत्सा–नि व म
४ अनुनुत्स–त् ताम् न् : तम् त म् अनुनुत्सा–व म
५ अनुनुत्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ नुनुत्साञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
नुनुत्साम्बभूव नुनुत्सामास
७ नुनुत्स्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ नुनुत्सिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ नुनुत्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ नुनुत्सिष्या–मि वः मः
(अनुनुत्सिष्या–व म
१० अनुनुत्सिष्य–त् ताम् न : तम् त म

१३७१ षद्लृंत [ सद् ] अवसादने । षद्लृं ९६३ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१३७२ विधत् ( विध् ) विधाने ।**

१ **विवेधिष**-ति त न्ति सि थः थ **विवेधिषा**-मि वः मः
२ **विवेधिषे**-त् ताम् यु : तम् त यम् व न
३ **विवेधिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **विवेधिषा**-णि व म
४ **अविवेधिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अविवेधिषा**-व म
५ **अविवेधि**-षीत षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **विवेधिषाम्बभू**-व वतु वु: विथ वथु: व व विव विम **विवेधिषाञ्चकार** **विवेधिषामास**
७ **विवेधिषिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवेधिषिता**-" रौ र: सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवेधिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विवेधिषिष्या**-मि व मः (**अविवेधिषिष्या**-व म
१० **अविवेधिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**पक्षे विवे-स्थाने विवि-ज्ञेयम्**

**१३७३ जुन ( जुन् ) गतौ ।**

१ **जुजोनिष**-ति त न्ति सि थः थ **जुजोनिषा**-मि वः मः
२ **जुजोनिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **जुजोनिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **जुजोनिषा**-णि व म
४ **अजुजोनिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अजुजोनिषा**-व म
५ **अजुजोनि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **जुजोनिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम **जुजोनिषाञ्चकार** **जुजोनिषामास**
७ **जुजोनिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **जुजोनिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **जुजोनिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **जुजोनिषिष्या**-मि वः मः ( **अजुजोनिषिष्या** व म
१० **अजुजोनिषिष्य**-त ताम् न् : तम् त म्

**पक्षे जुजो-स्थाने जुजु इति ज्ञेयम्**

**१३७४ शुनत् ( शुन् ) गतौ ।**

१ **शुशोनिष**-ति तः न्ति सि थ थ **शुशोनिषा**-मि वः मः
२ **शुशोनिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **शुशोनिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **शुशोनिषा**--णि व म
४ **अशुशोनिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अशुशोनिषा**-व म ( षिष्व षिष्म
५ **अशुशोनि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
**शुशोनिषाञ्चकार** **शुशोनिषाम्बभूव**
६ **शुशोनिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ **शुशोनिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **शुशोनिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **शुशोनिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **शुशोनिषिष्या**-मि वः मः ( **अशुशोनिषिष्या**-व म
१० **अशुशोनिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**पक्षे शुशो-स्थाने शुशु-इति ज्ञेयम्**

**१३७५ छुपत् ( छुप् ) स्पर्शे ।**

१ **चुच्छुप्स**-ति तः न्ति सि थः थ **चुच्छुप्सा**-मि वः मः
२ **चुच्छुप्से**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चुच्छुप्स** तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त **चुच्छुप्सा** नि व म
४ **अचुच्छुप्स**-त् ताम् न् : तम् त म् **अचुच्छुप्सा**-व म
५ **अचुच्छु**-प्सीत् प्सिष्टाम् प्सिषुः प्सीः प्सिष्टम् प्सिष्ट प्सिषम् प्सिष्व प्सिष्म
६ **चुच्छुप्सामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम **चुच्छुप्साञ्चकार** **चुच्छुप्साम्बभूव**
७ **चुच्छुप्स्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चुच्छुप्सिता**-" रौ र: सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चुच्छुप्सिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **चुच्छुप्सिष्या**-मि वः मः (**अचुच्छुप्सिष्या**-व म
१० **अचुच्छुप्सिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३७६ रिफत् ( रिफ् ) कथनयुद्धहिंसादानेषु

१ रिरेफिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरेफिषा-मि वः मः
२ रिरेफिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ रिरेफिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
रिरेफिषा-णि व म
४ अरिरेफिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरेफिषा-व म
५ अरिरेफि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरेफिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरेफिषाञ्चकार रिरेफिषामास
७ रिरेफिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरेफिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरेफिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरेफिषिष्या-मि वः मः (अरिरेफिषिष्या-व म
१० अरिरेफिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे रिरे-स्थाने रिरि-इति ज्ञेयम्

१३७७ तृफत् ( तृफ् ) तृप्तौ ।

१ तितर्फिष-ति तः न्ति सि थः थ तितर्फिषा-मि वः मः
२ तितर्फिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितर्फिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
तितर्फिषा-णि व म
४ अतितर्फिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितर्फिषा-व म
५ अतितर्फि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितर्फिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तितर्फिषाम्बभूव तितर्फिषामास
७ तितर्फिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्फिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्फिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितर्फिषिष्या-मि वः मः (अतितर्फिषिष्या-व म
१० अतितर्फिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१३७८ तृम्फत् ( तृम्फ् ) तृप्तौ ।

१ तितृम्फिष-ति तः न्ति सि थः थ तितृम्फिषामि वः मः
२ तितृम्फिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितृम्फिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
तितृम्फिषा-णि व म
४ अतितृम्फिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितृम्फिषाव म
५ अतितृम्फि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितृम्फिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
तितृम्फिषाम्बभूव तितृम्फिषामास
७ तितृम्फिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितृम्फिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितृम्फिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितृम्फिषिष्या-मि वः मः (अतितृम्फिषिष्या-व म
१० अतितृम्फिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१३७९ ऋफत् ( ऋफ् ) हिंसायाम् ।

१ अर्पिफिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्पिफिषामि वः मः
२ अर्पिफिषे-त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ अर्पिफिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
अर्पिफिषा-णि व म
४ आर्पिफिष-त् ताम् न् : तम् त म आर्पिफिषा-व म
५ आर्पिफि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्पिफिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अर्पिफिषाञ्चकार अर्पिफिषामास
७ अर्पिफिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्पिफिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्पिफिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्पिफिषिष्या-मि वः मः (आर्पिफिषिष्या-व म
१० आर्पिफिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १३८० ऋम्फत् ( ऋम्फ ) हिंसायाम् ।

१ ऋम्पिफिषति तः न्ति सि थः थ ऋम्पिफिषामि वः मः
२ ऋम्पिफिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ऋम्पिफिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ऋम्पिफिषा-णि व म
४ आर्म्पिफिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्म्पिफिषा-व म
५ आर्म्पिफि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ऋम्पिफिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
ऋम्पिफिषामास ऋम्पिफिषाञ्चकार
७ ऋम्पिफिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ऋम्पिफिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ऋम्पिफिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ऋम्पिफिषिष्या
मि वः मः (आर्म्पिफिषिष्या-व म
१० अआर्म्पिफिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १३८१ दृफत् ( दृफ ) उत्क्लेशे ।

१ दिदर्फिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदर्फिषा-मि वः मः
२ दिदर्फिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदर्फिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदर्फिषा-णि व म
४ अदिदर्फिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदर्फिषा-व म
५ अदिदर्फि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदर्फिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिदर्फिषाम्बभूव दिदर्फिषामास
७ दिदर्फिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदर्फिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदर्फिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदर्फिषिष्या-मि
वः मः (अदिदर्फिषिष्या-व म
१० अदिदर्फिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### १३८२ दृम्फत् ( दृम्फ ) उत्क्लेशे ।

१ दिदृम्फिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदृम्फिषा-मि वः मः
२ दिदृम्फिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदृम्फिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदृम्फिषा-णि व म
४ अदिदृम्फिष त् ताम् न् : तम् त म् अदिदृम्फिषा-व म
५ अदिदृम्फि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदृम्फिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदृम्फिषाञ्चकार दिदृम्फिषाम्बभूव
७ दिदृम्फिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदृम्फिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदृम्फिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदृम्फिषिष्या
-मि वः मः (अदिदृम्फिषिष्या-व म
१० अदिदृम्फिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

### १३८३ गुफत् ( गुफ ) ग्रन्थने ।

१ जुगोफिष-ति तः न्ति सि थः थ जुगोफिषा-मि वः मः
२ जुगोफिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगोफिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगोफिषा-णि व म (म
४ अजुगोफिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुगोफिषा-व
५ अजुगोफि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम कृव
६ जुगोफिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार-कर
जुगोफिषाम्बभूव जुगोफिषामास
७ जुगोफिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगोफिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगोफिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगोफिषिष्या-मि
वः मः (अजुगोफिषिष्या-व म
१० अजुगोफिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे जुगो स्थाने जुगु-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. ... Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१३८४ गुम्फत ( गुम्फ् ) ग्रन्थने ।**

१ **जुगुम्फिष**-ति तः न्ति सि थः थ **जुगुम्फिषा** मि वः मः
२ **जुगुम्फिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **जुगुम्फिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**जुगुम्फिषा**-णि व म
४ **अजुगुम्फिष**-त ताम् न् : तम् त म् **अजुगुम्फिषा**-व म
५ **अजुगुम्फि**-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म (क्रे. म
६ **जुगुम्फिषाञ्च**-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
**जुगुम्फिषाम्बभूव** **जुगुम्फिषामास**
७ **जुगुम्फिष्या**-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **जुगुम्फिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **जुगुम्फिषिष्य**-ति त न्ति सि थः थ **जुगुम्फिषिष्या**-मि वः मः (**अजुगुम्फिषिष्या**-व म
१० **अजुगुम्फिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**१३८५ उभत् ( उभ् ) पूरणे**

१ **ओबिभिष**-ति तः न्ति सि थः थ **ओबिभिषा**मि वः मः
२ **ओबिभिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **ओबिभिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**ओबिभिषा**-णि व म
४ **औबिभिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **औबिभिषा**-व म
५ **औबिभि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **ओबिभिषाम्बभू**-व वतुः वु: विथ वथुः व व विव विम
**ओबिभिषाञ्चकार** **ओबिभिषामास**
७ **ओबिभिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **ओबिभिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **ओबिभिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **ओबिभिषिष्या**-मि वः मः ( **औबिभिषिष्या**-व म
१० **औबिभिषिष्य**-त् ताम् न् : त म्त म्

**१३८६ उम्भत् ( उम्भ् ) पूरणे**

१ **उम्बिभिष**-ति तः न्ति सि थः थ **उम्बिभिषा**-मि वः म
२ **उम्बिभिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **उम्बिभिष** तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**उम्बिभिषा**-णि व म
४ **औम्बिभिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **औम्बिभिषा**-व म
५ **औम्बिभि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **उम्बिभिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**उम्बिभिषाञ्चकार** **उम्बिभिषामास**
७ **उम्बिभिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ **उम्बिभिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **उम्बिभिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **उम्बिभिषिष्या**-मि वः मः (**औम्बिभिषिष्या**-व म
१० **औम्बिभिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

**१३८७ शुभत ( शुभ् ) शोभार्थे ।**

१ **शुशोभिष**-ति तः न्ति सि थः थ **शुशोभिषा**-मि वः मः
२ **शुशोभिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **शुशोभिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**शुशोभिषा**-णि व म
४ **अशुशोभिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अशुशोभिषा**-व म
५ **अशुशोभि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **शुशोभिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**शुशोभिषाञ्चकार** **शुशोभिषामास**
७ **शुशोभिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **शुशोभिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **शुशोभिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **शुशोभिषिष्या**-मि वः मः (**अशुशोभिषिष्या**-व म
१० **अशुशोभिषिष्य** त् ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे शुशो-स्थाने शुशु-इति ज्ञेयम्**

१३८८ शुम्भत् (शुम्भ् ) शोभार्थे । शुम्भ ३७७ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१३८९ दृभैत् ( दृभ् ) ग्रन्थे ।**

१ दिदर्भिष–ति तः न्ति सि थः थ दिदर्भिषा-मि वः मः
२ दिदर्भिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिदर्भिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदर्भिषा-णि व म
४ अदिदर्भिष–त् ताम् न् : तम् त म् अदिदर्भिषा–व म
५ अदिदर्भि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदर्भिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दिदर्भिषाम्बभूव दिदर्भिषामास
७ दिदर्भिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदर्भिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदर्भिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिदर्भिषिष्या-मि
वः मः (अदिदर्भिषिष्या–व म
१० अदिदर्भिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१३९० लुभत (लुभ) विमोहने । लुभत् १३८८ वद्रूपाणि

**१३९१ कुरत् ( कुर् ) शब्दे ।**

१ चुकोरिष–ति तः न्ति सि थः थ चुकोरिषा–मि वः मः
२ चुकोरिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकोरिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकोरिषा-णि व म
४ अचुकोरिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुकोरिषा व म
५ अचुकोरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चुकोरिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुकोरिषाञ्चकार चुकोरिषाम्बभूव
७ चुकोरिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकोरिषिता–" रौ र सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकोरिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ चुकोरिषिष्या-मि
व मः (अचुकोरिषिष्या–व म
१० अचुकोरिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे चुको-स्थाने चुकु- इति ज्ञेयम्

**१३९२ क्षुरत् ( क्षुर् ) विलेखने ।**

१ चुक्षोरिष–ति तः न्ति सि थः थ चुक्षोरिषा–मि वः मः
२ चुक्षोरिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुक्षोरिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुक्षोरिषा–णि व म
४ अचुक्षोरिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुक्षोरिषा-व म
५ अचुक्षोरि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुक्षोरिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुक्षोरिषाञ्चकार चुक्षोरिषाम्बभूव
७ चुक्षोरिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्षोरिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुक्षोरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुक्षोरिषिष्या-मि
व. मः (अचुक्षोरिषिष्या–व म
१० अचुक्षोरिषिष्य–त् ताम् न : तम् त म
पक्षे चुक्षो स्थाने चुक्षु–इति ज्ञेयम्

**१३९३ खुरत् ( खुर् ) छेदने च ।**

१ चुखोरिष-ति तः न्ति सि थः थ चुखोरिषा-मि वः मः
२ चुखोरिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुखोरिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुखोरिषा–णि व म
४ अचुखोरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुखोरिषा-व म
५ अचुखोरि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चुखोरिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुखोरिषामास चुखोरिषाञ्चकार
७ चुखोरिष्या- त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुखोरिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुखोरिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुखोरिषिष्या-मि
वः मः (अचुखोरिषिष्या–व म
१० अचुखोरिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे चुखो स्थाने चुखु- इति ज्ञेयम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३९४ घुरत ( घुर् ) भीमार्थशब्दयोः ।

१ जुघोरिष-ति तः न्ति सि थः थ जुघोरिषा मि वः मः
२ जुघोरिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुघोरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुघोरिषा-णि व म
४ अजुघोरिष त् ताम् न् : तम् त म् अजुघोरिषा-व म
५ अजुघोरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुघोरिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव कृम
जुघोरिषाम्बभूव जुघोरिषामास
७ जुघोरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुघोरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुघोरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुघोरिषिष्या-मि
वः मः (अजुघोरिषिष्या-व म
१० अजुघोरिषिष्य-त ताम न् : तम त म
पक्षे जुघो-स्थाने जुघु-इति ज्ञेयम्

१३९६ मुरत् ( मुर् ) संवेष्टने ।

१ मुमोरिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमोरिषा-मि वः मः
२ मुमोरिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ मुमोरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोरिषा-णि व म
४ अमुमोरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमोरिषा-व म
५ अमुमोरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमोरिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मुमोरिषाञ्चकार मुमोरिषाम्बभूव
७ मुमोरिष्या-त् स्ताम सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमोरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमोरिषिष्या-मि
वः मः (अमुमोरिषिष्या-व म
१० अमुमोरिषिष्य-त ताम् न् : तम त म
पक्षे मुमो-स्थाने मुमु-इति ज्ञेयम्

१३९५ पुरत् ( पुर् ) अग्रगमने ।

१ पुपोरिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपोरिषा-मि वः मः
२ पुपोरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपोरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपोरिषा-णि व म
४ अपुपोरिष-त् ताम न् : तम् त म् अपुपोरिषा व म
५ अपुपोरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ पुपोरिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पुपोरिषाञ्चकार पुपोरिषाम्बभूव
७ पुपोरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपोरिषिता-" रौ र सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपोरिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ पुपोरिषिष्या-मि
व मः (अपुपोरिषिष्या-व म
१० अपुपोरिषिष्य-त ताम् न : तम त म
पक्षे पुपो-स्थाने पुपु-इति ज्ञेयम्

१३९७ सुरत् ( सुर् ) ऐश्वर्यदीप्त्योः ।

१ सुसोरिष-ति तः न्ति सि थः थ सुसोरिषा-मि वः मः
२ सुसोरिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म
३ सुसोरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसोरिषा-णि व म
४ असुसोरिष-त् ताम् न् : तम् त म् असुसोरिषा-व म
५ असुसोरि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ सुसोरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सुसोरिषामास सुसोरिषाञ्चकार
७ सुसोरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसोरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुसोरिषिष्य-तितः न्ति सि थः थ सुसोरिषिष्या-मि
वः मः (असुसोरिषिष्या-व म
१० असुसोरिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्
पक्षे सुसो-स्थाने सुसु-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१३९८ स्फरत् ( स्फर् ) स्फुरणे ।

१ पिस्फरिष-ति तः न्ति सि थः थ पिस्फरिषामि वः मः
२ पिस्फरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिस्फरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिस्फरिषा-णि व म
४ अपिस्फरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिस्फरिषाव म
५ अपिस्फरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिस्फरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिस्फरिषाञ्चकार पिस्फरिषामास
७ पिस्फरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिस्फरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिस्फरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिस्फरिषिष्या-मि वः मः (अपिस्फरिषिष्या-व म
१० अपिस्फरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१४०० किलत् ( किल् ) श्वैत्यक्रीडनयोः ।

१ चिकेलिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकेलिषा-मि वः मः
२ चिकेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिकेलिषा-णि व म व म
४ अचिकेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकेलिषा-
५ अचिकेलि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिकेलिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम चिकेलिषाम्बभूव चिकेलिषामास
७ चिकेलिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकेलिषिष्या-मि वः मः (अचिकेलिषिष्या-व म
१० अचिकेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

पक्षे चिके-स्थाने चिकि इति ज्ञेयम्

१३९९ स्फलत् (स्फल्) स्फुरणे

१ पिस्फलिष-ति तः न्ति सि थः थ पिस्फलिषा मि वः मः
२ पिस्फलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिस्फलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिस्फलिषा-णि व म व म
४ अपिस्फलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिस्फलिषा-
५ अपिस्फलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिस्फलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिस्फलिषाञ्चकार पिस्फलिषामास
७ पिस्फलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिस्फलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिस्फलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिस्फलिषिष्या-मि वः मः (अपिस्फलिषिष्या-व म
१० अपिस्फलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१४०१ इलत् ( इल् ) गतिस्वप्नप्रक्षेपणेषु

१ एलिलिष-ति तः न्ति सि थः थ एलिलिषा-मि वः मः
२ एलिलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ एलिलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त एलिलिषा-णि व म
४ ऐलिलिष-त् ताम् न् : तम् त म् ऐलिलिषा-व म
५ ऐलिलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ एलिलिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम एलिलिषाम्बभूव एलिलिषामास
७ एलिलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ एलिलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ एलिलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ एलिलिषिष्या-मि वः मः (ऐलिलिषिष्या-व म
१० ऐलिलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband...

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४०२ हिलत ( हिल् ) हावकरणे ।

१ जिहेलिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहेलिषामि वः मः
२ जिहेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिहेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जिहेलिषा-णि व म
४अजिहेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिहेलिषा-व म
५ अजिहेलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिहेलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जिहेलिषामास जिहेलिषाञ्चकार
७ जिहेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९जिहेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहेलिषिष्या-मि वः मः (अजिहेलिषिष्या-व म
१०अजिहेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे जिहे-स्थाने जिहि-इति ज्ञेयम्

१४०३ शिलत् ( शिल् ) उञ्छे ।

१शिशेलिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशेलिषा-मि वः मः
२ शिशेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त शिशेलिषा-णि व म व म
४ अशिशेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशेलिषा-
५ अशिशेलि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६शिशेलिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम शिशेलिषाम्बभूव शिशेलिषामास
७ शिशेलिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९शिशेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशेलिषिष्या मि वः मः (अशिशेलिषिष्या-व म
१०अशिशेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे शिशे-स्थाने शिशि इति ज्ञेयम्

१४०४ सिलत् ( सिल् ) उञ्छे

१ सिसेलिष-ति तः न्ति सि थः थ सिसेलिषा-मि वः मः
२ सिसेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिसेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त सिसेलिषा-णि व म
४असिसेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसेलिषा-व म
५ असिसेलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ सिसेलिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम सिसेलिषाम्बभूव सिसेलिषामास
७ सिसेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसेलिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९सिसेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिसेलिषिष्या -मि वः मः (असिसेलिषिष्या--व म
१० असिसेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे सिसे-स्थाने सिसि-इति ज्ञेयम्

१४०५ तिलत् ( तिल् ) स्नेहने । तिल ४३९ वद्रूपाणि
१४०६ चलत् ( चल् ) विलसने। ९७२ चल वद्रूपाणि

१४०७ चिलत् (चिल्) वसने

१चिचेलिष ति तः न्ति सि थः थ चिचेलिषा-मिवः मः
२ चिचेलिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चिचेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिचेलिषा-णि व म
४अचिचेलिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिचेलिषा व म
५ अचिचेलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिचेलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चिचेलिषाञ्चकार चिचेलिषामास
७ चिचेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिचेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचेलिषिष्या -मि वः मः (अचिचेलिषिष्या-व म
१० अचिचेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिचे स्थाने चिचि-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४०८ विलत् ( विल् ) वरणे ।

१ विवेलिष-ति तः न्ति सि थः थ विवेलिषामि वः मः
२ विवेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवेलिषा-णि व म
४ अविवेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवेलिषा-व म
५ अविवेलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवेलिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवेलिषामास विवेलिषाञ्चकार
७ विवेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवेलिषिष्या-
मि वः मः (अविवेलिषिष्या-व म
१० अविवेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म्
पक्षे विवे-स्थाने विवि-इति ज्ञेयम्

१४०९ विलत् ( विल् ) भेदने । विलत् १४०८ वद्रूपाणि
नवरं वकारस्थाने बकारो ज्ञेयः ।

१४१० णिलत् ( निल् ) गहने ।

१ निनेलिष-ति तः न्ति सि थः थ निनेलिषा-मि वः मः
२ निनेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनेलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनेलिषा-णि व म व म
४ अनिनेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनेलिषा-
५ अनिनेलि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनेलिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः कार कर कृव कृम
निनेलिषाम्बभूव निनेलिषामास
७ निनेलिष्या त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनेलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनेलिषिष्या-
मि वः मः (अनिनेलिषिष्या-व म
१० अनिनेलिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे निने-स्थाने निनि-इति ज्ञेयम्

१४११ मिलत् ( मिल् ) श्लेषणे

१ मिमेलिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमेलिषा-मि वः मः
२ मिमेलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म
३ मिमेलिष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त
मिमेलिषा-णि व म
४ अमिमेलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमेलिषा-व म
५ अमिमेलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमेलिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः कार कर कृव कृम
मिमेलिषाम्बभूव मिमेलिषामास
७ मिमेलिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमेलिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमेलिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमेलिषिष्या
-मि वः मः (अमिमेलिषिष्या-व म
१० अमिमेलिषिष्य-त ताम न : तम त म
पक्षे मिमे-स्थाने मिमि-इति ज्ञेयम्

१४१२ स्पृशत् (स्पृश्) संस्पर्शे

१ पिस्पृक्ष-ति तः न्ति सि थः थ पिस्पृक्षामि-वः मः
२ पिस्पृक्षे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ पिस्पृक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिस्पृक्षा-णि व म
४ अपिस्पृक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिस्पृक्षा-व म
५ अपिस्पृक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिस्पृक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिस्पृक्षाञ्चकार पिस्पृक्षामास
७ पिस्पृक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिस्पृक्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिस्पृक्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिस्पृक्षिष्या-
-मि वः मः (अपिस्पृक्षिष्या-व म
१० अपिस्पृक्षिष्य-त् ताम न् : तम् त म्
१४१३ रुशं ( रुश् ) हिंसायाम् । रुहं ९८८ वद्रूपाणि ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १४१४ रिशंत ( रिश् ) हिंसायाम् ।

१ रिरिक्ष–ति तः न्ति सि थः थ रिरिक्षा–मि वः मः
२ रिरिक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरिक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरिक्षा–णि व म
४ अरिरिक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अरिरिक्षा–व म
५ अरिरिक्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (क्ष म
६ रिरिक्षाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
रिरिक्षाम्बभूव रिरिक्षामास
७ रिरिक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरिक्षिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरिक्षिष्य–ति त न्ति सि थः थ रिरिक्षिष्या–मि
वः मः (अरिरिक्षिष्या–व म
१० अरिरिक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१४१५ विशंत् ( विश् ) प्रवेशने। विशूकी ११४२ वद्रूपाणि । नवरं परस्मैपदघटितान्येव ।

### १४१६ मृशंत् ( मृश् ) आमर्शने

१ मिमृक्ष–ति तः न्ति सि थः थ मिमृक्षा–मि वः मः
२ मिमृक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमृक्ष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमृक्षा–णि व म
४ अमिमृक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अमिमृक्षा–व म
५ अमिमृक्–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमृक्षाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमृक्षाञ्चकार मिमृक्षामास
७ मिमृक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमृक्षिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमृक्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिमृक्षिष्या–मि
वः मः ( अमिमृक्षिष्या–व म
१० अमिमृक्षिष्य–त् ताम् न् : त मृत म्

१४१७ लीशंत् [लिश्] गतौ । लिश चू १२७७ वद्रूपाणि

### १४१८ ऋषैत् ( ऋष् ) गतौ

१ अर्षिषिष–ति तः न्ति सि थः थ अर्षिषिषा–मि वः म
२ अर्षिषिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ अर्षिषिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्षिषिषा–णि व म
४ आर्षिषिष–त् ताम् न् : तम् त म् आर्षिषिषा–व म
५ आर्षिषि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्षिषिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अर्षिषिषाञ्चकार अर्षिषिषामास
७ अर्षिषिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ अर्षिषिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ अर्षिषिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ अर्षिषिषिष्या
मि व मः (आर्षिषिषिष्या–व म
१० आर्षिषिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१४१९ इषत् ( इष् ) इच्छायाम् । इषच् ११३७ वद्रूपाणि

१४२० मिषत् [मिष्] स्पर्धायाम् । मिष् ५२४ वद्रूपाणि

### १४२१ वृहौत ( वृह् ) उद्यमे ।

१ विवर्हिष–ति तः न्ति सि थः थ विवर्हिषा–मि वः मः
२ विवर्हिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवर्हिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्हिषा–णि व म
४ अविवर्हिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्हिषा–व म
५ अविवर्हि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ विवर्हिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवर्हिषाञ्चकार विवर्हिषामास
७ विवर्हिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्हिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्हिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवर्हिषिष्या
मि वः मः (अविवर्हिषिष्या–व म
१० अविवर्हिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे विवर्हि–स्थाने विवृक्–इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१४२१ वृहौत् ( वृह् ) उद्यमे ।**

१ **विवृक्ष**-ति तः न्ति सि थः थ **विवृक्षा**-मि वः मः
२ **विवृक्षे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विवृक्ष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**विवृक्षा**-णि व म
४ **अविवृक्ष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अविवृक्षा**-व म
५ **अविवृ**-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ **विवृक्षाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**विवृक्षाञ्चकार** **विवृक्षामास**
७ **विवृक्ष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवृक्षिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवृक्षिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विवृक्षिष्या**-मि व
मः (**अविवृक्षिष्या**-व म
१० **अविवृक्षिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे वृहू ५५९ वद्रूपाणि**

**१४२२ तृहौ ( तृह् ) हिंसायाम् ।**

१ **तितर्हिष**-ति त न्ति सि थः थ **तितर्हिषा**-मि वः मः
२ **तितर्हिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तितर्हिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**तितर्हिषा**-णि व म
४ **अतितर्हिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अतितर्हिषा**-व म
५ **अतितर्हि** षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **तितर्हिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तितर्हिषाञ्चकार** **तितर्हिषामास**
७ **तितर्हिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तितर्हिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तितर्हिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **तितर्हिषिष्या**-
मि वः मः ( **अतितर्हिषिष्या** व म
१० **अतितर्हिषिष्य**-त ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे तितर्हि-स्थाने तितृक्ष-इति ज्ञेयम् ।**

**१४२३ तृंहौत् ( तृंह् ) हिंसायाम् ।**

१ **तितृंहिष**-ति तः न्ति सि थः थ **तितृंहिषा**-मि वः मः
२ **तितृंहिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तितृंहिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**तितृंहिषा** णि व म
४ **अतितृंहिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अतितृंहिषा**-व म
५ **अतितृंहिष**-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **तितृंहिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**तितृंहिषाञ्चकार** **तितृंहिषाम्बभूव**
७ **तितृंहिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तितृंहिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तितृंहिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **तितृंहिषिष्या**-
मि वः मः (**अतितृंहिषिष्या**-व म
१० **अतितृंहिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे तितृंहि-स्थाने तितृक्ष-इति ज्ञेयम्**

**१४२४ स्तृहौत् ( स्तृह् ) हिंसायाम् ।**

१ **तिस्तर्हिष**-ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तर्हिषा**-मि वः मः
२ **तिस्तर्हिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तिस्तर्हिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**तिस्तर्हिषा**-णि व म
४ **अतिस्तर्हिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अतिस्तर्हिषा**-
व म ( षिष्व षिष्म
५ **अतिस्तर्हि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
**तिस्तर्हिषाञ्चकार** **तिस्तर्हिषाम्बभूव**
६ **तिस्तर्हिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ **तिस्तर्हिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तिस्तर्हिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तिस्तर्हिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **तिस्तर्हिषि-
ष्या**-मि वः मः (**अतिस्तर्हिषिष्या**-व म
१० **अतिस्तर्हिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्
**पक्षे तिस्तर्हि-स्थाने तिस्तृक्ष-इति ज्ञेयम्**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४२५ स्तृंहौत् ( स्तृह् ) हिंसायाम् ।

१ तिस्तृंहिष-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तृंहिषामि वः मः
२ तिस्तृंहिषे-त् ताम यु : तम् त यम् व म
३ तिस्तृंहिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिस्तृंहिषा-णि व म
४ अतिस्तृंहिषत् ताम् न् : तम् त म् अतिस्तृंहिषाव म
५ अतिस्तृंहि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्तृंहिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तृंहिषाञ्चकार तिस्तृंहिषामास
७ तिस्तृंहिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तृंहिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्तृंहिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तृंहिषिष्या-मि वः मः (अतिस्तृंहिषिष्या-व म
१० अतिस्तृंहिषिष्य-त ताम न् : तम त म्
पक्षे तिस्तृंहि स्थाने तिस्तृक्-इति ज्ञेयम्

१४२६ कुटत् ( कुट् ) कौटिल्ये।

१ चुकुटिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुटिषा-मि वः मः
२ चुकुटिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुकुटिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुटिषा-णि व म
४ अचुकुटिष त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुटिषा-व म
५ अचुकुटि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुटिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुकुटिषाञ्चकार चुकुटिषाम्बभूव
७ चुकुटिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुटिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुटिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुटिषिष्या-मि वः मः (अचुकुटिषिष्या-व म
१० अचुकुटिषिष्य-त ताम् न् : तम त म

१४२७ गुत ( गु ) पुरीषोत्सर्गे ।

१ जुगूष-ति तः न्ति सि थः थ जुगूषा-मि वः मः
२ जुगूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगूषा-णि व म
४ अजुगूष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुगूषा-व म
५ अजुगू षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम कृव
६ जुगूषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार-कर
जुगूषाम्बभूव जुगूषामास
७ जुगूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगूषिष्या-मि वः मः (अजुगूषिष्या-व म
१० अजुगूषिष्य-त ताम न् : तम त म

१४२८ ध्रुत ( ध्रु ) गतिस्थैर्ययोः । ध्रु १६ वद्रूपाणि
१४२९ णूत ( नू ) स्तवने । १०८१ णुक् वद्रूपाणि
१४३० धूत ( धू ) विधूनने । धूगट् । १२९१ वद्रूपाणि । नवरं परस्मैपदघटितान्येव

१४३१ कुचत् [कुच्] संकोचने । कुच १०० वद्रूपाणि नवरं गुणाभावविशिष्टानि चुकुचिषघटितान्येवेत्यर्थः ।

१४३२ व्यचत ( व्यच् ) व्याजीकरणे ।

१ विविचिष-ति तः न्ति सि थः थ विविचिषा-मि वः मः
२ विविचिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विविचिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विविचिषा-णि व म म
४ अविविचिष त् ताम् न् : तम् त म् अविविचिषा व
५ अविविचि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विविचिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विविचिषाम्बभूव विविचिषामास
७ विविचिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविचिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विविचिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ विविचिषिष्या मि वः मः ( अविविचिषिष्या-व म
१० अविविचिषिष्य-त ताम न् : तम त म

१४३३ गुजत् (गुज्) शब्दे । गुज १५२ वद्रूपाणि । तान्यपि जुगुजिषघटितान्येव ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १४३४ घुटत् ( घुट् ) प्रतीघाते ।

१ जुघुटिष–ति तः न्ति सि थः थ जुघुटिषा–मि वः मः
२ जुघुटिषे–त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ जुघुटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुघुटिषा–णि व म
४ अजुघुटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुघुटिषा–व म
५ अजुघुटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुघुटिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुघुटिषाञ्चकार जुघुटिषामास
७ जुघुटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुघुटिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुघुटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुघुटिषिष्या–मि वः मः (अजुघुटिषिष्या–व म
१० अजुघुटिषिष्य–त ताम् न : तम् त म्

१४३५ चुटत् ( चुट् ) छेदने । चुट २०३ वद्रूपाणि । नवरं चुचुटिषटितान्येव ।

### १४३६ छुटत् ( छुट् ) छेदने ।

१ चुच्छुटिष–ति तः न्ति सि थः थ चुच्छुटिषा–मि वः मः
२ चुच्छुटिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुच्छुटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुच्छुटिषा–णि व म
४ अचुच्छुटिष त् ताम् न् : तम् त म् अचुच्छुटिषा–व म
५ अचुच्छुटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुच्छुटिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुच्छुटिषाञ्चकार चुच्छुटिषाम्बभूव
७ चुच्छुटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुच्छुटिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुच्छुटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुच्छुटिषिष्या–मि वः मः (अचुच्छुटिषिष्या–व म
१० अचुच्छुटिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

### १४३७ त्रुटत् ( त्रुट् ) छेदने ।

१ तुत्रुटिष–ति तः न्ति सि थः थ तुत्रुटिषा–मि वः मः
२ तुत्रुटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुत्रुटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
तुत्रुटिषा–णि व म
४ अतुत्रुटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अतुत्रुटिषा–व म
५ अतुत्रुटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम कृव
६ तुत्रुटिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार–कर
तुत्रुटिषाम्बभूव तुत्रुटिषामास
७ तुत्रुटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम स्त सम् स्व स्म
८ तुत्रुटिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ तुत्रुटिषिष्य–ति तः न्ति सिथः थ तुत्रुटिषिष्या–मि वः मः (अतुत्रुटिषिष्या–व म
१० अतुत्रुटिषिष्य–त् ताम् न : तम त म

### १४३८ तुटत् ( तुट् ) कलहकर्मणि ।

१ तुतुटिष–ति तः न्ति सि थः थ तुतुटिषा–मि वः मः
२ तुतुटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुटिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुटिषा–णि व म
४ अतुतुटिष त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुटिषा व म
५ अतुतुटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुटिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तुतुटिषाम्बभूव तुतुटिषामास
७ तुतुटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुटिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुटिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ तुतुटिषिष्या–मि वः मः (अतुतुटिषिष्या–व म
१० अतुतुटिषिष्य–त ताम न् : तम त म

१४३९ मुटत् ( मुट् ) आक्षेप । प्रमर्दनयोः मुट २०२ वद्रूपाणि तानि च मुमुटिषटितान्येव ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४४० स्फुटत् [स्फुट्] विकसने । स्फुट् २०९ वद्रूपाणि तानि च पोस्फुटि घटितान्येव ।

१४४१ पुटत् ( पुट् ) संश्लेषणे ।

१ पुपुटिष–ति तः न्ति सि थः थ पुपुटिषा–मि वः मः
२ पुपुटिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपुटिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
पुपुटिषा–णि व म
४ अपुपुटिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुटिषा–व म
५ अपुपुटि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपुटिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपुटिषामास पुपुटिषाञ्चकार
७ पुपुटिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुटिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुटिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुपुटिषिष्या–मि वः मः (अपुपुटिषिष्या–व म
१० अपुपुटिषिष्य–त् ताम् न् : तम त म्

१४४२ लुटत् (लुट्) संश्लेषणे । लुट २०० वद्रूपाणि तानि च लुलुटि घटितान्येव ।

१४४२ कृडत् ( कृड् ) घसने ।

१ चिकृडिष–ति तः न्ति सि थः थ चिकृडिषा–मि वः मः
२ चिकृडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकृडिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
चिकृडिषा–णि व म
४ अचिकृडिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिकृडिषा व म
५ अचिकृडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकृडिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चिकृडिषाम्बभूव चिकृडिषामास
७ चिकृडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकृडिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकृडिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ चिकृडिषिष्यामि वः मः (अचिकृडिषिष्या–व म
१० अचिकृडिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म

१४४३ कुडत् ( कुड् ) बाल्ये च ।

१ चुकुडिष–ति तः न्ति सि थः थ चुकुडिषा–मि वः मः
२ चुकुडिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुकुडिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
चुकुडिषा–णि व म
४ अचुकुडिष त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुडिषा–व म
५ अचुकुडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुडिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुकुडिषाञ्चकार चुकुडिषाम्बभूव
७ चुकुडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुडिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुडिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुकुडिषिष्या–मि वः मः (अचुकुडिषिष्या–व म
१० अचुकुडिषिष्य–त् ताम् न् : तम त म्

१४४४ गुडत ( गुड् ) रक्षायाम् ।

१ जुगुडिष–ति तः न्ति सि थः थ जुगुडिषा–मि वः मः
२ जुगुडिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगुडिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात तम् त
जुगुडिषा–णि व म
४ अजुगुडिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुगुडिषा–व म
५ अजुगुडि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम कृव
६ जुगुडिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार–कर
जुगुडिषाम्बभूव जुगुडिषामास
७ जुगुडिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगुडिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ जुगुडिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुगुडिषिष्या–मि व मः (अजुगुडिषिष्या–व म
१० अजुगुडिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म

१४४६ जुडत् ( जुड् ) बन्धे । जुडत् । १३५९ वद्रूपाणि । तानि च जुजुडि घटितान्येव

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १४४८ लुडत् ( लुड ) संवरणे ।

१ लुलुडिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुडिषा-मि वः मः
२ लुलुडिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुडिष-तु तात ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलुडिषा-णि व म
४अलुलुडिष त ताम् न् तम् त म् अलुलुडिषा-व म
५ अलुलुडि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ लुलुडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलुडिषाञ्चकार लुलुडिषामास
७ लुलुडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९लुलुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलुडिषिष्या-मि वः मः (अलुलुडिषिष्या-व म
१०अलुलुडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १४४९ थुडत् ( थुड ) संवरणे ।

१ तुथुडिष-ति तः न्ति सि थः थ तुथुडिषा-मि वः मः
२ तुथुडिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुथुडिष-तु तात ताम् न्तु " तात तम त
तुथुडिषा-णि व म
४ अतुथुडिष त ताम् न् : तम् त म् अतुथुडिषा-व म
५ अतुथुडि-षीत षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६तुथुडिषाञ्च कार कतुः कुः कथ कथुः क कार कर कृव कृम
तुथुडिषाम्बभूव तुथुडिषामास
७ तुथुडिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुथुडिषिता-" रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तुथुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुथुडिषिष्या-मि वः मः (अतुथुडिषिष्या व म
१०अतुथुडिषिष्य त ताम् न : तम् त म्

## १४५० स्थुडत् ( स्थुड ) संवरणे ।

१तुस्थुडिष-ति तः न्ति सि थ थ तुस्थुडिषा-मि वः मः
२ तुस्थुडिषे-त ताम यु तम त यम व म
३ तुस्थुडिष-तु तात ताम न्तु " तात तम त
तुस्थुडिषा-णि व म
४अतुस्थुडिष-त् ताम न : तम त म अतुस्थुडिषा-व म
५ अतुस्थुडि-षीत षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ तुस्थुडिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुस्थुडिषाञ्चकार तुस्थुडिषाम्बभूव
७ तुस्थुडिष्या-त स्ताम सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ तुस्थुडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तुस्थुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुस्थुडिषिष्या-मि वः मः (अतुस्थुडिषिष्या-व म
१०अतुस्थुडिषिष्य-त ताम न : तम त म

## १४५१ वुडत ( वुड ) उत्सर्गे च ।

१ वुवुडिष-ति तः न्ति सि थः थ वुवुडिषा-मि वः मः
२ वुवुडिषे-त ताम युः : तम त यम् व म
३ वुवुडिष-तु तात तात न्तु " तात तम त
वुवुडिषा-णि व म
४ अवुवुडिष-त् ताम न : तम त म् अवुवुडिषा व म
५ अवुवुडि-षीत षिष्टाम षिषुः षीः षिष्टम षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ वुवुडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
वुवुडिषाञ्चकार वुवुडिषामास
७ वुवुडिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम स्त सम स्व स्म
८ वुवुडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९वुवुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ वुवुडिषिष्या मि वः मः (अवुवुडिषिष्या-व म
१० अवुवुडिषिष्य त ताम न : तम त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४५२ व्रुडत् ( व्रुड् ) संघाते ।

१ वुव्रुडिष-ति तः न्ति सि थः थ वुव्रुडिषा-मि वः मः
२ वुव्रुडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ वुव्रुडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
वुव्रुडिषा-णि व म
४ अवुव्रुडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अवुव्रुडिषा व म
५ अवुव्रुडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ वुव्रुडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
वुव्रुडिषाञ्चकार वुव्रुडिषामास
७ वुव्रुडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ वुव्रुडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ वुव्रुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ वुव्रुडिषिष्या मि
वः मः (अवुव्रुडिषिष्या-व म
१० अवुव्रुडिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म

१४५४ दुडत् ( दुड् ) निमज्जने ।

१ दुदुडिष-ति तः न्ति सि थः थ दुदुडिषा-मि वः मः
२ दुदुडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दुदुडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुदुडिषा-णि व म
४ अदुदुडिष त् ताम् न् : तम् त म् अदुदुडिषा-व म
५ अदुदुडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुदुडिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
दुदुडिषाम्बभूव दुदुडिषामास
७ दुदुडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुदुडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुदुडिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ दुदुडिषिष्या-मि
वः मः (अदुदुडिषिष्या व म
१० अदुदुडिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

१४५३ भ्रुडत् ( भ्रुड् ) संघाते ।

१ बुभ्रुडिष-ति तः न्ति सि थः थ बुभ्रुडिषा-मि वः मः
२ बुभ्रुडिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बुभ्रुडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुभ्रुडिषा-णि व म
४ अबुभ्रुडिष-त् ताम् न् तम् त म् अबुभ्रुडिषा-व म
५ अबुभ्रुडि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बुभ्रुडिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथु. व व विव विम
बुभ्रुडिषाञ्चकार बुभ्रुडिषामास
७ बुभ्रुडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुभ्रुडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुभ्रुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुभ्रुडिषिष्या-मि
वः मः (अबुभ्रुडिषिष्या-व म
१० अबुभ्रुडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१४५५ हुडत् ( हुड् ) निमज्जने ।

१ जुहुडिष-ति तः न्ति सि थ थ जुहुडिषा-मि व. मः
२ जुहुडिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ जुहुडिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुहुडिषा-णि व म
४ अजुहुडिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुहुडिषा-व म
५ अजुहुडि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुहुडिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुहुडिषाञ्चकार जुहुडिषाम्बभूव
७ जुहुडिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुहुडिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुहुडिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुहुडिषिष्या-मि
वः मः (अजुहुडिषिष्या-व म
१० अजुहुडिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१४५६ त्रुडत् ( त्रुड् ) निमज्जने ।**

१ **तुत्रुडिष**–ति तः न्ति सि थः थ **तुत्रुडिषा**–मि वः मः
२ **तुत्रुडिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तुत्रुडिष** तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**तुत्रुडिषा**–णि व म
४ **अतुत्रुडिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अतुत्रुडिषा**–व म
५ **अतुत्रुडि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **तुत्रुडिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**तुत्रुडिषाञ्चकार तुत्रुडिषामास**
७ **तुत्रुडिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ **तुत्रुडिषिता**–' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तुत्रुडिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **तुत्रुडिषिष्या**–मि वः मः (**अतुत्रुडिषिष्या**–व म
१० **अतुत्रुडिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

**१४५७ चुणत् ( चुण् ) छेदने ।**

१ **चुचुणिष** ति तः न्ति सि थः थ **चुचुणिषा**–मि व म
२ **चुचुणिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व न
३ **चुचुणिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**चुचुणिषा**–णि व म
४ **अचुचुणिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अचुचुणिषा**–व म
५ **अचुचुणि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **चुचुणिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**चुचुणिषाञ्चकार चुचुणिषामास**
७ **चुचुणिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चुचुणिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चुचुणिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **चुचुणिषिष्या**–मि वः मः (**अचुचुणिषिष्या** व म
१० **अचुचुणिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

१४५८ डिपत् (डिप्) क्षेपे । डिपच् ११९३ वद्रूपाणि तानि च डिडिपि घटितान्येव ।

**१४५९ छुरत् ( छुर् ) छेदने ।**

१ **चुच्छुरिष**–ति तः न्ति सि थः थ **चुच्छुरिषा**–मि वः मः
२ **चुच्छुरिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चुच्छुरिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**चुच्छुरिषा**–णि व म
४ **अचुच्छुरिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अचुच्छुरिषा**–व म
५ **अचुच्छुरि**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ **चुच्छुरिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**चुच्छुरिषाञ्चकार चुच्छुरिषाम्बभूव**
७ **चुच्छुरिष्या**–त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **चुच्छुरिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चुचछुरिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **चुचछुरिषिष्या**–मि वः मः (**अचुचछुरिषिष्या**–व म
१० **अचुचछुरिषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

**१४६० स्फुरत् ( स्फुर् ) स्फुरणे ।**

१ **पुस्फुरिष**–ति तः न्ति सि थः थ **पुस्फुरिषा**–मि वः मः
२ **पुस्फुरिषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **पुस्फुरिष**–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**पुस्फुरिषा**–णि व म
४ **अपुस्फुरिष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अपुस्फुरिषा**–व म
५ **अपुस्फुरि** षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **पुस्फुरिषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**पुस्फुरिषाञ्चकार पुस्फुरिषामास**
७ **पुस्फुरिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **पुस्फुरिषिता**–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **पुस्फुरिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **पुस्फुरिषिष्या**–मि वः मः (**अपुस्फुरिषिष्या** व म
१० **अपुस्फुरिषिष्य** त ताम् न : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४६१ स्फुलत् ( स्फुल् ) संचये च ।

१ पुस्फुलिष-ति त न्ति सि थः थ पुस्फुलिषा-मि वः मः
२ पुस्फुलिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुस्फुलिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पुस्फुलिषा-णि व म
४अपुस्फुलिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुस्फुलिषा-व म
५ अपुस्फुलि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६पुस्फुलिषाञ्च-कार कतु कुः कर्थ कथु क कार कर कृम कृव
पुस्फुलिषाम्बभूव पुस्फुलिषामास
७ पुस्फुलिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुस्फुलिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९पुस्फुलिषिष्य-तितः न्ति सि थः थ पुस्फुलिषिष्या-मि वः मः (अपुस्फुलिषिष्या-व म
१०अपुस्फुलिषिष्य-त ताम न : तम त म

१४६२ कुङ्त् ( कु ) शब्दे । कुङ् ५२० वद्रूपाणि
१४६३ कूङ्त् ( कू ) शब्दे । कुङ् ५२० वद्रूपाणि

१४६४ गुरति ( गुर् ) उद्यमे ।

१ जुगुरि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगुरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगुरि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुगुरि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगुरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६जुगुरिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जुगुरिषाम्बभूव जुगुरिषामास (य वहि महि
७ जुगुरिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जुगुरिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगुरिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अजुगुरिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम्

१४६५ पृङ्त् [पृ] व्यायामे । पृङ्क् ११३४ वद्रूपाणि

१४६६ दृङ्त् ( दृ ) आदरे ।

१ दिदरि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदरि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिदरि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६दिदरिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिदरिषाम्बभूव दिदरिषामास (य वहि महि
७ दिदरिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिदरिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदरिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१४६७ धृङ्त् ( धृ ) स्थाने ।

१ दिधरि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२दिधरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिधरि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिधरि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अदिधरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिधरिषाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः वव विव विम
दिधरिषाञ्चक्रे दिधरिषामास (य वहि महि
७ दिधरिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दिधरिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिधरिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिधरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१४६८ ओविजैति ( विज् ) भयचलनयोः ।**

१ **विविजि**–षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विविजिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विविजि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अविविजि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविविजिषि** ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विविजिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**विविजिषाम्बभूव विविजिषामास** (य वहि महि
७ **विविजिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विविजिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विविजिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविविजिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

१४६९ ओलजैङ् (लज्) व्रीडे । लज १५४ वद्रूपाणि

**१४७० ओलस्जैत ( लज्ज् ) व्रीडे ।**

१ **लिलज्जि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **लिलज्जिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **लिलज्जि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अलिलज्जि**--षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अलिलज्जिषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **लिलज्जिषामा**–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**लिलज्जिषाञ्चक्रे लिलज्जिषाम्बभूव** [य वहि महि
७ **लिलज्जिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **लिलज्जिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **लिलज्जिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अलिलज्जिषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम्ष्यध्वम्

**१४७१ ष्वञ्जित् ( स्वञ्ज् ) सङ्गे ।**

१ **सिस्वङ्क्**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिस्वङ्क्षे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिस्वङ्क्**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **असिस्वङ्क्**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **असिस्वङ्क्षि**–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिस्वङ्क्षाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**सिस्वङ्क्षाञ्चक्रे सिस्वङ्क्षामास** (य वहि महि
७ **सिस्वङ्क्षिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **सिस्वङ्क्षिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिस्वङ्क्षि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिस्वङ्क्षि**–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**१४७२ जुषति ( जुष् ) प्रीतिसेवनयोः ।**

१ **जुजोषि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जुजोषिषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जुजोषि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अजुजोषि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजुजोषिषि** ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जुजोषिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**जुजोषिषाम्बभूव जुजोषिषामास** (य वहि महि
७ **जुजोषिषि**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **जुजोषिषिता**–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जुजोषिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजुजोषिषि**-ष्यत ष्येताम्ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्ष्यध्वम्

**पक्षे जुजो-स्थाने जुजु-इति ज्ञेयम्**

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम–तीर्थरक्षणपरायण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि–अखण्ड-
विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-
यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य
सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे

## ॥ तुदादिगणः संपूर्णः ॥

### १४७३ रुधूंपी ( रुध् ) आवरणे ।

१ रुरुत्स–ति तः न्ति सि थः थ रुरुत्सा–मि वः मः
२ रुरुत्से–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रुरुत्स–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
रुरुत्सा–नि व म
४ अरुरुत्स–त् ताम् न् : तम् त म् अरुरुत्सा–व म
५ अरुरुत्–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम
सिष्व सिष्म
६ रुरुत्साम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रुरुत्साञ्चकार रुरुत्सामास
७ रुरुत्स्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुत्सिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुत्सिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रुरुत्सिष्या–मि वः मः
(अरुरुत्सिष्या–व म
१० अरुरुत्सिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे रुधिंर् १२६१ वद्रूपाणि

### १४७४ रिचूंपी ( रिच् ) विरेचने ।

१ रिरिक्–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ रिरिक्षे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ रिरिक्–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अरिरिक्–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अरिरिक्षि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ रिरिक्षाञ्च–के काते क्रिरे कृषे काथे कृढ्वे के कृवहे कृमहे
रिरिक्षाम्बभूव रिरिक्षामास [य वहि महि
७ रिरिक्षिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ रिरिक्षिता–'' रौ र सेः साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ रिरिक्षि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अरिरिक्षि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे रिशंत् १४१४ वद्रूपाणि
१४७५ विचृंपी (विच्) पृथग्भावे । विजृंकी ११४२ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १४७६ युजंपी ( युज् ) योगे ।

१ युयुक्ष-ति तः न्ति सि थः थ युयुक्षा-मि वः मः
२ युयुक्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ युयुक्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
युयुक्षा-णि व म
४ अयुयुक्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अयुयुक्षा-व म
५ अयुयुक्-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ युयुक्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
युयुक्षाम्बभूव युयुक्षामास
७ युयुक्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयुक्षिता " रौ र. सि स्थः स्थ स्मि स्व. स्मः
९ युयुक्षिष्य- ति तः न्ति सि थः थ युयुक्षिष्या-मि वः मः
(अयुयुक्षिष्या--व म
१० अयुयुक्षिष्य-त ताम् न : तम त म
पक्षे युजिर् १२५८ वद्रूपाणि ।

१ बिभित्स-ति तः न्ति सि थः थ बिभित्सा-मि वः मः
२ बिभित्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभित्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभित्सा-नि व म
४ अबिभित्स-त् ताम् न् : तम् त म् अबिभित्सा-व म
५ अबिभित्स-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ बिभित्साञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
बिभित्साम्बभूव बिभित्सामास
७ बिभित्स्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभित्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभित्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभित्सिष्या-मि
वः मः (अबिभित्सिष्या-व म
१० अबिभित्सिष्य-त् ताम न : तम् त म

### १४७७ भिदंपी ( भिद् ) विदारणे ।

१ बिभित्स-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ बिभित्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभित्स-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अबिभित्स-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभित्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभित्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभित्साञ्चक्रे बिभित्सामास (य वहि महि
७ बिभित्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ बिभित्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभित्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभित्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

### १४७८ छिदंपी ( छिद् ) द्वैधीकरणे ।

१ चिच्छित्स-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ चिच्छित्से-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिच्छित्स-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अचिच्छित्स-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिच्छित्सि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिच्छित्साञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिच्छित्साम्बभूव चिच्छित्सामास (य वहि महि
७ चिच्छित्सिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिच्छित्सिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिच्छित्सि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१ अचिच्छित्सि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ चिच्छित्सति-तितः न्ति सि थः थ चिच्छित्सामि वः मः
२ चिच्छित्सेत्-ताम् युः : तम् त यम व म
३ चिच्छित्सतु-तु तात ताम् न्तु '' तात तम् त
चिच्छित्सानि व म
४ अचिच्छित्सत्-त ताम् नः तम् त म अचिच्छित्साम् व म
५ अचिच्छित्सीत्-सीत सिष्टाम सिषुः सीः सिष्टम सिष्ट सिषम
सिष्व सिष्म
६ चिच्छित्सामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिच्छित्साञ्चकार चिच्छित्साम्बभूव
७ चिच्छित्स्यात्-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ चिच्छित्सिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छित्सिष्यति-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छित्सिष्यामि वः मः
(अचिच्छित्सिष्याम् व म
१० अचिच्छित्सिष्यत् त ताम न : तम त म

१४८० ऊछृदृपी ( छृद् ) दीप्तिदेवनयोः ।

१ चिच्छर्दिषते-षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिच्छर्दिषेत-याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिच्छर्दिषताम्-षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिच्छर्दिषत-षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिच्छर्दिषिष्ट-षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिच्छर्दिषामास-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिच्छर्दिषाञ्चक्रे चिच्छर्दिषाम्बभूव (य वहि महि
७ चिच्छर्दिषिषीष्ट-याास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिच्छर्दिषिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिच्छर्दिषिष्यते-ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिच्छर्दिषिष्यत-ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथामष्यध्वम्

१४७९ क्षुदृंपी ( क्षुद् ) संपेषे ।

१ चुक्षुत्सते-सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ चुक्षुत्सेत-याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुक्षुत्सताम्-सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अचुक्षुत्सत-सेताम् सन्त सथाः सेथाम सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुक्षुत्सिष्ट-षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुक्षुत्साञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुक्षुत्साम्बभूव चुक्षुत्सामास (य वहि महि
७ चुक्षुत्सिषीष्ट-यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुक्षुत्सिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुक्षुत्सिष्यते-ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुक्षुत्सिष्यत-ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे क्षुधेव १९८२ वत्रूपाणि ।

१ चिच्छृत्सते-सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ चिच्छृत्सेत-याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिच्छृत्सताम्-सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अचिच्छृत्सत-सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिच्छृत्सिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिच्छृत्सामास-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिच्छृत्साञ्चक्रे चिच्छृत्साम्बभूव (य वहि महि
७ चिच्छृत्सिषीष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिच्छृत्सिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिच्छृत्सिष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिच्छृत्सिष्यत-ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथामष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ चिच्छर्दिष-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छर्दिषा-मि वः मः
२ चिच्छर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिच्छर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छर्दिषा--णि व म
४ अचिच्छर्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छर्दिषा-व म (षिष्व षिष्म
५ अचिच्छर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
चिच्छर्दिषाञ्चकार चिच्छर्दिषाम्बभूव
६ चिच्छर्दिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ चिच्छर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छर्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छर्दिषिष्या-मि वः मः (अचिच्छर्दिषिष्या-व म
१० अचिच्छर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१४८१ ऊनृदृपी ( तृद् ) हिंसानादरयोः ।

१ तितर्दि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितर्दिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितर्दि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतितर्दि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अतितर्दिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितर्दिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितर्दिषाञ्चक्रे तितर्दिषाम्बभूव (य वहि महि
७ तितर्दिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितर्दिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितर्दिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितर्दिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

सर्वत्र तितृत्न्-स्थाने तितृत्स इति शुद्धम् ।

१ चिच्छृत्स-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छृत्सा-मि वः मः
२ चिच्छृत्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिच्छृत्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छृत्सा-णि व म
४ अचिच्छृत्स-त् ताम् त् : तम् त म् अचिच्छृत्सा-व म
५ अचिच्छृत्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिच्छृत्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिच्छृत्साञ्चकार चिच्छृत्साम्बभूव
७ चिच्छृत्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छृत्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छृत्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छृत्सिष्या-मि वः मः (अचिच्छृत्सिष्या-व म
१० अचिच्छृत्सिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ तितृत-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितृत्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितृत-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतितृत-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अतितृत्षि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितृत्षाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तितृत्षाम्बभूव तितृत्षामास (य वहि महि
७ तितृत्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितृत्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितृत्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितृत्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ **तितर्दिष**-ति तः न्ति सि थः थ **तितर्दिषा**-मि वः मः
२ **तितर्दिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तितर्दिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**ततर्दिषा**-णि व म
४ **अतितर्दिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अतितर्दिषा**-व म
५ **अतितर्दि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **ततिर्दिषाञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
**तितर्दिषाम्बभूव** **तितर्दिषामास**
७ **तितर्दिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तितर्दिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **तितर्दिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **तितर्दिषिष्या**-मि वः मः (**अतितर्दिषिष्या**-व म
१० **अतितर्दिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

१ **तितृत्स**-ति तः न्ति सि थः थ **तितृत्सा**-मि वः मः
२ **तितृत्से**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **तितृत्स**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**तितृत्सा**-नि व म
४ **अतितृत्स**-त् ताम् न् : तम् त म् **अतितृत्सा**-व म
५ **अतितृत्**-सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ **तितृत्साञ्च**-कार कतुः कुः कर्थ कथुः ककार कर कृव कृम
**तितृत्साम्बभूव** **तितृत्सामास**
७ **तितृत्स्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **तितृत्सिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व. स्मः
९ **तितृत्सिष्य**- ति तः न्ति सि थः थ **तितृत्सिष्या**-मि वः मः (**अतितृत्सिष्या**--व म
१० **अतितृत्सिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

## १४८२ पृचैव् ( पृच् ) सपर्के ।

१ **पिपर्चिष**-ति तः न्ति सि थः थ **पिपर्चिषा**-मि वः मः
२ **पिपर्चिषे**-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ **पिपर्चिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**पिपर्चिषा**-णि व म
४ **अपिपर्चिष**-त् ताम् न् : तम् त म **अपिपर्चिषा**-व म
५ **अपिपर्चि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **पिपर्चिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**पिपर्चिषाञ्चकार** **पिपर्चिषामास**
७ **पिपर्चिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **पिपर्चिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **पिपर्चिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **पिपर्चिषिष्या**-मि वः मः (**अपिपर्चिषिष्या**-व म
१० **अपिपर्चिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

## १४८३ वृचैप् ( वृच् ) वरणे ।

१ **विवर्चिष** ति तः न्ति सि थः थ **विवर्चिषा**-मि वः मः
२ **विवर्चिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विवर्चिष**-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
**विवर्चिषा**-णि व म
४ **अविवर्चिष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अविवर्चिषा**-व म
५ **अविवर्चि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **विवर्चिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**विवर्चिषाञ्चकार** **विवर्चिषामास**
७ **विवर्चिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विवर्चिषिता**-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विवर्चिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विवर्चिषिष्या**-मि वः म (**अविवर्चिषिष्या**-व म
१० **अविवर्चिषिष्य**-त् ताम न् : तम् त म्

१४८४ तञ्चू (तञ्च्) संकोचने । तञ्चू १०८. वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४८५ तञ्चौप् ( तञ्ज् ) संकोचने ।

१ तितञ्क्षि-ति तः न्ति सि थः थ तितञ्क्षा-मि वः मः
२ तितञ्क्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितञ्क्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितञ्क्षा-णि व म
४ अतितञ्क्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितञ्क्षा-व म
५ अतितञ्क्षि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (क्षीः म
६ तितञ्क्षाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
तितञ्क्षाम्बभूव तितञ्क्षामास
७ तितञ्क्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितञ्क्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितञ्क्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितञ्क्षिष्या-मि
वः मः (अतितञ्क्षिष्या-व म
१० अतितञ्क्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तितञ्क्षि-स्थाने तितङ्क्ष इति ज्ञेयम्

१४८६ भञ्चौप् ( भञ्ज् ) आमर्दने ।

१ बिभङ्क्ष-ति तः न्ति सि थः थ बिभङ्क्षा-मि वः मः
२ बिभङ्क्षे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभङ्क्ष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभङ्क्षा-णि व म
४ अबिभङ्क्ष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिभङ्क्षा-व म
५ अबिभङ्क्षि-क्षीत् क्षिष्टाम् क्षिषुः क्षीः क्षिष्टम् क्षिष्ट क्षिषम्
क्षिष्व क्षिष्म
६ बिभङ्क्षामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभङ्क्षाञ्चकार बिभङ्क्षाम्बभूव
७ बिभङ्क्ष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभङ्क्षिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभङ्क्षिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिङ्क्षिष्या-मि
वः मः ( अबिङ्क्षिष्या-व म
१० अबिभङ्क्षिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
१४८७ भुजंप् ( भुज् ) पालनाभ्यवहारयोः पालनेऽर्थे
भुजांत् १३५१ वद्रूपाणि

पालनभिन्नेऽर्थे ।

१ बुभुक्ष-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बुभुक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बुभुक्ष-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अबुभुक्ष-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबुभुक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ बुभुक्षाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बुभुक्षाञ्चक्रे बुभुक्षामास ( वहि महि
७ बुभुक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ बुभुक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बुभुक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबुभुक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१४८८ अञ्चौप् ( अञ्ज् ) व्यक्तिम्रक्षणगतिषु

१ अञ्जिजिष ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिजिषामि वः मः
२ अञ्जिजिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अञ्जिजिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्जिजिषा-णि व म
४ आञ्जिजिष-त् ताम् न् : तम् त म् आञ्जिजिषा-व म
५ आञ्जिजि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अञ्जिजिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अञ्जिजिषाञ्चकार अञ्जिजिषामास
७ अञ्जिजिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्जिजिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अञ्जिजिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिजिषि
ष्या-मि वः मः (आञ्जिजिषिष्या-व म
१० आञ्जिजिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४८९ ओविजैप् ( विज् ) भयचलनयोः ।

१ **विविजिष**-ति त न्ति सि थः थ **विविजिषा**-मि वः मः
२ **विविजिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **विविजिष**-तु तात् ताम् न्तु ''. तात् तम् त
**विविजिषा**-णि व म
४ **अविविजिष** त् ताम् न् : तम् त म् **अविविजिषा**-व म
५ **अविविजि** षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **विविजिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**विविजिषाञ्चकार** **विविजिषामास**
७ **विविजिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **विविजिषिता**-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **विविजिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **विविजिषिष्या**
मि वः मः (**अविविजिषिष्या** व म
१० **अविविजिषिष्य**-त ताम् न् : तम् त म्
१४९० क्नैङ् (क्नू) वेष्टने । क्नैत् १३२५ वद्रूपाणि

१४९२ शिष्लंप् ( शिष् ) विशेषणे ।

१ **शिशिक्ष**-ति त न्ति सि थ थ **शिशिक्षा**-मि व मः
२ **शिशिक्षे**-त् ताम् यु : तम् त यम् व न
३ **शिशिक्ष**-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
**शिशिक्षा**-णि व म
४ **अशिशिक्ष**-त् ताम् न : तम् त म् **अशिशिक्षा**-व म
५ **अशिशिक्ष**-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **शिशिक्षाम्बभू**-व वतु वु विथ वथु व व विव विम
**शिशिक्षाञ्चकार** **शिशिक्षामास**
७ **शिशिक्ष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **शिशिक्षिता**-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्म
९ **शिशिक्षिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **शिशिक्षिष्या**-मि
व मः (**अशिशिक्षिष्या** व म
१० **अशिशिक्षिष्य**-त् ताम् न : तम् त म्

१४९१ उन्दैप् ( उन्द् ) क्लेदने ।

१ **उन्दिदिष**-ति तः न्ति सि थः थ **उन्दिदिषा**-मि वः मः
२ **उन्दिदिषे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **उन्दिदिष** तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
**उन्दिदिषा**-णि व म
४ **औन्दिदिष**-त् ताम् न् . तम् त म् **औन्दिदिषा**-व म
५ **औन्दिदि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **उन्दिदिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**उन्दिदिषाञ्चकार** **उन्दिदिषामास**
७ **उन्दिदिष्या**-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ **उन्दिदिषिता**-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **उन्दिदिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **न्दिदिषिष्या**-
मि व म (**औन्दिदिषिष्या**-व म
१० **औन्दिदिषिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

१४९३ पिष्लंप् ( पिष् ) सञ्चूर्णने ।

१ **पिपिक्ष**-ति त. न्ति सि थः थ **पिपिक्षा**-मि वः मः
२ **पिपिक्षे**-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **पिपिक्ष**-तु तात् ताम् न्तु ''. तात् तम् त
**पिपिक्षा**-णि व म
४ **अपिपिक्ष**-त् ताम् न् : तम् त म् **अपिपिक्षा**-व म
५ **अपिपिक्ष**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **पिपिक्षाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**पिपिक्षाञ्चकार** **पिपिक्षाम्बभूव**
७ **पिपिक्ष्या**-त् स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **पिपिक्षिता**-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **पिपिक्षिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **पिपिक्षिष्या**-मि व
मः (**अपिपिक्षिष्या** व म
१० **अपिपिक्षिष्य**-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

**१४९४ हिसु ( हिंस् ) हिंसायाम् ।**

१ **जिहिंसिष**–ति तः न्ति सि थः थ **जिहिंसिषा**·मि वः मः

२ **जिहिंसिषे**–त ताम् युः : तम् त ग्रम् व म

३ **जिहिंसिष**–तु तात् ताम् न्तु '' तात् नम् न

**जिहिंसिषा**–णि व म

४ **अजिहिंसिष**-त् ताम् न् नम् त म् **अजिहिंसिषा**-व म

५ **अजिहिंसि**–षीत् षिष्टाम् षि षुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व षिष्म

६ **जिहिंसिषाम्बभू**·व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम

**जिहिंसिषाञ्चकार जिहिंसिषामास**

७ **जिहिंसिष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ **जिहिंसिषिता**–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ **जिहिंसिषिष्य**–ति तः न्ति सि थः थ **जिहिंसिषिष्या**·मि वः मः

(**अजिहिंसिषिष्या**–व म

१० **अजिहिंसिषिष्य** त् ताम् न् : तम् त म्

१४९५ तृहू (तृह् ) हिंसायाम् । तृहात् १४९३ वद्रूपाणि तानि च तिर्गाहे दर्शितान्येव ।

१४९६ खिदिंपू ( खिद् ) दैन्ये । खिदिच् १२५९ वद्रूपाणि

१४९७ विदिंपू ( विद् ) विचारणे । विदिच् १२५८ वद्रूपाणि

**१४९८ ञिइन्धैपि ( इन्ध् ) दीप्तौ ।**

१ **इन्दिधि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ **इन्दिधिषे** त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ **इन्दिधि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै

षावहै षामहै

४ **ऐन्दिधि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे

षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि

५ **ऐन्दिधिषि** ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम्

६ **इन्दिधिषाञ्च**·क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे

**इन्दिधिषाम्बभूव इन्दिधिषामास** [य वहि महि

७ **इन्दिधिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्

८ **इन्दिधिषिता**–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ **इन्दिधिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये

ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० **ऐन्दिधिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम–तीर्थरक्षणपरायण–विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि–अखण्ड-विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे

तृतीयभागे

॥ रुधादिगणः संपूर्णः ॥

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१४९९ तनूयी ( तन ) विस्तारे ।

१ तितनिष–ति तः न्ति सि थः थ तितनिषा–मि वः मः
२ तितनिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितनिष–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
तितनिषा–नि व म
४ अतितनिष–त् ताम् न् : तम् त म् अतितनिषा–व म
५ अतितिन–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ततिनिषाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम
तितनिषाम्बभूव तितनिषामास
७ तितनिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितनिषिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितनिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तितनिषिष्या–मि
वः मः (अतितनिषिष्या–व म
१० अतितनिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१ तितनि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितनिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितनि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतितनि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितनिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितनिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितनिषाञ्चक्रे तितनिषाम्बभूव [य वहि महि
७ तितनिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितनिषिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितनिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितनिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ तितंस–ति तः न्ति सि थः थ तितंसा–मि वः मः
२ तितंसे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितंस–तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
तितंसा–णि व म
४ अतितंस–त् ताम् न् : तम् त म् अतितंसा–व म
५ अतितंस–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ तितंसाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्रकार कर कृव कृम
तितंसाम्बभूव तितंसामास
७ तितंस्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितंसिता–'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितंसिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तितंसिष्या–मि वः मः
(अतितंसिष्या–व म
१० अतितंसिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे तितं–स्थाने तितां–इति ज्ञेयम्

१ तितं–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ तितंसे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितं–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै
सावहै सामहै
४ अतितं–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से
सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितंसि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितंसाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तितंसाम्बभूव तितंसामास (य वहि महि
७ तितंसिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितंसिता–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितंसि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितंसि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम
पक्षे तितं–स्थाने तितां–इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५०० षणूयी ( सन ) दाने ।

१ सिसनि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिसनिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिसनि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ असिसनि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिसनिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिसनिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
सिसनिषाञ्चक्रे सिसनिषाम्बभूव [य वहि महि
७ सिसनिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिसनिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिसनिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिसनिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ सिषा-सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ सिषासे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिषा-सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ असिषा-सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिषासि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिषासाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
सिषासाम्बभूव सिषासामास (य वहि महि
७ सिषासिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ सिषासिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिषासि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिषासि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१५०१ क्षणूग् ( क्षण् ) हिंसायाम् ।

१ चिक्षणिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षणिषा-मि वः मः
२ चिक्षणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिक्षणिषा-णि व म
४ अचिक्षणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचणक्षषा-व म
५ अचिक्षणि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ चिक्षणिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिक्षणिषाञ्चकार चिक्षणिषाम्बभूव
७ चिक्षणिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षणिषिष्या-मि वः मः ( अचिक्षणिषिष्या-व म
१० अचिक्षणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१ चिक्षणि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्षणिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्षणि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिक्षणि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्षणिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्षणिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षणिषाञ्चक्रे चिक्षणिषामास ( वहि महि
७ चिक्षणिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ चिक्षणिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्षणिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिक्षणिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १२०२ क्षिणूयी ( क्षिण् ) हिंसायाम् ।

१ चिक्षेणिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षेणिषा-मि वः मः
२ चिक्षेणिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्षेणिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षेणिषा-णि व म
४ अचिक्षेणिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षेणिषा-व म
५ अचिक्षेणि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षेणिषाम्बभू-व वतु वु विथ वथु व व विव विम
चिक्षेणिषाञ्चकार चिक्षेणिषामास
७ चिक्षेणिषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षेणिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षेणिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षेणिषिष्या-
मि व मः (अचिक्षेणिषिष्या-व म
१० अचिक्षेणिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिक्षे-स्थाने चिक्षि-ज्ञेयम्

१ चिक्षेणि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिक्षेणिषे-त् याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिक्षेणि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचिक्षेणि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचिक्षेणिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम्
६ चिक्षेणिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षेणिषाञ्चकार चिक्षेणिषामास वहि महि
७ चिक्षेणिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ चिक्षेणिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिक्षेणिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिक्षेणिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्
पक्षे चिक्षे-स्थाने चिक्षि-इति ज्ञेयम्

### १५०३ ऋणूयी ( ऋण् ) गतौ ।

१ अर्णिनिष-ति त न्ति सि थः थ अर्णिनिषा-मि वः मः
२ अर्णिनिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अर्णिनिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्णिनिषा-णि व म
४ आर्णिनिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्णिनिषा-व म
५ आर्णिनि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्णिनिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अर्णिनिषाञ्चकार अर्णिनिषामास
७ अर्णिनिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्णिनिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्णिनिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ आर्णिनिषिष्या-
मि वः मः ( आर्णिनिषिष्या-व म
१० आर्णिनिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१ अर्णिनि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अर्णिनिषे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अर्णिनि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ आर्णिनि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ आर्णिनिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अर्णिनिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
अर्णिनिषाम्बभूव अर्णिनिषामास [य वहि महि
७ अर्णिनिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ अर्णिनिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अर्णिनिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० आर्णिनिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १५०४ तृणूयी ( तृण् ) अदने ।

१ तितर्णि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितर्णिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितर्णि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितर्णि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितर्णिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितर्णिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तितर्णिषाम्बभूव तितर्णिषामास (य वहि महि
७ तितर्णिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ तितर्णिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितर्णिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितर्णिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १५०५ घृणूयी ( घृण् ) दीप्तौ

१ जिघर्णि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिघर्णिषे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिघर्णि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिघर्णि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अजिघर्णिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिघर्णिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिघर्णिषाम्बभूव जिघर्णिषामास [य वहि महि
७ जिघर्णिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ जिघर्णिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिघर्णिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिघर्णिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१ तितर्णिष-ति तः न्ति सि थः थ तितर्णिषा-मि वः मः
२ तितर्णिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितर्णिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितर्णिषा-णि व म
४ अतितर्णिष-त् ताम् न् : तम् तम् अतितर्णिषा-व म
५ अतितर्णि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ तितर्णिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितर्णिषाञ्चकार तितर्णिषामास
७ तितर्णिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ तितर्णिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्णिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितर्णिषिष्या-मि वः मः (अतितर्णिषिष्या-व म
१० अतितर्णिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

१ जिघर्णिष-ति तः न्ति सि थः थ जिघर्णिषा-मि वः म
२ जिघर्णिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ जिघर्णिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघर्णिषा-णि व म
४ अजिघर्णिष-त् ताम् न् तम् त म् अजिघर्णिषा-व म
५ अजिघर्णि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिघर्णिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिघर्णिषाञ्चकार जिघर्णिषामास
७ जिघर्णिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ जिघर्णिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघर्णिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ जिघर्णिषिष्या मि वः मः (अजिघर्णिषिष्या-व म
१० अजिघर्णिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१५०६ वनूयी ( वन् ) याचने ।**

१ **विवनि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवनिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवनि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अविवनि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवनिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवनिषाञ्च**–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**विवनिषाम्बभूव विवनिषामास** (य वहि महि
७ **विवनिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ **विवनिषिता**–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवनिषि**–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवनिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

**१५०७ मनूयी ( मन ) बोधने**

१ **मिमनि**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमनिषे** त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमनि**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अमिमनि**–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमनिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमनिषाञ्च**-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहेकृमहे
**मिमनिषाम्बभूव मिमनिषामास** [य वहि महि
७ **मिमनिषिषी**–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ **मिमनिषिता**–'' रौ र सेः साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमनिषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमनिषि**ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## ॥ तनादिगणः संपूर्णः ॥

**१५०८ डुक्रींग्श् ( क्री ) द्रव्यविनिमये**

१ **चिक्रीष**–ति तः न्ति सि थः थ **चिक्रीषा**–मि वः म
२ **चिक्रीषे**–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ **चिक्रीष**-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
**चिक्रीषा**–णि व म
४ **अचिक्रीष**–त् ताम् न् : तम् त म् **अचिक्रीषा**-व म
५ **अचिक्री**–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ **चिक्रीषाम्बभू**–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**चिक्रीषाञ्चकार चिक्रीषामास**
७ **चिक्रीष्या**–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ **चिक्रीषिता**–' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **चिक्रीषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **चिक्रीषिष्या**–
मि व: म (**अचिक्रीषिष्या**–व म
१० **अचिक्रीषिष्य**–त् ताम् न् : तम् त म्

१ **चिक्री**–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **चिक्रीषे**–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्म् य वहि महि
३ **चिक्री**–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ **अचिक्री**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्म् षे
षावहि षामहि (ष ष्वहि ष्महि
५ **अचिक्रीषि**–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्म् ध्म्
६ **चिक्रीषाम्बभू**–व वतु वु विथ वथुः व व विव विम
**चिक्रीषाञ्चक्रे चिक्रीषामास** (य वहि महि
७ **चिकीषिषी**–ष्ट याताम् रन् ष्ठा. यास्थाम् ध्वम्
८ **चिक्रीषिता**–'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **चिक्रीषि**–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अचिक्रीषि** ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१५०९ षिंग्श् ( सि ) बन्धने । षिंग्ट् १२८७ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५१० प्रींग्श् ( प्री ) तृप्तिकान्त्योः ।

१ पिप्रीष-ति तः न्ति सि थः थ पिप्रीषा-मि वः मः
२ पिप्रीषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ पिप्रीष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिप्रीषा-णि व म
४ अपिप्रीष-त् ताम् न् ः तम् त म् अपिप्रीषा-व म
५ अपिप्री-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षष्म
६ पिप्रीषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम पिप्रीषाञ्चकार पिप्रीषाम्बभूव
७ पिप्रीष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिप्रीषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिप्रीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिप्रीषिष्या-मि वः मः (अपिप्रीषिष्या-व म
१० अपिप्रीषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म

पक्षे प्रीङ्वत् १२५३ वद्रूपाणि

१५११ श्रींग्श् ( श्री ) पाके । श्रिग् ८८३ वद्रूपाणि तानि च शिश्रीधटितान्येव ।

१५१२ मींग्श् ( मी ) हिंसायाम् । परस्मैपदं मांक् १०७३ वद्रूपाणि । आत्मनेपदं मेंङ् ३०३ वच्चरूपाणि

१५१३ युग्श् ( यु ) बन्धने

१ यियवि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ यियविषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ यियवि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अयियवि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अयियविषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ यियविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम यियविषाञ्चकार यियविषामास वहि महि
७ यियविषिषी-ष्ट यातास् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ यियविषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ यियविषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अयियविषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

पक्षे यियवि-स्थाने युयू-इति ज्ञेयम् परस्मैपदे तु युक् १०८० वद्रूपाणि

१५१४ स्कुग्श् ( स्कु ) आप्रवणे

१ चुस्कूष-ति तः न्ति सि थः थ चुस्कूषा-मि वः मः
२ चुस्कूषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ चुस्कूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चुस्कूषा-णि व म
४ अचुस्कूष-त् ताम् न् ः तम् त म् अचुस्कूषा-व म
५ अचुस्कू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म (क्रम
६ चुस्कूषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव चुस्कूषाम्बभूव चुस्कूषामास
७ चुस्कूष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुस्कूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुस्कूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुस्कूषिष्या-मि वः मः (अचुस्कूषिष्या-व म
१० अचुस्कूषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

१ चुस्कू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुस्कूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुस्कू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुस्कू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुस्कूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुस्कूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम चुस्कूषाञ्चक्रे चुस्कूषाम्बभूव (य वहि महि
७ चुस्कूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चुस्कूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुस्कूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुस्कूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १५१५ क्नूग्रश् ( क्नू ) शब्दे ।

१ चुक्नूष–ति तः न्ति सि थः थ चुक्नूषा–मि वः मः
२ चुक्नूषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुक्नूष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
चुक्नूषा–णि व म
४ अचुक्नूष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुक्नूषा–व म
५ अचुक्नू–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुक्नूषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुक्नूषाञ्चकार चुक्नूषाम्बभूव
७ चुक्नूष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुक्नूषिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुक्नूषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुक्नूषिष्या–मि
वः मः (अचुक्नूषिष्या–व म
१० अचुक्नूषिष्य–त् ताम् न् : तम त म

१ चुक्नू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुक्नूषे–त यातान् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुक्नू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अचुक्नू–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुक्नूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुक्नूषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुक्नूषाञ्चकार चुक्नूषामास वहि महि
७ चुक्नूषिषी–ष्ट याताम रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ चुक्नूषिता–” रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुक्नूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अचुक्नूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

## १५१६ द्रूग्रश् ( द्रू ) हिंसायाम् ।

१ दुद्रू–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दुद्रूषे–त यातान् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दुद्रू–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदुद्रू–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदुद्रूषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दुद्रूषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दुद्रूषाञ्चक्रे दुद्रूषाम्बभूव (य वहि महि
७ दुद्रूषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ दुद्रूषिता–” रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दुद्रूषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि ।
१० अदुद्रूषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

पक्षे द्रूं १३ वद्रपाणि

## १५१७ ग्रहीश् ( ग्रह् ) उपादाने

१ जिघृक्ष–ति तः न्ति सि थः थ जिघृक्षा–मि वः मः
२ जिघृक्षे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिघृक्ष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
जिघृक्षा–णि व म
४ अजिघृक्ष–त् ताम् न् : तम् त म् अजि‌ृक्षा–व म
५ अजिघृक्–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (वृ. म
६ जिघृक्षाञ्च–कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
जिघृक्षाम्बभूव जिघृक्षामास
७ जिघृक्ष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघृक्षिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघृक्षिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिघृक्षिष्या–मि
वः मः (अजिघृक्षिष्या–व म
१० अजिघृक्षिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ जिघृक्षु-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिघृक्षे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिघृक्ष-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अजिघृक्ष-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिघृक्षि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिघृक्षामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिघृक्षाञ्चक्रे जिघृक्षाम्बभूव [य वहि महि
७ जिघृक्षिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिघृक्षिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिघृक्षि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिघृक्षि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

१ पुपू-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पुपूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पुपू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपुपू-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपुपूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ पुपूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपूषाञ्चक्रे पुपूषामास ( वहि महि
७ पुपूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ पुपूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पुपूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपुपूषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम

## १५१८ पूगश् ( पू ) पवने ।

१ पुपूष-ति तः न्ति सि थः थ पुपूषा-मि वः मः
२ पुपूषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूषा-णि व म
४ अपुपूष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपूषा व म
५ अपुपू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपूषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
पुपूषाम्बभूव पुपूषामास
७ पुपूष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूषिष्य ति तः न्ति सि थः थ पुपूषिष्या
मि वः मः ( अपुपूषिष्या-व म
१० अपुपूषिष्य-त् ताम न् : तम् त म

## १५१९ लूगश् ( लू ) छेदने

१ लुलूष-ति तः न्ति सि थः थ लुलूषा-मि वः मः
२ लुलूषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलूष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलूषा-णि व म
४ अलुलूष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलूषा-व म
५ अलुलू-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलूषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलूषाञ्चकार लुलूषामास
७ लुलूष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलूषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलूषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलूषिष्या-मि
वः मः ( अलुलूषिष्या-व म
१० अलुलूषिष्य त् ताम न् : त म् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ लुलू षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लुलूषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लुलू-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अलुलू-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलुलूषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लुलूषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लुलूषाञ्चक्रे लुलूषाम्बभूव [य वहि महि
७ लुलूषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लुलूषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लुलूषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलुलूषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम
१५२० धूगश् [धू] कम्पने। धूगट १२९१ वद्रूपाणि

१ तिस्तरि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तिस्तरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तिस्तरि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतिस्तरि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतिस्तरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ तिस्तरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तरिषाञ्चक्रे तिस्तरिषामास (वहि महि
७ तिस्तरिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ तिस्तरिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तिस्तरिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतिस्तरिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम् ष्यध्वम
पक्षे तिस्तरि-स्थाने तिस्तरी इति तिस्तीर्
इति च ज्ञेयम्।

## १५२१ स्तृगश् ( स्तॄ ) आच्छादने।

१ तिस्तरिष-ति तः न्ति सि थः थ तिस्तरिषा-मि वः मः
२ तिस्तरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तिस्तरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिस्तरिषा-णि व म
४ अतिस्तरिष त् ताम् न् : तम् त म् अतिस्तरिषा-
५ अतिस्तरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्तरिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
तिस्तरिषाम्बभूव तिस्तरिषामास
७ तिस्तरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्तरिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ तिस्तरिषिष्या-
मि वः मः ( अतिस्तरिषिष्या-व म
१० अतिस्तरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे तिस्तरि-स्थाने तिस्तरी इति
तिस्तीर् इति च ज्ञेयम्

## १५२२ कॄगश् ( कॄ ) हिंसायाम्

१ चिकरिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकरिषा-मि वः मः
२ चिकरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिकरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकरिषा-णि व म
४ अचिकरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकरिषा-व म
५ अचिकरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकरिषाञ्चकार चिकरिषामास
७ चिकरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकरिषिष्या
-मि वः मः ( अचिकरिषिष्या-व म
१० अचिकरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिकरी=स्थाने चिकरी-इति चिकीर्
इति च ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ चिकरि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकरि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकरि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकरिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकरिषाम्बभूव चिकरिषामास (व वहि महि
७ चिकरिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ चिकरिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकरिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिकरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
पक्षे चिकरि-स्थाने चिकरी-इति चिकीर् इति च ज्ञेयम् ।

१५२३ वृञ् (वृ) वरणे । वृणुते १२९४ वद्रूपाणि

## १५२४ ज्यांश् (ज्यां) हानौ ।

१ जिज्यास-ति त न्ति सि थः थ जिज्यासा-मि वः मः
२ जिज्यासे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिज्यास-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जिज्यासा-नि व म
४ अजिज्यास-त् ताम् न् : तम् त म् अजिज्यासा-व म
५ अजिज्या सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम् सिष्व सिष्म
६ जिज्यासाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिज्यासाञ्चकार जिज्यासामास
७ जिज्यास्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिज्यासिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिज्यासिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिज्यासिष्या-मि वः मः ( अजिज्यासिष्या-व म
१० अजिज्यासिष्य-त ताम् न् : तम् त म् .

## १५२५ रींश् ( री ) गतिरेषणयोः ।

१ रिरीष-ति तः न्ति सि थः थ रिरीषा-मि वः मः
२ रिरीषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ रिरीष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त रिरीषा-णि व म
४ अरिरीष-न् ताम् त् : तम् त म् अरिरीषा-व म
५ अरिरी-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ रिरीषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरीषाञ्चकार रिरीषाम्बभूव
७ रिरीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरीषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरीषिष्या-मि वः मः (अरिरीषिष्या-व म
१० अरिरीषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १५२६ लींश् ( ली ) श्लेषणे ।

१ लिलीष-ति तः न्ति सि थ थ लिलीषा-मि वः मः
२ लिलीषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिलीष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त लिलीषा--णि व म
४ अलिलीष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलीषा-व म ( षिष्व षिष्म
५ अलिली-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
लिलीषाञ्चकार लिलीषाम्बभूव
६ लिलीषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ लिलीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलीषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वःस्मः
९ लिलीषिष्य-ति तः न्ति सि थःथ लिलीषिष्या-मि वः मः (अलिलीषिष्या-व म
१० अलिलीषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५२७ व्लीश् (व्ली) वरणे ।

१ विव्लीष-ति त. न्ति सि थ. थ विव्लीषा-मि व मः
२ विव्लीषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ विव्लीष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विव्लीषा-णि व म
४ अविव्लीष-त् ताम् न् : तम् त म् अविव्लीषा-व म
५ अविव्ली-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विव्लीषाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः व व विव विम
विव्लीषाञ्चकार विव्लीषामास
७ विव्लीष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्लीषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्लीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विव्लीषिष्या-
मि व मः (अविव्लीषिष्या-व म
१० अविव्लीषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५२८ ल्वींश् (ल्वी) गतौ ।

१ लिल्वीष-ति त न्ति सि थः थ लिल्वीषा-मि वः मः
२ लिल्वीषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लिल्वीष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिल्वीषा-णि व म
४ अलिल्वीष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिल्वीषा-व म
५ अलिल्वी षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिल्वीषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिल्वीषाञ्चकार लिल्वीषामास
७ लिल्वीष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिल्वीषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिल्वीषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिल्वीषिष्या-
मि वः मः (अलिल्वीषिष्या-व म
१० अलिल्वीषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१५२९ कृश् (कॄ) हिंसायाम् । कृणाति १५२२ वद्रूपाणि । नवरं परस्मैपदम् ... इतीतानेव ।

१५३० मृश् (मॄ) हिंसायाम् ।

१ मिमरिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमरिषा-मि वः मः
२ मिमरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमरिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमरिषा-णि व म
४ अमिमरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमरिषा-व म
५ अमिमरिष-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमरिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमरिषाञ्चकार मिमरिषाम्बभूव
७ मिमरिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमरिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ मिमरिषिष्या-
मि वः मः (अमिमरिषिष्या-व म
१० अमिमरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे मिमरि-स्थाने मिमरी-इति मुमूर्
इति च ज्ञेयम् ।

१५३१ शृश् (शॄ) हिंसायाम् ।

१ शिशरिष-ति तः न्ति सि थः थ शिशरिषा-मि वः मः
२ शिशरिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिशरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशरिषा--णि व म
४ अशिशरिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशरिषा-
व म (षिष्व षिष्म
५ अशिशरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
शिशरिषाञ्चकार शिशरिषाम्बभूव
६ शिशरिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ शिशरिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशरिषि-
ष्या-मि वः मः (अशिशरिषिष्या-व म
१० अशिशरिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे शिशरि-स्थाने शिशरी-इति शिशीर्
इति च ज्ञेयम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५३२ पृश् ( पॄ ) पालनपूरणयोः ।

१ पिपरिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपरिषा-मि वः मः
२ पिपरिषे-त ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ पिपरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त पिपरिषा-णि व म
४ अपिपरिष त् ताम् न् ः तम् त म् अपिपरिषा-
५ अपिपरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ पिपरिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव कृम पिपरिषाम्बभूव पिपरिषामास
७ पिपरिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपरिषिष्या-मि वः मः ( अपिपरिषिष्या-व म
१० अपिपरिषिष्य-त ताम न ः तम त म

पक्षे पिपरि-स्थाने पिपरी इति पुपूर् इति च ज्ञेयम्

१५३३ वृश् ( वॄ ) वरणे । वृगट् १२९४ वद्रूपाणि नवरं परस्मैपदघटितान्येव ।

१५३४ भृश् ( भॄ ) भर्जने च ।

१ बिभरिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभरिषा-मि वः म
२ बिभरिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ बिभरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त बिभरिषा-णि व म
४ अबिभरिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अबिभरिषा-व म
५ अबिभरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म
६ बिभरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम बिभरिषाञ्चकार बिभरिषामास
७ बिभरिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभरिषिष्या मि वः मः (अबिभरिषिष्या-व म
१० अबिभरिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

पक्षे बिभरि-स्थाने बिभरी इति बुभूर् इति ज्ञेयम्

१५३५ दृश् [ दॄ ] विदारणे । दृ १०१५ वद्रूपाणि
१५३६ जृश् [ जॄ ] वयोहानौ । जष्चू ११४५ वद्रूपाणि
१५३७ नृश् ( नॄ ) नयने । नृ १०१६ वद्रूपाणि

१५३८ गृश् ( गॄ ) शब्दे ।

१ जिगरिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगरिषा-मि वः मः
२ जिगरिषे-त् ताम् यु ः तम् त यम् व म
३ जिगरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त जिगरिषा-णि व म
४ अजिगरिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अजिगरिषा-व म
५ अजिगरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिगरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम जिगरिषाञ्चकार जिगरिषामास
७ जिगरिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगरिषिष्या-मि वः मः (अजिगरिषिष्या-व म
१० अजिगरिषिष्य-त ताम न ः तम त म्

पक्षे जिगरि-स्थाने जिगरी-इति जिगीर् इति च ज्ञेयम् ।

१५३९ ॠश् ( ॠ ) गतौ

१ अरिरिष-ति तः न्ति सि थः थ अरिरिषा-मि वः मः
२ अरिरिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ अरिरिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त अरिरिषा-णि व म
४ आरिरिष-त् ताम् न् ः तम् त म् आरिरिषा-व म
५ आरिरि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ अरिरिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम अरिरिषाञ्चकार अरिरिषामास
७ अरिरिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अरिरिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अरिरिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अरिरिषिष्या -मि वः मः ( आरिरिषिष्या-व म
१० आरिरिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

पक्षे अरिरि-स्थाने अरिरी-इति ईर्षि इति च ज्ञेयम्

आरिरि-स्थाने आरिरी-इति ऐर्षि इति च ज्ञेयम् ।

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५४० ज्ञांश् ( ज्ञा ) अवबोधने ।

१ जिज्ञा–सते सेते सन्ते ससे सेथे सध्वे से सावहे सामहे
२ जिज्ञासे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिज्ञा–सताम् सेताम् सन्ताम् सस्व सेथाम् सध्वम् सै सावहै सामहै
४ अजिज्ञा–सत सेताम् सन्त सथाः सेथाम् सध्वम् से सावहि सामहि (षि ष्वहि ष्महि
५ अजिज्ञासि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिज्ञासाञ्च–क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिज्ञासाम्बभूव जिज्ञासामास (य वहि महि
७ जिज्ञासिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ जिज्ञासिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिज्ञासि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिज्ञासि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्
१५४१ क्षिपश् [क्षि] हिंसायाम् । क्षि १० वद्रूपाणि

१५४२ व्रींग् ( व्री ) वरणे ।

१ विव्रीष–ति तः न्ति सि थः थ विव्रीषा–मि वः मः
२ विव्रीषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विव्रीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विव्रीषा–णि व म
४ अविव्रीष–त् ताम् न् : तम् त म् अविव्रीषा–
५ अविव्री–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ विव्रीषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव कृम
विव्रीषाम्बभूव विव्रीषामास
७ विव्रीष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्रीषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्रीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विव्रीषिष्या–मि वः मः ( अविव्रीषिष्या–व म
१० अविव्रीषिष्य–त ताम न् : तम त म

१५४३ भ्रींग ( भ्री ) भरणे ।

१ बिभ्रीष–ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रीषा–मि वः म
२ बिभ्रीषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभ्रीष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभ्रीषा–णि व म
४ अबिभ्रीष–त् ताम् न् : तम् त म् अबिभ्रीषा–व म
५ अबिभ्री–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म
६ बिभ्रीषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभ्रीषाञ्चकार बिभ्रीषामास
७ बिभ्रीष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभ्रीषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभ्रीषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभ्रीषिष्या मि वः मः ( अबिभ्रीषिष्या–व म
१० अबिभ्रीषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१५४४ हेठश् ( हेड् ) भूतप्रादुर्भावे ।

१ जिहेठिष–ति तः न्ति सि थः थ जिहेठिषा–मि वः मः
२ जिहेठिषे–त् ताम् यु : तम् त यम व म
३ जिहेठिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहेठिषा–णि व म
४ अजिहेठिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजिहेठिषा–व म
५ अजिहेठि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ जिहेठिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिहेठिषाञ्चकार जिहेठिषामास
७ जिहेठिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहेठिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहेठिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिहेठिषिष्या–मि वः मः ( अजिहेठिषिष्या–व म
१० अजिहेठिषिष्य–त ताम् न : तम् त म्
१५४५ मृडत् ( मृड् ) सुखने । मृडत् १३५८ वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५४६ श्रन्थश् ( श्रन्थ ) मोचनप्रतिहर्षयोः

१ शिश्रन्थिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रन्थिषामि वः मः
२ शिश्रन्थिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शिश्रन्थिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रन्थिषा-णि व म
४ अशिश्रन्थिषत् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रन्थिषाव म
५ अशिश्रन्थि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्रन्थिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिश्रन्थिषाञ्चकार शिश्रन्थिषाम्बभूव
७ शिश्रन्थिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रन्थिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रन्थिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ शिश्रन्थिषिष्या
मि वः मः (अशिश्रन्थिषिष्या-व म
१० अशिश्रन्थिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५४७ मन्थश् ( मन्थ ) विलोडने । मन्थ २९२ वद्रूपाणि

१५४८ ग्रन्थश् ( ग्रन्थ ) संदर्भे

१ जिग्रन्थिष-ति तः न्ति सि थः थ जिग्रन्थिषा-मि वः मः
२ जिग्रन्थिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ जिग्रन्थिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिग्रन्थिषा-णि व म
४ अजिग्रन्थिषत् ताम् न् . तम् त म् अजिग्रन्थिषाव म
५ अजिग्रन्थि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिग्रन्थिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिग्रन्थिषाञ्चकार जिग्रन्थिषामास
७ जिग्रन्थिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ जिग्रन्थिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिग्रन्थिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिग्रन्थिषिष्या
मि व मः (अजिग्रन्थिषिष्या-व म
१० अजिग्रन्थिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५४९ कुन्थश् ( कुन्थ ) संक्लेशे । कुथु २८८ वद्रूपाणि

१५५० मृदश् ( मृद् ) क्षोदे ।

१ मिमर्दिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्दिषा-मि वः मः
२ मिमर्दिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मिमर्दिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमर्दिषा-णि व म
४ अमिमर्दिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमर्दिषा-
व म ( षिष्व षिष्म
५ अमिमर्दि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
मिमर्दिषाञ्चकार मिमर्दिषाम्बभूव
६ मिमर्दिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ मिमर्दिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमर्दिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमर्दिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्दिषि-
ष्या-मि वः मः ( अमिमर्दिषिष्या-व म
१० अमिमर्दिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५५१ गुधश् ( गुध् ) रोषे । गुधव् ११५५ वद्रूपाणि

१५५२ बन्धंश् ( बन्ध् ) बन्धने ।

१ बिभन्त्सि-ति त न्ति सि थः थ बिभन्त्सा-मि वः मः
२ बिभन्त्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ बिभन्त्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभन्त्सा-णि व म -व म
४ अबिभन्त्स त् ताम् न् : तम् त म् अबिभन्त्सा
५ अबिभन्त् सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ बिभन्त्साम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभन्त्साञ्चकार बिभन्त्सामास
७ बिभन्त्स्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभन्त्सता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभन्त्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभन्त्सिष्या-
मि वः मः ( अबिभन्त्सिष्या-व म
१० अबिभन्त्सिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१५५३ क्षुभश् ( क्षुभ् संचलने । क्षुभच् ११९९ वद्रूपाणि
१५५४ णभश् ( नभ् ) णभव् १२०० वद्रूपाणि
१५५५ तुभश् [तुभ्] तुभव् १२०१ वद्रूपाणि

सर्वत्र बिभन्त्सि स्थाने बिपन्त्स इति शुद्धम् !

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५५६ खवश् ( खव ) हेठवत्

१ चिखविष-ति तः न्ति सि थः थ चिखविषा-मि वः मः
२ चिखविषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखविष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखविषा-णि व म
४ अचिखविष त् ताम् न् : तम् त म् अचिखविषा-व म
५ अचिखवि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिखविषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिखविषाञ्चकार चिखविषामास
७ चिखविष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ चिखविषिता-' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखविषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखविषिष्या-
मि वः मः (अचिखविषिष्या-व म
१० अचिखविषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५५७ क्लिशौश् ( क्लिश् ) विबाधने ।

१ चिक्लेशिषति त न्ति सि थः थ चिक्लेशिषामि वः मः
२ चिक्लेशिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिक्लेशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्लेशिषा-णि व म -व म
४ अचिक्लेशिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्लेशिषा
५ अचिक्लेशि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्लेशिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्लेशिषाञ्चकार चिक्लेशिषामास
७ चिक्लेशिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्लेशिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्लेशिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्लेशिषि
ष्या-मि वः मः ( अचिक्लेशिषिष्या-व म
१० अचिक्लेशिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिक्लेशि-स्थाने चिक्लिशि-इति
चिक्लिक्-इति च ज्ञेयम् ।

१५५८ अशश् ( अश् ) भोजने ।

१ अशिशिष-ति तः न्ति सि थः थ अशिशिषामि वः मः
२ अशिशिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अशिशिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अशिशिषा-णि व म
४ आशिशिष-त् ताम् न् : तम् त म् आशिशिषा-व म
५ आशिशि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अशिशिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अशिशिषाञ्चकार अशिशिषाम्बभूव
७ अशिशिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अशिशिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अशिशिषिष्यति तः न्ति सि थः थ अशिशिषिष्या
मि वः मः (आशिशिषिष्या-व म
१० आशिशिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
१५५९ इषश् ( इष् ) आभीक्ष्ण्ये । इषच् ११६५ वद्रूपाणि
१५६० विषश् ( विष् ) विप्रयोगे । विष् ५२८ वद्रूपाणि
१५६१ प्रुषश् ( प्रुष् ) स्नेहसेचन पुरणेषु । प्रुष् ६३२ वद्रूपाणि
१५६२ प्लुषश् ( प्लुष् स्नेहसेचन पुरणेषु प्लुष् ५३३ वद्रूपाणि
१५६३ मुषश् ( मुष् ) स्तेये । मुष ५१३ वद्रूपाणि
१५६४ पुषश् [पुष्] पुष्ट । पुष ५३६ वद्रूपाणि

१५६५ कुषश् ( कुष् ) निष्कर्षे ।

१ चुकोषिष-ति तः न्ति सि थ थ चुकोषिषा-मि वः मः
२ चुकोषिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकोषिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकोषिषा-णि व म
४ अचुकोषिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकोषिषा-
व म ( षिष्व षिष्म
५ अचुकोषि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
चुकोषिषाञ्चकार चुकोषिषाम्बभूव
६ चुकोषिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ चुकोषिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकोषिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकोषिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकोषिषि-
ष्या-मि वः मः ( अचुकोषिषिष्या-व म
१० अचुकोषिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चुको स्थाने चुकु-इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१५६६ ध्रस्शू ( ध्रस ) उञ्छे ।**

१ दिध्रसिष-ति तः न्ति सि थः थ दिध्रसिषा-मि वः मः
२ दिध्रसिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिध्रसिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
दिध्रसिषा-णि व म
४ अदिध्रसिष त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्रसिषा-व म
५ अदिध्रसि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ दिध्रसिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथु. व व विव विम
दिध्रसिषाञ्चकार दिध्रसिषामास
७ दिध्रसिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्रसिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्रसिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ दिध्रसिषिष्या-मि वः मः (अदिध्रसिषिष्या-व म
१० अदिध्रसिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

**१५६७ वृङश् ( वृ ) संभक्तौ ।**

१ विवरि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवरिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवरि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवरि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवरिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवरिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवरिषाम्बभूव विवरिषामास (य वहि महि
७ विवरिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ विवरिषिता-'' रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवरिषि-ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवरिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम् ष्यध्वम
पक्षे विवरि-स्थाने विवरी-इति वुवूर
इति च ज्ञेयम्

इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि--सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम-तीर्थरक्षणपरायण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि-अखण्ड-
विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-
यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य
सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे
॥ क्र्यादिगणः संपूर्णः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १५६८ चुरण् ( चुर् ) स्तेये ।

१ चुचोरयिषति तः न्ति सि थः थ चुचोरयिषामि वः मः
२ चुचोरयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म
३ चुचोरयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचोरयिषा–णि व म व म
४ अचुचोरयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुचोरयिषा–
५ अचुचोरयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचोरयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुचोरयिषाञ्चकार चुचोरयिषामास
७ चुचोरयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचोरयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचोरयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चुचोरयिषिष्या
-मि वः मः (अचुचोरयिषिष्या -व म
१० अचुचोरयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १५७० घृण् ( घृ ) स्रवणे

१ जिघारयिषति तः न्ति सि थः थ जिघारयिषामि वः मः
२ जिघारयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिघारयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघारयिषा–णि व म
४ अजिघारयिषत् ताम् न् : तम् त म् जिघारयिषा व म
५ अजिघारयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिघारयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिघारयिषाञ्चकार जिघारयिषामास
७ जिघारयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघारयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघारयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिघारयिषि
ष्या–मि वः मः ( अजिघारयिषिष्या–व म
१० अजिघारयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १५६९ पृण् ( पृ ) पूरणे ।

१ पिपारयिषति तः न्ति सि थः थ पिपारयिषामि वः मः
२ पिपारयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपारयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपारयिषा–णि व म –व म
४ अपिपारयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपिपारयिषा
५ अपिपारयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपारयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपारयिषाञ्चकार पिपारयिषामास
७ पिपारयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपारयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपारयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिपारयिषि
ष्या–मि व मः (अपिपारयिषिष्या–व म
१० अपिपारयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १५७१ श्वल्क ( श्वल्क् ) भाषणे ।

१ शिश्वल्कयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्वल्कयिषामि
२ शिश्वल्कयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वःम
३ शिश्वल्कयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्वल्कयिषा–णि व म षा–व म
४ अशिश्वल्कयिषत् ताम् न् : तम् त म् अशिश्वल्कयि
५ अशिश्वल्कयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ शिश्वल्कयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
शिश्वल्कयिषाम्बभूव शिश्वल्कयिषामास
७ शिश्वल्कयिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्वल्कयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्वल्कयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ शिश्वल्कयि
षिष्या–मि वः मः ( अशिश्वल्कयिषिष्या–व म
१० अशिश्वल्कयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५७२ वलकण् ( वलक् ) भाषणे ।

१ विवलकयिषति तः न्ति सि थः थ विवलकयिषामि वः
२ विवलकयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ विवलकयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवलकयिषा–णि व म व म
४ अविवलकयिषत् ताम् न् : तम् त म् अविवलकयिषा
५ अविवलकयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षष्म
६ विवलकयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवलकयिषाञ्चकार विवलकयिषाम्बभूव
७ विवलकयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवलकयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवलकयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवलकयिषिष्या–मि वः मः (अविवलकयिषिष्या–व म
१० अविवलकयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१५७४ धक्क ( धक्क् ) नाशने ।

१ दिधक्कयिष–ति तः न्ति सि थः थ दिधक्कयिषामि वः मः
२ दिधक्कयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ दिधक्कयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
दिधक्कयिषा–णि व म व म
४ अदिधक्कयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अदिधक्कयिषा–
५ अदिधक्कयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म –कर कृम कृव
६ दिधक्कयिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
दिधक्कयिषाम्बभूव दिधक्कयिषामास
७ दिधक्कयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधक्कयिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधक्कयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ दिधक्कयिषिष्या–मि व मः ( अदिधक्कयिषिष्या–व म
१० अदिधक्कयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१५७३ नक्क ( नक्क् ) नाशने ।

१ निनक्कयिषति तः न्ति सि थः थ निनक्कयिषामि वः मः
२ निनक्कयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ निनक्कयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनक्कयिषा–णि व म
४ अनिनक्कयिषत् ताम् न् : तम् त म् अनिनक्कयिषा व म
५ अनिनक्कयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ निनक्कयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनक्कयिषाञ्चकार निनक्कयिषाम्बभूव
७ निनक्कयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनक्कयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनक्कयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ निनक्कयिषिष्या–मि वः मः ( अनिनक्कयिषिष्या–व म
१० अनिनक्कयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१५७५ चक्कण् ( चक्क् ) व्यथने

१ चिचक्कयिषति तः न्ति सि थः थ चिचक्कयिषामि वः मः
२ चिचक्कयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिचक्कयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचक्कयिषा–णि व म –व म
४ अचिचक्कयिष–त ताम् न् : तम् त म् अचिचक्कयिषा
५ अचिचक्कयि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृम
६ चिचक्कयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिचक्कयिषाम्बभूव चिचक्कयिषामास
७ चिचक्कयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचक्कयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचक्कयिषिष्य–ति त न्ति सि थः थ चिचक्कयिषिष्या–मिः वः मः (अचिचक्कयिषिष्या–व म
१० अचिचक्कयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १५७६ चुक्क (चुक्क) व्यथने

१ चुचुक्कयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुक्कयिषामि वः मः
२ चुचुक्कयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचुक्कयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचुक्कयिषा-णि व म -व म
४ अचुचुक्कयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुचुक्कयिषा
५ अचुचुक्कयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (ष्म
६ चुचुक्कयिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
चुचुक्कयिषाम्बभूव चुचुक्कयिषामास
७ चुचुक्कयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुक्कयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुक्कयिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ चुचुक्कयिषिष्या-मि वः मः (अचुचुक्कयिषिष्या-व म
१० अचुचुक्कयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

## १५७८ अर्कण् (अर्क्) स्तवने।

१ अर्चिकयिष ति तः न्ति सि थः थ अर्चिकयिषामि वः मः
२ अर्चिकयिषे- ताम् यु : तम् त यम् व म
३ अर्चिकयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्चिकयिषा-णि व म
४ आर्चिकयिषत् ताम् न् : तम् त म् आर्चिकयिषाव म
५ आर्चिकयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्चिकयिषामा स सतु सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अर्चिकयिषाञ्चकार अर्चिकयिषाम्बभूव
७ अर्चिकयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्चिकयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्चिकयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्चिकयिषिष्या-मि वः मः (आर्चिकयिषिष्या-व म
१० आर्चिकयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १५७७ टकुण् (टङ्कु) बन्धने।

१ टिटङ्कयिष-ति तः न्ति सि थः थ टिटङ्कयिषा-मि वः मः
२ टिटङ्कयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ टिटङ्कयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
टिटङ्कयिषा-णि व म व म
४ अटिटङ्कयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अटिटङ्कयिषा-
५ अटिटङ्कयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ टिटङ्कयिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
टिटङ्कयिषाम्बभूव टिटङ्कयिषामास
७ टिटङ्कयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ टिटङ्कयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ टिटङ्कयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ टिटङ्कयिषिष्या-मि वः मः (अटिटङ्कयिषिष्या-व म
१० अटिटङ्कयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १५७९ पिच्चण् (पिच्च्) कुट्टने।

१ पिपिच्चयिषति तः न्ति सि थः थ पिपिच्चयिषामि वः मः
२ पिपिच्चयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपिच्चयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपिच्चयिषा-णि व म व म
४ अपिपिच्चयिषत् ताम् न् : तम् त म् अपिपिच्चयिषा-
५ अपिपिच्चयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपिच्चयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपिच्चयिषाञ्चकार पिपिच्चयिषाम्बभूव
७ पिपिच्चयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपिच्चयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपिच्चयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपिच्चयिषिष्या-मि वः मः (अपिपिच्चयिषिष्या-व म
१० अपिपिच्चयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५८० पचुण् ( पञ्च् ) विस्तारे ।

१ पिपञ्चयिषति तः न्ति सि थः थ पिपञ्चयिषामि वः मः
२ पिपञ्चयिषे–त ताम् युः तम् त यम् व म
३ पिपञ्चयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपञ्चयिषा–णि व म व म
४ अपिपञ्चयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपिपञ्चयिषा
५ अपिपञ्चयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६ पिपञ्चयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपञ्चयिषाञ्चकार पिपञ्चयिषाम्बभूव
७ पिपञ्चयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपञ्चयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपञ्चयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिपञ्चयिषि
ष्या मि व मः (अपिपञ्चयिषिष्या–व म
१० अपिपञ्चयिषिष्य–त ताम् न् : तम त म

१५८१ म्लेछण् ( म्लेच्छ् ) म्लेच्छने ।

१ मिम्लेच्छयिषति तः न्ति सि थः थ मिम्लेच्छयिषामि
२ मिम्लेच्छयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ मिम्लेच्छयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिम्लेच्छयिषा–णि व म यिषा–व म
४ अमिम्लेच्छयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अमिम्लेच्छ-
५ अमिम्लेच्छयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म –कर कृम कृव
६ मिम्लेच्छयिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
मिम्लेच्छयिषाम्बभूव मिम्लेच्छयिषामास
७ मिम्लेच्छयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिम्लेच्छयिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ मिम्लेच्छयिषिष्य ति तः न्ति सिथः थ मिम्लेच्छयि-
षिष्या मि वः मः ( अमिम्लेच्छयिषिष्या–व म
१० अमिम्लेच्छयिषिष्य–त् ताम न् : तम त म

१५८२ ऊर्जण् ( ऊर्ज् ) बलप्राणनयोः ।

१ ऊर्जिजयिषति तः न्ति सि थः थ ऊर्जिजयिषामि वः मः
२ ऊर्जिजयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ऊर्जिजयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ऊर्जिजयिषा–णि व म
४ और्जिजयिषत् ताम् न् : तम् त म् और्जिजयिषाव म
५ और्जिजयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ऊर्जिजयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
ऊर्जिजयिषाञ्चकार ऊर्जिजयिषाम्बभूव
७ ऊर्जिजयिष्या–त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ऊर्जिजयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ऊर्जिजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ऊर्जिजयिषि-
ष्या–मि वः मः ( और्जिजयिषिष्या व म
१० और्जिजयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१५८३ तुजु ( तुञ्ज ) हिंसाबलदान निकेतनेषु

१ तुतुञ्जयिष–ति तः न्ति सि थः थ तुतुञ्जयिषा मि वः मः
२ तुतुञ्जयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतुञ्जयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुञ्जयिषा–णि व म –व म
४ अतुतुञ्जयिष–त ताम् न् : तम् त म् अतुतुञ्जयिषा
५ अतुतुञ्जयि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृम
६ तुतुञ्जयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
तुतुञ्जयिषाम्बभूव तुतुञ्जयिषामास
७ तुतुञ्जयिष्या–त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुञ्जयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुञ्जयिषिष्य–ति त न्ति सि थः थ तुतुञ्जयिषिष्या
-मि वः मः (अतुतुञ्जयिषिष्या–व म
१० अतुतुञ्जयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १५८४ पिञ्जुण् ( पिञ्ज् ) हिंसाबलदाननिकेतनेषु

१ पिपिञ्जयिषति तः न्ति सि थः थ पिपिञ्जयिषामि वः मः
२ पिपिञ्जयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपिञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपिञ्जयिषा-णि व म -व म
४ अपिपिञ्जयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपिञ्जयिषा
५ अपिपिञ्जयि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपिञ्जयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपिञ्जयिषाञ्चकार पिपिञ्जयिषामास
७ पिपिञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपिञ्जयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपिञ्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपिञ्जयिषिष्या-मि व मः (अपिपिञ्जयिषिष्या-व म
१० अपिपिञ्जयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १५८५ क्षजुण् ( क्षज् ) कृच्छ्रजीवने

१ चिक्षञ्जयिषति तः न्ति सि थः थ चिक्षञ्जयिषामि वः
२ चिक्षञ्जयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ चिक्षञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षञ्जयिषा-णि व म व म
४ अचिक्षञ्जयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षञ्जयिषा
५ अचिक्षञ्जयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षञ्जयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षञ्जयिषाञ्चकार चिक्षञ्जयिषामास
७ चिक्षञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षञ्जयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षञ्जयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चिक्षञ्जयिषिष्या-मि वः मः (अचिक्षञ्जयिषिष्या-व म
१० अचिक्षञ्जयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १५८६ पूजण् ( पूज् ) पूजायाम्

१ पुपूजयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपूजयिषा-मि वः मः
२ पुपूजयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपूजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूजयिषा-णि व म
४ अपुपूजयिष-त् ताम् न् : तम् त म् पुपूजयिषा-व म
५ अपुपूजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपूजयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपूजयिषाञ्चकार पुपूजयिषामास
७ पुपूजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपूजयिषिष्या-
-मि वः मः ( अपुपूजयिषिष्या-व म
१० अपुपूजयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

### १५८७ गजण् ( गज् ) शब्दे ।

१ जिगाजयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगाजयिषा-मि
२ जिगाजयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ जिगाजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगाजयिषा-णि व म -व म
४ अजिगाजयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिगाजयिषा
५ अजिगाजयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ जिगाजयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
जिगाजयिषाम्बभूव जिगाजयिषामास
७ जिगाजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगाजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगाजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगाजयिषिष्या-मि वः मः ( अजिगाजयिषिष्या-व म
१० अजिगाजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १५८८ मार्जण् ( मार्ज् ) शब्दे ।

१ मिमार्जयिषति तः न्ति सि थः थ मिमार्जयिषामि वः
२ मिमार्जयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ मिमार्जयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमार्जयिषा–णि व म व म
४ अमिमार्जयिषत् ताम् न् : तम् त म् अमिमार्जयिषा
५ अमिमार्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ मिमार्जयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमार्जयिषाञ्चकार मिमार्जयिषामास
७ मिमार्जयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमार्जयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमार्जयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ मिमार्जयिषिष्या-मि वः मः (अमिमार्जयिषिष्या-व म
१० अमिमार्जयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १५८९ तिजण् ( तिज् ) निशाने

१ तितेजयिषति तः न्ति सि थः थ तितेजयिषामि वः मः
२ तितेजयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तितेजयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितेजयिषा–णि व म (व म
४ अतितेजयिष–त् ताम् न् : तम् त म् तितेजयिषा
५ अतितेजयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितेजयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितेजयिषाञ्चकार तितेजयिषामास
७ तितेजयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितेजयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितेजयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तितेजयिषिष्या––मि वः मः ( अतितेजयिषिष्या–व म
१० अतितेजयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

### १५९० वजण् (वज् ) मार्गणसंस्कारगत्योः

१ विवाजयिष–ति त न्ति सि थः थ विवाजयिषा–मि
२ विवाजयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ विवाजयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवाजयिषा–णि व म –व म
४ अविवाजयिषत् ताम् न् : तम् त म् अविवाजयिषा
५ अविवाजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ विवाजयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
विवाजयिषाम्बभूव विवाजयिषामास
७ विवाजयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवाजयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवाजयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवाजयिषिष्या–मि वः मः ( अविवाजयिषिष्या–व म
१० अविवाजयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १५९१ व्रजण् (व्रज्) मार्गण संस्कार गत्योः

१ विव्राजयिषति तः न्ति सि थः थ विव्राजयिषामि व मः
२ विव्राजयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विव्राजयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विव्राजयिषा–णि व म षा–व म
४ अविव्राजयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविव्राजयि
५ अविव्राजयि–षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विव्राजयिषाम्बभू–व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम
विव्राजयिषाञ्चकार विव्राजयिषामास
७ विव्राजयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्राजयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्राजयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विव्राजयिषिष्या–मि व मः (अविव्राजयिषिष्या-व मं
१० अविव्राजयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१५९२ रुजण् ( रुज् ) हिंसायाम् ।

१रुरोजयिष-ति तः न्ति सि थः थ रुरोजयिषा-मि वः मः
२ रुरोजयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ रुरोजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरोजयिषा-णि व म
४ अरुरोजयिषत् ताम् न् : तम् त म् अरुरोजयिषाव म
५ अरुरोजयि-षीत् षिष्टाम् षि[illegible]: षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरोजयिषामा स सतु सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रुरोजयिषाञ्चकार रुरोजयिषाम्बभूव
७ रुरोजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरोजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरोजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रुरोजयषिष्या-मि वः मः ( अरुरोजयिषिष्या-व म
१०अरुरोजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५९३ नटण् ( नट् ) अवस्पन्दने ।

१निनाटयिषति तः न्ति सि थः थ निनाटयिषामि वः मः
२ निनाटयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ निनाटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनाटयिषा-णि व म व म
४अनिनाटयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अनिनाटयिषा
५ अनिनाटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६निनाटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
निनाटयिषाञ्चकार निनाटयिषाम्बभूव
७ निनाटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनाटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९निनाटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनाटयिषिष्या-मि वः मः (अनिनाटयिषिष्या-व म
१० अनिनाटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१५९४ तुटण् ( तुट् ) छेदने ।

१तुतोटयिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतोटयिषामि वः मः
२ तुतोटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतोटयिषा-णि व म -व म
४अतुतोटयिष-त ताम् न् : तम् त म् अतुतोटयिषा
५ अतुतोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृम
६तुतोटयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
तुतोटयिषाम्बभूव तुतोटयिषामास
७ तुतोटयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतोटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९तुतोटयिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ तुतोटयिषिष्या-मि वः मः अतुतोटयिषिष्या व म
१० अतुतोटयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

१५९५ चुटण् ( चुट् ) छेदने ।

१ चुचोटयिषति तः न्ति सि थः थ चुचोटयिषा-मिव (मः
२ चुचोटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चुचोटयिषा-णि व म व म
४अचुचोटयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुचोटयिषा-
५ अचुचोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ चुचोटयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
चुचोटयिषाम्बभूव चुचोटयिषामास
७ चुचोटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचोटयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९चुचोटयिषिष्यति तः न्ति सिथः थ चुचोटयिषिष्या-मि वः मः ( अचुचोटयिषिष्या-व म
१० अचुचोटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १५९६ चुटुण् ( चुण्ट् ) छेदने

१ चुचुण्टयिषति तः न्ति सि थः थ चुचुण्टयिषामि वः मः
२ चुचुण्टयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचुण्टयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचुण्टयिषा–णि व म (व म
४ अचुचुण्टयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुचुण्टयिषा
५ अचुचुण्टयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चुचुण्टयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
चुचुण्टयिषाम्बभूव चुचुण्टयिषामास
७ चुचुण्टयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुण्टयिषिता "रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुण्टयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुचुण्टयिषिष्या–मि वः मः (अचुचुण्टयिषिष्या–व म
१० अचुचुण्टयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

### १५९८ कुट्टण् ( कुट्ट ) कुत्सने च ।

१ चुकुट्टयिष–ति तः न्ति सि थः थ चुकुट्टयिषामि वः मः
२ चुकुट्टयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुट्टयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुट्टयिषा–णि व म (व म
४ अचुकुट्टयिष त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुट्टयिषा–
५ अचुकुट्टयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चुकुट्टयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकुट्टयिषाञ्चकार चुकुट्टयिषामास
७ चुकुट्टयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुट्टयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुट्टयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुकुट्टयिषिष्या–मि वः मः (अचुकुट्टयिषिष्या–व म
१० अचुकुट्टयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १५९७ छुट्टण् ( छुट् ) छेदने ।

१ चुच्छोटयिषति तः न्ति सि थ थ चुच्छोटयिषामि वः
२ चुच्छोटयिषे–त ताम यु : तम् त यम व म (मः
३ चुच्छोटयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुच्छोटयिषा–णि व म (षा–व म
४ अचुच्छोटयिष–त् ताम् न् : तम् त म अचुच्छोटयि
५ अचुच्छोटयि–षीत् षिष्टाम षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चुच्छोटयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुच्छोटयिषाञ्चकार चुच्छोटयिषामास
७ चुच्छोटयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुच्छोटयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुच्छोटयिषिष्य–ति तः न्ति सि थ. थ चुच्छोटयिषिष्या–मि व. मः (अचुच्छोटयिषिष्या–व म
१० अचुच्छोटयिषिष्य–त् ताम् न : तम् त म्

### १५९९ पुट्टण् ( पुट्ट ) अल्पीभावे ।

१ पुपुट्टयिष–ति तः न्ति सि थः थ पुपुट्टयिषा–मि वः मः
२ पुपुट्टयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपुट्टयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपुट्टयिषा–णि व म (व म
४ अपुपुट्टयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुट्टयिषा–
५ अपुपुट्टयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ पुपुट्टयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पुपुट्टयिषाम्बभूव पुपुट्टयिषामास
७ पुपुट्टयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुट्टयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुट्टयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुपुट्टयिषिष्य–मि वः मः (अपुपुट्टयिषिष्या–व म
१० अपुपुट्टयिषिष्य–त् ताम न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६०० चुट्टण् ( चुट्ट ) अल्पीभावे ।

१ चुचुट्टयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुट्टयिषामि वः मः
२ चुचुट्टयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुचुट्टयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचुट्टयिषा-णि व म
४ अचुचुट्टयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचुचुट्टयिषाव म
५ अचुचुट्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचुट्टयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चुचुट्टयिषाञ्चकार चुचुट्टयिषाम्बभूव
७ चुचुट्टयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुट्टयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुट्टयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचुट्टयिषिष्या
मि वः मः (अचुचुट्टयिषिष्या-व म
१० अचुचुट्टयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

### १६०१ षुट्टण् ( सुट्ट ) अल्पीभावे

१ सुषुट्टयिष-ति तः न्ति सि थः थ सुषुट्टयिषा-मि व मः
२ सुषुट्टयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ सुषुट्टयिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुषुट्टयिषा-णि व म [व म
४ असुषुट्टयिष-त् ताम् न् : तम् त म् असुषुट्टयिषा-
५ असुषुट्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सुषुट्टयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सुषुट्टयिषाञ्चकार सुषुट्टयिषामास
७ सुषुट्टयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ सुषुट्टयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुषुट्टयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुषुट्टयिषि
ष्या-मि वः मः (असुषुट्टयिषिष्या-व म
१० असुषुट्टयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६०२ पुटण् ( पुट् ) संचूर्णने ।

१ पुपोटयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपोटयिषामि वः मः
२ पुपोटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुपोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपोटयिषा--णि व म
४ अपुपोटयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपोटयिषा-
व म ( षिष्व षिष्म
५ अपुपोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
पुपोटयिषाञ्चकार पुपोटयिषाम्बभूव
६ पुपोटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ पुपोटयिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपोटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपोटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपोटयिषि
ष्या-मि वः मः ( अपुपोटयिषिष्या-व म
१० अपुपोटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६०३ मुटण् ( मुट् ) संचूर्णने ।

१ मुमोटयिषति त न्ति सि थः थ मुमोटयिषा-मिवः मः
२ मुमोटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोटयिषा-णि व म ( -व म
४ अमुमोटयिष त् ताम् न् : तम् त म् अमुमोटयिषा-
५ अमुमोटयि षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ मुमोटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुमोटयिषाञ्चकार मुमोटयिषामास
७ मुमोटयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमोटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमोटयिषि-
ष्या-मि वः मः ( अमुमोटयिषिष्या व म
१० अमुमोटयिषिष्य त ताम् न् : तम्-त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६०४ अट्टण् ( अट्ट ) अनादरे ।

१ अटिट्टयिष-ति तः न्ति सि थः थ अटिट्टयिषामि वः मः
२ अटिट्टयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ अटिट्टयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अटिट्टयिषा-णि व म
४ आटिट्टयिषत् ताम् तुः तम् त म् आटिट्टयिषाव म
५ आटिट्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अटिट्टयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अटिट्टयिषाञ्चकार अटिट्टयिषाम्बभूव
७ अटिट्टयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अटिट्टयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अटिट्टयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ अटिट्टयिषिष्या
मि वः मः (आटिट्टयिषिष्या-व म
१० आटिट्टयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

१६०६ लुण्टणू ( लुण्ट् ) स्तेये च ।

१ लुलुण्टयिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुण्टयिषामि वः मः
२ लुलुण्टयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ लुलुण्टयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलुण्टयिषा--णि व म
४ अलुलुण्टयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुण्टयिषा
व म (षिष्व षिष्म
५ अलुलुण्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
लुलुण्टयिषाञ्चकार लुलुण्टयिषाम्बभूव
६ लुलुण्टयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ लुलुण्टयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुण्टयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुण्टयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलुण्टयिषि
ष्या-मि वः मः (अलुलुण्टयिषिष्या-व म
१० अलुलुण्टयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६०५ स्मिटण् ( स्मिट् ) अनादरे

१ सिस्मेटयिषति तः न्ति सि थः थ सिस्मेटयिषामि वः
२ सिस्मेटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ सिस्मेटयिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्मेटयिषा-णि व म [व म
४ असिस्मेटयिषत् ताम् न् : तम् त म् असिस्मेटयिषा
५ असिस्मेटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिस्मेटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्मेटयिषाञ्चकार सिस्मेटयिषामास
७ सिस्मेटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ सिस्मेटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्मेटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्मेटयिषि
ष्या-मि वः मः (असिस्मेटयिषिष्या-व म
१० असिस्मेटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६०७ स्निटण् ( स्निट् ) स्नेहने ।

१ सिस्नेटयिषति त न्ति सि थः थ सिस्नेटयिषा-मि
२ सिस्नेटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ सिस्नेटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्नेटयिषा-णि व म (षा-व म
४ असिस्नेटयिष त् ताम् न् : तम् त म् असिस्नेटयि-
५ असिस्नेटयि षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ सिस्नेटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्नेटयिषाञ्चकार सिस्नेटयिषामास
७ सिस्नेटयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्नेटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्नेटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्नेटयि-
षिष्या-मि वः मः (असिस्नेटयिषिष्या-व म
१० असिस्नेटयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६०८ घट्टण् ( घट्ट ) चलने

१ जिघट्टयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिघट्टयिषामि वः मः
२ जिघट्टयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जिघट्टयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघट्टयिषा-णि व म (व म
४अजिघट्टयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिघट्टयिषा-
५ अजिघट्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिघट्टयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
जिघट्टयिषाम्बभूव जिघट्टयिषामास
७ जिघट्टयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघट्टयिषिता " रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ जिघट्टयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघट्टयिषि
ष्या-मि वः मः ( अजिघट्टयिषिष्या-व म
१० अजिघट्टयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

१६१० षट्टण् ( सट्ट ) हिंसायाम् ।

१ सिषट्टयिष-ति तः न्ति सि थः थ सिषट्टयिषामि वः म
२ सिषट्टयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ सिषट्टयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिषट्टयिषा-णि व म (व म
४असिषट्टयिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिषट्टयिषा
५ असिषट्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिषट्टयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिषट्टयिषाञ्चकार सिषट्टयिषामास
७ सिषट्टयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिषट्टयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिषट्टयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिषट्टयिषि
ष्या-मि वः मः ( असिषट्टयिषिष्या-व म
१० असिषट्टयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६०९ खट्टण् ( खट्ट ) संवरणे ।

१ चिखट्टयिषति तः न्ति सि थः थ चिखट्टयिषामि वः मः
२ चिखट्टयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखट्टयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखट्टयिषा-णि व म
४अचिखट्टयिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिखट्टयिषा
५ अचिखट्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृम
६ चिखट्टयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिखट्टयिषाम्बभूव चिखट्टयिषामास
७ चिखट्टयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखट्टयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखट्टयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखट्टयिषि
ष्यमि वः मः ( अचिखट्टयिषिष्या-व म
१० अचिखट्टयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

१६११ स्फिटण् ( स्फिट् ) हिंसायाम् ।

१ पिस्फेटयिषति तः न्ति सि थ थ पिस्फेटयिषामि वः
२ पिस्फेटयिषे-त् ताम यु : तम् त यम व म (मः
३ पिस्फेटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिस्फेटयिषा-णि व म ( षा-व म
४अपिस्फेटयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिस्फेटयि
५ अपिस्फेटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिस्फेटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिस्फेटयिषाञ्चकार पिस्फेटयिषामास
७ पिस्फेटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिस्फेटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिस्फेटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिस्फेटयिषि
ष्या-मि वः मः ( अपिस्फेटयिषिष्या-व म
१० अपिस्फेटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १६१२ स्फुटण् ( स्फुण्ट् ) परिहासे ।

१पुस्फुण्टयिषति तः न्ति सि थः थ पुस्फुण्टयिषामि वः (मः
२ पुस्फुण्टयिषे–त ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ पुस्फुण्टयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुस्फुण्टयिषा–णि व म व म
४अपुस्फुण्टयिषत् ताम् न् ः तम् त म् अपुस्फुण्टयिषा
५अपुस्फुण्टयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ पुस्फुण्टयिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
पुस्फुण्टयिषाम्बभूव पुस्फुण्टयिषामास
७ पुस्फुण्टयिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुस्फुण्टयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९पुस्फुण्टयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ पुस्फुण्टयिषिष्या मि वः मः ( अपुस्फुण्टयिषिष्या–व म
१० अपुस्फुण्टयिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म

## १६१३ कीटण् ( कीट् ) वर्णने ।

१चिकीटयिषति तः न्ति सि थः थ चिकीटयिषामि वः (मः
२ चिकीटयिषे–त ताम् यु ः तम् त यम् व म
३ चिकीटयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकीटयिषा–णि व म षा–व म
४अचिकीटयिष–त् ताम् न् ः तम् त म् अचिकीटयि
५ अचिकीटयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६चिकीटयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकीटयिषाञ्चकार चिकीटयिषाम्बभूव
७ चिकीटयिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकीटयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९चिकीटयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिकीटयिषिष्या मि वः मः (अचिकीटयिषिष्या–व म
१० अचिकीटयिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

## १६१४ वटुण् ( वण्ट् ) विभाजने ।

१विवण्टयिषति तः न्ति सि थः थ विवण्टयिषामि वः मः
२ विवण्टयिषे–त ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ विवण्टयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवण्टयिषा–णि व म –व म
४अविवण्टयिष–त् ताम् न् ः तम् त म् अविवण्टयिषा
५ अविवण्टयि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृम
६विवण्टयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
विवण्टयिषाम्बभूव विवण्टयिषामास
७ विवण्टयिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवण्टयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवण्टयिषिष्य–ति त न्ति सि थः थ विवण्टयिषिष्या- मि वः मः (अविवण्टयिषिष्या-व म
१० अविवण्टयिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

## १६१५ रुटण् ( रुट् ) रोषे ।

१रुरोटयिष-ति तः न्ति सि थः थ रुरोटयिषा-मि वः मः
२ रुरोटयिषे–त ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ रुरोटयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरोटयिषा–णि व म
४ अरुरोटयिषत् ताम् न् ः तम् त म् अरुरोटयिषाव म
५ अरुरोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरोटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रुरोटयिषाञ्चकार रुरोटयिषाम्बभूव
७ रुरोटयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरोटयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरोटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रुरोटयिषिष्या–मि वः मः ( अरुरोटयिषिष्या-व म
१०अरुरोटयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६१६ शठण् ( शठ् ) संस्कारगत्योः ।

१ शिशठयिषति तः न्ति सि थः थ शिशठयिषामि वः
२ शिशठयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ शिशठयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशठयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अशिशठयिष त् ताम् न् : तम् त म् अशिशठयि
५ अशिशठयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम
६ शिशठयिषाञ्चकार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
शिशठयिषाम्बभूव शिशठयिषामास
७ शिशठयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशठयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशठयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशठयिषि
ष्य-मि वः मः ( अशिशठयिषिष्या-व म
१० अशिशठयिषिष्य-त ताम न् : तम त म

१६१७ श्वठण् ( श्वठ् ) संस्कारगत्योः ।

१ शिश्वठयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्वठयिषामि वः
२ शिश्वठयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ शिश्वठयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्वठयिषा-णि व म षा-व म
४ अशिश्वठयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्वठयि
५ अशिश्वठयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६ शिश्वठयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शिश्वठयिषाञ्चकार शिश्वठयिषाम्बभूव
७ शिश्वठयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्वठयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्वठयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्वठयिषि
ष्या-मि वः मः (अशिश्वठयिषिष्या-व म
१० अशिश्वठयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

१६१८ श्वठण् ( श्वण्ठ् ) संस्कारगत्योः ।

१ शिश्वण्ठयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्वण्ठयिषामि
२ शिश्वण्ठयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ शिश्वण्ठयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्वण्ठयिषा-णि व म यिषा-व म
४ अशिश्वण्ठयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्वण्ठ
५ अशिश्वण्ठयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ शिश्वण्ठयिषाञ्चकार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर
शिश्वण्ठयिषाम्बभूव शिश्वण्ठयिषामास
७ शिश्वण्ठयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्वण्ठयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्वण्ठयिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ शिश्वण्ठयि
षिष्या मि वः मः अशिश्वण्ठयिषिष्या-व म
१० अशिश्वण्ठयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६१९ शुठण् ( शुठ् ) आलस्ये ।

१ शुशोठयिष-ति तः न्ति सि थः थ शुशोठयिषा-मि वः
२ शुशोठयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ शुशोठयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
शुशोठयिषा-णि व म- व म
४ अशुशोठयिषत् ताम् न् : तम् त म् अशुशोठयिषा
५ अशुशोठयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ शुशोठयिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
शुशोठयिषाम्बभूव शुशोठयिषामास
७ शुशोठयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशोठयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ शुशोठयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ शुशोठयिषि
ष्या मि वः मः ( अशुशोठयिषिष्या-व म
१० अशुशोठयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६२० शुठुण् ( शुठ् ) शोषणे ।

१ शुशुण्ठयिषति तः न्ति सि थः थ शुशुण्ठयिषामि वः [मः
२ शुशुण्ठयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ शुशुण्ठयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुण्ठयिषा--णि व म
४ अशुशुण्ठयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशुण्ठयिषा
व म ( षिष्व षिष्म
५ अशुशुण्ठयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
शुशुण्ठयिषाञ्चकार शुशुण्ठयिषाम्बभूव
६ शुशुण्ठयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ शुशुण्ठयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुण्ठयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशुण्ठयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशुण्ठयिषि
ष्या-मि वः मः ( अशुशुण्ठयिषिष्या-व म
१० अशुशुण्ठयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६२२ लडण् ( लड् ) उपसेवायाम् ।

१ लिलाडयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलाडयिषामि व
२ ललाडयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ लिलाडयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलाडयिषा-णि व म व म
४ अलिलाडयिषत् ताम् न् : तम् त म् अलिलाडयिष
५ अलिलाडयि-षीत् षिष्टाम् षिषु: षीः षिष्टम् षिष्ट षिष
षिष्व षिष्म
६ लिलाडयिषामा-स सतु: सुः सिथ सथु: स स सिव सि
लिलाडयिषाञ्चकार लिलाडयिषाम्बभूव
७ लिलाडयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलाडयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलाडयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ लिलाडयिषि
ष्या-मि वः मः (अलिलाडयिषिष्या-व म
१० अलिलाडयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
ऽस्य लत्वे लिलालयिषति-इत्यादि

### १६२१ गुठुण् ( गुण्ठ् ) वेष्टने ।

१ जुगुण्ठयिषति तः न्ति सि थः थ जुगुण्ठयिषामि वः मः
२ जुगुण्ठयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगुण्ठयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगुण्ठयिषा-णि व म [ म
४ अजुगुण्ठयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजुगुण्ठयिषा व
५ अजुगुण्ठयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगुण्ठयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुगुण्ठयिषाञ्चकार जुगुण्ठयिषाम्बभूव
७ जुगुण्ठयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगुण्ठयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगुण्ठयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगुण्ठयिषि
ष्या-मि वः मः ( अजुगुण्ठयिषिष्या-व म
१० अजुगुण्ठयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६२३ स्फुडुण ( स्फुड् ) परिहासे ।

१ पुस्फुण्डयिषति तः न्ति सि थः थ पुस्फुण्डयिषामि वः म
२ पुस्फुण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पुस्फुण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुस्फुण्डयिषा-णि व म ( -व म
४ अपुस्फुण्डयिष त् ताम् न् : तम् त म् अपुस्फुण्डयिषा
५ अपुस्फुण्डयि षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिष
सिष्व सिष्म
६ पुस्फुण्डयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव वि
पुस्फुण्डयिषाञ्चकार पुस्फुण्डयिषामास
७ पुस्फुण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुस्फुण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुस्फुण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुस्फुण्डयि
ष्या-मि वः मः ( अपुस्फुण्डयिषिष्या-व म
१० अपुस्फुण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६२४ ओलडुण् ( ओलण्ड ) उत्क्षेपे ।

१ लिलण्डयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलण्डयिषामि वः
२ ललण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ लिलण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलण्डयिषा-णि व म व म
४ अलिलण्डयिषत् ताम् न् : तम् त म् अलिलण्डयिषा
५ अलिलण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलण्डयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलण्डयिषाञ्चकार लिलण्डयिषाम्बभूव
७ लिलण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलण्डयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ लिलण्डयिषि
ष्या-मि वः मः (अलिलण्डयिषिष्या-व म
१० अलिलण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६२५ पीडण् ( पीड ) गहने

१ पिपीडयिषति तः न्ति सि थः थ पिपीडयिषामि वः मः
२ पिपीडयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ पिपीडयिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपीडयिषा-णि व म [व म
४ अपिपीडयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपीडयिषा
५ अपिपीडयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपीडयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपीडयिषाञ्चकार पिपीडयिषामास
७ पिपीडयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ पिपीडयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ पिपीडयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपीडयिषि
ष्या-मि वः मः (अपिपीडयिषिष्या-व म
१० अपिपीडयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६२६ तडण् ( तड ) आघाते ।

१ तिताडयिषति तः न्ति सि थः थ तिताडयिषामि वः
२ तिताडयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ तिताडयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिताडयिषा--णि व म
४ अतिताडयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतिताडयिषा
व म ( षिष्व षिष्म
५ अतिताडयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
तिताडयिषाञ्चकार तिताडयिषाम्बभूव
६ तिताडयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ तिताडयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिताडयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिताडयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तिताडयिषि
ष्या-मि वः मः ( अतिताडयिषिष्या-व म
१० अतिताडयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६२७ खडण् ( खड ) भेदे ।

१ चिखाडयिषति तः न्ति सि थः थ चिखाडयिषामि वः मः
२ चिखाडयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चिखाडयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखाडयिषा-णि व म ( -व म
४ अचिखाडयिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिखाडयिषा
५ अचिखाडयि षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिखाडयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिखाडयिषाञ्चकार चिखाडयिषामास
७ चिखाडयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखाडयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखाडयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखाडयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचिखाडयिषिष्या-व म
१० अचिखाडयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६२८ खडुण् ( खण्ड् ) भेदे

१ चिखण्डयिषति तः न्ति सि थः थ चिखण्डयिषामि वः
२ चिखण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिखण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखण्डयिषा-णि व म वम
४ अचिखण्डयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिखण्डयिषा
५ अचिखण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ चिखण्डयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिखण्डयिषाम्बभूव चिखण्डयिषामास
७ चिखण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिखण्डयि
षिष्या-मि वः मः ( अचिखण्डयिषिष्या-व म
१० अचिखण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६३० कुडुण् ( कुण्ड् ) रक्षणे ।

१ चुकुण्डयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुण्डयिषामि वः मः
२ चुकुण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ चुकुण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुण्डयिषा-णि व म ( -व म
४ अचुकुण्डयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुण्डयिषा
५ अचुकुण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकुण्डयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकुण्डयिषाञ्चकार चुकुण्डयिषामास
७ चुकुण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुण्डयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचुकुण्डयिषिष्या-व म
१० अचुकुण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६२९ कडुण् ( कण्ड् ) खण्डने च ।

१ चिकण्डयिषति तः न्ति सि थः थ चिकण्डयिषामि वः
२ चिकण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिकण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकण्डयिषा-णि व म (व म
४ अचिकण्डयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिकण्डयिषा
५ अचिकण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकण्डयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकण्डयिषाञ्चकार चिकण्डयिषामास
७ चिकण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकण्डयि
षिष्या-मि वः मः ( अचिकण्डयिषिष्या-व म
१० अचिकण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६३१ गुडुण् ( गुण्ड् ) वेष्टने च ।

१ जुगुण्डयिषति तः न्ति सि थः थ जुगुण्डयिषामि वः मः
२ जुगुण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुगुण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगुण्डयिषा-णि व म [ म
४ अजुगुण्डयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजुगुण्डयिषाव
५ अजुगुण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगुण्डयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुगुण्डयिषाञ्चकार जुगुण्डयिषाम्बभूव
७ जुगुण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगुण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगुण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगुण्डयिषि-
ष्या-मि वः मः ( अजुगुण्डयिषिष्या-व म
१० अजुगुण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६३२ चुडुण् ( चुण्ड् ) छेदने ।

१ चुचुण्डयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचुण्डयिषामि वः मः
२ चुचुण्डयिषे-त् ताम युः : तम् त यम व म
३ चुचुण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचुण्डयिषा-णि व म (-व म
४ अचुचुण्डयिष-त् ताम् न् : तम् त म अचुचुण्डयिषा
५ अचुचुण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचुण्डयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुचुण्डयिषाञ्चकार चुचुण्डयिषामास
७ चुचुण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचुण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचुण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचुण्डयिषिष्या-मि वः मः (अचुचुण्डयिषिष्या-व म
१० अचुचुण्डयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

### १६३३ मडुण् ( मण्ड् ) भूषायाम्

१ मिमण्डयिषति तः न्ति सि थः थ मिमण्डयिषामि वः
२ मिमण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म (मः
३ मिमण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमण्डयिषा-णि व म व म
४ अमिमण्डयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमण्डयिषा
५. अमिमण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म क्रम
६ मिमण्डयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
मिमण्डयिषाम्बभूव मिमण्डयिषामास
७ मिमण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमण्डयिषिष्या-मि वः मः ( अमिमण्डयिषिष्या-व म
१० अमिमण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६३४ भडुण् ( भण्ड् ) कल्याणे ।

१ बिभण्डयिषति तः न्ति सि थः थ बिभण्डयिषामि वः
२ बिभण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ बिभण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभण्डयिषा-णि व म (व म
४ अबिभण्डयिषत् ताम् न् : तम् त म् अबिभण्डयिषा
५ अबिभण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभण्डयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभण्डयिषाञ्चकार बिभण्डयिषामास
७ बिभण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभण्डयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभण्डयिषिष्या-मि वः मः ( अबिभण्डयिषिष्या-व म
१० अबिभण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६३५ पिडुण् ( पिण्ड् ) संघाते

१ पिपिण्डयिषति तः न्ति सि थः थ पिपिण्डयिषामि वः
२ पिपिण्डयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ पिपिण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपिण्डयिषा-णि व म [ षा-व म
४ अपिपिण्डयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपिण्डयि
५ अपिपिण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपिण्डयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपिण्डयिषाञ्चकार पिपिण्डयिषामास
७ पिपिण्डयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ पिपिण्डयिषिता-' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ पिपिण्डयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपिण्डयिषिष्या-मि वः मः (अपिपिण्डयिषिष्या-व म
१० अपिपिण्डयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६३६ ईडण् ( ईड् ) स्तुतौ

१ ईडिडयिषति तः न्ति सि थः थ ईडिडयिषामि वः मः
२ ईडिडयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ईडिडयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ईडिडयिषा–णि व म
४ ऐडिडयिष–त् ताम् न् : तम् त म् ऐडिडयिषा व म
५ ऐडिडयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ईडिडयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
ईडिडयिषाम्बभूव ईडिडयिषामास
७ ईडिडयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ईडिडयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ ईडिडयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ ईडिडयिषि
ष्या–मि वः मः ( ऐडिडयिषिष्या–व म
१० ऐडिडयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १६३८ जुडण् ( जुड् ) प्रेरणे ।

जुजोडयिषति तः न्ति सि थः थ जुजोडयिषामि वः मः
२ जुजोडयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ जुजोडयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुजोडयिषा–णि व म [ म
४ अजुजोडयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजुजोडयिषाव
५ अजुजोडयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुजोडयिषामा स सतु सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जुजोडयिषाञ्चकार जुजोडयिषाम्बभूव
७ जुजोडयिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुजोडयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुजोडयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुजोडयिषि–
ष्या–मि वः मः ( अजुजोडयिषिष्या–व म
१० अजुजोडयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १६३७ चडु ( चण्ड् ) कोपे ।

१ चिचण्डयिषति तः न्ति सि थः थ चिचण्डयिषामि वः
२ चिचण्डयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (म
३ चिचण्डयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचण्डयिषा–णि व म (व म
४ अचिचण्डयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिचण्डयिषा
५ अचिचण्डयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चिचण्डयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचण्डयिषाञ्चकार चिचण्डयिषामास
७ चिचण्डयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचण्डयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचण्डयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिचण्डयि
षिष्या–मि वः मः ( अचिचण्डयिषिष्या–व म
१० अचिचण्डयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १६३९ चूर्णण् ( चूर्ण् ) प्रेरणे ।

१ चुचूर्णयिष–ति तः न्ति सि थः थ चुचूर्णयिषामि वः मः
२ चुचूर्णयिषे–त् ताम यु : तम् त यम् व म
३ चुचूर्णयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचूर्णयिषा–णि व म (–व म
४ अचुचूर्णयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुचूर्णयिषा
५ अचुचूर्णयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचूर्णयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुचूर्णयिषाञ्चकार चुचूर्णयिषामास
७ चुचूर्णयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचूर्णयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
चुचूर्णयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुचूर्णयिषि
ष्या–मि वः मः ( अचुचूर्णयिषिष्या–व म
१० अचुचूर्णयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६४० वर्ण (वर्ण्) प्रेरणे

१ विवर्णयिषति तः न्ति सि थः थ विवर्णयिषामि वः मः
२ विवर्णयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ विवर्णयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्णयिषा-णि व म (व म
४ अविवर्णयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्णयिषा
५ अविवर्णयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवर्णयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव कृम
विवर्णयिषाम्बभूव विवर्णयिषामास
७ विवर्णयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्णयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्णयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्णयिषि
ष्या-मि वः मः (अविवर्णयिषिष्या-व म
१० अविवर्णयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६४१ चूणण् (चूण्) संकोचने ।

१ चुचूणयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुचूणयिषा-मि वः मः
२ चुचूणयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ चुचूणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचूणयिषा-णि व म (-व म
४ अचुचूणयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुचूणयिषा
५ अचुचूणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुचूणयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुचूणयिषाञ्चकार चुचूणयिषामास
७ चुचूणयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुचूणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुचूणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुचूणयिषि
ष्या-मि वः मः (अचुचूणयिषिष्या-व म
१० अचुचूणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६४२ तूणण् (तूण्) संकोचने ।

१ तुतूणयिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतूणयिषामि वः मः
२ तुतूणयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ तुतूणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतूणयिषा-णि व म (व म
४ अतुतूणयिष त् ताम् न् : तम् त म् अतुतूणयिषा-
५ अतुतूणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ तुतूणयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतूणयिषाञ्चकार तुतूणयिषामास
७ तुतूणयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतूणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतूणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतूणयिषि
ष्या-मि वः मः (अतुतूणयिषिष्या-व म
१० अतुतूणयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

### १६४३ श्रणण् (श्रण्) दाने ।

१ शिश्राणयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्राणयिषामि वः
२ शिश्राणयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ शिश्राणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्राणयिषा-णि व म (षा-व म
४ अशिश्राणयिष त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्राणयि
५ अशिश्राणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ शिश्राणयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
शिश्राणयिषाम्बभूव शिश्राणयिषामास
७ शिश्राणयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्राणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्राणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्राणयि
षिष्य-मि वः मः (अशिश्राणयिषिष्या-व म
१० अशिश्राणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६४४ पूणण् (पूण्) संघाते ।

१ पुपूणयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपूणयिषा-मि [वः मः
२ पुपूणयिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म
३ पुपूणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूणयिषा-णि व म -व म
४ अपुपूणयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपूणयिषा
५ अपुपूणयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ पुपूणयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर
पुपूणयिषाम्बभूव पुपूणयिषामास
७ पुपूणयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूणयिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ पुपूणयि
षिष्या-मि वः मः ( अपुपूणयिषिष्या-व म
१० अपुपूणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६४६ पुस्तण् (पुस्त्) आदरानादरयोः

१ पुपुस्तयिषति तः न्ति सि थः थ पुपुस्तयिषामि वः
२ पुपुस्तयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ पुपुस्तयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपुस्तयिषा-णि व म (षा-व म
४ अपुपुस्तयिषत् ताम न् : तम् त म् अपुपुस्तयि
५ अपुपुस्तयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ पुपुस्तयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
पुपुस्तयिषाम्बभूव पुपुस्तयिषामास
७ पुपुस्तयिष्या-त स्ताम सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुस्तयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुस्तयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ पुपुस्तयिषि
ष्य-मि वः मः ( अपुपुस्तयिषिष्या-व म
१० अपुपुस्तयिषिष्य-त ताम न् : तम् त म्

१६४५ चितुण् (चिन्त्) स्मृत्याम् ।

१ चिचिन्तयिष ति तः न्ति सि थः थ चिचिन्तयिषामि
२ चिचिन्तयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिचिन्तयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चिचिन्तयिषा-णि व म षा व म
४ अचिचिन्तयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिचिन्तयि
५ अचिचिन्तयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ चिचिन्तयिषाञ्च-कार कतु क्रुः कर्थ क्रथुः क कार
चिचिन्तयिषाम्बभूव चिचिन्तयिषामास
७ चिचिन्तयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचिन्तयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ चिचिन्तयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चिचिन्तयि
षिष्या-मि वः मः ( अचिचिन्तयिषिष्या-व म
१० अचिचिन्तयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१६४७ बुस्तण् (बुस्त्) आदरानादरयोः

१ बुबुस्तयिष-ति तः न्ति सि थः थ बुबुस्तयिषा-मि
२ बुबुस्तयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ बुबुस्तयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुबुस्तयिषा-णि व म -व म
४ अबुबुस्तयिषत् ताम् न् : तम् त म् अबुबुस्तयिषा
५ अबुबुस्तयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ बुबुस्तयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
बुबुस्तयिषाम्बभूव बुबुस्तयिषामास
७ बुबुस्तयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुबुस्तयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुबुस्तयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुबुस्तयि
षिष्या-मि वः मः ( अबुबुस्तयिषिष्या-व म
१० अबुबुस्तयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६४८ मुस्तण् ( मुस्त् ) संघाते ।

१ मुमुस्तयिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमुस्तयिषामि वः मः
२ मुमुस्तयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ मुमुस्तयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमुस्तयिषा-णि व म ( -व म
४ अमुमुस्तयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमुस्तयिषा
५ अमुमुस्तयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमुस्तयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुमुस्तयिषाञ्चकार मुमुस्तयिषामास
७ मुमुस्तयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमुस्तयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमुस्तयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमुस्तयिषिष्या-मि वः मः ( अमुमुस्तयिषिष्या-व म
१० अमुमुस्तयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

१६५० स्वर्तण् ( स्वर्त् ) गतौ ।

१ सिस्वर्तयिषति तः न्ति सि थः थ सिस्वर्तयिषामि वः
२ सिस्वर्तयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ सिस्वर्तयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्वर्तयिषा-णि व म ( व म
४ असिस्वर्तयिष त् ताम् न् तम् त म् असिस्वर्तयिषा
५ असिस्वर्तयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिस्वर्तयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्वर्तयिषाञ्चकार सिस्वर्तयिषामास
७ सिस्वर्तयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्वर्तयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्वर्तयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्वर्तयिषिष्या-मि वः मः ( असिस्वर्तयिषिष्या-व म
१० असिस्वर्तयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

१६४९ कृतण् ( कृत् ) संशब्दने

१ चिकीर्तयिषति तः न्ति सि थः थ चिकीर्तयिषामि वः
२ चिकीर्तयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म (मः
३ चिकीर्तयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकीर्तयिषा-णि व म व म
४ अचिकीर्तयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकीर्तयिषा
५ अचिकीर्तयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म कृम
६ चिकीर्तयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिकीर्तयिषाम्बभूव चिकीर्तयिषामास
७ चिकीर्तयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम स्व स्म
८ चिकीर्तयिषिता-" रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकीर्तयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकीर्तयिषिष्या-मि वः मः ( अचिकीर्तयिषिष्या-व म
१० अचिकीर्तयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

१६५१ पत्थण् ( पत्थ् ) गतौ

१ पिपत्थयिषति तः न्ति सि थ थ पिपत्थयिषामि वः
२ पिपत्थयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म [मः
३ पिपत्थयिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपत्थयिषा-णि व म [षा-व म
४ अपिपत्थयिष-त् ताम् न् तम् त म् अपिपत्थयि
५ अपिपत्थयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपत्थयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपत्थयिषाञ्चकार पिपत्थयिषामास
७ पिपत्थयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ पिपत्थयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ पिपत्थयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपत्थयिषिष्या-मि वः म (अपिपत्थयिषिष्या-व म
१० अपिपत्थयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६५२ श्रथण् ( श्रथ् ) प्रतियत्ने ।

१ शिश्राथयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्राथयिषामि वः
२ शिश्राथयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ शिश्राथयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्राथयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अशिश्राथयिषत् ताम् न् : तम् त म् अशिश्राथयि
५ अशिश्राथयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृम
६ शिश्राथयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
शिश्राथयिषाम्बभूव शिश्राथयिषामास
७ शिश्राथयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिथयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्राथयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ शिश्राथयिषि
ष्य-मि वः मः ( अशिश्राथयिषिष्या-व म
१० अशिश्राथयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१६५३ पृथण् ( पृथ् ) प्रक्षेपणे ।

१ पिपर्थयिषति तः न्ति सि थः थ पिपर्थयिषामि वः
२ पिपर्थयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ पिपर्थयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपर्थयिषा-णि व म षा-व म
४ अपिपर्थयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपर्थयि
५ अपिपर्थयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपर्थयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपर्थयिषाञ्चकार पिपर्थयिषाम्बभूव
७ पिपर्थयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपर्थयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपर्थयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्थयिषि
ष्या-मि वः मः (अपिपर्थयिषिष्या-व म
१० अपिपर्थयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

१६५४ प्रथण् ( प्रथ् ) प्रख्याने ।

१ पिप्राथयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिप्राथयिषा-मि
२ पिप्राथयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ पिप्राथयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिप्राथयिषा-णि व म -व म
४ अपिप्राथयिष-त ताम् न् : तम् त म् अपिप्राथयिषा
५ अपिप्राथयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ पिप्राथयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
पिप्राथयिषाम्बभूव पिप्राथयिषामास
७ पिप्राथयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिप्राथयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिप्राथयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिप्राथयि
षिष्या-मि वः मः (अपिप्राथयिषिष्या-व म
१० अपिप्राथयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६५५ छदण् ( छद् ) संवरणे ।

१ चिच्छादयिष ति तः न्ति सि थः थ चिच्छादयिषामि
२ चिच्छादयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिच्छादयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छादयिषा-णि व म षा-व म
४ अचिच्छादयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छादयि
५ अचिच्छादयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ चिच्छादयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
चिच्छादयिषाम्बभूव चिच्छादयिषामास
७ चिच्छादयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छादयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छादयिषिष्यति तः न्ति सिथः थ चिच्छादयि
षिष्या-मि वः मः ( अचिच्छादयिषिष्या-व म
१० अचिच्छादयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६५६ चुदण् ( चुद् ) संचोदने ।

१ चुचोदयिषति तः न्ति सि थः थ चुचोदयिषामि वः

२ चुचोदयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः

३ चुचोदयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुचोदयिषा–णि व म ( षा–व म

४ अचुचोदयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचुचोदयि

५ अचुचोदयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम

६ चुचोदयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चुचोदयिषाम्बभूव चुचोदयिषामास

७ चुचोदयिष्या–त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चुचोदयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ चुचोदयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चुचोदयिषि
ष्य–मि वः मः ( अचुचोदयिषिष्या–व म

१० अचुचोदयिषिष्य–त ताम न् : तम् त म्

१६५८ गुर्दण् ( गुर्द् ) निकेतने ।

१ जुगूर्दयिष–ति तः न्ति सि थः थ जुगूर्दयिषा–मि

२ जुगूर्दयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः

३ जुगूर्दयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगूर्दयिषा–णि व म –व म

४ अजुगूर्दयिष–त ताम् न् : तम् त म् अजुगूर्दयिषा

५ अजुगूर्दयि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम

६ जुगूर्दयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
जुगूर्दयिषाम्बभूव जुगूर्दयिषामास

७ जुगूर्दयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ जुगूर्दयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ जुगूर्दयिषिष्य–ति त न्ति सि थः थ जुगूर्दयि
षिष्या–मि वः मः ( अजुगूर्दयिषिष्या–व म

१० अजुगूर्दयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१६५७ मिदुण् ( मिन्द् ) स्नेहने ।

१ मिमिन्दयिषति तः न्ति सि थः थ मिमिन्दयिषामि वः

२ मिमिन्दयिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म (मः

३ मिमिन्दयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमिन्दयिषा–णि व म षा–व म

४ अमिमिन्दयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अमिमिन्दयि

५ अमिमिन्दयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म

६ मिमिन्दयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमिन्दयिषाञ्चकार मिमिन्दयिषाम्बभूव

७ मिमिन्दयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ मिमिन्दयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ मिमिन्दयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिमिन्दयिषि
ष्या मि वः मः (अमिमिन्दयिषिष्या–व म

१० अमिमिन्दयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१६५९ छर्दण् ( छर्द् ) वमने ।

१ चिच्छर्दयिष ति तः न्ति सि थः थ चिच्छर्दयिषामि

२ चिच्छर्दयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः

३ चिच्छर्दयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चिच्छर्दयिषा–णि व म षा–व म

४ अचिच्छर्दयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छर्दयि

५ अचिच्छर्दयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म –कर कृम कृव

६ चिच्छर्दयिषाञ्च–कार कतु कुः कर्थ कथुः क कार
चिच्छर्दयिषाम्बभूव चिच्छर्दयिषामास

७ चिच्छर्दयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चिच्छर्दयिषिता– " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः

९ चिच्छर्दयिषिष्यति तः न्ति सिथः थ चिच्छर्दयि
षिष्या–मि वः मः ( अचिच्छर्दयिषिष्या–व म

१० अचिच्छर्दयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६६० बुधुण् (बुन्ध्) हिंसायाम्

१ बुबुन्धयिष ति तः न्ति सि थः थ बुबुन्धयिषा-मि

२ बुबुन्धयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः

३ बुबुन्धयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुबुन्धयिषा-णि व म -व म

४ अबुबुन्धयिषत् ताम् न् : तम् त म् अबुबुन्धयिषा

५ अबुबुन्धयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम

६ बुबुन्धयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
बुबुन्धयिषाम्बभूव बुबुन्धयिषामास

७ बुबुन्धयिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ बुबुन्धयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ बुबुन्धयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुबुन्धयि
षष्या-मि वः मः (अबुबुन्धयिषिष्या-व म

१० अबुबुन्धयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६६१ वर्धण् (वर्ध्) छेदनपूरणयोः

१ विवर्धयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्धयिषा-मि

२ विवर्धयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः

३ विवर्धयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्धयिषा-णि व म षा-व म

४ अविवर्धयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्धयि

५ अविवर्धयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ विवर्धयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथु. व व विव विम
विवर्धयिषाञ्चकार विवर्धयिषामास

७ विवर्धयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ विवर्धयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ विवर्धयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्धयि-
षिष्या मि वः मः (अविवर्धयिषिष्या-व म

१० अविवर्धयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १६६२ गर्धण् (गर्ध्) अभिकाङ्क्षायाम्

१ जिगर्धयिष ति तः न्ति सि थः थ जिगर्धयिषा मि वः

२ जिगर्धयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः

३ जिगर्धयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगर्धयिषा-णि व म (षा व म

४ अजिगर्धयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगर्धयि

५ अजिगर्धयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ जिगर्धयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिगर्धयिषाञ्चकार जिगर्धयिषामास

७ जिगर्धयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ जिगर्धयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ जिगर्धयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगर्धयिषि
ष्या--मि वः मः (अजिगर्धयिषिष्या-व म

१० अजिगर्धयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

### १६६३ बन्धण् (बन्ध्) संयमने

१ बिबन्धयिष ति तः न्ति सि थः थ बिबन्धयिषामि व मः

२ बिबन्धयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म

३ बिबन्धयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिबन्धयिषा-णि व म षा-व म

४ अबिबन्धयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिबन्धयि

५ अबिबन्धयि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ बिबन्धयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिबन्धयिषाञ्चकार बिबन्धयिषामास

७ बिबन्धयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ बिबन्धयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ बिबन्धयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिबन्धयिषि
ष्या-मि व मः (अबिबन्धयिषिष्या-व म

१० अबिबन्धयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १६६४ बधण् (बध्) संयमने

१ बिबाधयिषति त. न्ति सि थः थ बिबाधयिषामि व मः
२ बिबाधयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व न
३ बिबाधयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिबाधयिषा-णि व म षा-व म
४ अबिबाधयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिबाधयि
५ अबिबाधयि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिबाधयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिबाधयिषाञ्चकार बिबाधयिषामास
७ बिबाधयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिबाधयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिबाधयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिबाधयिषिष्या-मि व मः (अबिबाधयिषिष्या-व म
१० अबिबाधयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६६५ छपुण् ( छम्प् ) गतौ ।

१ चिच्छम्पयिषति तः न्ति सि थः थ चिच्छम्पयिषामि
२ चिच्छम्पयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ चिच्छम्पयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छम्पयिषा-णि व म षा-व म
४ अचिच्छम्पयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छम्पयि
५ अचिच्छम्पयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिच्छम्पयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिच्छम्पयिषाञ्चकार चिच्छम्पयिषामास
७ चिच्छम्पयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छम्पयिषिता "रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छम्पयिषिष्यति तः न्ति सि थ. थ चिच्छम्पयिषिष्या मि वः मः (अचिच्छम्पयिषिष्या-व म
१० अचिच्छम्पयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १६६६ क्षपुण् ( क्षम्प् ) क्षान्तौ

१ चिक्षम्पयिषति तः न्ति सि थः थ चिक्षम्पयिषामि वः
२ चिक्षम्पयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ चिक्षम्पयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षम्पयिषा-णि व म (षा व म
४ अचिक्षम्पयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षम्पयि
५ अचिक्षम्पयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षम्पयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षम्पयिषाञ्चकार चिक्षम्पयिषामास
७ चिक्षम्पयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षम्पयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षम्पयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षम्पयिषिष्या--मि वः मः (अचिक्षम्पयिषिष्या-व म
१० अचिक्षम्पयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

## १६६७ ष्टूपण् (स्तूप्) समुच्छ्राये

१ तुष्टूपयिष-ति तः न्ति सि थः थ तुष्टूपयिषा-मि
२ तुष्टूपयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ तुष्टूपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुष्टूपयिषा-णि व म -व म
४ अतुष्टूपयिषत् ताम् न् : तम् त म् अतुष्टूपयिषा
५ अतुष्टूपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ तुष्टूपयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
तुष्टूपयिषाम्बभूव तुष्टूपयिषामास
७ तुष्टूपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुष्टूपयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुष्टूपयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुष्टूपयिषिष्या-मि वः मः (अतुष्टूपयिषिष्या-व म
१० अतुष्टूपयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६६८ डिपण् ( डिप् ) क्षेपे ।

१ डिडेपयिष-ति तः न्ति सि थः थ डिडेपयिषामि वः मः
२ डडेपयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म
३ डिडेपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
डिडेपयिषा-णि व म व म
४ अडिडेपयिषत् ताम् न् : तम् त म् अडिडेपयिषा
५ अडिडेपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ डिडेपयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
डिडेपयिषाञ्चकार डिडेपयिषाम्बभूव
७ डिडेपयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ डिडेपयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ डिडेपयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ डिडेपयिषि
ष्या-मि वः मः (अडिडेपयिषिष्या-व म
१० अडिडेपयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म्

१६६९ ह्लपण ( ह्लप् ) व्यक्तायां वाचि

१ जिह्लापयिषति तः न्ति सि थः थ जिह्लापयिषामि व मः
२ जिह्लापयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म
३ जिह्लापयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिह्लापयिषा-णि व म [ ग
४ अजिह्लापयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिह्लापयिषाव
५ अजिह्लापयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिह्लापयिषामा स सतु सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिह्लापयिषाञ्चकार जिह्लापयिषाम्बभूव
७ जिह्लापयिष्या त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिह्लापयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिह्लापयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिह्लापयषि
ष्या-मि वः मः ( अजिह्लापयिषिष्या व म
१० अजिह्लापयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६७० डपुण ( डम्प् ) संघाते ।
१६७१ डिपुण ( डिम्प् ) संघाते ।

१ डिडम्पयिषति तः न्ति सि थः थ डिडम्पयिषामि वः मः
२ डिडम्पयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ डिडम्पयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
डिडम्पयिषा-णि व म ( -व म
४ अडिडम्पयिष त् ताम् न् : तम् त म् अडिडम्पयिषा
५ अडिडम्पयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ डिडम्पयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
डिडम्पयिषाञ्चकार डिडम्पयिषामास
७ डिडम्पयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ डिडम्पयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ डिडम्पयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ डिडम्पयिषि
ष्या-मि व मः ( अडिडम्पयिषिष्या व म
१० अडिडम्पयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म

१६७२ शुर्पण् ( शुर्प् ) माने ।

१ शुशूर्पयिषति तः न्ति सि थः थ शुशूर्पयिषामि वः
२ शुशूर्पयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ शुशूर्पयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशूर्पयिषा--णि व म
४ अशुशूर्पयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशुशूर्पयिषा
( षिष्व षिष्म
व ग
५ अशुशूर्पयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
शुशूर्पयिषाञ्चकार शुशूर्पयिषाम्बभूव
६ शुशूर्पयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ शुशूर्पयिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशूर्पयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशूर्पयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शुशूर्पयिषि
ष्या-मि वः मः ( अशुशूर्पयिषिष्या-व म
१० अशुशूर्पयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६९३ शुल्बण् ( शुल्ब् ) सर्जने च ।

१ शुशुल्बयिषति तः न्ति सि थः थ शुशुल्बयिषामि वः
२ शुशुल्बयिषे—त ताम् यु : तम् त यम् व म (मः
३ शुशुल्बयिष—तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुल्बयिषा—णि व म षा—व म
४ अशुशुल्बयिष—त् ताम् न् : तम् त म् अशुशुल्बयि
५ अशुशुल्बयि—षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ शुशुल्बयिषामा—स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुशुल्बयिषाञ्चकार शुशुल्बयिषाम्बभूव
७ शुशुल्बयिष्या—त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शुशुल्बयिषिता—" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शुशुल्बयिषिष्य—ति तः न्ति सि थः थ शुशुल्बयिषिष्या मि व मः (अशुशुल्बयिषिष्या—व म
१० अशुशुल्बयिषिष्य—त ताम् न् : तम् त म

१६९५ डिबुण् ( डिम्ब् ) डिबुण् क्षेपे

१ डिडिम्बयिषति तः न्ति सि थः थ डिडिम्बयिषामि वः
२ डिडिम्बयिषे—त ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ डिडिम्बयिष—तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
डिडिम्बयिषा—णि व म षा व म
४ अडिडिम्बयिष—त् ताम् न् : तम् त म् अडिडिम्बयि
५ अडिडिम्बयि—षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ डिडिम्बयिषाम्बभू—व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
डिडिम्बयिषाञ्चकार डिडिम्बयिषामास
७ डिडिम्बयिष्या—त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ डिडिम्बयिषिता—" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ डिडिम्बयिषिष्य—ति तः न्ति सि थः थ डिडिम्बयिषिष्या—मि वः मः (अडिडिम्बयिषिष्या—व म
१० अडिडिम्बयिषिष्य—त ताम् न् : तम् त म्

१६७४ डबुण् ( डम्ब् ) क्षेपे

१ डिडम्बयिष—ति तः न्ति सि थः थ डिडम्बयिषा—मि
२ डिडम्बयिषे—त ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ डिडम्बयिष—तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
डिडम्बयिषा—णि व म षा—व म
४ अडिडम्बयिष—त् ताम् न् : तम् त म् अडिडम्बयि
५ अडिडम्बयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ डिडम्बयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथु व व विव विम
डिडम्बयिषाञ्चकार डिडम्बयिषामास
७ डिडम्बयिष्या—त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ डिडम्बयिषिता—" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ डिडम्बयिषिष्य—ति तः न्ति सि थः थ डिडम्बयिषिष्या मि वः मः (अडिडम्बयिषिष्या—व म
१० अडिडम्बयिषिष्य—त् ताम् न् : तम् त म्

१६९६ सम्बण् ( सम्ब् ) सम्बन्धे

१ सिसम्बयिषति तः न्ति सि थः थ सिसम्बयिषामि वः
२ सिसम्बयिषे—त ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ सिसम्बयिष—तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसम्बयिषा—णि व म षा—व म
४ असिसम्बयिष—त् ताम् न् : तम् त म् असिसम्बयि
५ असिसम्बयि—षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसम्बयिषाम्बभू—व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसम्बयिषाञ्चकार सिसम्बयिषामास
७ सिसम्बयिष्या—त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसम्बयिषिता—" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसम्बयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ सिसम्बयिषिष्या—मि व मः (असिसम्बयिषिष्या व म
१० असिसम्बयिषिष्य—त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६७७ कुबुण् ( कुम्ब् ) आच्छादने ।

१ चुकुम्बयिषति तः न्ति सि थः थ चुकुम्बयिषामि वः

२ चुकुम्बयिषे–त ताम् यु : तम् त यम् व म (मः

३ चुकुम्बयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त

चुकुम्बयिषा–णि व म षा–व म

४ अचुकुम्बयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुम्बयि

५ अचुकुम्बयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व ष्म

६ चुकुम्बयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम

चुकुम्बयिषाञ्चकार चुकुम्बयिषाम्बभूव

७ चुकुम्बयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चुकुम्बयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ चुकुम्बयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुकुम्बयिषि

ष्या–मि वः मः (अचुकुम्बयिषिष्या–व म

१० अचुकुम्बयिषिष्य–त ताम् न् : तम त म्

### १६७८ लुलुण् ( लुम्ब् ) अर्दने

१ लुलुम्बयिष–ति तः न्ति सि थः थ लुलुम्बयिषा–मि

२ लुलुम्बयिषे–त ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः

३ लुलुम्बयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त

लुलुम्बयिषा–णि व म षा–व म

४ अलुलुम्बयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुम्बयि

५ अलुलुम्बयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व षिष्म

६ लुलुम्बयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम

लुलुम्बयिषाञ्चकार लुलुम्बयिषामास

७ लुलुम्बयिष्या–त् स्ताम् सुः . स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ लुलुम्बयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ लुलुम्बयिषिष्य–ति तः न्ति सि थ थ लुलुम्बयि–

षिष्या मि वः मः (अलुलुम्बयिषिष्या–व म

१० अलुलुम्बयिषिष्य–त ताम् न : तम् त म

### १६७९ तुबुण् ( तुम्ब् ) अर्दने

१ तुतुम्बयिषति तः न्ति सि थः थ तुतुम्बयिषामि वः

२ तुतुम्बयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म [मः

३ तुतुम्बयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त .

तुतुम्बयिषा–णि व म (षा व म

४ अतुतुम्बयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुम्बयि

५ अतुतुम्बयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व षिष्म

६ तुतुम्बयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम

तुतुम्बयिषाञ्चकार तुतुम्बयिषामास

७ तुतुम्बयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ तुतुम्बयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ तुतुम्बयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तुतुम्बयि

षिष्या––मि वः मः (अतुतुम्बयिषिष्या–व म

१० अतुतुम्बयिषिष्य त ताम् न् : : तम् त म्

### १६८० पुर्वण् ( पुर्व् ) निकेतने ।

१ पुपूर्वयिष–ति तः न्ति सि थः थ पुपूर्वयिषा–मि

२ पुपूर्वयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः

३ पुपूर्वयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त

पुपूर्वयिषा–णि व म –व म

४ अपुपूर्वयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुपूर्वयिषा

५ अपुपूर्वयि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व ष्म (कृव कृम

६ पुपूर्वयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर

पुपूर्वयिषाम्बभूव पुपूर्वयिषामास

७ पुपूर्वयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ पुपूर्वयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ पुपूर्वयिषिष्य ति त न्ति सि थः थ पुपूर्वयि

षिष्या मि वः मः । अपुपूर्वयिषिष्या व म

१० अपुपूर्वयिषिष्य–त ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६८१ यमण् ( यम् ) परिवेषणे ।

१ यियामयिष-ति तः न्ति सि थः थ यियामयिषामि वः
२ यियामयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ यियामयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
यियामयिषा णि व म व म
४ अयियामयिषत् ताम् न् : तम् त म् अयियामयिषा
५ अयियामयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ यियामयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
यियामयिषाञ्चकार यियामयिषाम्बभूव
७ यियामयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ यियामयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ यियामयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ यियामयिषि
ष्या-मि वः मः (अयियामयिषिष्या-व म
१० अयियामयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६८२ व्ययण् ( व्यय् ) क्षेपे

१ विव्याययिषति तः न्ति सि थः थ विव्याययिषामि वः
२ विव्याययिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ विव्याययिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
वव्याययिषा-णि व म [व म
४ अविव्याययिषत् ताम् न् : तम् त म् अविव्याययिषा
५ अविव्याययि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विव्याययिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विव्याययिषाञ्चकार विव्याययिषाम्बभूव
७ विव्याययिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्याययिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्याययिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विव्याययिषि
ष्या-मि वः मः ( अविव्याययिषिष्या-व म
१० अविव्याययिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६८३ यन्त्रण् ( यन्त्र् ) संकोचने ।

१ यियन्त्रयिषति तः न्ति सि थः थ यियन्त्रयिषामिवः मः
२ यियन्त्रयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ यियन्त्रयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
यियन्त्रयिषा-णि व म ( -व म
४ अयियन्त्रयिष त् ताम् न् : तम् त म् अयियन्त्रयिषा
५ अयियन्त्रयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ यियन्त्रयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
यियन्त्रयिषाञ्चकार यियन्त्रयिषामास
७ यियन्त्रयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ यियन्त्रयिषिता -" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ यियन्त्रयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ यियन्त्रयिषि
ष्या-मि वः मः ( अयियन्त्रयिषिष्या व म
१० अयियन्त्रयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

१६८४ कुन्द्रण् ( कुन्द्र् ) अनृतभाषणे ।

१ चुकुन्द्रयिषति तः न्ति सि थः थ चुकुन्द्रयिषामि वः
२ चुकुन्द्रयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ चुकुन्द्रयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुन्द्रयिषा--णि व म
४ अचुकुन्द्रयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुन्द्रयिष
व म ( षिष्व षिष्म
५ चुकुन्द्रयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
चुकुन्द्रयिषाञ्चकार चुकुन्द्रयिषाम्बभूव
६ चुकुन्द्रयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ चुकुन्द्रयिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुन्द्रयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुन्द्रयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुन्द्रयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचुकुन्द्रयिषिष्या-व म
१० अचुकुन्द्रयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri.Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १६८५ श्वभ्रण् ( श्वभ्र् ) गतौ ।

१ शिश्वभ्रयिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्वभ्रयिषामि
२ शिश्वभ्रयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ शिश्वभ्रयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्वभ्रयिषा-णि व म -व म
४ अशिश्वभ्रयिषत ताम् न् : तम् त म् अशिश्वभ्रयिषा
५ अशिश्वभ्रयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ शिश्वभ्रयिषाञ्चकार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर
शिश्वभ्रयिषाम्बभूव शिश्वभ्रयिषामास
७ शिश्वभ्रयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्वभ्रयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्वभ्रयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्वभ्रयि
षिष्या-मि वः मः ( अशिश्वभ्रयिषिष्या-व म
१० अशिश्वभ्रयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६८६ तिलण् ( तिल् ) स्नेहने

१ तितेलयिष-ति तः न्ति सि थः थ तितेलयिषा-मि
२ तितेलयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ तितेलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितेलयिषा-णि व म षा-व म
४ अतितेलयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितेलयि
५ अतितेलयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितेलयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथु. व व विव विम
तितेलयिषाञ्चकार तितेलयिषामास
७ तितेलयिष्या-त् स्ताम् सुः . स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितेलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितेलयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितेलयि-
षिष्या-मि वः मः (अतितेलयिषिष्या-व म
१० अतितेलयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १६८७ जलण् ( जल् ) अपवारणे ।

१ जिजालयिषति तः न्ति सि थः थ जिजालयिषामि वः
२ जिजालयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म (मः
३ जिजालयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजालयिषा-णि व म षा-व म
४ अजिजालयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजालयि
५ अजिजालयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६ जिजालयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजालयिषाञ्चकार जिजालयिषाम्बभूव
७ जिजालयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजालयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजालयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजालयि
षिष्या-मि वः मः (अजिजालयिषिष्या-व म
१० अजिजालयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १६८८ क्षलण् ( क्षल् ) शौचे

१ चिक्षालयिषति तः न्ति सि थः थ चिक्षालयिषामि वः
२ चिक्षालयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ चिक्षालयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्षालयिषा-णि व म (षा व म
४ अचिक्षालयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षालयि
५ अचिक्षालयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्षालयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्षालयिषाञ्चकार चिक्षालयिषामास
७ चिक्षालयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षालयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षालयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षालयि
षिष्या--मि वः मः ( अचिक्षालयिषिष्या-व म
१० अचिक्षालयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६८९ पुलण् ( पुल् ) समुच्छ्राये ।

१ पुपोलयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपोलयिषा-मि
२ पुपोलयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ पुपोलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपोलयिषा-णि व म -व म
४ अपुपोलयिष-त ताम् न् : तम् त म् अपुपोलयिषा
५ अपुपोलयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (क्व क्म
६ पुपोलयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
पुपोलयिषाम्बभूव पुपोलयिषामास
७ पुपोलयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपोलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपोलयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपोलयि
षिष्या-मि वः मः ( अपुपोलयिषिष्या-व म
१० अपुपोलयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६९१ तलण् ( तल् ) प्रतिष्ठायाम्

१ तितालयिष-ति तः न्ति सि थः थ तितालयिषा-मि
२ तितालयिषे-त ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ तितालयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितालयिषा-णि व म षा-व म
४ अतितालयिष-त ताम् न् : तम् त म् अतितालयि
५ अतितालयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितालयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितालयिषाञ्चकार तितालयिषामास
७ तितालयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितालयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितालयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितालयि-
षिष्या-मि वः मः (अतितालयिषिष्या-व म
१० अतितालयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१६९० बिलण् ( बिल् ) भेदे ।

१ बिबेलयिषति तः न्ति सि थः थ बिबेलयिषामि वः
२ बिबेलयिषे-त ताम् यु : तम् त यम् व म (मः
३ बिबेलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिबेलयिषा-णि व म षा-व म
४ अबिबेलयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिबेलयि
५ अबिबेलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिबेलयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिबेलयिषाञ्चकार बिबेलयिषाम्बभूव
७ बिबेलयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिबेलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिबेलयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिबेलयिषि
ष्या-मि व. मः (अबिबेलयिषिष्या-व म
१० अबिबेलयिषिष्य-त ताम् न् : तम त म

१६९२ तुलण् ( तुल् ) उन्मादे

१ तुतोलयिषति तः न्ति सि थः थ तुतोलयिषामि वः
२ तुतोलयिषे-त ताम् यु : तम् त यम् व म [मः
३ तुतोलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतोलयिषा-णि व म (षा व म
४ अतुतोलयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतोलयि
५ अतुतोलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतोलयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतोलयिषाञ्चकार तुतोलयिषामास
७ तुतोलयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतोलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतोलयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतोलयि
षिष्या--मि वः मः (अतुतोलयिषिष्या-व म
१० अतुतोलयिषिष्य त् ताम न : तम् त

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६९३ दुलण् ( दुल् ) उत्क्षेपे

१ दुदोलयिष-ति तः न्ति सि थः थ दुदोलयिषा-मि
२ दुदोलयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ दुदोलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुदोलयिषा-णि व म -व म
४ अदुदोलयिषत् ताम् न् : तम् त म् अदुदोलयिषा
५ अदुदोलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ दुदोलयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
दुदोलयिषाम्बभूव दुदोलयिषामास
७ दुदोलयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुदोलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुदोलयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुदोलयिषि
ष्या-मि वः मः ( अदुदोलयिषिष्या-व म
१० अदुदोलयिषिष्य-त ताम न : तम् त म्

### १६९५ मूलण् ( मूल् ) रोहणे

१ मुमूलयिषति तः न्ति सि थः थ मुमूलयिषामि वः
२ मुमूलयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ मुमूलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमूलयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अमुमूलयिषत् ताम् न् : तम् त म् अमुमूलयि
५ अमुमूलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम
६ मुमूलयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
मुमूलयिषाम्बभूव मुमूलयिषामास
७ मुमूलयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमूलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमूलयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ मुमूलयिषि
ष्य-मि वः मः ( अमुमूलयिषिष्या-व म
१० अमुमूलयिषिष्य-त ताम न् : तम् त म्

### १६९४ बुलण् ( बुल् ) निमज्जने

१ बुबोलयिष ति तः न्ति सि थः थ बुबोलयिषामि वः
२ बुबोलयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व न [मः
३ बुबोलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुबोलयिषा-णि व म षा-व म
४ अबुबोलयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबुबोलयि
५ अबुबोलयि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बुबोलयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बुबोलयिषाञ्चकार बुबोलयिषामास
७ बुबोलयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुबोलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुबोलयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ बुबोलयिषि
ष्या-मि व मः (अबुबोलयिषिष्या व म
१० अबुबोलयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म्

### १६९६ कलण् ( कल् ) क्षेपे ।

१ चिकालयिष ति तः न्ति सि थः थ चिकालयिषा-मि
२ चिकालयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिकालयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चिकालयिषा-णि व म षा-व म
४ अचिकालयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकालयि
५ अचिकालयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर क्रम कृव
६ चिकालयिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार
चिकालयिषाम्बभूव चिकालयिषामास
७ चिकालयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकालयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ चिकालयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चिकालयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचिकालयिषिष्या-व म
१० अचिकालयिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १६९७ किलण् ( किल् ) क्षेपे ।

१ चिकेलयिष ति तः न्ति सि थः थ चिकेलयिषा-मि
२ चिकेलयिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म (वः मः
३ चिकेलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकेलयिषा-णि व म षा-व म
४ अचिकेलयिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अचिकेलयि
५ अचिकेलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ चिकेलयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
चिकेलयिषाम्बभूव चिकेलयिषामास
७ चिकेलयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकेलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकेलयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चिकेलयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचिकेलयिषिष्या-व म
१० अचिकेलयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म

## १६९८ पिलण् ( पिल् ) क्षेपे

१ पिपेलयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपेलयिषामि वः
२ पिपेलयिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व न [मः
३ पिपेलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपेलयिषा-णि व म षा-व म
४ अपिपेलयिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अपिपेलयि
५ अपिपेलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपेलयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपेलयिषाञ्चकार पिपेलयिषामास
७ पिपेलयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपेलयिषिना-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपेलयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ पिपेलयिषि
ष्या-मि व मः (अपिपेलयिषिष्या व म
१० अपिपेलयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

## १६९९ पलण् ( पल् ) रक्षणे

१ पिपालयिषति तः न्ति सि थः थ पिपालयिषामि वः
२ पिपालयिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म (मः
३ पिपालयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपालयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अपिपालयिषत् ताम् न् ः तम् त म् अपिपालयि
५ अपिपालयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ पिपालयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पिपालयिषाम्बभूव पिपालयिषामास
७ पिपालयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपालयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपालयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ पिपालयिषि
ष्य-मि वः मः ( अपिपालयिषिष्या-व म
१० अपिपालयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

## १७०० इलण् ( इल् ) प्रेरणे

१ एलिलयिष-ति तः न्ति सि थः थ एलिलयिषा-मि
२ एलिलयिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म (वः मः
३ एलिलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
एलिलयिषा-णि व म -व म
४ ऐलिलयिषत् ताम् न् ः तम् त म् ऐलिलयिषा
५ ऐलिलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ एलिलयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
एलिलयिषाम्बभूव एलिलयिषामास
७ एलिलयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ एलिलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ एलिलयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ एलिलयिषि
ष्या-मि वः मः ( ऐलिलयिषिष्या-व म
१० ऐलिलयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७०१ चलण् ( चल् ) भृतौ ।

१ चिचालयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचालयिषामि वः
२ चिचालयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिचालयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचालयिषा-णि व म (व म
४ अचिचालयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचालयिषा
५ अचिचालयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचालयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचालयिषाञ्चकार चिचालयिषामास
७ चिचालयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचालयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचालयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचालयिषिष्या-मि वः मः (अचिचालयिषिष्या-व म
१० अचिचालयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७०२ सान्त्वण् ( सान्त्व् ) सामप्रयोगे ।

१ सिसान्त्वयिषति तः न्ति सि थः थ सिसान्त्वयिषामि
२ सिसान्त्वयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः म
३ सिसान्त्वयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसान्त्वयिषा-णि व म (यिषा-व म
४ असिसान्त्वयिषत् ताम् न् तम् त म् असिसान्त्व
५ असिसान्त्वयि-षीत् षिष्टाम् षिः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसान्त्वयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसान्त्वयिषाञ्चकार सिसान्त्वयिषामास
७ सिसान्त्वयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसान्त्वयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसान्त्वयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ सिसान्त्वयिषिष्या-मि वः मः ( असिसान्त्वयिषिष्या-व म
१० असिसान्त्वयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

१७०३ धूशण् ( धूश् ) कान्तीकरणे

१ दुधूसयिष-ति तः न्ति सि थः थ दुधूसयिषा-मि वः
२ दुधूसयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ दुधूसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुधूसयिषा-णि व म व म
४ अदुधूसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुधूसयिषा
५ अदुधूसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ दुधूसयिषाञ्चकार ऋतुः क्रुः कर्थ ऋथुः ऋ कार कर कृव
दुधूसयिषाम्बभूव दुधूसयिषामास
७ दुधूसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधूसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधूसयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दुधूसयिषिष्या-मि वः मः ( अदुधूसयिषिष्या-व म
१० अदुधूसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१७०४ श्लिषण् ( श्लिष् ) श्लेषणे

१ शिश्लेषयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्लेषयिषामि वः
२ शिश्लेषयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ शिश्लेषयिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्लेषयिषा-णि व म [षा-व म
४ अशिश्लेषयिष-त् ताम् न् तम् त म् अशिश्लेषयि
५ अशिश्लेषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्लेषयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्लेषयिषाञ्चकार शिश्लेषयिषामास
७ शिश्लेषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ शिश्लेषयिषिता ' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ शिश्लेषयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्लेषयिषिष्या मि वः मः (अशिश्लेषयिषिष्या-व म
१० अशिश्लेषयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७०५ लूषण् ( लूष् ) हिंसायाम् ।

१ लुलूषयिष ति तः न्ति सि थः थ लुलूषयिषा-मि
२ लुलूषयिषे-त ताम् युः । तम् त यम् व म (वः मः
३ लुलूषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलूषयिषा-णि व म षा व म
४ अलुलूषयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलूषयि-
५ अलुलूषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ लुलूषयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथु क कार
लुलूषयिषाम्बभूव लुलूषयिषामास
७ लुलूषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलूषयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ लुलूषयिषिष्य ति तः न्ति सिथः थ लुलूषयिषि-
ष्या-मि वः मः ( अलुलूषयिषिष्या-व म
१० अलुलूषयिषिष्य-त ताम न् : तम् त म

### १७०७ प्युषण् ( प्युष् ) उत्सर्गे

१ पुप्योषयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुप्योषयिषा मि
२ पुप्योषयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ पुप्योषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुप्योषयिषा-णि व म -व म
४ अपुप्योषयिषत् ताम् न् : तम् त म् अपुप्योषयिषा
५ अपुप्योषयि- षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ पुप्योषयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पुप्योषयिषाम्बभूव पुप्योषयिषामास
७ पुप्योषयिष्या- त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुप्योषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुप्योषयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुप्योषयि
षिष्या-मि वः मः ( अपुप्योषयिषिष्या-व म
१० अपुप्योषयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७०६ रुषण् ( रुष् ) रोषे

१ रुरोषयिष ति तः न्ति सि थः थ रुरोषयिषामि वः
२ रुरोषयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ रुरोषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरोषयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अरुरोषयिषत् ताम् न् : तम् त म् अरुरोषयि
५ अरुरोषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ रुरोषयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
रुरोषयिषाम्बभूव रुरोषयिषामास
७ रुरोषयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरोषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरोषयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ रुरोषयिषि
ष्य-मि वः मः ( अरुरोषयिषिष्या-व म
१० अरुरोषयिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्

### १७०८ पसुण् ( पस् ) नाशने

१ पिपंसयिष ति तः न्ति सि थः थ पिपंसयिषा मि वः
२ पिपंसयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ पिपंसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपंसयिषा-णि व म षा-व म
४ अपिपंसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपंसयि
५ अपिपंसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपंसयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपंसयिषाञ्चकार पिपंसयिषामास
७ पिपंसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपंसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपंसयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ पिपंसयिषि
ष्या-मि व मः (अपिपंसयिषिष्या व म
१० अपिपंसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७०९ जसुण् ( जस् ) रक्षणे

१ जिजंसयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजंसयिषामि वः
२ जिजंसयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जिजंसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजंसयिषा-णि व म (व म
४ अजिजंसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजंसयिषा
५ अजिजंसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजंसयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिजंसयिषाञ्चकार जिजंसयिषामास
७ जिजंसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजंसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजंसयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजंसयिषि
ष्या-मि वः मः (अजिजंसयिषिष्या-व म
१० अजिजंसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७११ ब्रूसण् ( ब्रूस् ) हिंसायाम्

१ बुब्रूसयिष-ति तः न्ति सि थः थ बुब्रूसयिषा-मि वः
२ बुब्रूसयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ बुब्रूसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुब्रूसयिषा-णि व म व म
४ अबुब्रूसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबुब्रूसयिषा
५ अबुब्रूसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ बुब्रूसयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
बुब्रूसयिषाम्बभूव बुब्रूसयिषामास
७ बुब्रूसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुब्रूसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुब्रूसयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुब्रूसयिषि
ष्या-मि वः मः (अबुब्रूसयिषिष्या-व म
१० अबुब्रूसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७१० पुंसण् ( पुंस् ) अभिमर्दने ।

१ पुपुंसयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपुंसयिषा-मि
२ पुपुंसयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ पुपुंसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपुंसयिषा-णि व म (-व म
४ अपुपुंसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुंसयिषा
५ अपुपुंसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपुंसयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपुंसयिषाञ्चकार पुपुंसयिषामास
७ पुपुंसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुंसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुंसयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपुंसयिषिष्या
-मि वः मः (अपुपुंसयिषिष्या-व म
१० अपुपुंसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७१२ पिसण् ( पिस् ) हिंसायाम्

१ पिपेसयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपेसयिषामि वः
२ पिपेसयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ पिपेसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपेसयिषा-णि व म [षा-व म
४ अपिपेसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपेसयि
५ अपिपेसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपेसयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपेसयिषाञ्चकार पिपेसयिषामास
७ पिपेसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ पिपेसयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि सम् स्वः स्मः
९ पिपेसयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपेसयि
षिष्या-मि वः मः (अपिपेसयिषिष्या-व म
१० अपिपेसयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १७१३ जसण् ( जस् ) हिंसायाम्

१ जिजासयिष-ति तः न्ति सि थ. थ जिजासयिषामि वः
२ जिजासयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जिजासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजासयिषा-णि व म ( व म
४ अजिजासयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिजासयिषा
५ अजिजासयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजासयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिजासयिषाञ्चकार जिजासयिषामास
७ जिजासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजासयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजासयिषिष्या-मि वः मः (अजिजासयिषिष्या-व म
१० अजिजासयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७१५ ष्णिहण् ( स्निह् ) स्नेहने

१ सिष्णेहयिष-ति तः न्ति सि थः थ सिष्णेहयिषा-मि
२ सिष्णेहयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ सिष्णेहयिष-तु तात् ताम् न्तु तात् तम् त
सिष्णेहयिषा-णि व म व म
४ असिष्णेहयिषत् ताम् न् : तम् त म् असिष्णेहयिषा
५ असिष्णेहयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिष्णेहयिषाञ्चकार ऋतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
सिष्णेहयिषाम्बभूव सिष्णेहयिषामास
७ सिष्णेहयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिष्णेहयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिष्णेहयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिष्णेहयिषिष्या-मि वः मः ( असिष्णेहयिषिष्या-व म
१० असिष्णेहयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७१४ बर्हण् ( बर्ह् ) हिंसायाम् ।

१ बिबर्हयिष-ति तः न्ति सि थः थ बिबर्हयिषा-मि
२ बिबर्हयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ बिबर्हयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिबर्हयिषा-णि व म (-व म
४ अबिबर्हयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिबर्हयिषा
५ [illegible]-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बि[illegible] वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिबर्ह[illegible] बिबर्हयिषामास
७ बिबर्हयि[illegible]ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिबर्हयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिबर्हयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिबर्हयिषिष्या-मि वः मः ( अबिबर्हयिषिष्या-व म
१० अबिबर्हयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७१६ म्रक्षण् ( म्रक्ष् ) म्लेच्छने

१ मिम्रक्षयिष-ति तः न्ति सि थः थ मिम्रक्षयिषामि वः
२ मिम्रक्षयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ मिम्रक्षयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिम्रक्षयिषा-णि व म [षा-व म
४ अमिम्रक्षयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिम्रक्षयि
५ अमिम्रक्षयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिम्रक्षयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिम्रक्षयिषाञ्चकार मिम्रक्षयिषामास
७ मिम्रक्षयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ मिम्रक्षयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मर्म स्वः स्मः
९ मिम्रक्षयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिम्रक्षयिषिष्या-मि वः मः (अमिम्रक्षयिषिष्या-व म
१० अमिम्रक्षयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १७१७ भक्षण् ( भक्ष् ) अदने ।

१ बिभक्षयिष ति तः न्ति सि थः थ बिभक्षयिषा-मि
२ बिभक्षयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ बिभक्षयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभक्षयिषा-णि व म षा-व म
४ अबिभक्षयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबिभक्षयि
५ अबिभक्षयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ बिभक्षयिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार
बिभक्षयिषाम्बभूव बिभक्षयिषामास
७ बिभक्षयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभक्षयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ बिभक्षयिषिष्यति तः न्ति सिथः थ बिभक्षयिषि
ष्या-मि वः मः ( अबिभक्षयिषिष्या-व म
१० अबिभक्षयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७१९ लक्षण् ( लक्ष् ) दर्शनाङ्कनयोः

१ लिलक्षयिष ति तः न्ति सि थः थ लिलक्षयिषा-मि
२ लिलक्षयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ लिलक्षयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलक्षयिषा-णि व म -व म
४ अलिलक्षयिषत् ताम् न् : तम् त म् अलिलक्षयिषा
५ अलिलक्षयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ लिलक्षयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलक्षयिषाम्बभूव लिलक्षयिषामास
७ लिलक्षयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलक्षयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलक्षयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलक्षयिषि
ष्या-मि वः मः ( अलिलक्षयिषिष्या-व म
१० अलिलक्षयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७१८ पक्षण् ( पक्ष् ) परिग्रहे

१ पिपक्षयिषति तः न्ति सि थः थ पिपक्षयिषामि वः
२ पिपक्षयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ पिपक्षयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपक्षयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अपिपक्षयिषत् ताम् न् : तम् त म् अपिपक्षयि
५ अपिपक्षयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ पिपक्षयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पिपक्षयिषाम्बभूव पिपक्षयिषामास
७ पिपक्षयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपक्षयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपक्षयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ पिपक्षयिषि
ष्य-मि वः मः ( अपिपक्षयिषिष्या-व म
१० अपिपक्षयिषिष्य-त ताम न : तम् त म्

१ लिलक्षयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलक्षयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलक्षयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अलिलक्षयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलक्षयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ढ्वम् ध्वम्
६ लिलक्षयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
लिलक्षयिषाम्बभूव लिलक्षयिषामास (य वहि महि
७ लिलक्षयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम्
८ लिलक्षयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलक्षयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलिलक्षयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७२० ज्ञाण ( ज्ञा ) मारणादिनियोजनेषु

१ जिज्ञपयिषति तः न्ति सि थः थ जिज्ञपयिषा मि वः
२ जिज्ञपयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जिज्ञपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिज्ञपयिषा-णि व म [ व म
४ अजिज्ञपयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिज्ञपयिषा
५ अजिज्ञपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिज्ञपयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिज्ञपयिषाञ्चकार जिज्ञपयिषाम्बभूव
७ जिज्ञपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिज्ञपयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिज्ञपयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिज्ञपयिषिष्या-मि वः मः ( अजिज्ञपयिषिष्या-व म
१० अजिज्ञपयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७२१ च्युण ( च्यु ) सहने ।

१ चिच्यावयिषति तः न्ति सि थः थ चिच्यावयिषामि वः
२ चिच्यावयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिच्यावयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्यावयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अचिच्यावयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिच्यावयि
५ अचिच्यावयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिच्यावयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिच्यावयिषाञ्चकार चिच्यावयिषामास
७ चिच्यावयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्यावयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्यावयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्यावयिषिष्या-मि वः मः ( अचिच्यावयिषिष्या व म
१० अचिच्यावयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिच्याव-स्थाने चुच्याव इति ज्ञेयम्

### १७२२ भूण ( भू ) अवकल्कने

१ ज्ञीप्स-ति तः न्ति सि थ थ ज्ञीप्सा-मि वः मः
२ ज्ञीप्से-त् ताम् युः : तम् त यम् व म
३ ज्ञीप्स-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ज्ञीप्सा--नि व म
४ अज्ञीप्स-त् ताम् न् : तम् त म् अज्ञीप्सा-व म
( सिष्व सिष्म
५ अज्ञीप्-सीत् सिष्टाम् सिषुः सी. सिष्टम् सिष्ट सिषम्
ज्ञीप्साञ्चकार ज्ञीप्साम्बभूव
६ ज्ञीप्सामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ ज्ञीप्स्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ज्ञीप्सिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ज्ञीप्सिष्य-ति तः न्ति सि थः थ ज्ञीप्सिष्या-मि वः मः
( अज्ञीप्सिष्या-व म
१० अज्ञीप्सिष्य-त् ताम् न् तम् त म्

१ बिभावयिषति तः न्ति सि थः थ बिभावयिषामि वः
२ बिभावयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ बिभावयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभावयिषा-णि व म व म
४ अबिभावयिषत् ताम् न् : तम् त म् अबिभावयिषा
५ अबिभावयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभावयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभावयिषाञ्चकार बिभावयिषाम्बभूव
७ बिभावयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभावयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभावयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ बिभावयिषिष्या-मि वः मः ( अबिभावयिषिष्या-व म
१० अबिभावयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७२३ बुक्कण् ( बुक्क् ) भषणे

१ बुबुक्कयिष-ति तः न्ति सि थः थ बुबुक्कयिषा-मि वः
२ बुबुक्कयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ बुबुक्कयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुबुक्कयिषा-णि व म (व म
४ अबुबुक्कयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबुबुक्कयिषा-
५ अबुबुक्कयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बुबुक्कयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बुबुक्कयिषाञ्चकार बुबुक्कयिषामास
७ बुबुक्कयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुबुक्कयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुबुक्कयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुबुक्कयिषि-
ष्या-मि वः मः (अबुबुक्कयिषिष्या-व म
१० अबुबुक्कयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७२५ लकण् ( लक् ) आस्वादने

१ लिलाकयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलाकयिषा-मि
२ लिलाकयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ लिलाकयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलाकयिषा-णि व म व म
४ अलिलाकयिषत् ताम् न् : तम् त म् अलिलाकयिषा
५ अलिलाकयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ लिलाकयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलाकयिषाम्बभूव लिलाकयिषामास
७ लिलाकयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलाकयिषिता - " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलाकयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलाकयिषि
ष्या-मि वः मः ( अलिलाकयिषिष्या--व म
१० अलिलाकयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### १७२४ रकण् ( रक् ) आस्वादने

१ रिराकयिष-ति तः न्ति सि थः थ रिराकयिषा-मि
२ रिराकयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ रिराकयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिराकयिषा-णि व म ( -व म
४ अरिराकयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिराकयिषा
५ अरिराकयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिराकयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिराकयिषाञ्चकार रिराकयिषामास
७ रिराकयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिराकयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिराकयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिराकयिषि
ष्या-मि वः मः ( अरिराकयिषिष्या-व म
१० अरिराकयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७२६ रगण् ( रग् ) आस्वादने

१ रिरागयिषति तः न्ति सि थः थ रिरागयिषामि वः
२ रिरागयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ रिरागयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरागयिषा-णि व म [षा-व म
४ अरिरागयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरागयि
५ अरिरागयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरागयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरागयिषाञ्चकार रिरागयिषामास
७ रिरागयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ रिरागयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ रिरागयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरागयि
षिष्या-मि वः मः (अरिरागयिषिष्या-व म
१० अरिरागयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७२७ लगण् ( लग् ) आस्वादने ।

१ लिलागयिषति तः न्ति सि थः थ लिलागयिषामि वः
२ लिलागयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म (मः
३ लिलागयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलागयिषा-णि व म षा-व म
४ अलिलागयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलागयि
५ अलिलागयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६ लिलागयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलागयिषाञ्चकार लिलागयिषाम्बभूव
७ लिलागयिष्या-त् स्ताम् सु' : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलागयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलागयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलागयि
षिष्या-मि व. मः (अलिलागयिषिष्या-व म
१० अलिलागयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### १७२९ चर्चण् ( चर्च् ) अध्ययने ।

१ चिचर्चयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचर्चयिषामि
२ चिचर्चयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ चिचर्चयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचर्चयिषा-णि व म -व म
४ अचिचर्चयिषत ताम् न् : तम् त म् अचिचर्चयिषा
५ अचिचर्चयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (क्व ष्म
६ चिचर्चयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
चिचर्चयिषाम्बभूव चिचर्चयिषामास
७ चिचर्चयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचर्चयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचर्चयिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ चिचर्चयि
षिष्या-मि वः मः ( अचिचर्चयिषिष्या-व म
१० अचिचर्चयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७२८ लिगुण् ( लिङ्ग् ) चित्रीकरणे

१ लिलिङ्गयिषति तः न्ति सि थः थ लिलिङ्गयिषामि वः
२ लिलिङ्गयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ लिलिङ्गयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलिङ्गयिषा-णि व म (षा व म
४ अलिलिङ्गयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलिङ्गयि
५ अलिलिङ्गयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ लिलिङ्गयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलिङ्गयिषाञ्चकार लिलिङ्गयिषामास
७ लिलिङ्गयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलिङ्गयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलिङ्गयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलिङ्गयि
षिष्या--मि वः मः (अलिलिङ्गयिषिष्या-व म
१० अलिलिङ्गयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त

### १७३० अञ्चण् ( अञ्च् ) विशेषणे

१ अञ्चिचयिष-ति तः न्ति सि थः थ अञ्चिचषिया-मि
२ अञ्चिचयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ अञ्चिचयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्चिचयिषा-णि व म षा-व म
४ आञ्चिचयिष-त् ताम् न् : तम् त म् आञ्चिचयि
५ आञ्चिचयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अञ्चिचयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथु. व व विव विम
अञ्चिचयिषाञ्चकार अञ्चिचयिषामास
७ अञ्चिचयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्चिचयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अञ्चिचयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अञ्चिचयि-
षिष्या-मि वः मः (आञ्चिचयिषिष्या-व म
१० आञ्चिचयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७३१ मुचण् ( मुच् ) प्रमोदने ।

१ मुमोचयिषति तः न्ति सि थः थ मुमोचयिषामि वः
२ मुमोचयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ मुमोचयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोचयिषा--णि व म
४ अमुमोचयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमोचयिषा
व म ( षिष्व षिष्म
५ अमुमोचयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
मुमोचयिषाञ्चकार मुमोचयिषाम्बभूव
६ मुमोचयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ मुमोचयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोचयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमोचयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमोचयिषि
ष्या-मि वः मः ( अमुमोचयिषिष्या-व म
१० अमुमोचयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७३२ अर्जण् ( अर्ज् ) प्रतियत्ने

१ अर्जिजयिषति तः न्ति सि थः थ अर्जिजयिषा मि वः
२ अर्जिजयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ अर्जिजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्जिजयिषा-णि व म [ व म
४ आर्जिजयिषत् ताम् न् : तम् त म् आर्जिजयिषा
५ आर्जिजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्जिजयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अर्जिजयिषाञ्चकार अर्जिजयिषाम्बभूव
७ अर्जिजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्जिजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्जिजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्जिजयिषि
ष्या-मि वः मः ( आर्जिजयिषिष्या-व म
१० आर्जिजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७३३ भजण् ( भज् ) विश्राणने

१ बिभाजयिषति तः न्ति सि थः थ बिभाजयिषामि वः
२ बिभाजयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ बिभाजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभाजयिषा-णि व म व म
४ अबिभाजयिषत् ताम् न् : तम् त म् अबिभाजयिषा
५ अबिभाजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ बिभाजयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिभाजयिषाञ्चकार बिभाजयिषाम्बभूव
७ बिभाजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभाजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभाजयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ बिभाजयिषि
ष्या-मि वः मः (अबिभाजयिषिष्या-व म
१० अबिभाजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७३४ चटण् ( चट् ) भेदे ।

१ चिचाटयिषति तः न्ति सि थः थ चिचाटयिषामिवः
२ चिचाटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिचाटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचाटयिषा-णि व म ( -व म
४ अचिचाटयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिचाटयिषा
५ अचिचाटयि-~~षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम्~~ षिष्ट षिषम्
~~षिष्व षिष्म~~
६ चिचाटयिषाम्बभू-व वतुः वुः+ विथ वथुः व व विव विम
चिचाटयिषाञ्चकार चिचाटयिषामास
७ चिचाटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचाटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचाटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचाटयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचिचाटयिषिष्या-व म
१० अचिचाटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

+षिष्टाम्, षिषुः. षीः. षिष्टम्,
षिष्ट, षिषम, षिष्व, षिष्म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७३५ स्फुटण् ( स्फुट् ) भेदे ।

१ पुस्फोटयिषति तः न्ति सि थः थ पुस्फोटयिषामि वः

२ पुस्फोटयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म [मः

३ पुस्फोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त ६

पुस्फोटयिषा-णि व म

४ अपुस्फोटयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुस्फोटयिषा

व म ( षिष्व षिष्म

५ पुस्फोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्

पुस्फोटयिषाञ्चकार पुस्फोटयिषाम्बभूव

६ पुस्फोटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम

७ पुस्फोटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ पुस्फोटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ पुस्फोटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुस्फोटयिषिष्या-मि वः मः ( अपुस्फोटयिषिष्या-व म

१० अपुस्फोटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म् ६

१७३७ कणण् ( कण् ) निमीलने ।

१ चिकाणयिषति तः न्ति सि थः थ चिकाणयिषामि वः

२ चिकाणयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म [मः

३ चिकाणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त ६

चिकाणयिषा-णि व म ( -व म

४ अचिकाणयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकाणयिषा

५ अचिकाणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व षिष्म

६ चिकाणयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम

चिकाणयिषाञ्चकार चिकाणयिषामास

७ चिकाणयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चिकाणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ चिकाणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकाणयिषिष्या-मि वः मः ( अचिकाणयिषिष्या व म

१० अचिकाणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म् ६

१७३६ घटण ( घट् ) संघाते

१ जिघाटयिषति तः न्ति सि थः थ जिघाटयिषामि वः

२ जिघाटयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः

३ जिघाटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त ६

जिघाटयिषा-णि व म [ व म

४ अजिघाटयिष-त् ताम् न् : तम् त म अजिघाटयिषा

५ अजिघाटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व षिष्म

६ जिघाटयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम

जिघाटयिषाञ्चकार जिघाटयिषाम्बभूव

७ जिघाटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्मः

८ जिघाटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ जिघाटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघाटयिषिष्या-मि वः मः ( अजिघाटयिषिष्या व म

१० अजिघाटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१७३८ यतण् ( यत् ) निकारोपस्कारयोः

१ यियातयिष-ति तः न्ति सि थः थ यियातयिषामि वः

२ यियातयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः

३ यियातयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त ६

यियातयिषा-णि व म व म

४ अयियातयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अयियातयिषा

५ अयियातयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्

षिष्व षिष्म

६ यियातयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम

यियातयिषाञ्चकार यियातयिषाम्बभूव

७ यियातयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ यियातयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ यियातयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ यियातयिषिष्या-मि वः मः ( अयियातयिषिष्या-व म

१० अयियातयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म् ६

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७३९ शब्दण् (शब्द्) उपसर्गाद्भाषाविष्कारयोः

१ विशिशब्दयिषति तः न्ति सि थः थ विशिशब्दयिषा
२ विशिशब्दयिषे–त ताम् युः तम् त यम् व म (मि वः मः
३ विशिशब्दयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
विशिशब्दयिषा–णि व म षा-व म
४ व्यशिशब्दयिष–त् ताम् न् तम् त म् व्यशिशब्दयि
५ व्यशिशब्दयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विशिशब्दयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विशिशब्दयिषाञ्चकार विशिशब्दयिषामास
७ विशिशब्दयिष्या त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विशिशब्दयिषिता ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विशिशब्दयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ विशिशब्दयि
षिष्या मि वः मः (व्यशिशब्दयिषिष्या–व म
१० व्यशिशब्दयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१७४० षूदण् (सूद्) आसवणे ।

१ सुषूदयिष–ति तः न्ति सि थः थ सुषूदयिषा–मि
२ सुषूदयिषे–त ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ सुषूदयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
सुषूदयिषा–णि व म व म
४ असुषूदयिष–त् ताम् न् : तम् त म् असुषूदयिषा
५ असुषूदयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म –कर कृम कृव
६ सुषूदयिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
सुषूदयिषाम्बभूव सुषूदयिषामास
७ सुषूदयिष्या–त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुषूदयिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ सुषूदयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ सुषूदयिषिष्या
मि वः मः (असुषूदयिषिष्या–व म
१० असुषूदयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१७४१ आङः (आक्रन्द्) क्रन्दण् सातत्ये

१ आचिक्रन्दयिषति तः न्ति सि थः थ आचिक्रन्दयिषामि वः
२ आचिक्रन्दयिषे–त ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ आचिक्रन्दयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
आचिक्रन्दयिषा–णि व म षा–व म
४ आचिक्रन्दयिषत् ताम् नः तम् त म् आचिक्रन्दयि
५ आचिक्रन्दयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ आचिक्रन्दयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
आचिक्रन्दयिषाम्बभूव आचिक्रन्दयिषामास
७ आचिक्रन्दयिष्या–त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ आचिक्रन्दयिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ आचिक्रन्दयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ आचिक्रन्दयि
षिष्य–मि वः मः (आचिक्रन्दयिषिष्या–व म
१० आचिक्रन्दयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१७४२ ष्वदण् (स्वद्) आस्वादने

१ सिस्वादयिषति तः न्ति सि थः थ सिस्वादयिषामि वः
२ सिस्वादयिषे–त ताम् युः तम् त यम् व म [मः
३ सिस्वादयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
सिस्वादयिषा–णि व म षा–व म
४ असिस्वादयिषत् ताम् न् : तम् त म् असिस्वादयि
५ असिस्वादयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिस्वादयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्वादयिषाञ्चकार सिस्वादयिषामास
७ सिस्वादयिष्या–त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्वादयिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्वादयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ सिस्वादयिषि
ष्या–मि वः मः (असिस्वादयिषिष्या–व म
१० असिस्वादयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१७४३ आस्वद (आ-स्वद्) सकर्मकात्
१७४२–वद्रूपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१९४४ मुदण् ( मुद् ) संसर्गे

१ मुमोदयिषति तः न्ति सि थः थ मुमोदयिषामि वः
२ मुमोदयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ मुमोदयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोदयिषा-णि व म [व म
४ अमुमोदयिषत् ताम् न् : तम् त म् अमुमोदयिषा
५ अमुमोदयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमोदयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मुमोदयिषाञ्चकार मुमोदयिषाम्बभूव
७ मुमोदयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोदयिषिता-" रौ रः सि स्थ. स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमोदयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमोदयिषि
ष्या-मि वः मः (अमुमोदयिषिष्या-व म
१० अमुमोदयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१९४६ कृपण् ( कृप् ) अवकल्कने ।

१ चिकल्पयिषति तः न्ति सि थः थ चिकल्पयिषामिवः
२ चिकल्पयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिकल्पयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकल्पयिषा-णि व म (षा-व म
४ अचिकल्पयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिकल्पयि
५ अचिकल्पयि-षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिकल्पयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकल्पयिषाञ्चकार चिकल्पयिषामास
७ चिकल्पयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकल्पयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकल्पयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकल्पयि
षिष्या-मि वः मः (अचिकल्पयिषिष्या व म
१० अचिकल्पयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१९४५ शृधण् ( शृध् ) जलहने

१ शिशर्धयिषति तः न्ति सि थः थ शिशर्धयिषामि वः
२ शिशर्धयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [ मः
३ शिशर्धयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशर्धयिषा-णि व म षा व म
४ अशिशर्धयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशर्धयि
( षिष्व षिष्म
५ अशिशर्धयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
शिशर्धयिषाञ्चकार शिशर्धयिषाम्बभूव
६ शिशर्धयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ शिशर्धयिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशर्धयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशर्धयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशर्धयिषि
ष्या-मि वः मः (अशिशर्धयिषिष्या व म
१० अशिशर्धयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१९४७ जभुण् (जम्भ्) नाशने

१ जिजम्भयिषति तः न्ति सि थः थ जिजम्भयिषामि वः
२ जिजम्भयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ जिजम्भयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजम्भयिषा-णि व म व म
४ अजिजम्भयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिजम्भयिषा
५ अजिजम्भयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजम्भयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजम्भयिषाञ्चकार जिजम्भयिषाम्बभूव
७ जिजम्भयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजम्भयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजम्भयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ जिजम्भयि
षिष्या-मिवः मः (अजिजम्भयिषिष्या-व म
१० अजिजम्भयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९४८ अमण् ( अम् ) रोगे

आमिमयिषति तः न्ति सि थः थ आमिमयिषा मि वः
२ आमिमयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ आमिमयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अमिमयिषा-णि व म [व म
४ आमिमयिषत् ताम् न् : तम् त म् आमिमयिषा
५ आमिमयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ आमिमयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
आमिमयिषाञ्चकार आमिमयिषाम्बभूव
७ आमिमयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ आमिमयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ आमिमयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ आमिमयिषिष्या-मि वः मः (आमिमयिषिष्या-व म
१० आमिमयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १९:९ चरण् ( चर् ) असंशये ।

१ विचिचारयिषति तः न्ति सि थः थ विचिचारयिषामि
२ विचिचारयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वःमः
३ विचिचारद्यिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विचिचारयिषा-णि व म ( यिषा-व म
४ अविचिचारयिषत् ताम् न् : तम् त म् अविचिचार
५ अविचिचारयिषीत् ~~सिष्टाम् सिषुः षीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्~~
~~सिष्व~~ सिष्म
६ विचिचारयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विचिचारयिषाञ्चकार विचिचारयिषामास
७ विचिचारयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विचिचारयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विचिचारयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ विचिचारयिषिष्या-मि वः मः ( अविचिचारयिषिष्या व म
१० अविचिचारयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १९५० पूरण् ( पूर् ) आप्यायने

१ पुपूरयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपूरयिषा-मि वः
२ पुपूरयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [ मः
३ पुपूरयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपूरयिषा--णि व म व म
४ अपुपूरयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपूरयिषा-
( षिष्व षिष्म
५ अपुपूरयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
पुपूरयिषाञ्चकार पुपूरयिषाम्बभूव
६ पुपूरयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ पुपूरयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपूरयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपूरयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपूरयिषिष्या-मि वः मः ( अपुपूरयिषिष्या व म
१० अपुपूरयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १९५१ दलण् ( दल् ) विदारणे

१ दिदालयिषति तः न्ति सि थः थ दिदालयिषामि वः
२ दिदालयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ दिदालयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदालयिषा-णि व म व म
४ अदिदालयिषत् ताम् न् : तम् त म् अदिदालयिषा
५ अदिदालयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदालयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदालयिषाञ्चकार दिदालयिषाम्बभूव
७ दिदालयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदालयिषिता-' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदालयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ दिदालयिषिष्या-मिवः मः (अदिदालयिषिष्या-व म
१० अदिदालयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

+षिष्ठाम्, षिषुः, षीः, षिष्टम्, षिष्ट, षिषम्, षिष्व, षिष्म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १६५३ दिवण् ( दिव् ) अर्दने ।

१ दिदावयिष-ति तः न्ति सि थः थ दिदावयिषा-मि
२ दिदावयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ दिदावयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
दिदावयिषा-णि व म व म
४ अदिदावयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिदावयिषा
५ अदिदावयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म -कार कृम कृव
६ दिदावयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
दिदावयिषाम्बभूव दिदावयिषामास
७ दिदावयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदावयिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदावयिषिष्यति तः न्ति सिथः थ दिदावयिषि
ष्या मि वः मः ( अदिदावयिषिष्या-व म
१० अदिदावयिषिष्य-त् ताम् न : तम त म

### १६५४ षषण् ( षष् ) बन्धने

१ पिपाषयिषति तः न्ति सि थः थ पिपाषयिषामि वः
२ पिपाषयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ पिपाषयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
पिपाषयिषा-णि व म ( षा-व म
४ अपिपाषयिषत् ताम् न् : तम् त म अपिपाषयि
५ अपिपाषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ पिपाषयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पिपाषयिषाम्बभूव पिपाषयिषामास
७ पिपाषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपाषयिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपाषयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ पिपाषयि
षिष्य-मि वः मः ( अपिपाषयिषिष्या-व म
१० अपिपाषयिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्

### १७२३ पशण् (पश्) बन्धने

१ पिपाशयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपाशयिषा-मि
२ पिपाशयिषे-त ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ पिपाशयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
पिपाशयिषा-णि व म षा-व म
४ अपिपाशयिष-त् ताम् न् तम् त म् अपिपाशयि
५ अपिपाशयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ पिपाशयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपाशयिषाञ्चकार पिपाशयिषामास
७ पिपाशयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपाशयिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपाशयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ पिपाशयि
षिष्या मि वः मः (अपिपाशयिषिष्या-व म
१० अपिपाशयिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

### १६५५ पुषण् ( पुष् ) धारणे

१ पुपोषयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपोषयिषा मि वः
२ पुपोषयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व न [मः
३ पुपोषयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
पुपोषयिषा-णि व म षा-व म
४ अपुपोषयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपोषयि
५ अपुपोषयि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपोषयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपोषयिषाञ्चकार पुपोषयिषामास
७ पुपोषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपोषयिषिता- '' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपोषयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपोषयिषि
ष्या-मि व मः (अपुपोषयिषिष्या-व म
१० अपुपोषयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७५६ घुषण (घुष) विशब्दने

१ जुघोषयिषति तः न्ति सि थः थ जुघोषयिषामि वः
२ जुघोषयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ जुघोषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुघोषयिषा-णि व म (षा व म
४ अजुघोषयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुघोषयि
५ अजुघोषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी: षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुघोषयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुघोषयिषाञ्चकार जुघोषयिषामास
७ जुघोषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुघोषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुघोषयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुघोषयिषि-
ष्या-मि वः मः (अजुघोषयिषिष्या-व म
१० अजुघोषयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त

### १७५७ भूषण (भूष) अलङ्कारे

१ बुभूषयिष-ति तः न्ति सि थः थ बुभूषयिषा-मि वः
२ बुभूषयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ बुभूषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बुभूषयिषा-णि व म -व म
४ अबुभूषयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अबुभूषयिष-
५ अबुभूषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ बुभूषयिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
बुभूषयिषाम्बभूव बुभूषयिषामास
७ बुभूषयिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बुभूषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बुभूषयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बुभूषयिषि-
ष्या-मि वः मः (अबुभूषयिषिष्या-व म
१० अबुभूषयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### १७५८ तसण (तंस) अलङ्कारे।

१ तितंसयिष-ति तः न्ति सि थः थ तितंसयिषामि
२ तितंसयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः मः
३ तितंसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितंसयिषा-णि व म -व म
४ अतितंसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितंसयिषा
५ अतितंसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ तितंसयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर
तितंसयिषाम्बभूव तितंसयिषामास
७ तितंसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितंसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितंसयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितंसयि
षिष्या-मि वः मः (अतितंसयिषिष्या-व म
१० अतितंसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७५९ जसण (जस) ताडने।

१ जिजासयिषति तः न्ति सि थः थ जिजासयिषामि वः
२ जिजासयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जिजासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजासयिषा-णि व म षा-व म
४ अजिजासयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिजासयि
५ अजिजासयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिजासयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिजासयिषाञ्चकार जिजासयिषाम्बभूव
७ जिजासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजासयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजासयि
षिष्या-मि वः मः (अजिजासयिषिष्या-व म
१० अजिजासयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७६० त्रसण् ( त्रस् ) धारणे

१ तित्रासयिष-ति तः न्ति सि थः थ तित्रासयिषा-मि
२ तित्रासयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ तित्रासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तित्रासयिषा-णि व म व म
४ अतित्रासयिषत् ताम् न् : तम् त म् अतित्रासयिषा
५ अतित्रासयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ तित्रासयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
तित्रासयिषाम्बभूव तित्रासयिषामास
७ तित्रासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्रासयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्रासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तित्रासयिषि
ष्या-मि वः मः ( अतित्रासयिषिष्या-व म
१० अतित्रासयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म

१७६१ वसण् ( वस् ) स्नेहच्छेदावहरणेषु

१ विवासयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवासयिषा-मि
२ विवासयिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म (वः म
३ विवासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवासयिषा-णि व म. ( -व म
४ अविवासयिषत् ताम् न् : तम् त म् अविवासयिषा
५ अविवासयि-षीत् षिष्टाम् षि : षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवासयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवासयिषाञ्चकार विवासयिषामास
७ विवासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवासयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवासयिषि
ष्या-मि वः मः ( अविवासयिषिष्या-व म
१० अविवासयिषिष्य त ताम् न् : तम् त म्

१७६२ ध्रसण् ( ध्रस् ) उत्क्षेपे

१ दिध्रासयिष-ति तः न्ति सि थ थ दिध्रासयिषा-मि वः
२ दिध्रासयिषे-त् ताम युः : तम् त यम व म (मः
३ दिध्रासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिध्रासयिषा-णि व म ( व म
४ अदिध्रासयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्रासयिषा
५ अदिध्रासयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिध्रासयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्रासयिषाञ्चकार दिध्रासयिषामास
७ दिध्रासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्रासयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
दिध्रासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिध्रासयिषि
ष्या-मि वः मः (अदिध्रासयिषिष्या-व म
१० अदिध्रासयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म्

१७६३ ग्रसण् ( ग्रस् ) ग्रहणे

१ जिग्रासयिषति तः न्ति सि थः थ जिग्रासयिषामि वः
२ जिग्रासयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म [मः
३ जिग्रासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिग्रासयिषा-णि व म [षा-व म
४ अजिग्रासयिष-त् ताम् न् तम् त म् अजिग्रासयि
५ अजिग्रासयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिग्रासयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिग्रासयिषाञ्चकार जिग्रासयिषामास
७ जिग्रासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ जिग्रासयिषिता ' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ जिग्रासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिग्रासयि
षिष्या-मि वः मः (अजिग्रासयिषिष्या-व म
१० अजिग्रासयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७६४ लसण् ( लस् ) शिल्पयोगे

१ लिलासयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलासयिषा-मि
२ लिलासयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ लिलासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलासयिषा-णि व म व म
४ अलिलासयिषत् ताम् न् : तम् त म् अलिलासयिषा
५ अलिलासयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ लिलासयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लिलासयिषाम्बभूव लिलासयिषामास
७ लिलासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलासयिषिता - " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलासयिषि
ष्या-मि वः मः ( अलिलासयिषिष्या-व म
१० अलिलासयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७६६ मोक्षण् ( मोक्ष् ) असने

१ मुमोक्षयिष-ति तः न्ति सि थः थ मुमोक्षयिषा-मि वः
२ मुमोक्षयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ मुमोक्षयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमोक्षयिषा-णि व म ( व म
४ अमुमोक्षयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमुमोक्षयिषा
५ अमुमोक्षयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमोक्षयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मुमोक्षयिषाञ्चकार मुमोक्षयिषामास
७ मुमोक्षयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमोक्षयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
मुमोक्षयिषिष्य- ति तः न्ति सि थः थ मुमोक्षयिषि
ष्या-मि वः मः (अमुमोक्षयिषिष्या-व म
१० अमुमोक्षयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७६५ अर्हण ( अर्ह् ) पूजायाम्

१ अर्जिहयिष-ति तः न्ति सि थः थ अर्जिहयिषा-मि
२ अर्जिहयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ अर्जिहयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्जिहयिषा-णि व म ( -व म
४ आर्जिहयिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्जिहयिषा
५ आर्जिहयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्जिहयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अर्जिहयिषाञ्चकार अर्जिहयिषामास
७ अर्जिहयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्जिहयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्जिहयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्जिहयिषि
ष्या-मि वः मः ( आर्जिहयिषिष्या-व म
१० आर्जिहयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७६७ लोकृण् ( लोक् ) भासार्थः

१ लुलोकयिषति तः न्ति सि थः थ लुलोकयिषामि वः
२ लुलोकयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ लुलोकयिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलोकयिषा-णि व म [षा-व म
४ अलुलोकयिष-त् ताम् न् तम् त म् अलुलोकयि
५ अलुलोकयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलोकयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलोकयिषाञ्चकार लुलोकयिषामास
७ लुलोकयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ लुलोकयिषिता ' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्म् स्वः स्मः
९ लुलोकयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलोकयि
षिष्या-मि वः मः (अलुलोकयिषिष्या-व म
१० अलुलोकयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७६८ तर्कण (तर्क) भासार्थः ।

१ तितर्कयिष-ति तः न्ति सि थः थ तितर्कयिषामि
२ तितर्कयिषे-त ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ तितर्कयिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तितर्कयिषा-णि व म -व म
४ अतितर्कयिष-त ताम् नः तम् त म अतितर्कयिषा
५ अतितर्कयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ तितर्कयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
तितर्कयिषाम्बभूव तितर्कयिषामास
७ तितर्कयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्कयिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्कयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितर्कयि
षिष्या-मि वः मः (अतितर्कयिषिष्या-व म
१० अतितर्कयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म

### १७६९ लघुण (लङ्घ) भासार्थः

१ लिलङ्घयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्घयिषासि वः
२ लिलङ्घयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ लिलङ्घयिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
लिलङ्घयिषा-णि व म (षा व म
४ अलिलङ्घयिष-त ताम् नः तम् त म अलिलङ्घयि
५ अलिलङ्घयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलङ्घयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलङ्घयिषाञ्चकार लिलङ्घयिषामास
७ लिलङ्घयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलङ्घयिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलङ्घयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलङ्घयि
षिष्या-मि वः मः (अलिलङ्घयिषिष्या-व म
१० अलिलङ्घयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म

### १७७० रघुण (रङ्घ) भासार्थः ।

१ रिरङ्घयिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्घयिषा-मि वः
२ रिरङ्घयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ रिरङ्घयिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
रिरङ्घयिषा-णि व म षा-व म
४ अरिरङ्घयिष-त ताम् नः तम् त म अरिरङ्घयि
५ अरिरङ्घयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरङ्घयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
रिरङ्घयिषाञ्चकार रिरङ्घयिषाम्बभूव
७ रिरङ्घयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरङ्घयिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरङ्घयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरङ्घयि
षिष्या-मि वः मः (अरिरङ्घयिषिष्या-व म
१० अरिरङ्घयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म

### १७७१ लोचृण (लोच) भासार्थः

१ लुलोचयिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलोचयिषा-मि
२ लुलोचयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ लुलोचयिष-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
लुलोचयिषा-णि व म -व म
४ अलुलोचयिष-त ताम् नः तम् त म अलुलोचयिष
५ अलुलोचयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ लुलोचयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
लुलोचयिषाम्बभूव लुलोचयिषामास
७ लुलोचयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलोचयिषिता-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलोचयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलोचयिषि
ष्या-मि वः मः (अलुलोचयिषिष्या-व म
१० अलुलोचयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१७७२ विछण् ( विच्छ् ) भासार्थः**

१ विविच्छयिष-ति तः न्ति सि थः थ विविच्छयिषामि
२ विविच्छयिषे त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ विविच्छयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विविच्छयिषा-णि व म (षा-व म
४ अविविच्छयिषत् ताम् न् तम् त म् अविविच्छयि
५ अविविच्छयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विविच्छयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विविच्छयिषाञ्चकार विविच्छयिषामास
७ विविच्छयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विविच्छयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विविच्छयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ विविच्छयिषि
ष्या-मि वः मः ( अविविच्छयिषिष्या-व म
१० अविविच्छयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

**१७७४ तुञ्जुण् ( तुञ्ज् ) भासार्थः**

१ तुतुञ्जयिष-ति तः न्ति सि थ थ तुतुञ्जयिषा-मि वः
२ तुतुञ्जयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम व म (मः
३ तुतुञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतुञ्जयिषा-णि व म ( व म
४ अतुतुञ्जयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतुञ्जयिषा
५ अतुतुञ्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तुतुञ्जयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतुञ्जयिषाञ्चकार तुतुञ्जयिषामास
७ तुतुञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतुञ्जयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतुञ्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतुञ्जयिषि
ष्या-मि वः मः (अतुतुञ्जयिषिष्या-व म
१० अतुतुञ्जयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

**१७७३ अञ्जुण् ( अञ्ज् ) भासार्थः**

१ अञ्जिजयिष-ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिजयिषा-मि
२ अञ्जिजयिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म (वः मः
३ अञ्जिजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्जिजयिषा-णि व म व म
४ आञ्जिजयिषत् ताम् न् : तम् त म् आञ्जिजयिषा
५ आञ्जिजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ अञ्जिजयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
अञ्जिजयिषाम्बभूव अञ्जिजयिषामास
७ अञ्जिजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्जिजयिषिता - " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अञ्जिजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिजयिषि
ष्या-मि वः मः ( आञ्जिजयिषिष्या-व म
१० आञ्जिजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

**१७७५ पिञ्जुण् ( पिञ्ज् ) भासार्थः**

१ पिपिञ्जयिष ति तः न्ति सि थः थ पिपिञ्जयिषामि वः
२ पिपिञ्जयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ पिपिञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपिञ्जयिषा-णि व म [षा-व म
४ अपिपिञ्जयिष-त् ताम् न् तम् त म् अपिपिञ्जयि
५ अपिपिञ्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपिञ्जयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपिञ्जयिषाञ्चकार पिपिञ्जयिषामास
७ पिपिञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ पिपिञ्जयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ पिपिञ्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपिञ्जयि
षिष्या-मि वः मः ( अपिपिञ्जयिषिष्या-व म
१० अपिपिञ्जयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१६७६ लजुण् ( लञ्ज् ) भासार्थः

१ लिलञ्जयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलञ्जयिषा-मि
२ लिलञ्जयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ लिलञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलञ्जयिषा-णि व म व म
४ अलिलञ्जयिषत् ताम् न् : तम् त म् अलिलञ्जयिषा
५ अलिलञ्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ लिलञ्जयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
लिलञ्जयिषाम्बमूव लिलञ्जयिषामास
७ लिलञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलञ्जयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलञ्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलञ्जयिषि
ष्या-मि वः मः ( अलिलञ्जयिषिष्या-व म
१० अलिलञ्जयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१७७८ भजुण् ( भञ्ज् ) भासार्थः

१ बिभञ्जयिषति तः न्ति सि थः थ बिभञ्जयिषामि वः
२ बिभञ्जयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ बिभञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभञ्जयिषा-णि व म [षा-व म
४ अबिभञ्जयिष-त् ताम् न् तम् त म् अबिभञ्जयि
५ अबिभञ्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभञ्जयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
बिभञ्जयिषाञ्चकार बिभञ्जयिषामास
७ बिभञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ बिभञ्जयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्व. स्मः
९ बिभञ्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभञ्जयि
षिष्या-मि वः मः ( अबिभञ्जयिषिष्या-व म
१० अबिभञ्जयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

१६७७ लुजुण् ( लुञ्ज् ) भासार्थः

१ लुलुञ्जयिष-ति तः न्ति सि थः थ लुलुञ्जयिषा-मि वः
२ लुलुञ्जयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ लुलुञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलुञ्जयिषा-णि व म ( व म
४ अलुलुञ्जयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलुलुञ्जयिषा
५ अलुलुञ्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलुञ्जयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलुञ्जयिषाञ्चकार लुलुञ्जयिषामास
७ लुलुञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलुञ्जयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलुञ्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलुञ्जयिषि
ष्या-मि वः मः (अलुलुञ्जयिषिष्या-व म
१० अलुलुञ्जयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म्

१६७९ पटण् ( पट् ) भासार्थः

१ पिपाटयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपाटयिषा-मि
२ पिपाटयिषे त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ पिपाटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपाटयिषा-णि व म (षा-व म
४ अपिपाटयिष-त् ताम् न् . तम् त म् अपिपाटयि
५ अपिपाटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपाटयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपाटयिषाञ्चकार पिपाटयिषामास
७ पिपाटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपाटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपाटयिषिष्य - ति तः न्ति सि थः थ पिपाटयिषि
ष्या-मि वः मः ( अपिपाटयिषिष्या-व म
१० अपिपाटयिषिष्य - त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १७८० पुटण् ( पुट् ) भासार्थः

१ पुपोटयिष-ति त. न्ति सि थ. थ पुपोटयिषा-मि वः
२ पुपोटयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व न [मः
३ पुपोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपोटयिषा-णि व म षा-व म
४ अपुपोटयिष-त् ताम् न् तम् त म् अपुपोटयि
५ अपुपोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपोटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपोटयिषाञ्चकार पुपोटयिषामास
७ पुपोटयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपोटयिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपोटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपोटयिषि
ष्या-मि व मः (अपुपोटयिषिष्या-व म
१० अपुपोटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १७८१ लुटण् ( लुट् ) भासार्थः

१ लुलोटयिषति तः न्ति सि थः थ लुलोटयिषामि वः
२ लुलोटयिषे-त् ताम् यु तम् त यम् व म [मः
३ लुलोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लुलोटयिषा-णि व म (षा व म
४ अलुलोटयिष त् ताम् न् तम् त म् अलुलोटयि
५ अलुलोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लुलोटयिषाम्बभू- व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लुलोटयिषाञ्चकार लुलोटयिषामास
७ लुलोटयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लुलोटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लुलोटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लुलोटयिषि
ष्या--मि वः मः (अलुलोटयिषिष्या-व म
१० अलुलोटयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त

## १७८२ घटण् ( घट् ) भासार्थः ।

१ जिघाटयिषति तः न्ति सि थः थ जिघाटयिषामि वः
२ जिघाटयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ जिघाटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघाटयिषा-णि व म षा-व म
४ अजिघाटयिष त् ताम् न् : तम् त म् अजिघाटयि
५ अजिघाटयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिघाटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिघाटयिषाञ्चकार जिघाटयिषाम्बभूव
७ जिघाटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघाटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघाटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिघाटयि
षिष्या मि व मः (अजिघाटयिषिष्या-व म
१० अजिघाटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १७८३ घटुण ( घण्ट् ) भासार्थः

१ जिघण्टयिषति तः न्ति सि थः थ जिघण्टयिषामि वः
२ जिघण्टयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जिघण्टयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिघण्टयिषा-णि व म (षा-व म
४ अजिघण्टयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिघण्टयि
५ अजिघण्टयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम
६ जिघण्टयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
जिघण्टयिषाम्बभूव जिघण्टयिषामास
७ जिघण्टयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिघण्टयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिघण्टयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ जिघण्टयि
षिष्य-मि वः मः (अजिघण्टयिषिष्या-व म
१० अजिघण्टयिषिष्य-त ताम न् : तम त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १७८४ वृतण् ( वृत् ) भासार्थः

१ विवर्तयिषति तः न्ति सि थः थ विवर्तयिषामि वः

२ विवर्तयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः

३ विवर्तयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्तयिषा-णि व म ( षा-व म

४ अविवर्तयिषत् ताम् न् : तम् त म् अविवर्तयि

५ अविवर्तयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम

६ विवर्तयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क कार कर कृव
विवर्तयिषाम्बभूव विवर्तयिषामास

७ विवर्तयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ विवर्तयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ विवर्तयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ विवर्तयिषि
ष्य-मि वः मः ( अविवर्तयिषिष्या-व म

१० अविवर्तयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७८६ नदण् (नद्) भासार्थः

१ निनादयिष-ति तः न्ति सि थः थ निनादयिषा-मि

२ निनादयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म ( वः मः

३ निनादयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनादयिषा-णि व म षा-व म

४ अनिनादयिष-त् ताम् न् तम् त म् अनिनादयि

५ अनिनादयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ निनादयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
निनादयिषाञ्चकार निनादयिषामास

७ निनादयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ निनादयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ निनादयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ निनादयि
षिष्या मि वः मः (अनिनादयिषिष्या -व म

१० अनिनादयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### १७८५ पुथुण ( पुथ् ) भासार्थः

१ पुपोथयिष-ति तः न्ति सि थः थ पुपोथयिषा-मि वः

२ पुपोथयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व न [मः

३ पुपोथयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपोथयिषा-णि व म षा-व म

४ अपुपोथयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपुपोथयि

५ अपुपोथयि-षीत षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ पुपोथयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पुपोथयिषाञ्चकार पुपोथयिषामास

७ पुपोथयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ पुपोथयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ पुपोथयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पुपोथयिषि
ष्या-मि व मः (अपुपोथयिषिष्या- व म

१० अपुपोथयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १७८७ वृधण् ( वृध् ) भासार्थः ।

१ विवर्धयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्धयिषामि वः

२ विवर्धयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म (मः

३ विवर्धयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवर्धयिषा-णि व म षा-व म

४ अविवर्धयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्धयि

५ अविवर्धयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ विवर्धयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवर्धयिषाञ्चकार विवर्धयिषाम्बभूव

७ विवर्धयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ विवर्धयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ विवर्धयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्धयि
षिष्या-मि व मः ( अविवर्धयिषिष्या-व म

१० अविवर्धयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९८८ गुपण् ( गुप् ) भासार्थः

१ जुगोपयिषति तः न्ति सि थः थ जुगोपयिषामि वः
२ जुगोपयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ जुगोपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगोपयिषा-णि व् म (षा व म
४ अजुगोपयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुगोपयि
५ अजुगोपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगोपयिषाम्बभू- व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुगोपयिषाञ्चकार जुगोपयिषामास
७ जुगोपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगोपयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगोपयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगोपयिषि
ष्या--मि वः मः ( अजुगोपयिषिष्या-व म
१० अजुगोपयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त

## १७९० कुपण् ( कुप् ) भासार्थः

१ चुकोपयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकोपयिषा-मि वः
२ चुकोपयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ चुकोपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकोपयिषा-णि व म -व म
४ अचुकोपयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकोपयिष
५ अचुकोपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ चुकोपयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चुकोपयिषाम्बभूव चुकोपयिषामास
७ चुकोपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकोपयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकोपयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकोपयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचुकोपयिषिष्या-व म
१० अचुकोपयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

## १७८९ धूपण् ( धूप् ) भासार्थः।

१ दुधूपयिष-ति तः न्ति सि थः थ दुधूपयिषा-मि
२ दुधूपयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ दुधूपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुधूपयिषा-णि व म व म
४ अदुधूपयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदुधूपयिषा
५ अदुधूपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ दुधूपयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
दुधूपयिषाम्बभूव दुधूपयिषामास
७ दुधूपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधूपयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधूपयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ दुधूपयिषि-
ष्या मि वः मः ( अदुधूपयिषिष्या-व म
१० अदुधूपयिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

## १७९१ चीवण् ( चीव् ) भासार्थः।

१ चिचीवयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचीवयिषामि
२ चिचीवयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ चिचीवयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचीवयिषा-णि व म -व म
४ अचिचीवयिषत ताम् न् : तम् त म् अचिचीवयिषा
५ अचिचीवयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ चिचीवयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
चिचीवयिषाम्बभूव चिचीवयिषामास
७ चिचीवयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचीवयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचीवयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचीवयि
षिष्या- मि वः मः ( अचिचीवयिषिष्या-व म
१० अचिचीवयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७९२ दशुण् ( दंश् ) भासार्थः ।

१ दिदंशयिष–ति तः न्ति सि थः थ दिदंशयिषा-मि
२ दिदंशयिषे–त ताम् युः ः तम् त यम् व म (वः मः
३ दिदंशयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात तम् त
दिदंशयिषा–णि व म व म
४ अदिदंशयिष–त् ताम् न् ः तम् त म् अदिदंशयिषा
५ अदिदंशयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कार कृम कृव
६ दिदंशयिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथु क कार
दिदंशयिषाम्बभूव दिदंशयिषामास
७ दिदंशयिष्या–त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदंशयिषिता– ” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदंशयिषिष्यति तः न्ति सिथः थ दिदंशयिषिष्या मि वः मः ( अदिदंशयिषिष्या–व म
१० अदिदंशयिषिष्य–त ताम् न ः तम त म्

१७९४ त्रसुण् ( त्रंस ) भासार्थः ।

१ तित्रंसयिष–ति तः न्ति सि थः थ तित्रंसयिषामि
२ तित्रंसयिषे त ताम् युः ः तम् त यम् व म [वः मः
३ तित्रंसयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
तित्रंसयिषा–णि व म –व म
४ अतित्रंसयिषत ताम् न् तम् त म् अतित्रंसयिषा
५ अतित्रंसयि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ तित्रंसयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
तित्रंसयिषाम्बभूव तित्रंसयिषामास
७ तित्रंसयिष्या–त स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तित्रंसयिषिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तित्रंसयिषिष्य ति त न्ति सि थः थ तित्रंसयिषिष्या मि वः मः अतित्रंसयिषिष्या व म
१० अतित्रंसयिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म्

१७९३ कुशुण् ( कुंश् ) भासार्थः

१ चुकुंशयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुंशयिषा-मि वः
२ चुकुंशयिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म ( मः
३ चुकुंशयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
चुकुंशयिषा–णि व म –व म
४ अचुकुंशयिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अचुकुंशयिष
५ अचुकुंशयि पीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ चुकुंशयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चुकुंशयिषाम्बभूव चुकुंशयिषामास
७ चुकुंशयिष्या त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुंशयिषिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुंशयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुकुंशयिषिष्या-मि वः मः ( अचुकुंशयिषिष्या–व म
१० अचुकुंशयिषिष्य–त् ताम् न् ः तम् त म

१७९५ पिसुण् (पिंस्) भासार्थः

१ पिपिंसयिष–ति तः न्ति सि थः थ पिपिंसयिषा–मि
२ पिपिंसयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ पिपिंसयिष–तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
पिपिंसयिषा–णि व म षा-व म
४ अपिपिंसयिष-त् ताम् न् तम् त म् अपिपिंसयि
५ अपिपिंसयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपिंसयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथु व व विव विम
पिपिंसयिषाञ्चकार पिपिंसयिषामास
७ पिपिंसयिष्या–त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपिंसयिषिता–” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपिंसयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिपिंसयिषिष्या मि वः मः (अपिपिंसयिषिष्या -व म
१० अपिपिंसयिषिष्य–त ताम् न् ः तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१७९६ कुसुण् ( कुंस् ) भासार्थः

१ चुकुंसयिष–ति तः न्ति सि थः थ चुकुंसयिषा–मि वः
२ चुकुंसयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म [ मः
३ चुकुंसयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुंसयिषा–णि व म व म
४ अचुकुंसयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुंसयिषा
( षिष्व षिष्म
५ अचुकुंसयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
चुकुंसयिषाञ्चकार चुकुंसयिषाम्बभूव
६ चुकुंसयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ चुकुंसयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुंसयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुंसयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चुकुंसयि
षिष्या–मि वः मः ( अचुकुंसयिषिष्या व म
१० अचुकुंसयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१७९७ दसुण् ( दंस् ) भासार्थः

१ दिदंशयिष ति तः न्ति सि थः थ दिदंशयिषा मि वः
२ दिदंशयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ दिदंशयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदंशयिषा–णि व म [ व म
४ अदिदंशयिष त् ताम् न् : तम् त म् अदिदंशयिषा
५ अदिदंशयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदंशयिषामास सतु सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदंशयिषाञ्चकार दिदंशयिषाम्बभूव
७ दिदंशयिष्या त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदंशयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदंशयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिदंशयिषि
ष्या–मि वः मः ( अदिदंशयिषिष्या–व म
१० अदिदंशयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१७९८ बर्हण् ( बर्ह् ) भासार्थः ।

१ विबर्हयिष–ति तः न्ति सि थः थ विबर्हयिषा–मि
२ विबर्हयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ विबर्हयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विबर्हयिषा–णि व म ( व म
४ अविबर्हयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविबर्हयिषा
५ अविबर्हयि–षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ विबर्हयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विबर्हयिषाञ्चकार विबर्हयिषामास
७ विबर्हयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विबर्हयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विबर्हयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विबर्हयिषि–
ष्या–मि वः मः ( अविबर्हयिषिष्या–व म
१० अविबर्हयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

+षिष्टाम्, षिषुः, षीः, षिष्टम्,
षिष्ट, षिषम्, षिष्व, षिष्म

१७९९ बृहुण् ( बृंह् ) भासार्थः

१ बिबृंहयिष ति तः न्ति सि थः थ बिबृंहयिषा मि वः
२ बिबृंहयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ बिबृंहयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिबृंहयिषा–णि व म व म
४ अबिबृंहयिष त् ताम् न् : तम् त म् अबिबृंहयिषा
५ अबिबृंहयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिबृंहयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
बिबृंहयिषाञ्चकार बिबृंहयिषाम्बभूव
७ बिबृंहयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिबृंहयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिबृंहयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ बिबृंहयिषि
ष्या–मि वः मः (अबिबृंहयिषिष्या–व म
१० अबिबृंहयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८०० वह्लण् ( वल्ह् ) भासार्थः ।

१ विवह्लयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवह्लयिषा-मि
२ विवह्लयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ विवह्लयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवह्लयिषा-णि व म ( व म
४ अविवह्लयिष-त् ताम् न्ः तम् त म् अविवह्लयिषा
५ अविवह्लयि-षीत् ~~षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्~~
~~षिष्व षिष्म~~
६ विवह्लयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवह्लयिषाञ्चकार विवह्लयिषामास
७ विवह्लयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवह्लयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवह्लयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवह्लयिषिष्या-मि वः मः (अविवह्लयिषिष्या-व म
१० अविवह्लयिषिष्य-त् ताम् न्ः तम् त म्
+षिष्टाम्, षिषुः, षीः, षिष्टम्,
षिष्ट, षिषम्, षिष्व, षिष्म

### १८०१ अहुण् ( अंह् ) भासार्थः

१ अञ्जिहयिष-ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिहयिषा-मि वः
२ अञ्जिहयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [ मः
३ अञ्जिहयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्जिहयिषा-णि व म व म
४ आञ्जिहयिष-त् ताम् न्ः तम् त म् आञ्जिहयिषा-
( षिष्व षिष्म
५ आञ्जिहयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
अञ्जिहयिषाञ्चकार अञ्जिहयिषाम्बभूव
६ अञ्जिहयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ अञ्जिहयिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्जिहयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अञ्जिहयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिहयिषिष्या-मि वः मः (आञ्जिहयिषिष्या व म
१० आञ्जिहयिषिष्य-त् ताम् न्ः तम् त म्

### १८०२ वहुण् ( वंह् ) भासार्थः

१ विवंहयिषति तः न्ति सि थः थ विवंहयिषा मि वः
२ विवंहयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ विवंहयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवंहयिषा-णि व म व म
४ अविवंहयिषत् ताम् न्ः तम् त म् अविवंहयिषा
५ अविवंहयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवंहयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
विवंहयिषाञ्चकार विवंहयिषाम्बभूव
७ विवंहयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवंहयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवंहयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ विवंहयिषिष्या-मि वः मः (अविवंहयिषिष्या-व म
१० अविवंहयिषिष्य-त् ताम् न्ः तम् त म्

### १८०३ महुण् ( मंह् ) भासार्थः

१ मिमंहयिषति तः न्ति सि थः थ मिमंहयिषा मि वः
२ मिमंहयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ मिमंहयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमंहयिषा-णि व म [ व म
४ अमिमंहयिषत् ताम् न्ः तम् त म् अमिमंहयिषा
५ अमिमंहयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमंहयिषामास सतु सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमंहयिषाञ्चकार मिमंहयिषाम्बभूव
७ मिमंहयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमंहयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमंहयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमंहयिषिष्याः-मि वः मः (अमिमंहयिषिष्या-व म
१० अमिमंहयिषिष्य-त् ताम् न्ः तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८०४ यृणि ( यृ ) जुगुप्सायाम्

१ यियावयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ यियावयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ यियावयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अयियावयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अयियावयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ यियावयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
यियावयिषाम्बभूव यियावयिषामास (वहि महि
७ यियावयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ यियावयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ यियावयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अयियावयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८०६ वञ्चिण ( वञ्च् ) प्रलम्भने

१ विवञ्चयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवञ्चयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवञ्चयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवञ्चयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवञ्चयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवञ्चयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवञ्चयिषाम्बभूव विवञ्चयिषामास (वहि महि
७ विवञ्चयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ विवञ्चयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवञ्चयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवञ्चयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८०५ गॄणी ( गॄ ) विज्ञाने

१ जिगारयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगारयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगारयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिगारयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगारयिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगारयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिगारयिषाम्बभूव जिगारयिषामास (वहि महि
७ जिगारयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ जिगारयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगारयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिगारयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८०७ कुटिण् ( कुट् ) प्रतापने

१ चुकोटयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकोटयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकोटयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुकोटयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अचुकोटयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुकोटयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुकोटयिषाम्बभूव चुकोटयिषामास [य वहि महि
७ चुकोटयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ चुकोटयिषिता-" रौ रः सेः साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकोटयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुकोटयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्व

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८०८ मदिण् ( मद् ) तृप्तियोगे

१ **मिमादयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमादयिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमादयि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अमिमादयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमादयिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमादयिषाञ्च**क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**मिमादयिषाम्बभूव मिमादयिषामास** (वहि महि
७ **मिमादयिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ **मिमादयिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमादयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमादयिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्

### १८०९ विदिण् (विद्) चेतनाख्याननिवासेषु

१ **विवेदयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवेदयिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवेदयि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवेदयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवेदयिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवेदयिषाञ्च**क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**विवेदयिषाम्बभूव विवेदयिषामास** (वहि महि
७ **विवेदयिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ **विवेदयिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवेदयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवेदयिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्

### १८१० मनिण् ( मन् ) स्तम्भे

१ **मिमानयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **मिमानयिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **मिमानयि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अमिमानयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ **अमिमानयिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **मिमानयिषाञ्च**क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**मिमानयिषाम्बभूव मिमानयिषामास**[य वहि महि
७ **मिमानयिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ **मिमानयिषिता**-" रौ रः से: साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **मिमानयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अमिमानयिषि**ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्व

### १८११ वलिण् ( वल् ) आभण्डने

१ **विवालयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **विवालयिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **विवालयि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अविवालयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अविवालयिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **विवालयिषाञ्च**क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
**विवालयिषाम्बभूव विवालयिषामास** (वहि महि
७ **विवालयिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ **विवालयिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **विवालयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अविवालयिषि**ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८१२ भलिण् ( भल् ) आभण्डने

१ बिभालयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ बिभलयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ बिभालयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अबिभालयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अबिभालयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ बिभालयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
बिभालयिषाम्बभूव बिभालयिषामास (वहि महि
७ बिभालयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ बिभालयिषिता–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ बिभालयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अबिभालयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८१४ वृषिण् ( वृष् ) शक्तिबन्धे

१ विवर्षयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवर्षयिषि–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवर्षयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अविवर्षयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अविवर्षयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवर्षयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवर्षयिषाम्बभूव विवर्षयिषामास[य वहि महि
७ विवर्षयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ विवर्षयिषिता–" रौ र से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवर्षयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवर्षयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्व

### १८१३ दिविण् ( दिव् ) परिकूजने

१ दिदेवयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदेवयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदेवयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अदिदेवयि–षत षेताम् षन्त षथाः षथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदेवयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदेवयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिदेवयिषाम्बभूव दिदेवयिषामास (वहि महि
७ दिदेवयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ दिदेवयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदेवयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदेवयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८१५ कुत्सिण् ( कुत्स् ) अवक्षेपे

१ चुकुत्सयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकुत्सयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकुत्सयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुकुत्सयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुकुत्सयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुकुत्सयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुकुत्सयिषाम्बभूव चुकुत्सयिषामास (वहि महि
७ चुकुत्सयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ चुकुत्सयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकुत्सयिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुकुत्सयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८१६ लक्षिण् ( लक्ष् ) आलोचने

१ लिलक्षयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलक्षयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलक्षयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलिलक्षयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलक्षयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ लिलक्षयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
लिलक्षयिषाम्बभूव लिलक्षयिषामास (वहि महि
७ लिलक्षयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ लिलक्षयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलक्षयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलिलक्षयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८१७ हिष्किण् ( हिष्क् ) हिंसायाम्

१ जिहिष्कयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिहिष्कयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिहिष्कयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजिहिष्कयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिहिष्कयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिहिष्कयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जिहिष्कयिषाम्बभूव जिहिष्कयिषामास (वहि महि
७ जिहिष्कयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ जिहिष्कयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिहिष्कयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिहिष्कयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८१८ किष्कण् ( किष्क् ) हिंसायाम्

१ चिकिष्कयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चिकिष्कयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चिकिष्कयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचिकिष्कयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अचिकिष्कयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चिकिष्कयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चिकिष्कयिषाम्बभूव चिकिष्कयिषामास [वहि महि
७ चिकिष्कयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ चिकिष्कयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चिकिष्कयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्व ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचिकिष्कयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८१९ निष्किण् ( निष्क् ) परिमाणे

१ निनिष्कयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ निनिष्कयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ निनिष्कयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अनिनिष्कयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अनिनिष्कयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ निनिष्कयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
निनिष्कयिषाम्बभूव निनिष्कयिषामास (वहि महि
७ निनिष्कयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
निनिष्कयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ निनिष्कयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अनिनिष्कयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८२० तर्जिण् ( तर्ज् ) संतर्जने

१ तितर्जयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितर्जयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितर्जयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितर्जयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितर्जयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ तितर्जयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितर्जयिषाञ्चक्रे तितर्जयिषाम्बभूव [वहि महि
७ तितर्जयिषिषो-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ तितर्जयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितर्जयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितर्जयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८२१ कूटिण् ( कूट् ) अप्रमादे

१ चुकूटयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकूटयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकूटयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुकूटयि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अचुकूटयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम
६ चुकूटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकूटयिषाञ्चक्रे चुकूटयिषामास (वहि महि
७ चुकूटयिषिषी ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ चुकूटयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकूटयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुकूटयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८२२ त्रुटि – ( त्रुट् ) छेदने

१ तुत्रोटयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तुत्रोटयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तुत्रोटयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतुत्रोटयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतुत्रोटयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ तुत्रोटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तुत्रोटयिषाञ्चक्रे तुत्रोटयिषाम्बभूव (वहि महि
७ तुत्रोटयिषिषीष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ तुत्रोटयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तुत्रोटयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतुत्रोटयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८२३ शठिण् ( शठ् ) श्लाघायाम्

१ शिशाठयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशाठयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशाठयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशाठयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशाठयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् इढ्वम् ध्वम्
६ शिशाठयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशाठयिषाञ्चकार शिशाठयिषामास वहि महि
७ शिशाठयिषिषी-ष्ट याताम रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ शिशाठयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशाठयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशाठयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १८२४ कूणिण् ( कूण् ) संकोचने

१ चुकूणयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ चुकूणयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ चुकूणयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ अचुकूणयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ अचुकूणयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम

६ चुकूणयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम चुकूणयिषाञ्चक्रे चुकूणयिषामास (वहि महि

७ चुकूणयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य

८ चुकूणयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ चुकूणयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० अचुकूणयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

## १८२५ तूणिण ( तूण ) पूरणे

१ तुतूणयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ तुतूणयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ तुतूणयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ अतुतूणयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ अतुतूणयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ तुतूणयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम तुतूणयिषाञ्चक्रे तुतूणयिषाम्बभूव (वहि महि

७ तुतूणयिषिषीष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य

८ तुतूणयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ तुतूणयिषि- ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० अतुतूणयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

## १८२६ बुभ्रूण ( भ्रूण् ) आशायाम्

१ बुभ्रूणयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ बुभ्रूणयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि

३ बुभ्रूणयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ अबुभ्रूणयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ अबुभ्रूणयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्

६ बुभ्रूणयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम बुभ्रूणयिषाञ्चक्रे बुभ्रूणयिषाम्बभूव [वहि महि

७ बुभ्रूणयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य

८ बुभ्रूणयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ बुभ्रूणयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० अबुभ्रूणयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम्

## १८२७ चितिण् ( चित् ) संवेदने

१ चिचेतयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे

२ चिचेतयिषे-त याताम् रन् था याथाम् ध्वम य वहि महि

३ चिचेतयि-षताम षेताम षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै

४ अचिचेतयि षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि

५ अचिचेतयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम ड्ढ्वम् ध्वम्

६ चिचेतयिषाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः व व विव विम चिचेतयिषाञ्चकार चिचेतयिषामास वहि महि

७ चिचेतयिषिषी-ष्ट याताम रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य

८ चिचेतयिषिता " रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे

९ चिचेतयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि

१० अचिचेतयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८२८ वस्तिण् ( वस्त् ) अर्दने

१ विवस्तयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवस्तयिषे– त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवस्तयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अविवस्तयि–षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवस्तयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवस्तयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम विवस्तयिषाञ्चक्रे विवस्तयिषामास (वहि महि
७ विवस्तयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ विवस्तयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवस्तयिषि ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवस्तयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्

### १८३० डपिण् ( डप् ) संघाते

१ डिडापयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डिडापयिषे– त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ डिडापयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अडिडापयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अडिडापयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ डिडापयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम डिडापयिषाञ्चक्रे डिडापयिषाम्बभूव [वहि महि
७ डिडापयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ डिडापयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डिडापयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडिडापयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८२९ गन्धिण ( गन्ध् ) अर्दने

१ जिगन्धयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जिगन्धयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जिगन्धयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम षै षावहै षामहै
४ अजिगन्धयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजिगन्धयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जिगन्धयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम जिगन्धयिषाञ्चक्रे जिगन्धयिषाम्बभूव (वहि महि
७ जिगन्धयिषिषीष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ जिगन्धयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जिगन्धयिषि– ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजिगन्धयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम

### १८३१ डिपिण ( डिप् ) संघाते

१ डिडेपयि– षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डिडेपयिषे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ डिडेपयि–षताम षेताम षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अडिडेपयि– षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अडिडेपयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ डिडेपयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम डिडेपयिषाञ्चक्रे डिडेपयिषामास वहि महि
७ डिडेपयिषिषी–ष्ट याताम रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ डिडेपयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डिडेपयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडिडेपयिषि ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८३२ डम्पिण् ( डम्प् ) संघाते

१ डिडम्पयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डिडम्पयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ डिडम्पयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अडिडम्पयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अडिडम्पयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ डिडम्पयिषाम्बभू-व वतु वु विथ वथुः व व विव विम डिडम्पयिषाञ्चक्रे डिडम्पयिषामास ( वहि महि
७ डिडम्पयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ डिडम्पयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डिडम्पयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडिडम्पयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८३४ डम्भिण ( डम्भ् ) संघाते

१ डिडम्भयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डिडम्भयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ डिडम्भयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अडिडम्भयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अडिडम्भयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ डिडम्भयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम डिडम्भयिषाञ्चक्रे डिडम्भयिषाम्बभूव [वहि महि
७ डिडम्भयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ डिडम्भयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डिडम्भयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडिडम्भयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम्

### १८३३ डिम्पण ( डिम्प् ) संघाते

१ डिडिम्पयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डिडिम्पयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ डिडिम्पयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम षै षावहै षामहै
४ अडिडिम्पयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अडिडिम्पयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ डिडिम्पयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम डिडिम्पयिषाञ्चक्रे डिडिम्पयिषाम्बभूव (वहि महि
७ डिडिम्पयिषिषीष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ डिडिम्पयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डिडिम्पयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडिडिम्पयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८३५ डिम्भिण ( डिम्भ् ) संघाते

१ डिडिम्भयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ डिडिम्भयिषे त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम य वहि महि
३ डिडिम्भयि-षताम षेताम षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अडिडिम्भयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अडिडिम्भयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम ड्ढ्वम् ध्वम्
६ डिडिम्भयिषाम्बभू-व वतु वुः विथ वथुः व व विव विम डिडिम्भयिषाञ्चकार डिडिम्भयिषामास वहि महि
७ डिडिम्भयिषिषी-ष्ट याताम रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ डिडिम्भयिषिता -" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ डिडिम्भयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अडिडिम्भयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८३६ स्यमिण् ( स्यम् ) वितर्के

१ सिस्यामयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ सिस्यामयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ सिस्यामयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ असिस्यामयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ असिस्यामयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ सिस्यामयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
सिस्यामयिषाम्बभूव सिस्यामयिषामास (वहि महि
७ सिस्यामयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ सिस्यामयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ सिस्यामयिषि-ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिस्यामयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम्

### १८३८ कुस्मिण् ( कुस्म् ) कुस्मयने

१ चुकुस्मयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकुस्मयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकुस्मयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै यावहै षामहै
४ अचुकुस्मयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अचुकुस्मयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुकुस्मयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
चुकुस्मयिषाम्बभूव चुकुस्मयिषामास [वहि महि
७ चुकुस्मयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ चुकुस्मयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकुस्मयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्व ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुकुस्मयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८३७ शमिण् ( शम् ) आलोचने

१ शिशामयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शिशामयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शिशामयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अशिशामयि-षत षेताम् षन्त षथाः षथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अशिशामयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शिशामयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शिशामयिषाम्बभूव शिशामयिषामास (वहि महि
७ शिशामयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ शिशामयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शिशामयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशिशामयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १८३९ गूरिण् ( गूर् ) उद्यमे

१ जुगूरयि-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ जुगूरयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ जुगूरयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अजुगूरयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अजुगूरयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ जुगूरयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
जुगूरयिषाम्बभूव जुगूरयिषामास (वहि महि
७ जुगूरयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ जुगूरयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ जुगूरयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अजुगूरयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१८४० तन्त्रण् ( तन्त्र् ) कुटुम्बधारणे

१ तितन्त्रयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितन्त्रयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितन्त्रयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अतितन्त्रयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अतितन्त्रयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितन्त्रयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम तितन्त्रयिषाञ्चक्रे तितन्त्रयिषाम्बभूव [वहि महि
७ तितन्त्रयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ तितन्त्रयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितन्त्रयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अतितन्त्रयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

१८४२ ललिण् ( लल् ) ईप्सायाम्

१ लिलालयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ लिलालयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ लिलालयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अलिलालयि-षत षेताम् षन्त षथा षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अलिलालयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ लिलालयिषाम्बभू-व वतुः वु विथ वथुः व व विव विम लिलालयिषाञ्चक्रे लिलालयिषामास (वहि महि
७ लिलालयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ लिलालयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ लिलालयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अलिलालयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

१८४१ मन्त्रिण् ( मन्त्र् ) गुप्तभाषणे

१ मिमन्त्रयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमन्त्रयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमन्त्रयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अमिमन्त्रयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमन्त्रयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमन्त्रयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम मिमन्त्रयिषाञ्चक्रे मिमन्त्रयिषाम्बभूव (वहि महि
७ मिमन्त्रयिषिषीष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ मिमन्त्रयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमन्त्रयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमन्त्रयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

१८४३ स्पशिण् ( स्पश् ) ग्रहणश्लेषणयोः

१ पिस्पाशयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिस्पाशयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिस्पाशयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिस्पाशयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिस्पाशयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिस्पाशयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम पिस्पाशयिषाञ्चकार पिस्पाशयिषामास वहि महि
७ पिस्पाशयिषिषी-ष्ट याताम रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ पिस्पाशयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिस्पाशयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिस्पाशयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १८४४ दशिण् ( दंश ) दर्शने

१ दिदंशयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदंशयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदंशयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदंशयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदंशयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदंशयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिदंशयिषाम्बभूव दिदंशयिषामास (वहि महि
७ दिदंशयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ दिदंशयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदंशयिषि–ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अदिदंशयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम्

## १८४५ दंसिण् ( दंस् ) दर्शने च

१ दिदंसयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ दिदंसयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ दिदंसयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अदिदंसयि–षत षेताम् षन्त षथाः षथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अदिदंसयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ दिदंसयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
दिदंसयिषाम्बभूव दिदंसयिषामास (वहि महि
७ दिदंसयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ दिदंसयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ दिदंसयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अदिदंसयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

१८४६ भर्त्सिण (भर्त्स्) संतर्जने बिभर्त्सयिषते इत्यादि

## १८४६ यक्षिण् ( यक्ष् ) पूजायाम्

१ यियक्षयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ यियक्षयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ यियक्षयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अयियक्षयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अयियक्षयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ यियक्षयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
यियक्षयिषाम्बभूव यियक्षयिषामास [वहि महि
७ यियक्षयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ यियक्षयिषिता–" रौ रः सेः साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ यियक्षयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यते ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्व ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अयियक्षयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

## १८४७ अङ्कण् ( अङ्क् ) लक्षणे

१ अञ्चिकयिषति तः न्ति सि थः थ अञ्चिकयिषामि वः
२ अञ्चिकयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ अञ्चिकयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्चिकयिषा–णि व म व म
४ आञ्चिकयिषत् ताम् न् : तम् त म् आञ्चिकयिषा
५ आञ्चिकयि–षीत् षिष्टाम् षिषु. षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अञ्चिकयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अञ्चिकयिषाञ्चकार अञ्चिकयिषाम्बभूव
७ अञ्चिकयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्चिकयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९अञ्चिकयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ अञ्चिकयिषि
ष्या–मि वः मः (आञ्चिकयिषिष्या–व म
१० आञ्चिकयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१८४९ श्लेष्कण ( श्लेष्क् ) दर्शने

१ बिश्लेष्कयिषति तः न्ति सि थः थ बिश्लेष्कयिषामि
२ बिश्लेष्कयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ बिश्लेष्कयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिश्लेष्कयिषा–णि व म ( यिषा व म
४ अबिश्लेष्कयिषत् ताम् न् : तम् त म् अबिश्लेष्क
५ अबिश्लेष्कयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (क्रम
६ बिश्लेष्कयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
बिश्लेष्कयिषाम्बभूव बिश्लेष्कयिषामास
७ बिश्लेष्कयिष्या–त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिश्लेष्कयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिश्लेष्कयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ बिश्लेष्कयि
षिष्य–मि वः मः (अबिश्लेष्कयिषिष्या व म
१० अबिश्लेष्कयिषिष्य–त् ताम न् : तम त म्

१८५० सुखण ( सुख् ) तत्क्रियायाम्

१ सुसुखयिष–ति त न्ति सि थ थ सुसुखयिषा–मि वः
२ सुसुखयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ सुसुखयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसुखयिषा–णि व म षा–व म
४ असुसुखयिष–त् ताम् न् : तम् त म् असुसुखयि
५ असुसुखयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सुसुखयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सुसुखयिषाञ्चकार सुसुखयिषामास
७ सुसुखयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसुखयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुसुखयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सुसुखयिषि
ष्या–मि व मः (असुसुखयिषिष्या–व म
१० असुसुखयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१८५१ दुःखण् ( दुःख् ) तत्क्रियायाम्

१ दुदुःखयिष–ति तः न्ति सि थः थ दुदुःखयिषा–मि
२ दुदुःखयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ दुदुःखयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुदुःखयिषा–णि व म षा–व म
४ अदुदुःखयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अदुदुःखयि
५ अदुदुःखयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दुदुःखयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दुदुःखयिषाञ्चकार दुदुःखयिषामास
७ दुदुःखयिष्या–त् स्ताम् सुः . स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुदुःखयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुदुःखयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ दुदुःखयि
षिष्या मि वः मः (अदुदुःखयिषिष्या–व म
१० अदुदुःखयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१८५२ अङ्कग् ( अङ्ग ) पद्लक्षणयोः

१ अञ्जिगयिष–ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिगयिषा–मि
२ अञ्जिगयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ अञ्जिगयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अञ्जिगयिषा–णि व म व म
४ आञ्जिगयिषत् ताम् न् : तम् त म् आञ्जिगयिषा
५ आञ्जिगयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ अञ्जिगयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
अञ्जिगयिषाम्बभूव अञ्जिगयिषामास
७ अञ्जिगयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अञ्जिगयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अञ्जिगयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ अञ्जिगयिषि
ष्या–मि वः मः ( आञ्जिगयिषिष्या–व म
१० आञ्जिगयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८५३ अघण् ( अघ् ) पापकरणे

१ अजिघयिषति तः न्ति सि थः थ अजिघयिषामि वः
२ अजिघयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म [मः
३ अजिघयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अजिघयिषा-णि व म (षा व म
४ आजिघयिष-त् ताम् न् तम् त म् आजिघयि
५ आजिघयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अजिघयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अजिघयिषाञ्चकार अजिघयिषामास
७ अजिघयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अजिघयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अजिघयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अजिघयिषिष्या--मि वः मः ( आजिघयिषिष्या-व म
१० आजिघयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

### १८५५ सूचण् ( सूच् ) पैशून्ये

१ सुसूचयिष ति तः न्ति सि थः थ सुसूचयिषा-मि वः
२ सुसूचयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ सुसूचयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसूचयिषा-णि व म -व म
४ असुसूचयिष-त् ताम् न् : तम् त म् असुसूचयिष
५ असुसूचयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ सुसूचयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
सुसूचयिषाम्बभूव सुसूचयिषामास
७ सुसूचयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसूचयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुसूचयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सुसूचयिषिष्या-मि वः मः ( असुसूचयिषिष्या-व म
१० असुसूचयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### १८५४ रचण् ( रच् ) प्रतियत्ने

१ रिरचयिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरचयिषा-मि
२ रिरचयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ रिरचयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
रिरचयिषा-णि व म व म
४ अरिरचयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरचयिषा
५ अरिरचयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ रिरचयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
रिरचयिषाम्बभूव रिरचयिषामास
७ रिरचयिष्या-त् स्ताम् सुः . स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरचयिषिता- " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ रिरचयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ रिरचयिषिष्या मि वः मः ( अरिरचयिषिष्या-व म
१० अरिरचयिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्

### १८५६ भाजण् ( भाज् ) पृथक् कर्मणि

१ बिभाजयिष-ति तः न्ति सि थः थ बिभाजयिषामि
२ बिभाजयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ बिभाजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभाजयिषा-णि व म -व म
४ अबिभाजयिषत ताम् न् : तम् त म् अबिभाजयिषा
५ अबिभाजयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ बिभाजयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
बिभाजयिषाम्बभूव बिभाजयिषामास
७ बिभाजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ बिभाजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ बिभाजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ बिभाजयिषिष्या-मि वः मः ( अबिभाजयिषिष्या-व म
१० अबिभाजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १८५७ सभाजण् ( सभाज् ) प्रीतिसेवनयोः

१ सिसभाजयिषति तः न्ति सि थः थ सिसभाजयिषामि वः
२ सिसभाजयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ सिसभाजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम्
सिसभाजयिषा-णि व म (यिषा व म
४ असिसभाजयिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिसभाज
५ असिसभाजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसभाजयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसभाजयिषाञ्चकार सिसभाजयिषामास
७ सिसभाजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसभाजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसभाजयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ सिसभायिजषिष्या-मि वः मः (असिसभाजयिषिष्या-व म
१० असिसभाजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १८५९ लजुण् ( लञ्ज ) प्रकाशने

१ लिलञ्जयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलञ्जयिषामि वः
२ लिलञ्जयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ लिलञ्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलञ्जयिषा-णि व म षा-व म
४ अलिलञ्जयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलञ्जयि
५ अलिलञ्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलञ्जयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलञ्जयिषाञ्चकार लिलञ्जयिषाम्बभूव
७ लिलञ्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलञ्जयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलञ्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलञ्जयिषिष्यामि व मः (अलिलञ्जयिषिष्या-व म
१० अलिलञ्जयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १८५८ लजण् ( लज् ) लजुण् प्रकाशने

१ लिलजयिष-ति तः न्ति सि थः थ लिलजयिषा-मि
२ लिलजयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ लिलजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलजयिषा-णि व म (षा-व म
४ अलिलजयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अलिलजयि
५ अलिलजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ लिलजयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
लिलजयिषाञ्चकार लिलजयिषामास
७ लिलजयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ लिलजयिषिष्या-मि वः मः (अलिलजयिषिष्या-व म
१० अलिलजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १८६० कूटण् ( कूट् ) दाहे

१ चुकूटयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकूटयिषा-मि वः
२ चुकूटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ चुकूटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकूटयिषा-णि व म [षा-व म
४ अचुकूटयिष-त् ताम् न् तम् त म् अचुकूटयि-
५ अचुकूटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चुकूटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चुकूटयिषाञ्चकार चुकूटयिषामास
७ चुकूटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ चुकूटयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ चुकूटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकूटयिषिष्या-मि वः मः (अचुकूटयिषिष्या-व म
१० अचुकूटयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८६१ पटण् ( पट ) ग्रन्थे

१ पिपटयिषति तः न्ति सि थः थ पिपटयिषा मि वः
२ पिपटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ पिपटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपटयिषा-णि व म [ व म
४ अपिपटयिषत् ताम् न् : तम् त म् अपिपटयिषा
५ अपिपटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपटयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपटयिषाञ्चकार पिपटयिषाम्बभूव
७ पिपटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपटयिषिष्या-मि वः मः ( अपिपटयिषिष्या-व म
१० अपिपटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १८६२ वटण् ( वट् ) ग्रन्थे

१ विवटयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवटयिषा-मि
२ विवटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ विवटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवटयिषा-णि व म ( व म
४ अविवटयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवटयिषा
५ अविवटयि-षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
* सिष्व सिष्म
६ विवटयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवटयिषाञ्चकार विवटयिषामास
७ विवटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवटयिषिष्या-मि वः मः ( अविवटयिषिष्या-व म
१० अविवटयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

* षिष्टाम् , षिषुः, षीः, षिष्टम् , षिष्ट, षिषम्, षिष्व, षिष्म,

### १८६३ खेटण् ( खेट् ) भक्षणे

१ चिखेटयिषति तः न्ति सि थः थ चिखेटयिषामि वः
२ चिखेटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ चिखेटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिखेटयिषा-णि व म व म
४ अचिखेटयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिखेटयिषा
५ अचिखेटयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिखेटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिखेटयिषाञ्चकार चिखेटयिषाम्बभूव
७ चिखेटयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिखेटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिखेटयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चिखेटयिषिष्या-मि वः मः (अचिखेटयिषिष्या-व म
१० अचिखेटयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १८६४ खोटण् ( खोट् ) क्षेपे

१ चुखोटयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुखोटयिषामि वः
२ चुखोटयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [ मः
३ चुखोटयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुखोटयिषा-णि व म व म
४ अचुखोटयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुखोटयिषा
( षिष्व षिष्म
५ अचुखोटयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
चुखोटयिषाञ्चकार चुखोटयिषाम्बभूव
६ चुखोटयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ चुखोटयिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुखोटयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुखोटयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुखोटयिषिष्या-मि वः मः ( अचुखोटयिषिष्या-व म
१० अचुखोटयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १८६५ पुटण् ( पुट् ) संसर्गे

१ पुपुटयिष–ति तः न्ति सि थः थ पुपुटयिषा–मि वः
२ पुपुटयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ पुपुटयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पुपुटयिषा–णि व म षा–व म
४ अपुपुटयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपुपुटयि
५ अपुपुटयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पुपुटयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पुपुटयिषाञ्चकार पुपुटयिषाम्बभूव
७ पुपुटयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पुपुटयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पुपुटयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पुपुयिषिष्या–
मि वः मः ( अपुपुटयिषिष्या–व म
१० अपुपुटयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

## १८६७ शठण् ( शठ् ) सम्यग् भाषणे

१ शिशाठयिषति तः न्ति सि थः थ शिशाठयिषामि वः
२ शिशाठयिषे–त् ताम युः : तम् त यम व म (मः
३ शिशाठयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम्
शिशाठयिषा–णि व म ( षा व म
४ अशिशाठयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अशिशाठयि
५ अशिशाठयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशाठयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशाठयिषाञ्चकार शिशाठयिषामास
७ शिशाठयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशाठयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशाठयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ शिशाठयिषि
ष्या–मि वः मः (अशिशाठयिषिष्या–व म
१० अशिशाठयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १८६६ वटुण् ( वण्ट् ) विभाजने

१ विवण्टयिषति तः न्ति सि थः थ विवण्टयिषामि वः
२ विवण्टयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ विवण्टयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवण्टयिषा–णि व म [षा–व म
४ अविवण्टयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविवण्टयि
५ अविवण्टयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवण्टयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवण्टयिषाञ्चकार विवण्टयिषामास
७ विवण्टयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ विवण्टयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ विवण्टयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवण्टयि
षिष्या–मि वः मः ( अविवण्टयिषिष्या–व म
१० अविवण्टयिषिष्य–त ताम् न् : तम् त म

## १८६८ श्वठण् ( श्वठ् ) सम्यग्भाषणे

१ शिश्वठयिष–ति तः न्ति सि थः थ शिश्वठयिषा–मि
२ शिश्वठयिषे त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ शिश्वठयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्वठयिषा–णि व म (षा–व म
४ अशिश्वठयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्वठयि
५ अशिश्वठयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्वठयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्वठयिषाञ्चकार शिश्वठयिषामास
७ शिश्वठयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्वठयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्वठयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ शिश्वठयिषि
ष्या–मि वः मः ( अशिश्वठयिषिष्या–व म
१० अशिश्वठयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१८६९ दण्डण् ( दण्ड् ) दण्डनिपातने

१ दिदण्डयिषति तः न्ति सि थः थ दिदण्डयिषा मि
२ दिदण्डयिषे-त ताम् युः ः तम् त यम् व म (वः मः
३ दिदण्डयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
दिदण्डयिषा-णि व म ( षा वम
४ अदिदण्डयिषत् ताम् न् ः तम् त म अदिदण्डयि
५ अदिदण्डयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम
६ दिदण्डयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
दिदण्डयिषाम्बभूव दिदण्डयिषामास
७ दिदण्डयिष्या-त् स्ताम सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदण्डयिषिता-'' रौ र. सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदण्डयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ दिदण्डयि
षिष्य-मि व. मः (अदिदण्डयिषिष्या व म
१० अदिदण्डयिषिष्य-त ताम् न् ः तम् त म्

१८७० व्रणण् ( व्रण् ) गात्रविचूर्णने

१ विव्रणयिष-ति त. न्ति सि थः थ विव्रणयिषा-मि वः
२ विव्रणयिषे-त् ताम् यु ः तम् त यम् व म [मः
३ विव्रणयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विव्रणयिषा-णि व म षा-व म
४ अविव्रणयिष-त् ताम् न्. तम् त म् अविव्रणयि
५ अविव्रणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विव्रणयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथु व व विव विम
विव्रणयिषाञ्चकार विव्रणयिषामास
७ विव्रणयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्रणयिषिता-'' रौ र सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्रणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विव्रणयिषि
ष्या मि व मः (अविव्रणयिषिष्या-व म
१० अविव्रणयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म्

१८७१ वर्णण् ( वर्ण् ) वर्णक्रियाविस्तारगुणवचनेषु

१ विवर्णयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्णयिषा-मि
२ विवर्णयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ विवर्णयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
विवर्णयिषा-णि व म षा-व म
४ अविवर्णयिष-त् ताम् न् ः तम् त म् अविवर्णयि
५ अविवर्णयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवर्णयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवर्णयिषाञ्चकार विवर्णयिषामास
७ विवर्णयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्णयिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्णयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवर्णयि
षिष्या मि वः मः (अविवर्णयिषिष्या-व म
१० अविवर्णयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म

१८७२ पर्णण् ( पर्ण् ) हरितभावे

१ पिपर्णयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्णयिषा-मि
२ पिपर्णयिषे-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म (वः मः
३ पिपर्णयिष-तु तात् ताम् न्तु '' तात् तम् त
पिपर्णयिषा-णि व म व म
४ अपिपर्णयिषत् ताम् न् ः तम् त म् अपिपर्णयिषा
५ अपिपर्णयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ पिपर्णयिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पिपर्णयिषाम्बभूव पिपर्णयिषामास
७ पिपर्णयिष्या-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपर्णयिषिता-'' रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपर्णयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्णयिषि-
ष्या-मि वः मः ( अपिपर्णयिषिष्या-व म
१० अपिपर्णयिषिष्य-त् ताम् न् ः तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८७३ कर्णण् ( कर्ण् ) भेदे

१ चिकर्णयिषति तः न्ति सि थः थ चिकर्णयिषा मि वः
२ चिकर्णयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ चिकर्णयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकर्णयिषा-णि व म [व म
४ अचिकर्णयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिकर्णयिषा
५ अचिकर्णयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकर्णयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकर्णयिषाञ्चकार चिकर्णयिषाम्बभूव
७ चिकर्णयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकर्णयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकर्णयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकर्णयिषि
ष्या-मि वः मः (अचिकर्णयिषिष्या व म
१० अचिकर्णयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १८७५ गणण् ( गण् ) संख्याने

१ जिगणयिषति तः न्ति सि थः थ जिगणयिषामि वः
२ जिगणयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जिगणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगणयिषा-णि व म व म
४ अजिगणयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिगणयिषा
५ अजिगणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगणयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिगणयिषाञ्चकार जिगणयिषाम्बभूव
७ जिगणयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगणयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ जिगणयिषि
ष्या-मि वः मः (अजिगणयिषिष्या-व म
१० अजिगणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १८७४ तूणण् ( तूण् ) संकोचने

१ तुतूणयिष-ति तः न्ति सि थः थ तुतूणयिषा-मि
२ तुतूणयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ तुतूणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तुतूणयिषा-णि व म (व म
४ अतुतूणयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतुतूणयिषा
५ अतुतूणयि-षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
* सिष्व सिष्म
६ तुतूणयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तुतूणयिषाञ्चकार तुतूणयिषामास
७ तुतूणयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तुतूणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तुतूणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तुतूणयिषि-
ष्या-मि वः मः (अतुतूणयिषिष्या-व म
१० अतुतूणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १८७६ कुणण् ( कुण् ) आमन्त्रणे

१ चुकुणयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुणयिषा-मि वः
२ चुकुणयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ चुकुणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चुकुणयिषा--णि व म व म
४ अचुकुणयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचुकुणयिषा
(षिष्व षिष्म
५ अचुकुणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
चुकुणयिषाञ्चकार चुकुणयिषाम्बभूव
६ चुकुणयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ चुकुणयिष्या-त् स्ताम् सु : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुणयि
षिष्या-मि वः मः (अचुकुणयिषिष्या व म
१० अचुकुणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

* षिष्टाम्, षिषुः, षीः, षिष्टम्, षिष्ट, षिषम्, षिष्व, षिष्म,

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८७७ गुणण् ( गुण् ) आमन्त्रणे

१ जुगुणयिष-ति तः न्ति सि थः थ जुगुणयिषा-मि वः
२ जुगुणयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जुगुणयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगुणयिषा-णि व म -व म
४ अजुगुणयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजुगुणयिष
५ अजुगुणयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ जुगुणयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
जुगुणयिषाम्बभूव जुगुणयिषामास
७ जुगुणयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगुणयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगुणयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जुगुणयिषिष्या-मि वः मः (अजुगुणयिषिष्या-व म
१० अजुगुणयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

### १८७८ केतण् ( केत् ) आमन्त्रणे

१ चिकेतयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकेतयिषा मि
२ चिकेतयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिकेतयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकेतयिषा-णि व म व म
४ अचिकेतयिष त् ताम् न् : तम् त म् अचिकेतयिषा
५ अचिकेतयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर कृम कृव
६ चिकेतयिषाञ्च-कार कतु नुः कर्थ कथुः क कार
चिकेतयिषाम्बभूव चिकेतयिषामास
७ चिकेतयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकेतयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकेतयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ चिकेतयिषिष्या-मि वः मः (अचिकेतयिषिष्या-व म
१० अचिकेतयिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म

### १८७९ पतण् ( पत् ) वा गतौ

१ पिपतयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपतयिषा-मि वः
२ पिपतयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ पिपतयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपतयिषा-णि व म (षा व म
४ अपिपतयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपतयि
५ अपिपतयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ पिपतयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपतयिषाञ्चकार पिपतयिषामास
७ पिपतयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपतयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपतयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपतयिषिष्या--मि वः मः (अपिपतयिषिष्या-व म
१० अपिपतयिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म्
पक्षे ( पॢ गतौ ( इतिवद्रूपम्

### १८८० वातण् ( वात् ) गतिसुखसेवनयोः

१ विवातयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवातयिषा-मि
२ विवातयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ विवातयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवातयिषा-णि व म -व म
४ अविवातयिष त् ताम् न् : तम् त म् अविवातयिषा
५ अविवातयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ विवातयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
विवातयिषाम्बभूव विवातयिषामास
७ विवातयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवातयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवातयिषिष्य-ति त. न्ति सि थः थ विवातयिषिष्या-मि वः मः (अविवातयिषिष्या-व म
१० अविवातयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१८८१ कथण् ( कथ् ) वाक्यप्रबन्धे

१ चिकथयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकथयिषा मि
२ चिकथयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिकथयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकथयिषा-णि व म व म
४ अचिकथयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिकथयिषा
५ अचिकथयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कार कृम कृव
६ चिकथयिषाञ्च-कार कतु कुः कर्थ कथु: क कार
चिकथयिषाम्बभूव चिकथयिषामास
७ चिकथयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकथयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ चिकथयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकथयि
षिष्या-मि वः मः ( अचिकथयिषिष्या-व म
१० अचिकथयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१८८२ श्रथण् ( श्रथ् ) दौर्बल्ये

१ शिश्रथयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्रथयिषामि वः
२ शिश्रथयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ शिश्रथयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रथयिषा-णि व म (षा व म
४ अशिश्रथयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रथयि
५ अशिश्रथयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ शिश्रथयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्रथयिषाञ्चकार शिश्रथयिषामास
७ शिश्रथयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रथयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रथयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रथयि
षिष्या--मि वः मः ( अशिश्रथयिषिष्या-व म
१[illegible] अशिश्रथयिषिष्य त् ताम न् : तम् त म्

१८८३ छेदण् ( छेद् ) द्वैधीकरणे

१ चिच्छेदयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छेदयिषामि
२ चिच्छेदयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ चिच्छेदयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छेदयिषा-णि व म -व म
४ अचिच्छेदयिषत ताम् न् : तम् त म् अचिच्छेदयिषा
५ अचिच्छेदयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ चिच्छेदयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
चिच्छेदयिषाम्बभूव चिच्छेदयिषामास
७ चिच्छेदयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छेदयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छेदयिषिष्य ति त न्ति सि थः थ चिच्छेदयि
षिष्या मि वः मः ( अचिच्छेदयिषिष्या व म
१० अचिच्छेदयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१८८४ गदण् ( गद् ) गर्जे

१ जिगदयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगदयिषा-मि वः
२ जिगदयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ जिगदयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगदयिषा-णि व म -व म
४ अजिगदयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिगदयिष
५ अजिगदयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ जिगदयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
जिगदयिषाम्बभूव जिगदयिषामास
७ जिगदयिष्या त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगदयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगदयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिगदयिषि
ष्या-मि वः मः ( अजिगदयिषिष्या-व म
१० अजिगदयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८८५ अन्धण् ( अन्ध् ) दृष्ट्युपसंहारे

१ अन्दिधयिषति तः न्ति सि थः थ अन्दिधयिषा मि
२ अन्दिधयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ अन्दिधयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अन्दिधयिषा–णि व म (षा–व म
४ आन्दिधयिष–त् ताम् न् : तम् त म् आन्दिधयि
५ आन्दिधयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (क्रम
६ अन्दिधयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
अन्दिधयिषाम्बभूव अन्दिधयिषामास
७ अन्दिधयिष्या–त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अन्दिधयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अन्दिधयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ अन्दिधयि
षिष्या–मि वः मः (आन्दिधयिषिष्या–व म
१० आन्दिधयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १८८६ स्तनण् ( स्तन् ) गर्जे

१ तिस्तनयिष–ति त. न्ति सि थ. थ तिस्तनयिषा मि वः
२ तिस्तनयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व न [मः
३ तिस्तनयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिस्तनयिषा–णि व म षा–व म
४ अतिस्तनयिष–त् ताम् न् तम् त म् अतिस्तनयि
५ अतिस्तनयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तिस्तनयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तिस्तनयिषाञ्चकार तिस्तनयिषामास
७ तिस्तनयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तनयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्तनयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तिस्तनयिषि
ष्या–मि व मः (अतिस्तनयिषिष्या–व म
१० अतिस्तनयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १८८७ ध्वनण् ( ध्वन् ) शब्दे

१ दिध्वनयिष–ति तः न्ति सि थः थ दिध्वनयिषा–मि
२ दिध्वनयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म ( वः मः
३ दिध्वनयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिध्वनयिषा–णि व म षा–व म
४ अदिध्वनयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अदिध्वनयि
५ अदिध्वनयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिध्वनयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
दिध्वनयिषाञ्चकार दिध्वनयिषामास
७ दिध्वनयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिध्वनयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिध्वनयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ दिध्वनयि
षिष्या–मि वः मः (अदिध्वनयिषिष्या–व म
१० अदिध्वनयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १८८८ स्तेनण् ( स्तेन् ) चौर्ये

१ तिस्तेनयिष–ति तः न्ति सि थः थ तिस्तेनयिषा–मि
२ तिस्तेनयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ तिस्तेनयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तिस्तेनयिषा–णि व म व म
४ अतिस्तेनयिष त् ताम् न् : तम् त म् अतिस्तेनयिषा
५ अतिस्तेनयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ तिस्तेनयिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
तिस्तेनयिषाम्बभूव तिस्तेनयिषामास
७ तिस्तेनयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तिस्तेनयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तिस्तेनयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ तिस्तेनयिषि
ष्या–मि वः मः ( अतिस्तेनयिषिष्या–व म
१० अतिस्तेनयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १८८९ ऊनण् ( ऊन् ) परिहाणे

१ ऊनिनयिष-ति तः न्ति सि थः थ ऊनिनयिषा-मि
२ ऊनिनयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ ऊनिनयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ऊनिनयिषा-णि व म ( षा-व म
४ औनिनयिष-त् ताम् न् : तम् त म् औनिनयि
५ औनिनयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ ऊनिनयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
ऊनिनयिषाम्बभूव ऊनिनयिषामास
७ ऊनिनयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ऊनिनयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ऊनिनयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ ऊनिनयिषिष्य-मि वः मः (औनिनयिषिष्या-व म
१० औनिनयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १८९१ रूपण् ( रूप् ) रूपक्रियायाम्

१ रुरूपयिष-ति तः न्ति सि थः थ रुरूपयिषा-मि
२ रुरूपयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म ( वः मः
३ रुरूपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरूपयिषा-णि व म षा-व म
४ अरुरूपयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरुरूपयि-
५ अरुरूपयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरूपयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथु. व व विव विम
रुरूपयिषाञ्चकार रुरूपयिषामास
७ रुरूपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरूपयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरूपयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ रुरूपयिषिष्या मि वः मः (अरुरूपयिषिष्या -व म
१० अरुरूपयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १८९० कृपण् ( कृप् ) दौर्बल्ये

१ चिकृपयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकृपयिषामि वः
२ चिकृपयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व न [मः
३ चिकृपयिष-तु तात् ताम् न्तु ' तात् तम् त
चिकृपयिषा-णि व म षा-व म
४ अचिकृपयिष-त् ताम् नः तम् त म् अचिकृपयि
५ अचिकृपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकृपयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिकृपयिषाञ्चकार चिकृपयिषामास
७ चिकृपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकृपयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकृपयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिकृपयिषिष्या-मि व मः (अचिकृपयिषिष्या-व म
१० अचिकृपयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १८९२ क्षपण् ( क्षप् ) लाभण प्रेरणे

१ चिक्षपयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षपयिषा-मि
२ चिक्षपयिषे-त् ताम् युः : तम त यम् व म (वः मः
३ चिक्षपयिष-तु तात् ताम न्तु " तात् तम् त
चिक्षपयिषा-णि व म व म
४ अचिक्षपयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिक्षपयिषा
५ अचिक्षपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ चिक्षपयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिक्षपयिषाम्बभूव चिक्षपयिषामास
७ चिक्षपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्षपयिषिता - " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्षपयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्षपयिषिष्या-मि वः मः ( अचिक्षपयिषिष्या-व म
१० अचिक्षपयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८९३ लाभण् ( लाभ् ) प्रेरणे

१ लिलाभयिषति तः न्ति सि थः थ लिलाभयिषामि वः
२ लिलाभयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ लिलाभयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
लिलाभयिषा–णि व म षा–व म
४ अलिलाभयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अलिलाभयि
५ अलिलाभयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६ लिलाभयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
लिलाभयिषाञ्चकार लिलाभयिषाम्बभूव
७ लिलाभयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलाभयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलाभयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ लिलाभयि
षिष्या–मि वः मः ( अलिलाभयिषिष्या–व म
१० अलिलाभयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

### १८९५ गोमण् ( गोम् ) उपलेपने

१ जुगोमयिष–ति तः न्ति सि थः थ जुगोमयिषा–मि वः
२ जुगोमयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जुगोमयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जुगोमयिषा–णि व म ( व म
४ अजुगोमयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अजुगोमयिषा
५ अजुगोमयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जुगोमयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जुगोमयिषाञ्चकार जुगोमयिषामास
७ जुगोमयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुगोमयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जुगोमयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जुगोमयिषि
ष्या–मि वः मः (अजुगोमयिषिष्या–व म
१० अजुगोमयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

### १८९४ भामण् ( भाम् ) क्रोधे

१ बिभामयिषति तः न्ति सि थः थ बिभामयिषामि वः
२ बिभामयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ बिभामयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
बिभामयिषा–णि व म [षा–व म
४ अबिभामयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अबिभामयि
५ अबिभामयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ बिभामयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः वव विव विम
बिभामयिषाञ्चकार बिभामयिषामास
७ बिभामयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ बिभामयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ बिभामयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ बिभामयि
षिष्या–मि वः मः ( अबिभामयिषिष्या–व म
१० अबिभामयिषिष्य–त ताम् न् : तम् त म

### १८९६ सामण् ( साम् ) सान्त्वने

१ सिसामयिष–ति तः न्ति सि थः थ सिसामयिषा–मि
२ सिसामयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ सिसामयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिसामयिषा–णि व म (षा–व म
४ असिसामयिष–त् ताम् न् : तम् त म् असिसामयि
५ असिसामयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ सिसामयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिसामयिषाञ्चकार सिसामयिषामास
७ सिसामयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिसामयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिसामयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ सिसामयिषि
ष्या–मि वः मः ( असिसामयिषिष्या–व म
१० असिसामयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १८९७ श्रामण् (श्राम्) अमान्त्रणे

१ शिश्रामयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्रामयिषामि वः
२ शिश्रामयिषे-त ताम् यु तम् त यम् व म [मः
३ शिश्रामयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रामयिषा णि व म षा व म
४ अशिश्रामयिष-त् ताम् न् तम् त म् अशिश्रामयि
५ अशिश्रामयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिश्रामयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिश्रामयिषाञ्चकार शिश्रामयिषामास
७ शिश्रामयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रामयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रामयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिश्रामयि
षिष्या--मि वः मः ( अशिश्रामयिषिष्या-व म
१० अशिश्रामयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

### १८९९ व्ययण् (व्यय) वित्तसमुत्सर्गे

१ विव्यययिष-ति तः न्ति सि थः थ विव्यययिषामि
२ विव्ययियिषे- त ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ विव्ययियिष तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विव्ययियिषा-णि व म -व म
४ अविव्ययियिषत ताम् न् तम् त म् अविव्ययियिषा
५ अविव्ययियि-षीत् षिष्टाम् षिषु षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ विव्ययियिषाञ्चकार चक्रतुः क्रुः चकर्थ चक्रथुः चक्र चकार चकर
विव्ययियिषाम्बभूव विव्ययियिषामास
७ विव्ययियिष्या-त स्ताम् सुः . स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विव्ययियिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विव्ययियिषिष्य ति त न्ति सि थः थ विव्ययियि
षिष्या मि वः मः अविव्ययियिषिष्या व म
१० अविव्ययियिषिष्य- त् ताम् न् : तम् त म्

### १८९८ स्तोमण् (स्तोम्) श्लाघायाम्

१ तुस्तोमयिष-ति तः न्ति सि थः थ तुस्तोमयिषामि
२ तुस्तोमयिषे-त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ तुस्तोमयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
तुस्तोमयिषा-णि व म व म
४ अतुस्तोमयिषत् ताम् न् : तम् त म् अतुस्तोमयिषा
५ अतुस्तोमयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म -कर कृम कृव
६ तुस्तोमयिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
तुस्तोमयिषाम्बभूव तुस्तोमयिषामास
७ तुस्तोमयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मतुस्तोमयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ तुस्तोमयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ तुस्तोमयि
षिष्या-मि वः मः ( अतुस्तोमयिषिष्या-व म
१० अतुस्तोमयिषिष्य-त् ताम् न् : तम त म

### १९०० सूत्रण् (सूत्र्) विमोचने

१ सुसूत्रयिष ति तः न्ति सि थः थ सुसूत्रयिषा-मि वः
२ सुसूत्रयिषे-त् ताम् यु तम् त यम् व म (वः मः
३ सुसूत्रयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सुसूत्रयिषा-णि व म -व म
४ असुसूत्रयिष त् ताम् न् : तम् त म् असुसूत्रयिष
५ असुसूत्रयि षीत् षिष्टाम् षिषु षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ सुसूत्रयिषाञ्चकार चक्रतु क्रुः चकर्थ चक्रथुः चक्र चकार चकर चकृव
सुसूत्रयिषाम्बभूव सुसूत्रयिषामास
७ सुसूत्रयिष्या त् स्ताम् सु स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सुसूत्रयिषिता रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सुसूत्रयिषिष्य-ति तः न्ति सि थ थ सुसूत्रयिषि
ष्या-मि वः मः अससूत्रयिषिष्या व म
१० असुसूत्रयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९०१ मूत्रण (मूत्र) प्रस्रवणे

१ मुमूत्रयिषति तः न्ति सि थः थ मुमूत्रयिषामि वः
२ मुमूत्रयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ मुमूत्रयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मुमूत्रयिषा-णि व म [ व म
४ अमुमूत्रयिषत् ताम् न् : तम् त म् अमुमूत्रयिषा
५ अमुमूत्रयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मुमूत्रयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मुमूत्रयिषाञ्चकार मुमूत्रयिषाम्बभूव
७ मुमूत्रयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मुमूत्रयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मुमूत्रयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मुमूत्रयिषि
ष्या-मि वः मः (अमुमूत्रयिषिष्या-व म
१० अमुमूत्रयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १९०२ पारण (पार्) कर्मसमाप्तौ

१ पिपारयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपारयिषा-मि
२ पिपारयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ पिपारयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपारयिषा-णि व म (व म
४ अपिपारयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपारयिषा
५ अपिपारयि-षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ पिपारयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिपारयिषाञ्चकार पिपारयिषामास
७ पिपारयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपारयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपारयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपारयिषि
ष्या-मि वः मः (अपिपारयिषिष्या-व म
१० अपिपारयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## १९०३ तीरण (तीर्) कर्मसमाप्तौ

१ तितीरयिष-ति तः न्ति सि थः थ तितीरयिषामि वः
२ तितीरयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [ मः
३ तितीरयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितीरयिषा-णि व म व म
४ अतितीरयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितीरयिषा
( षिष्व षिष्म
५ अतितीरयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
तितीरयिषाञ्चकार तितीरयिषाम्बभूव
६ तितीरयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ तितीरयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितीरयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितीरयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितीरयि
षिष्या-मि वः मः (अतितीरयिषिष्या-व म
१० अतितीरयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

## १९०४ कत्रण (कत्र्) गात्रण शैथिल्ये

१ चिकत्रयिषति तः न्ति सि थः थ चिकत्रयिषामि वः
२ चिकत्रयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिकत्रयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकत्रयिषा-णि व म व म
४ अचिकत्रयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिकत्रयिषा
५ अचिकत्रयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिकत्रयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिकत्रयिषाञ्चकार चिकत्रयिषाम्बभूव
७ चिकत्रयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकत्रयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकत्रयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चिकत्रयिषि
ष्या-मि वः मः (अचिकत्रयिषिष्या-व म
१० अचिकत्रयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९०५ गात्रण् ( गात्र् ) शैथिल्ये

१ जिगात्रयिषति तः न्ति सि थः थ जिगात्रयिषामि वः
२ जिगात्रयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ जिगात्रयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगात्रयिषा–णि व म [ व म
४ अजिगात्रयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिगात्रयिषा
५ अजिगात्रयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिगात्रयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
जिगात्रयिषाञ्चकार जिगात्रयिषाम्बभूव
७ जिगात्रयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगात्रयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगात्रयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ जिगात्रयिषि
ष्या–मि वः मः ( अजिगात्रयिषिष्या–व म
१० अजिगात्रयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १९०६ चित्रण् ( कत्र् ) चित्रक्रिया कदाचिद्दृष्ट्याः

१ चिचित्रयिषति तः न्ति सि थः थ चिचित्रयिषामि वः
२ चिचित्रयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ चिचित्रयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचित्रयिषा–णि व म व म
४ अचिचित्रयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिचित्रयिषा
५ अचिचित्रयि–षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिचित्रयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचित्रयिषाञ्चकार चिचित्रयिषाम्बभूव
७ चिचित्रयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचित्रयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचित्रयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ चिचित्रयिषि
ष्या–मि वः मः (अचिचित्रयिषिष्या–व म
१० अचिचित्रयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १९०७ छिद्रण् ( छिद्र् ) भेदे

१ चिच्छिद्रयिषति तः न्ति सि थः थ चिच्छिद्रयिषामि
२ चिच्छिद्रयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिच्छिद्रयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छिद्रयिषा–णि व म ( यिषाव म
४ अचिच्छिद्रयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छिद्र
५ अचिच्छिद्रयि–षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ चिच्छिद्रयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिच्छिद्रयिषाञ्चकार चिच्छिद्रयिषामास
७ चिच्छिद्रयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिच्छिद्रयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिच्छिद्रयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिच्छिद्रयि
षिष्या–मि वः मः ( अचिच्छिद्रयिषिष्या–व म
१० अचिच्छिद्रयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १९०८ मिश्रण ( मिश्र् ) संपर्चने

१ मिमिश्रयिषति तः न्ति सि थः थ मिमिश्रयिषामि वः
२ मिमिश्रयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म [ मः
३ मिमिश्रयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमिश्रयिषा–णि व म व म
४ अमिमिश्रयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अमिमिश्रयिषा
( षिष्व षिष्म
५ अमिमिश्रयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
मिमिश्रयिषाञ्चकार मिमिश्रयिषाम्बभूव
६ मिमिश्रयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
७ मिमिश्रयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमिश्रयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमिश्रयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिमिश्रयि
षिष्या–मि वः मः ( अमिमिश्रयिषिष्या–व म
१० अमिमिश्रयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९०९ वरण् ( वर् ) ईप्सायाम्

१ विवरयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवरयिषा-मि
२ विवरयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ विवरयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवरयिषा-णि व म -व म
४ अविवरयिषत् ताम् न् : तम् त म् अविवरयिषा
५ अविवरयि-षीत् षिष्टाम् षिषु षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ विवरयिषाञ्चकार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर
विवरयिषाम्बभूव विवरयिषामास
७ विवरयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवरयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवरयिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ विवरयिषि
ष्या-मि वः मः ( अविवरयिषिष्या-व म
१० अविवरयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

### १९११ शारण् ( शार् ) दौर्बल्ये

१ शिशारयिषति तः न्ति सि थः थ शिशारयिषा-मि वः
२ शिशारयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ शिशारयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशारयिषा-णि व म -व म
४ अशिशारयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अशिशारयिष
५ अशिशारयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ शिशारयिषाञ्चकार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
शिशारयिषाम्बभूव शिशारयिषामास
७ शिशारयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशारयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशारयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ शिशारयिषि
ष्या-मि वः मः ( अशिशारयिषिष्या-व म
१० अशिशारयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

### १९१० स्वरण् ( स्वर् ) आक्षेपे

१ सिस्वरयिष-ति तः न्ति सि थः थ सिस्वरयिषा-मि वः
२ सिस्वरयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ सिस्वरयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
सिस्वरयिषा-णि व म (षा व म
४ असिस्वरयिष-त् ताम् न् : तम् त म् असिस्वरयि
५ असिस्वरयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ सिस्वरयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
सिस्वरयिषाञ्चकार सिस्वरयिषामास
७ सिस्वरयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ सिस्वरयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ सिस्वरयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ सिस्वरयिषि
ष्या--मि वः मः ( असिस्वरयिषिष्या-व म
१० असिस्वयिषिष्य त् ताम न : तम् त म्

### १९१२ कुमारण् ( कुमार् ) क्रीडायाम्

१ चुकुमारयिष-ति तः न्ति सि थः थ चुकुमारयिषा मि
२ चुकुमारयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चुकुमारयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
चुकुमारयिषा-णि व म षा-व म
४ अचुकुमारयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचुकुमारयि
५ अचुकुमारयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर कृम कृव
६ चुकुमारयिषाञ्च-कार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
चुकुमारयिषाम्बभूव चुकुमारयिषामास
७ चुकुमारयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चुकुमारयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चुकुमारयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चुकुमारयि
षिष्या-मि वः मः ( अचुकुमारयिषिष्या-व म
१० अचुकुमारयिषिष्य-त् ताम न् : तम त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९१३ कलण् ( कल् ) संख्यानगत्योः

१ चिकलयिष–ति तः न्ति सि थः थ चिकलयिषा–मि
२ चिकलयिषे–त ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिकलयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकलयिषा–णि व म व म
४ अचिकलयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिकलयिषा
५ अचिकलयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म, क्रम
६ चिकलयिषाञ्च–कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिकलयिषाम्बभूव चिकलयिषामास
७ चिकलयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकलयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकलयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिकलयिषि
ष्या–मि वः मः ( अचिकलयिषिष्या–व म
१० अचिकलयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १९१५ वेलण् ( वेल् ) उपदेशे

१ विवेलयिष–ति तः न्ति सि थः थ विवेलयिषामि वः
२ विवेलयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व न [मः
३ विवेलयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवेलयिषा–णि व म षा–व म
४ अविवेलयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अविवेलयि
५ अविवेलयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवेलयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवेलयिषाञ्चकार विवेलयिषामास
७ विवेलयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवेलयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवेलयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ विवेलयिषि
ष्या–मि व मः (अविवेलयिषिष्या व म
१० अविवेलयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

## १९१४ शीलण् ( शील् ) उपधारणे

१ शिशीलयिष–ति तः न्ति सि थः थ शिशीलयिषा मि
२ शिशीलयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म ( वः मः
३ शिशीलयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशीलयिषा–णि व म षा–व म
४ अशिशीलयिष त् ताम् न् : तम् त म् अशिशीलयि
५ अशिशीलयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ शिशीलयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
शिशीलयिषाञ्चकार शिशीलयिषामास
७ शिशीलयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशीलयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशीलयिषिष्य–ति तः न्ति सिथः थ शिशीलयिषि
ष्या–मि वः मः (अशिशीलयिषिष्या–व म
१० अशिशीलयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

## १९१६ कालण् ( काल् ) उपदेशे

१ चिकालयिष–ति तः न्ति सि थः थ चिकालयिषामि
२ चिकालयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिकालयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिकालयिषा–णि व म ( यिषा–व म
४ अचिकालयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिकाल
५ अचिकालयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम
६ चिकालयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
चिकालयिषाम्बभूव चिकालयिषामास
७ चिकालयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकालयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकालयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिकालयि
षिष्य–मि वः मः (अचिकालयिषिष्या–व म
१० अचिकालयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१९१७ पल्यूलण् ( पल्यूल् ) लवनपवनयोः

१ पिपल्यूलयिषति तः न्ति सि थः थ पिपल्यूलयिषामि
२ पिपल्यूलयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ पिपल्यूलयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपल्यूलयिषा-णि व म यिषा-व म
४ अपिपल्यूलयिषत ताम् नः तम् त म् अपिपल्यूल
५ अपिपल्यूलयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ पिपल्यूलयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
पिपल्यूलयिषाम्बभूव पिपल्यूलयिषामास
७ पिपल्यूलयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपल्यूलयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपल्यूलयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपल्यूलयि
षिष्या-मि वः मः ( अपिपल्यूलयिषिष्या-व म
१० अपिपल्यूलयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१९१९ पषण् ( पष् ) अनुपसर्गः

१ पिपषयिषति तः न्ति सि थः थ पिपषयिषा-मि वः
२ पिपषयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ पिपषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपषयिषा-णि व म -व म
४ अपिपषयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपषयिष
५ अपिपषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ पिपषयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
पिपषयिषाम्बभूव पिपषयिषामास
७ पिपषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपषयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपषयिषि
ष्या-मि वः मः ( अपिपषयिषिष्या-व म
१० अपिपषयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१९१८ अंशण् ( अंश् ) समाघाते

१ अंशिशयिष-ति तः न्ति सि थः थ अंशिशयिषा-मि वः
२ अंशिशयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ अंशिशयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अंशिशयिषा-णि व म (षा व म
४ आंशिशयिष-त् ताम् न् : तम् त म् आंशिशयि
५ आंशिशयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अंशिशयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अंशिशयिषाञ्चकार अंशिशयिषामास
७ अंशिशयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अंशिशयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अंशिशयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अंशिशयिषि
ष्या--मि वः मः ( आंशिशयिषिष्या-व म
१० आंशिशयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

१९२० गवेषण् ( गवेष् ) मार्गणे

१ जिगवेषयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिगवेषयिषा मि
२ जिगवेषयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ जिगवेषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिगवेषयिषा-णि व म षा-व म
४ अजिगवेषयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिगवेषयि
५ अजिगवेषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर कृम कृव
६ जिगवेषयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
जिगवेषयिषाम्बभूव जिगवेषयिषामास
७ जिगवेषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिगवेषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिगवेषयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ जिगवेषयि
षिष्या-मि वः मः ( अजिगवेषयिषिष्या-व म
१० अजिगवेषयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१९२१ मृषण् ( मृष् ) क्षान्तौ

१ मिमृषयिष-ति तः न्ति सि थः थ मिमृषयिषा-मि
२ मिमृषयिषे-त् ताम् युः तम् त यम व म (वः मः
३ मिमृषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमृषयिषा-णि व म व म
४अमिमृषयिषत् ताम् न् : तम् त म् अमिमृषयिषा
५ अमिमृषयि-षीत् षिष्टाम् षिपुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६मिमृषयिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
मिमृषयिषाम्बभूव मिमृषयिषामास
७ मिमृषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमृषयिषिता " रौ र. सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमृषयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमृषयिषि
ष्या-मि वः मः ( अमिमृषयिषिष्या-व म
१० अमिमृषयिषिष्य-त ताम् न : तम त म

१९२२ रसण् ( रस् ) आस्वादनस्नेहनयोः

१ रिरसयिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरसयिषा-मि
२ रिरसयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म ( वः मः
३ रिरसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरसयिषा-णि व म षा-व म
४ अरिरसयिष त् ताम् न् : तम् त म् अरिरसयि-
५ अरिरसयि षीत् षिष्टाम् षिपुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरसयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथु. व व विव विम
रिरसयिषाञ्चकार रिरसयिषामास
७ रिरसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरसयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ रिरसयिषि
ष्या-मि वः मः (अरिरसयिषिष्या-व म
१० अरिरसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१९२३ वासण् ( वास् ) उपसेवायाम्

१विवासयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवासयिषामि वः
२ विवासयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म [मः
३ विवासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवासयिषा-णि व म षा-व म
४ अविवासयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवासयि
५ अविवासयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवासयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवासयिषाञ्चकार विवासयिषामास
७ विवासयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवासयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९विवासयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवासयिषि
ष्या-मि व मः (अविवासयिषिष्या-व म
१० अविवासयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

१९२४ निवासण ( निवास् ) आच्छादने

१निनिवासयिषति तः न्तिसिथःथ निनिवासयिषामि
२निनिवासयिषेत् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ निनिवासयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
निनिवासयिषा-णि व म ( यिषा-व म
४अनिनिवासयिषत् ताम् न् : तम् त म् अनिनिवास
५अनिनिवासयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम
६निनिवासयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
निनिवायिषाम्बभूव निनिवायिषामास
७ निनिवासयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ निनिवावयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ निनिवासयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ निनिवास
यिषिष्य-मि वः मः (अनिनिवासयिषिष्या-व म
१० अनिनिवासयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१९२५ चहण् ( चह् ) कल्कने

१ चिचहयिष–ति तः न्ति सि थः थ चिचहयिषामि वः
२ चिचहयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ चिचहयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचहयिषा–णि व म षा–व म
४ अचिचहयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अचिचहयि
५ अचिचहयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६ चिचहयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिचहयिषाञ्चकार चिचहयिषाम्बभूव
७ चिचहयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचहयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचहयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ चिचहयिषि
ष्यामि वः मः (अचिचहयिषिष्या–व म
१० अचिचहयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१९२६ महण् ( मह् ) पूजायाम्

१ मिमहयिष–ति तः न्ति सि थः थ मिमहयिषा–मि वः
२ मिमहयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ मिमहयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम्
मिमहयिषा–णि व म (षा व म
४ अमिमहयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अमिमहयि
५ अमिमहयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमहयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमहयिषाञ्चकार मिमहयिषामास
७ मिमहयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमहयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमहयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिमहयिषि–
ष्या–मि वः मः (अमिमहयिषिष्या–व म
१० अमिमहयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१९२७ रहण् ( रह् ) त्यागे

१ रिरहयिष–ति तः न्ति सि थः थ रिरहयिषा-
२ रिरहयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः :
३ रिरहयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरहयिषा–णि व म (षा–व म
४ अरिरहयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अरिरहयि
५ अरिरहयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरहयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव वि
रिरहयिषाञ्चकार रिरहयिषामास
७ रिरहयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरहयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरहयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रिरहयिषि
ष्या–मि वः मः (अरिरहयिषिष्या–व म
१० अरिरहयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१९२८ रहुण् ( रह् ) गतौ

१ रिरंहयिष–ति तः न्ति सि थःथ रिरंहयिषा–मि व
२ रिरंहयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ रिरंहयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरंहयिषा–णि व म [षा–व म
४ अरिरंहयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अरिरंहयि-
५ अरिरंहयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरंहयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः वव विव विम
रिरंहयिषाञ्चकार रिरंहयिषामास
७ रिरंहयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ रिरंहयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ रिरंहयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रिरंहयिषि
ष्या-मि वः मः (अरिरंहयिषिष्या–व म
१० अरिरंहयिषिष्य–त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१९२९ स्पृहण् ( स्पृह् ) ईप्सायाम्

१ पिस्पृहयिष–ति तः न्ति सि थः थ पिस्पृहयिषामि वः
२ पिस्पृहयिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म (मः
३ पिस्पृहयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिस्पृहयिषा–णि व म षा–व म
४ अपिस्पृहयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपिस्पृहयि
५ अपिस्पृहयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिस्पृहयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिस्पृहयिषाञ्चकार पिस्पृहयिषाम्बभूव
७ पिस्पृहयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिस्पृहयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिस्पृहयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिस्पृहयिषि
ष्यामि व मः ( अपिस्पृहयिषिष्या–व म
१० अपिस्पृहयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म

१९३० रुक्षण् ( रुक्ष् ) पारुष्ये

१ रुरुक्षयिष–ति तः न्ति सि थः थ रुरुक्षयिषा–मि
२ रुरुक्षयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ रुरुक्षयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रुरुक्षयिषा–णि व म (षा–व म
४ अरुरुक्षयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अरुरुक्षयि
५ अरुरुक्षयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रुरुक्षयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रुरुक्षयिषाञ्चकार रुरुक्षयिषामास
७ रुरुक्षयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रुरुक्षयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रुरुक्षयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ रुरुक्षयिषि
ष्या–मि वः मः ( अरुरुक्षयिषिष्या–व म
१० अरुरुक्षयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१९३१ मृगणि ( मृग् ) अन्वेषणे

१ मिमृगयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमृगयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमृगयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमिमृगयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमृगयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमृगयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
मिमृगयिषाञ्चक्रे मिमृगयिषाम्बभूव [वहि महि
७ मिमृगयिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ मिमृगयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमृगयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे [ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमृगयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

१९३२ अर्थणि ( अर्थ् ) उपयाचने

१ अर्तिथयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अर्तिथयिषेत याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अर्तिथयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अर्तिथयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अर्तिथयिषि–ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अर्तिथयिषामा–स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
अर्तिथयिषाञ्चक्रे अर्तिथयिषाम्बभूव (वहि महि
७ अर्तिथयिषिषीष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ अर्तिथयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अर्तिथयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अर्तिथयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९३३ पदणि ( पद् ) गतौ

१ पिपदयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिपदयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिपदयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अपिपदयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिपदयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिपदयिषाञ्चके कातेक्रिरेकृषे क्राथेकृढ्वे क्रेकृवहे कृमहे
पिपदयिषाम्बभूव पिपदयिषामास (वहि महि
७ पिपदयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ पिपदयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिपदयिषि-ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अपिपदयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा ष्येथाम्

### १९३४ संग्रामणि ( संग्राम् ) युद्धे

१ सिसंग्रामयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२सिसंग्रामयिषेत याताम् रन् थाःयाथाम् ध्वम् यवहि महि
३सिसंग्रामयिषताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ असिसंग्रामयि-षत षेताम् षन्त षथाः षथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५असिसंग्रामयिषिष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६सिसंग्रामयिषाञ्चक्रेक्रातेक्रिरेकृषेक्राथे कृढ्वेक्रेकृवहेकृमहे
सिसंग्रामयिषाम्बभूवसिसंग्रामयिषामास(वहिमहि
७सिसंग्रामयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ सिसंग्रामयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९सिसंग्रामयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० असिसंग्रामयिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १९३५ शूरणि ( शूर् ) विक्रान्तौ

१ शुशूरयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शुशूरयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शुशूरयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अशुशूरयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अशुशूरयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६शुशूरयिषाञ्चक्रेक्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शुशूरयिषाम्बभूव शुशूरयिषामास [वहि महि
७ शुशूरयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ शुशूरयिषिता-" रौ र सेः साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शुशूरयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्व ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशुशूरयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

### १९३६ विरणि ( वीर् ) विक्रान्तौ

१ विवीरयि-षतेषेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवीरयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवीरयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवीरयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवीरयिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठा षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६विवीरयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरेकृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवीरयिषाम्बभूव विवीरयिषामास (वहि महि
७ विवीरयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ विवीरयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवीरयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवीरयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९३७ सत्रणि ( सत्र् ) संदानक्रियायाम्

१ **सिसत्रयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **सिसत्रयिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **सिसत्रयि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **असिसत्रयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **असिसत्रयिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **सिसत्रयिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**सिसत्रयिषाञ्चक्रे सिसत्रयिषाम्बभूव** [वहि महि
७ **सिसत्रयिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ **सिसत्रयिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **सिसत्रयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे [ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **असिसत्रयिषि**ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

## १९३८ स्थूलणि ( स्थूल् ) परिवृंहणे

१ **तुस्थूलयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **तुस्थूलयिषे**त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **तुस्थूलयि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अतुस्थूलयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामाहे ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अतुस्थूलयिषि**-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **तुस्थूलयिषामा**-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
**तुस्थूलयिषाञ्चक्रे तुस्थूलयिषाम्बभूव** (वहि महि
७ **तुस्थूलयिषिषी**ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ **तुस्थूलयिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **तुस्थूलयिषि**- ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अतुस्थूलयिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

## १९३९ गर्वणि ( गर्व् ) माने

१ **जिगर्वयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिगर्वयिषे**-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिगर्वयि**-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिगर्वयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिगर्वयिषि**ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम
६ **जिगर्वयिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**जिगर्वयिषाञ्चक्रे जिगर्वयिषामास** (वहि महि
७ **जिगर्वयिषिषी**-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ **जिगर्वयिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिगर्वयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिगर्वयिषि**ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

## १९४० गृहणि ( गृह् ) ग्रहणे

१ **जिगृहयि**-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ **जिगृहयिषे**त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ **जिगृहयि**-षताम षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ **अजिगृहयि**-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ **अजिगृहयिषि**ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ **जिगृहयिषाम्बभू**-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**जिगृहयिषाञ्चकार जिगृहयिषामास** वहि महि
७ **जिगृहयिषिषी**-ष्ट याताम रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ **जिगृहयिषिता**-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ **जिगृहयिषि**-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० **अजिगृहयिषि**-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९४१ कुहणि ( कुह् ) विस्मापने

१ चुकुहयि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ चुकुहयिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ चुकुहयि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अचुकुहयि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( ष ष्वहि ष्महि
५ अचुकुहयिषि ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ चुकुहयिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे चुकुहयिषाम्बभूव चुकुहयिषामास (य वहि महि
७ चुकुहयिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ चुकुहयिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ चुकुहयिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अचुकुहयिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

## १९४२ युजण ( युज् ) संपर्चने

१ युयोजयिषति तः न्ति सि थः थ युयोजयिषामि वः
२ युयोजयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ युयोजयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त युयोजयिषा-णि व म [ व म
४ अयुयोजयिषत् ताम् न् : तम् त म अयुयोजयिषा
५ अयुयोजयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ युयोजयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम युयोजयिषाञ्चकार युयोजयिषाम्बभूव
७ युयोजयिष्या त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ युयोजयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ युयोजयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ युयोजयिषिष्या-मि वः मः ( अयुयोजयिषिष्या-व म
१० अयुयोजयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे युयोजयि-स्थाने युयुजि इति युयोजि इति च ज्ञेयम्

## १९४३ लीण् ( ली ) द्रवीकरणे

१ लिलीनयिषति तः न्ति सि थः थ लिलीनयिषामि वः
२ लिलीनयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ लिलीनयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त लिलीनयिषा-णि व म व म
४ अलिलीनयिषत् ताम् न् : तम् त म अलिलीनयिषा
५ अलिलीनयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ लिलीनयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम लिलीनयिषाञ्चकार लिलीनयिषाम्बभूव
७ लिलीनयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ लिलीनयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ लिलीनयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ लिलीनयिषिष्या-मि वः मः (अलिलीनयिषिष्या-व म
१० अलिलीनयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे लिलीनयि-इति स्थाने 'लिलाययि' इति लिलयि इति च ज्ञेयम्

## १९४४ मीण् ( मी ) मतौ

१ मिमाययिषति तः न्ति सि थः थ मिमाययिषामि
२ मिमाययिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ मिमाययिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमाययिषा-णि व म ( यिषाव म
४ अमिमाययिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमाय
५ अमिमाययि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमाययिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम मिमाययिषाञ्चकार मिमाययिषामास
७ मिमाययिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमाययिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमाययिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमाययिषिष्या-मि वः मः ( अमिमाययिषिष्या-व म
१० अमिमाययिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
मिमाययि-स्थाने पक्षे मिमयि इति ज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१९४५ प्रीगण् ( प्री ) तर्पने

१ पिप्रीणयिषति तः न्ति सि थः थ पिप्रीणयिषामि वः
२ पिप्रीणयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म [मः
३ पिप्रीणयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिप्रीणयिषा–णि व म षा–व म
४ अपिप्रीणयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अपिप्रीणयि
५ अपिप्रीणयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिप्रीणयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिप्रीणयिषाश्चकार पिप्रीणयिषामास
७ पिप्रीणयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिप्रीणयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिप्रीणयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ पिप्रीणयिषिष्या–मि व मः (अपिप्रीणयिषिष्या-व म
१० अपिप्रीणयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे पिप्रीणयि-स्थाने पिप्रयि इतिज्ञेयम्

१ पिप्रयि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ पिप्रयिषे–त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ पिप्रयि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षावहै षामहै
४ अपिप्रयि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अपिप्रयिषि–ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ पिप्रयिषाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
पिप्रयिषाश्चक्रे पिप्रयिषामास (य वहि महि
७ पिप्रयिषिषी–ष्ट याताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ पिप्रयिषिता–" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ पिप्रयिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अपिप्रयिषि–ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१९४६ धुगूण् ( धू ) कम्पने

१ दुधूनयिष–ति तः न्ति सि थः थ दुधूनयिषामि
२ दुधूनयिषेत् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ दुधूनयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दुधूनयिषा–णि व म ( यिषा–व म
४ अदुधूनयिष त् ताम् न् : तम् त म् अदुधून
५ अदुधूनयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (क्रम
६ दुधूनयिषाश्चकार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार करकृव
दुधूनयिषाम्बभूव दुधूनयिषामास
७ दुधूनयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दुधूनयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दुधूनयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ दुधूनयिषिष्य–मि वः मः ( अदुधूनयिषिष्या–व म
१० अदुधूनयिषिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे ( धूगट् ) १२९१ इति चक्रपाणि

१९४७ वृगूण् ( वृ ) आवरणे

१ विवारयिष–ति तः न्ति सि थः थ विवारयिषा मि
२ विवारयिषे–त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ विवारयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवारयिषा–णि व म षा-व म
४ अविवारयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवारयि
५ अविवारयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवारयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवारयिषाश्चकार विवारयिषामास
७ विवारयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवारयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवारयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवारयिषिष्या मि वः मः (अविवारयिषिष्या -व म
१० अविवारयिषिष्य–त ताम् न : तम् त म
पक्षे ( वृगट् ) १२९४ इति चक्रपाणि

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९४८ जॄण् ( जॄ ) वयोहानौ

१ जिजारयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिजारयिषा मि
२ जिजारयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ जिजारयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिजारयिषा-णि व म षा-व म
४ अजिजारयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिजारयि
५ अजिजारयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर कृम कृव
६ जिजारयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
जिजारयिषाम्बभूव जिजारयिषामास
७ जिजारयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिजारयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिजारयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिजारयि
षिष्या-मि वः मः ( अजिजारयिषिष्या-व म
१० अजिजारयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे जॄषच् ११४९ वद्रूपाणि

## १९४९ चीकण् ( चीक् ) आमर्षणे

१ चिचीकयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिचीकयिषामि वः
२ चिचीकयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ चिचीकयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिचीकयिषा-णि व म (षा व म
४ अचिचीकयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिचीकयि
५ अचिचीकयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी. षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म
६ चिचीकयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिचीकयिषाञ्चकार चिचीकयिषामास
७ चिचीकयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिचीकयिषिता-" रौ रः सि:स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिचीकयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिचीकयिषि
ष्या--मि वः मः ( अचिचीकयिषिष्या-व म
१० अचिचीकयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिचीकयि-स्थाने चिचीकि-इतिज्ञेयम

## १९५० शीकण् ( शी१ ) आमर्षणे

१ शिशीकयिषति तः न्ति सि थः थ शिशीकयिषामि
२ शिशीकयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ शिशीकयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशीकयिषा-णि व म यिषा-व म
४ अशिशीकयिषत् ताम् न् : तम् त म् अशिशीक
५ अशिशीकयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ शिशीकयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
शिशीकयिषाम्बभूव शिशीकयिषामास
७ शिशीकयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशीकयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशीकयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ शिशीकयि
षिष्या- मि वः मः ( अशिशीकयिषिष्या-व म
१० अशिशीकयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे शिशीकयि-स्थाने शिशीकि-इतिज्ञेयम्

## १९५१ मार्गण् ( मार्ग् ) अन्वेषणे

१ मिमार्गयिषति तः न्ति सि थः थ मिमार्गयिषा-मि वः
२ मिमार्गयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ मिमार्गयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमार्गयिषा-णि व म -व म
४ अमिमार्गयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमार्गयिष
५ अमिमार्गयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ मिमार्गयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
मिमार्गयिषाम्बभूव मिमार्गयिषामास
७ मिमार्गयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमार्गयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमार्गयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमार्गयिषि
ष्या-मि वः मः (अमिमार्गयिषिष्या-व म
१० अमिमार्गयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे मिमार्गयि-स्थाने मिमार्गि-इतिज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९५२ पृचण् ( पृच् ) संपर्चने

१ पिपर्चयिष-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्चयिषामि वः
२ पिपर्चयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः
३ पिपर्चयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
पिपर्चयिषा-णि व म षा-व म
४ अपिपर्चयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अपिपर्चयि
५ अपिपर्चयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ पिपर्चयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
पिपर्चयिषाञ्चकार पिपर्चयिषाम्बभूव
७ पिपर्चयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ पिपर्चयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ पिपर्चयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ पिपर्चयिषि
ष्यामि वः मः (अपिपर्चयिषिष्या-व म
१० अपिपर्चयिषिष्य-त ताम् न : तम त म
पक्षे पिपर्चयि-स्थाने पिपर्चि-इति ज्ञेयम्

### १९५३ रिचण् ( रिच् ) वियोजनेच

१ रिरेचयिष-ति तः न्ति सि थः थ रिरेचयिषा-मि
२ रिरेचयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ रिरेचयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
रिरेचयिषा-णि व म (षा-व म
४ अरिरेचयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अरिरेचयि
५ अरिरेचयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ रिरेचयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
रिरेचयिषाञ्चकार रिरेचयिषामास
७ रिरेचयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ रिरेचयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ रिरेचयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ रिरेचयिषि
ष्या-मि वः मः ( अरिरेचयिषिष्या-व म
१० अरिरेचयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे रिरेचयि-स्थाने रिरिचि-इति रिरेचि
इति च ज्ञेयम् ।

### १९५४ वचण् ( वच् ) भाषणे

१ विवाचयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवाचयिषामि वः
२ विवाचयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (म
३ विवाचयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम्
विवाचयिषा-णि व म (षा व म
४ अविवाचयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवाचयि
५ अविवाचयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवाचयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवाचयिषाञ्चकार विवाचयिषामास
७ विवाचयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवाचयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवाचयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थं विवाचयिषि
ष्या-मि व. मः (अविवाचयिषिष्या-व म
१० अविवाचयिषिष्य-त ताम न : तम् त म
पक्षे विवाचयि-स्थाने विवचि-इति ज्ञेयम्

### १९५५ अर्चिण् ( अर्च् ) पूजायाम्

१ अर्चिचयिषति तः न्ति सि थः थ अर्चिचयिषा-मि वः
२ अर्चिचयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ अर्चिचयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्चिचयिषा-णि व म (षा-व म
४ आर्चिचयिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्चिचयि-
५ आर्चिचयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ अर्चिचयिषाम्बभू व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
अर्चिचयिषाञ्चकार अर्चिचयिषामास
७ अर्चिचयिष्या-त स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ अर्चिचयिषिता" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ अर्चिचयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्चिचयिषि
ष्या-मि वः मः (आर्चिचयिषिष्या-व म
१० आर्चिचयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ अर्चिचि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षाहे षामहे
२ अर्चिचिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्म् य वहि महि
३ अर्चिचि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै षाहै षामहै
४ अर्चिचि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि षामहि (षि ष्वहि ष्महिं
५ अर्चिचिषि-ष्ट षाताम् षन्त ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अर्चिचिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व वित्र विम अर्चिचिषाञ्चक्रे अर्चिचिषामास (य वहि महि
७ अर्चिचिषिषी-ष्ट याताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम्
८ अर्चिचिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अर्चिचिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये ष्यावहे ष्यामहे (ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अर्चिचिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम्

१९५७ मृजौण् ( मृज् ) शोचालङ्कारयोः

१ मिमार्जयिषति तः न्ति सि थः थ मिमार्जयिषामि वः
२ मिमार्जयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म [मः
३ मिमार्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त मिमार्जयिषा-णि व म षा-व म
४ अमिमार्जयिष-त् ताम् न्: तम् त म् अमिमार्जयि
५ अमिमार्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ मिमार्जयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम मिमार्जयिषाञ्चकार मिमार्जयिषामास
७ मिमार्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमार्जयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमार्जयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमार्जयिषिष्या-मि व मः (अमिमार्जयिषिष्या-व म
१० अमिमार्जयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे ( मृजौङ् ) १०८७ इतिवद्रूपम्

१९५६ वृजैण् ( वृज् ) वर्जने

१ विवर्जयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवर्जयिषा मि
२ विवर्जयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म ( वः मः
३ विवर्जयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त विवर्जयिषा-णि व म षा-व म
४ अविवर्जयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवर्जयि
५ अविवर्जयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ विवर्जयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम विवर्जयिषाञ्चकार विवर्जयिषामास
७ विवर्जयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवर्जयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवर्जयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ विवर्जयिषिष्या-मि वः मः (अविवर्जयिषिष्या-व म
१० अविवर्जयिषिष्य-त ताम् न् : तम त म
पक्षे विवर्जयि-स्थाने विवर्जि-ज्ञेयम्

१९५८ कण्ठुण् ( कण्ठ् ) शोके

१ चिकण्ठयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिकण्ठयिषामि
२ चिकण्ठयिषेत् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ चिकण्ठयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त चिकण्ठयिषा-णि व म ( यिषा-व म
४ अचिकण्ठयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिकण्ठ
५ अचिकण्ठयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम षिष्व षिष्म (कृम
६ चिकण्ठयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ कथुः क कार करकृव चिकण्ठयिषाम्बभूव चिकण्ठयिषामास
७ चिकण्ठयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिकण्ठयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिकण्ठयिषिष्य ति तः न्ति सि थः थ चिकण्ठयिषिष्य-मि वः मः (अचिकण्ठयिषिष्या-व म
१० अचिकण्ठयिषिष्य-त ताम न् : तम त म्
पक्षे चिकण्ठयि-स्थाने चिकण्ठि-इतिज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९५९ श्रन्थण् ( श्रन्थ् ) सन्दर्भे

१ शिश्रन्थयिषति तः न्ति सि थः थ शिश्रन्थयिषामि
२ शिश्रन्थयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ शिश्रन्थयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्रन्थयिषा-णि व म यिषा-व म
४ अशिश्रन्थयिषत् ताम् न् : तम् त म् अशिश्रन्थ
५ अशिश्रन्थयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (कृव कृम
६ शिश्रन्थयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर
शिश्रन्थयिषाम्बभूव शिश्रन्थयिषामास
७ शिश्रन्थयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्रन्थयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्रन्थयिषिष्य-ति त न्ति सि थः थ शिश्रन्थयि
षिष्या-मि वः मः ( अशिश्रन्थयिषिष्या-व म
१० अशिश्रन्थयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे शिश्रन्थयि स्थाने शिश्रन्थि-इतिज्ञेयम्

### १९६१ क्रथण् ( क्रथ् ) हिंसायाम्

१ चिक्राथयिष-ति तः न्ति सि थः थ चिक्राथयिषा-मि वः
२ चिक्राथयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ चिक्राथयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिक्राथयिषा-णि व म (षा व म
४ अचिक्राथयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अचिक्राथयि
५ अचिक्राथयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ चिक्राथयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिक्राथयिषाञ्चकार चिक्राथयिषामास
७ चिक्राथयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ चिक्राथयिषिता-" रौ रः सिः स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ चिक्राथयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिक्राथयिषि
ष्या--मि वः मः ( अचिक्राथयिषिष्या-व म
१० अचिक्राथयिषिष्य त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे चिक्राथयि-स्थाने चिक्रथि-इतिज्ञेयम्

### १९६० ग्रन्थण् ( ग्रन्थ् ) संदर्भे

१ जिग्रन्थयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिग्रन्थयिषा मि
२ जिग्रन्थयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ जिग्रन्थयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
जिग्रन्थयिषा-णि व म षा-व म
४ अजिग्रन्थयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजिग्रन्थयि
५ अजिग्रन्थयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कर कृम कृव
६ जिग्रन्थयिषाञ्च-कार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार
जिग्रन्थयिषाम्बभूव जिग्रन्थयिषामास
७ जिग्रन्थयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिग्रन्थयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिग्रन्थयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ जिग्रन्थयि
षिष्या-मि वः मः ( अजिग्रन्थयिषिष्या-व म
१० अजिग्रन्थयिषिष्य-त् ताम न् : तम त म
पक्षे जिग्रन्थयि-स्थाने जिग्रन्थि-इतिज्ञेयम्

### १९६२ अर्दिण् ( अर्द् ) हिंसायाम्

१ अर्दिदयिषति तः न्ति सि थः थ अर्दिदयिषा-मि वः
२ अर्दिदयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ अर्दिदयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
अर्दिदयिषा-णि व म -व म
४ आर्दिदयिष-त् ताम् न् : तम् त म् आर्दिदयिष
५ आर्दिदयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म कृम
६ अर्दिदयिषाञ्चकार कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
अर्दिदयिषाम्बभूव अर्दिदयिषामास
७ अर्दिदयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ अर्दिदयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ अर्दिदयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ अर्दिदयिषि
ष्या-मि वः मः ( आर्दिदयिषिष्या-व म
१० आर्दिदयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

## णिजभावपक्षे

१ अर्दिदि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ अर्दिदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ अर्दिदि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ आर्दिदि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे षावहि
षामहि (ष ध्वहि ष्महि
५ आर्दिदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ अर्दिदिषाञ्च-क्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
अर्दिदिषाम्बभूव अर्दिदिषिषामास (महि
७ अर्दिदिषिषी-ष्ट याताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य वहि
८ अर्दिदिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ अर्दिदिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यावहि ष्यामहि
१० आर्दिदिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम् ष्यध्वम् ष्ये

## १९६३ श्रथण् ( श्रथ् ) बन्धने च

१ शिश्राथयिष-ति तः न्ति सि थः थ शिश्राथयिषामि
२ शिश्राथयिषेत् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ शिश्राथयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिश्राथयिषा-णि व म (यिषा-व म
४ अशिश्राथयिष त् ताम् न् : तम् त म् अशिश्राथ
५ अशिश्राथयिषीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षिष्म (कृम
६ शिश्राथयिषाञ्चकार क्रतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर कृव
शिश्राथयिषाम्बभूव शिश्राथयिषामास
७ शिश्राथयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिश्राथयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिश्राथयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ शिश्राथयिषि
ष्य-मि वः मः (अशिश्राथयिषिष्या-व म
१० अशिश्राथयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे शिश्राथयि-स्थाने शिश्रथयि-इतिज्ञेयम्

## १९६४ वदिण् ( वद् ) भाषणे

१ विवादयिष-ति तः न्ति सि थः थ विवादयिषामि
२ विवादयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः
३ विवादयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
विवादयिषा-णि व म षा-व म
४ अविवादयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अविवादयि
५ अविवादयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ विवादयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
विवादयिषाञ्चकार विवादयिषामास
७ विवादयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ विवादयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ विवादयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ विवादयिषि
ष्या-मि वः मः (अविवादयिषिष्या-व म
० अविवादयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

## पक्षे

१ विवदि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ विवदिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ विवदि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अविवदि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अविवदिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ विवदिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
विवदिषाम्बभूव विवदिषामास (वहि महि
७ विवदिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ विवदिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ विवदिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम् ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अविवदिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

Digitized by Madhuban Trust, Delhi
CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९६५ छदण् ( छद् ) अपवारणे

१ चिच्छादयिषति तः न्ति सि थः थ चिच्छादयिषामि

२ चिच्छादयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म [वः मः

३ चिच्छादयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छादयिषा-णि व म षा-व म

४ अचिच्छादयिषत् ताम् न् : तम् त म् अचिच्छादयि

५ अचिच्छादयि षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ चिच्छादयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
चिच्छादयिषाञ्चकार चिच्छादयिषामास

७ चिच्छादयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चिच्छादयिषिता-" रौ रः सि स्थ स्थ स्मि स्वः स्मः

९ चिच्छादयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छादयि
षिष्या-मि व मः (अचिच्छादयिषिष्या-व म

१० अचिच्छादयिषिष्य-त ताम न् : तम् त म

पक्षे चिच्छादयि-स्थाने चिच्छदि इतिज्ञेयम्

### १९६६ आङः ( आ-सद् ) सदण् गतौ

१ आसिसादयिषति तः न्ति सि थः थ आसिसादयिषामि

२ आसिसादयिषेत् ताम् युः तम् त यम् व म (वः मः

३ आसिसादयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
आसिसादयिषा-णि व म (षाव म

४ आसिसादयिष-त् ताम् न् : तम् त म् आसिसादयिष

५ आसिसादयि-षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म

६ आसिसादयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
आसिसादयिषाञ्चकार आसिसादयिषामास

७ आसिसादयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ आसिसादयिषिता " रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ आसिसादयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ आसिसाद
यिषिष्या-मि वः मः (आसिसादयिषिष्या व म

१० आसिसादयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

पक्षे आसिसादयि-स्थाने आसिसदि-इतिज्ञेयम

### १९६७ छृदण् ( छृद् ) सन्दीपने

१ चिच्छर्दयिषति तः न्ति सि थः थ चिच्छर्दयिषामि वः

२ चिच्छर्दयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म (मः

३ चिच्छर्दयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
चिच्छर्दयिषा-णि व म [षाव म

४ अचिच्छर्दयिषत् ताम् न् : तम् त म अचिच्छर्दयि

५ अचिच्छर्दयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ चिच्छर्दयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
चिच्छर्दयिषाञ्चकार चिच्छर्दयिषाम्बभूव

७ चिच्छर्दयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ चिच्छर्दयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ चिच्छर्दयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ चिच्छर्दयिषि
ष्या-मि वः मः ( अचिच्छर्दयिषिष्या-व म

१० अचिच्छर्दयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्

पक्षे चिच्छर्दयि-स्थाने चिच्छर्दि-इतिज्ञेयम्

### १९६८ शुन्धिण् ( शुन्ध् ) शुद्धौ

१ शुशुन्धयिषति तः न्ति सि थः थ शुशुन्धयिषामि वः

२ शुशुन्धयिषे-त् ताम् युः तम् त यम् व म ( मः

३ शुशुन्धयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शुशुन्धयिषा-णि व म (म

४ अशुशुन्धयिषत् ताम् न् : तम् त म् अशुशुन्धयिषाव

५ अशुशुन्धयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म

६ शुशुन्धयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
शुशुन्धयिषाञ्चकार शुशुन्धयिषाम्बभूव

७ शुशुन्धयिष्या-त् स्ताम् सुः स्तम् स्त सम् स्व स्म

८ शुशुन्धयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः

९ शुशुन्धयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ शुशुन्धयिषि
ष्या-मि वः मः (अशुशुन्धयिषिष्या-व म

१० अशुशुन्धयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



१ शुशुन्धि–षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ शुशुन्धिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ शुशुन्धि–षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
यावहै षामहै
४ अशुशुन्धि–षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि [षि ष्वहि ष्महि
५ अशुशुन्धिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ शुशुन्धिषाञ्चक्रे-क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृ्ढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
शुशुन्धिषाम्बभूव शुशुन्धिषामास [वहि महि
७ शुशुन्धिषिषी–ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः याथाम् ध्वम् य
८ शुशुन्धिषिता–" रौ र सेः साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ शुशुन्धिषि–ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्व ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अशुशुन्धिषिष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

१९६९ तनूण् ( तन् ) श्रद्धाघाते

१ तितानयिष–ति तः न्ति सि थः थ तितानयिषामि वः
२ तितानयिषे–त् ताम् यु : तम् त यम् व म (मः
३ तितानयिष–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितानयिषा–णि व म षा–व म
४ अतितानयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितानयि
५ अतितानयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षष्म
६ तितानयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितानयिषाञ्चकार तितानयिषाम्बभूव
७ तितानयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितानयिषिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितानयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितानयिषि
ष्यामि वः मः (अतितानयिषिष्या–व म
१० अतितानयिषिष्य–त ताम न् : तम त म
पक्षे तितानयि-स्थाने तितनि–इति ज्ञेयम्

१ तितंस–ति तः न्ति सि थः थ तितंसा–मि वः मः
२ तितंसे–त् ताम युः : तम् त यम् व म
३ तितंस–तु तात् ताम् न्तु " तात् तम्
तितंसा–नि व म
४ अतितंस-त् ताम् न् : तम् त म् अतितंसा–व म
५ अतितं–सीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ तितंसाम्बभू–व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितंसाञ्चकार तितंसामास
७ तितंस्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितंसिता–" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितंसिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितंसिष्या–मि
वः मः (अतितंसिष्या–व म
१० अतितंसिष्य–त् ताम् न् : तम् त म्

१९७० मानण् ( मान् ) पूजायाम

१ मिमानयिषति तः न्ति सि थः थ मिमानयिषामि वः
२ मिमानयिषे–त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ मिमानयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमानयिषा–णि व म [षा–व म
४ अमिमानयिष–त् ताम् न् : तम् त म् अमिमानयि
५ अमिमानयि–षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ मिमानयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः वव विव विम
मिमानयिषाञ्चकार मिमानयिषामास
७ मिमानयिष्या–त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ मिमानयिषिता" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९ मिमानयिषिष्य–ति तः न्ति सि थः थ मिमानयिषि
ष्या–मि वः मः (अमिमानयिषिष्या–व म
१० अमिमानयिषिष्य–त ताम् न् : तम् त म
पक्षे मिमानयि–स्थाने मिमानि–इति ज्ञेयम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



## १९७१ तपिण् ( तप् ) दाहे

१ तितापयिष-ति तः न्ति सि थः थ तितापयिषामि वः
२ तितापयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म (मः
३ तितापयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
तितापयिषा-णि व म षा-व म
४ अतितापयिष-त् ताम् न् : तम् तम् अतितापयि
५ अतितापयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम
षिष्व षष्म
६ तितापयिषामा स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
तितापयिषाञ्चकार तितापयिषाम्बभूव
७ तितापयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितापयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितापयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितापयिषि
ष्यामि वः मः (अतितापयिषिष्या-व म
१० अतितापयिषिष्य-त ताम् न् : तम त म

१ तितपि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ तितपिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ तितपि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अतितपि-षत षेताम् षन्त षथाः षेथाम षध्वम् षे
षावहिं षामहिं (षि ष्वहि ष्महि
५ अतितपिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ तितपिषाञ्चक्रे क्राते क्रिरे कृषे क्राथे कृढ्वे क्रे कृवहे कृमहे
तितपिषाम्बभूव तितपिषामास (वहि महि
७ तितपिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ तितपिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ तितपिषि-ष्यत ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे (ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१०अतितपिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथा. ष्येथाम्

## १९७२ तृपण् ( तृप् ) प्रीणने

१ तितर्पयिष-ति तः न्ति सि थः थ तितर्पयिषामि वः
२ तितर्पयिषे-त् ताम युः : तम् त यम व म ( मः
३ तितर्पयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम्
तितर्पयिषा-णि व म (षा व म
४ अतितर्पयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अतितर्पयि
५ अतितर्पयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ तितर्पयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
तितर्पयिषाञ्चकार तितर्पयिषामास
७ तितर्पयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ तितर्पयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ तितर्पयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ तितर्पयिषि
ष्या-मि वः मः (अतितर्पयिषिष्या-व म
१० अतितर्पयिषिष्य-त ताम् न : तम् त म्
पक्षे तितर्पयि-स्थाने तितर्पि-इति ज्ञेयम्

## १९७३ आप्लृण् ( अप् ) लम्भने

१ आपिपयिषति तः न्ति सि थः थ आपिपयिषामि वः
२ आपिपयिषे-त् ताम् यु : तम् त यम् व म [मः
३ आपिपयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
आपिपयिषा-णि व म [षा-व म
४ आपिपयिष-त् ताम् न् तम् तम् आपिपयि-
५ आपिपयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ आपिपयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः वव विव विम
आपिपयिषाञ्चकार आपिपयिषामास
७ आपिपयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त स्व स्म
८ आपिपयिषिता" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि मम् स्वः स्मः
९आपिपयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ आपिपयिषि
ष्या-मि वः मः (आपिपयिषिष्या-व म
१० आपिपयिषिष्य-त ताम् न् : तम् त म
पक्षे आपिपयि-स्थाने आपिपि-इति ज्ञेयम

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९७४ दृभैण् ( दृभ् ) भये

१ दिदर्भयिषति तः न्ति सि थः थ दिदर्भयिषा मि वः
२ दिदर्भयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ दिदर्भयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिदर्भयिषा-णि व म [व म
४अदिदर्भयिषत् ताम् न् : तम् त म् अदिदर्भयिषा
५ अदिदर्भयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ दिदर्भयिषामास सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
दिदर्भयिषाञ्चकार दिदर्भयिषाम्बभूव
७ दिदर्भयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिदर्भयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिदर्भयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिदर्भयिषि
ष्या-मि वः मः ( अदिदर्भयिषिष्या-व म
१० अदिदर्भयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे दिदर्भयि-स्थाने दिदर्भि-इति ज्ञेयम्

### १९७५ ईरण् ( ईर् ) क्षेपे

१ ईरिरयिषति तः न्ति सि थः थ ईरिरयिषामि वः
२ ईरिरयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म ( मः
३ ईरिरयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
ईरिरयिषा-णि व म
४ ऐरिरयिषत् ताम् न् : तम् त म् ऐरिरयिषा-व म
५ ऐरिरयि-षीत् षिष्टाम् षिषु. षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ ईरिरयिषामा-स सतुः सुः सिथ सथुः स स सिव सिम
ईरिरयिषाञ्चकार ईरिरयिषाम्बभूव
७ ईरिरयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ ईरिरयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ ईरिरयिषिष्यति तः न्ति सि थः थ ईरिरयिषिष्या
-मि वः मः ( ऐरिरयिषिष्या-व म
१० ऐरिरयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे रिरयि-इति स्थाने रिर-इतिज्ञेयम्

### १९९६ मृषिण् ( मृष ) तितिक्षायाम्

१ मिमर्षयिषति तः न्ति सि थः थ मिमर्षयिषा-मि
२ मिमर्षयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ मिमर्षयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
मिमर्षयिषा-णि व म (षाव म
४ अमिमर्षयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अमिमर्षयि
५ अमिमर्षयि-षीत् सिष्टाम् सिषुः सीः सिष्टम् सिष्ट सिषम्
सिष्व सिष्म
६ मिमर्षयिषाम्बभू-व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
मिमर्षयिषाञ्चकार मिमर्षयिषामास
७ मिमर्षयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ मिमर्षयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ मिमर्षयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ मिमर्षयिषि
ष्या-मि वः मः ( अमिमर्षयिषिष्या-व म
१० अमिमर्षयिषिष्य-त् ताम् न् : ताम् त म्

१ मिमर्षि-षते षेते षन्ते षसे षेथे षध्वे षे षावहे षामहे
२ मिमर्षिषे-त याताम् रन् थाः याथाम् ध्वम् य वहि महि
३ मिमर्षि-षताम् षेताम् षन्ताम् षस्व षेथाम् षध्वम् षै
षावहै षामहै
४ अमिमर्षि-षत षेताम् षन्त षथाः षथाम् षध्वम् षे
षावहि षामहि ( षि ष्वहि ष्महि
५ अमिमर्षिषि-ष्ट षाताम् षत ष्ठाः षाथाम् ड्ढ्वम् ध्वम्
६ मिमर्षिषा-ञ्चक्रे ञ्चक्राते ञ्चक्रिरे ञ्चकृषे ञ्चक्राथे ञ्चकृढ्वे ञ्चक्रे ञ्चकृवहे ञ्चकृमहे
मिमर्षिषाम्बभूव मिमर्षिषामास (वहि महि
७ मिमर्षिषिषी-ष्ट यास्ताम् रन् ष्ठाः यास्थाम् ध्वम् य
८ मिमर्षिषिता-" रौ रः से साथे ध्वे हे स्वहे स्महे
९ मिमर्षिषि-ष्यते ष्येते ष्यन्ते ष्यसे ष्येथे ष्यध्वे ष्ये
ष्यावहे ष्यामहे ( ष्यध्वम ष्ये ष्यावहि ष्यामहि
१० अमिमर्षिषि-ष्यत ष्येताम् ष्यन्त ष्यथाः ष्येथाम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



### १९७७ शिषण् ( शिष् ) असर्वोपयोगे

१ शिशेषयिषति तः न्ति सि थः थ शिशेषयिषामि
२ शिशेषयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [वः मः
३ शिशेषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
शिशेषयिषा-णि व म यिषा-व म
४ अशिशेषयिषत् ताम् न् : तम् त म् अशिशेष
५ अशिशेषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म (क्व क्म
६ शिशेषयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर
शिशेषयिषाम्बभूव शिशेषयिषामास
७ शिशेषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ शिशेषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ शिशेषयिषिष्य ति त. न्ति सि थः थ शिशेषयि
षिष्या-मि वः मः ( अशिशेषयिषिष्या-व म
१० अशिशेषयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म
पक्षे शिशेषयि-स्थाने शिशिषि-इतिज्ञेयम्
शिशेषि-इति च ज्ञेयम्

### १९७८ जुषण् ( जुष् ) परितर्कणे

१ जुजोषयिष-ति तः न्ति सि थः थ जुजोषयिषा-मि
२ जुजोषयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (वः मः
३ जुजोषयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात तम् त
जुजोषयिषा-णि व म षा-व म
४ अजुजोषयिषत् ताम् न् : तम् त म् अजुजोषयि
५ अजुजोषयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्र क्रम क्व
६ जुजोषयिषाञ्च-कार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार
जुजोषयिषाम्बभूव जुजोषयिषामास
७ जुजोषयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जुजोषयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्व स्मः
९ जुजोषयिषिष्य-ति तः न्ति सिथः थ जुजोषयि
षिष्या-मि वः मः ( अजुजोषयिषिष्या-व म
१० अजुजोषयिषिष्य-त ताम न : तम त म
पक्षे जुजोषयि-स्थाने जुजुषि-इति जुजोषि
इति च ज्ञेयम्

### १९७९ धृषण् ( धृष् ) प्रसहने

१ दिधर्षयिषति तः न्ति सि थः थ दिधर्षयिषा-मि वः
२ दिधर्षयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म (मः
३ दिधर्षयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
दिधर्षयिषा-णि व म -व म
४ अदिधर्षयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अदिधर्षयिष
५ अदिधर्षयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म क्रम
६ दिधर्षयिषाञ्चकार कतुः क्रुः कर्थ क्रथुः क्र कार कर क्रव
दिधर्षयिषाम्बभूव दिधर्षयिषामास
७ दिधर्षयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ दिधर्षयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ दिधर्षयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ दिधर्षयिषि
ष्या-मि वः मः ( अदिधर्षयिषिष्या-व म
१० अदिधर्षयिषिष्य-त् ताम न् : तम् त म
पक्षे दिधर्षयि-स्थाने दिधर्षि-इति ज्ञेयम्

### १९८० हिसुण् ( हिंस् ) हिंसायाम्

१ जिहिंसयिष-ति तः न्ति सि थः थ जिहिंसयिषामि वः
२ जिहिंसयिषे-त् ताम् युः : तम् त यम् व म [मः
३ जिहिंसयिष-तु तात् ताम् न्तु " तात् तम् त
जिहिंसयिषा-णि व म (षा व म
४ अजिहिंसयिष-त् ताम् न् : तम् त म् अजिहिंसयि
५ अजिहिंसयि-षीत् षिष्टाम् षिषुः षी षिष्टम् षिष्ट षिषम्
षिष्व षिष्म
६ जिहिंसयिषाम्बभूव वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
जिहिंसयिषाञ्चकार जिहिंसयिषामास
७ जिहिंसयिष्या-त् स्ताम् सुः : स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ जिहिंसयिषिता-" रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ जिहिंसयिषिष्य-ति तः न्ति सि थः थ जिहिंसयिषि
ष्या--मि वः मः ( अजिहिंसयिषिष्या-व म
१० अजिहिंसयिषिष्य-त् ताम् न् : तम् त म्
पक्षे जिहिंसयि-स्थाने जिहिंसि-इतिज्ञेयम्

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



**१९८१ गर्हण् ( गर्ह् ) विनिन्दने**

१ **जिगर्हयिष**-ति तः न्ति सि थः थ **जिगर्हयिषा**-मि
२ **जिगर्हयिषे**-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म (वः मः
३ **जिगर्हयिष**-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
**जिगर्हयिषा**-णि व म (षा-व म
४ **अजिगर्हयिष**-त् ताम् न् ः तम् त म् **अजिगर्हयि**
५ **अजिगर्हयि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म
६ **जिगर्हयिषाम्बभू** व वतुः वुः विथ वथुः व व विव विम
**जिगर्हयिषाञ्चकार** **जिगर्हयिषामास**
७ **जिगर्हयिष्या**-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **जिगर्हयिषिता**-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **जिगर्हयिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **जिगर्हयिषिष्या**-मि वः मः ( **अजिगर्हयिषिष्या**-व म
१० **अजिगर्हयिषिष्य**-त् ताम् न् ः तम् त म्
**पक्षे जिगर्हयि-स्थाने जिगर्हि- इति ज्ञेयम**

**१९८२ षहण् ( सह् ) मर्षणे**

१ **सिसाहयिष**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसाहयिषा**-मि
२ **सिसाहयिषे**-त् ताम् युः ः तम् त यम् व म (वः मः
३ **सिसाहयिष**-तु तात् ताम् न्तु ” तात् तम् त
**सिसाहयिषा**-णि व म व म
४ **असिसाहयिष**त् ताम् न् ः तम् त म् **असिसाहयिषा**
५ **असिसाहयि**-षीत् षिष्टाम् षिषुः षीः षिष्टम् षिष्ट षिषम् षिष्व षिष्म क्रम
६ **सिसाहयिषाञ्चकार** कतुः कुः कर्थ कथुः क कार कर कृव
**सिसाहयिषाम्बभूव** **सिसाहयिषामास**
७ **सिसाहयिषिष्या**-त् स्ताम् सुः ः स्तम् स्त सम् स्व स्म
८ **सिसाहयिषिता**-” रौ रः सि स्थः स्थ स्मि स्वः स्मः
९ **सिसाहयिषिष्य**-ति तः न्ति सि थः थ **सिसाहयिषिष्या**-मि वः मः ( **असिसाहयिषिष्या**-व म
१० **असिसाहयिषिष्य**-त् ताम् न् ः तम् त म
**पक्षे सिसाहयि-स्थाने सिसहि-इतिज्ञेयम्**

इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि-सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम-तीर्थरक्षणपरायण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि-अखण्ड-
विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-
यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य
सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे
॥ चुरादिगणः संपूर्णः ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi



इतिश्रीमत्तपोगणगगनाङ्गणगगनमणि–सार्वसार्वज्ञशासनसार्वभौम–तीर्थरक्षणपरायण-
विद्यापीठादिप्रस्थानपञ्चकसमाराधक-संविग्नशाखीय-आचार्यचूडामणि–अखण्ड-
विजयश्रीमद्गुरुराजविजयनेमिसूरीश्वरचरणेन्दिरामन्दिरेन्दिन्दिरा-
यमाणान्तिषन्मुनिलावण्यविजयविरचितस्य धातुरत्नाकरस्य
सन्नन्तरूपपरम्पराप्रकृतिनिरूपणे
तृतीयभागे

॥ चुरादिगणः संपूर्णः ॥

समर्थितश्च धातुरत्नाकरस्य सन्नन्तरूपपरम्परा-
प्रकृतिनिरूपणो नाम तृतीयभागः ।

" छद्मस्थेषु सदा स्खलद्गतितया दोषप्रबन्धान्वये ।
नो हास्यास्पदमत्र दोषघटनायां स्यामहं धीमताम् ॥
नो प्रार्थ्याः कृतिनो निसर्गगरिमावासा मया शोधने ।
तेषां दोषगणप्रमार्जनविधिः स्वाभाविकोऽयं यतः ॥ १ ॥

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥ २ ॥

श्री र स्तु ॥

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

ISBN: 81-7013-104-9

Vol. I Tinanta: pp.x+1370, 1992

Vol.II Niganta: pp.viii+2 to 2-7+3-1526, 1992

Vol.III Sannanta: pp.vi+iv+504, 1992

Vol.IV Yananta: pp.viii+308, 1992

Vol.V Yanluvanta: pp.xii+320+x, 1992

Vol.VI Namadhatu: pp.vi+ii+xii+188, 1992

Vol.VII Bhavakarma: pp.vi+464+ii, 1992

[redacted]

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.

Digitized by Madhuban Trust, Delhi

चिन्तायाम्
सृं गतौ
ध्रुं स्थैर्ये च
ऋं प्रापणे च
पां पाने
स्मृं चिन्तायाम्
अभ्यासे
ह्रृं गतौ
गृं सेचने
जिं अभिभवे
द्रुं गतौ
योगयोः
ध्रुं स्थैर्ये च
ध्मां शब्दाग्नि
घृ सेचने
पां पाने
तापयोः
गृं सेचने
सुं प्रसवै
दुं गतौ
घृ सेचने
कौटिल्ये
ह्वृ वरणं स्थगनम्
सुं गतौ
द्रुं
ध्वृं कौटिल्ये
ह्वृ वरणं स्थगन
दां दाने
शं गतौ
पणे च
औस्वृ शब्दोपतापयोः
औस्वृ शब्द
द्रुं गतौ
प्रसवैश्वर्ययोः
कौटिल्ये

CC-0. Shri Vipin Kumar Col. Deoband. In Public Domain.